Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूर-ग्रन्थावली

(पञ्चम खण्ड)

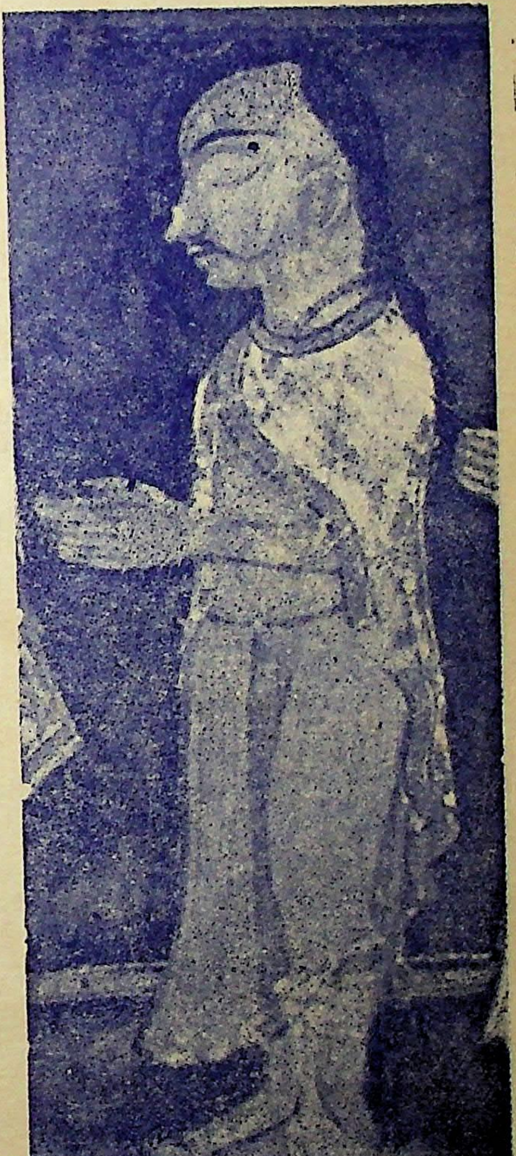

महाकवि सूरदास

अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूर-ग्रन्थावली

(पञ्चम खण्ड)

[नवीन सङ्कलित पद, लेख तथा सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची]

महाकवि सूरदास

तथा

अन्य लेखक

अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी

सं० २०३६ वि०

[सन् १९७९ ई०]

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रकाशक :
अखिल भारतीय विक्रम परिषद्,
६३/४३, उत्तर बेनिया बाग,
वाराणसी—२२१००१
[फ़ोन : ६५७१८

●

प्रथम आवृत्ति
ज्येष्ठ शुक्ल १० (गंगा-दशहरा), सं० २०३६
(५ जून, सन् १९७९ ई०)

●

मूल्य : ४० रु०

●

मुद्रक :
सुधीर कुमार चतुर्वेदी,
सुदर्शन मुद्रक,
६३/४२, उत्तर बेनिया बाग,
वाराणसी—२२१००१
फ़ोन : ६५७१८

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संपादक-मण्डल

सीताराम चतुर्वेदी

डॉ० गोवर्द्धननाथ शुक्ल — पंडित रामकुमार चौबे
डॉ० वचनदेव कुमार — पंडित करुणापति त्रिपाठी
डॉ० सन्तनारायण उपाध्याय — पंडित रमापति शुक्ल
डॉ० छविनाथ पांडेय — पंडित विश्वनाथ मुखर्जी
डॉ० किशोरीलाल गुप्त — पंडित प्रियशील चतुर्वेदी
डॉ० किशोरदास स्वामी — पंडित मञ्जुल पांडेय

सहृदय सहयोगी

श्री सीतारामजी सेकसरिया — श्री भागीरथजी कानोडिया
,, रामकुमारजी भुवालका — ,, नन्दलालजी टाँटिया
,, नथमलजी भुवालका — ,, शान्तिस्वरूपजी गुप्त
,, मोहनलालजी जालान — ,, मुरारीलालजी केडिया
,, हनुमानप्रसादजी पोद्दार — डा० नारायणदत्त शर्मा
पं० चन्द्रदत्तजी त्रिपठी वैद्यराज — ,, केदारनाथजी अग्रवाल

हलवासिया ट्रस्ट, कलकत्ता

वस्तु-क्रम — **पृष्ठ**

१. परिषद्की ओरसे कृतज्ञता-प्रकाश — ख–ग
२. संपादक-मंडलकी ओरसे आत्मनिवेदन — घ–झ
३. सूरदासका वास्तविक चित्र : डा० गोवर्द्धननाथ शुक्ल — ञ–ड
४. नवीन-पद-संग्रह — २९२१
५. नवीन पदोंकी अनुक्रमणिका — ३०२४
६. अप्राप्त पदोंकी टेकोंकी सूची — ३०३१
७. लेखमाला : डॉ गोवर्द्धननाथ शुक्ल
(क) श्रीमद्‌भागवतका प्रतिपाद्य तत्त्व — ३०४२
(ख) शुद्धाद्वैत-दर्शन — ३०५०
(ग) पुष्टिमार्गीय भक्ति — ३०६२
(घ) पुष्टिमार्गमें सेवित प्रमुख नौ स्वरूप — ३०७२
(ङ) अष्टछापी कवियोंके साधना-स्थल — ३०७८
(च) दशम स्कन्ध और परमानन्दसागर — ३०८१
(छ) अष्टछापियोंकी विषय-सूची — ३०८४
८. सुरसागरकी सामग्रीका संकलन और उसका सम्पादन : श्री उदयशंकर शास्त्री — ३०८९
९. सूरसागरकी एक नवोपलब्ध प्रति : श्री उदयशंकर दुबे — ३११५
१०. सूर-सागरके राग तथा उनका परिचय : डा० चित्तरञ्जन ज्योतिषी — ३१२३
११. सूर-साहित्य : डा० छबिनाथ पाण्डेय — ३१४३
१२. सूर-साहित्य-सूची : डा० किशोरीलाल गुप्त — ३१४७
१३. सूर-साहित्यमें शोधके क्षेत्र : सीताराम चतुर्वेदी — ३१७९

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परिषद्‌की ओरसे . . .

. . . कृतज्ञता-प्रकाश

महामना पंडित मदनमोहन मालवीयजी-द्वारा संस्थापित काशीकी अखिल भारतीय विक्रम परिषदने निःसीम दुस्साहस करके सूर-ग्रन्थावलीका प्रकाशन पूर्ण कर डाला। लगभग छह वर्ष पूर्व कलकत्तेमें स्वर्गीय श्रीरामेश्वरजी टाँटियाके निवास-स्थलपर आचार्य पंडित सीताराम चतुर्वेदी, श्री सीतारामजी सेकसरिया, श्री गुलाब खंडेलवाल, श्री नथमलजी भुवालका, पंडित विष्णुकान्त शास्त्री, श्री नथमल केडिया, श्री विश्वनाथ मुखर्जी प्रभृति सज्जनोंकी अनौपचारिक गोष्ठीमें यह निर्णय किया गया कि वैशाख शुक्ला ५, सं० २०३५ को पड़नेवाली सूर पञ्चशतीके अवसरपर पूर्ण सूर-ग्रन्थावलीका सटीक प्रकाशन कर दिया जाय। उसी समय उपस्थित सज्जनोंने अपनी ओरसे सूर-ग्रन्थावलीकी यथेष्ट संख्यामें प्रतियाँ ले लेनेका भी आश्वासन दे दिया। संयोगवश हलवासिया ट्रस्ट तथा श्री सूरजमल जालान ट्रस्टने भी पूर्व ग्राहक बनकर सूर ग्रंथावलीकी प्रतियाँ लेना स्वीकार कर लिया। इनके अतिरिक्त आजमगढ़के वैद्यराज पं० चन्द्रदत्त त्रिपाठी, काशीके डा० भानुशंकर मेहता तथा श्री भरतनारायण अग्रवाल, अलीगढ़के डा० गोवर्द्धननाथ शुक्ल, मथुराके डा० नारायणदत्त शर्मा प्रभृति सहृदय सहयोगियोंने तत्परतापूर्वक, पूर्व ग्राहक बनाकर इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्यमें पूर्ण सात्त्विक सहयोग दिया।

प्रारम्भमें तो यह कार्य उतना कठिन नहीं प्रतीत हुआ किन्तु द्वितीय खंड प्रकाशित होनेके पश्चात् तो यह जान पड़ने लगा कि तृतीय खंड भी प्रकाशित करना कठिन हो जायगा क्योंकि जो सज्जन प्रथम दो खंडोंके पूर्व ग्राहक बने थे उनमेंसे बहुतोंने तृतीय खंडकी प्रतियाँ नहीं लीं। चतुर्थ खंड तो इतना बड़ा हो गया कि यदि श्री भागीरथजी कानोडिया और श्रीशान्तिस्वरूप गुप्त समयपर सहायक होकर न आ खड़े होते तो उसका छप सकना ही असम्भव हो जाता।

हम लोगोंकी कल्पना थी कि चतुर्थ खंडमें सारी सामग्री समाविष्ट हो जायगी। किन्तु ग्रन्थावली छप जानेपर छपे हुए पदोंके अतिरिक संपादक-मंडलको लगभग १००० पद और प्राप्त हो गए जिन्हें प्रकाशित करना संपादक-मंडलने बहुत ही आवश्यक समझा। इसलिये विवश होकर यह पंचम खंड छापना ही पड़ गया। बहुतसे महत्त्वपूर्ण लेख भी छापने थे इसलिये भी पंचम खंड छापना अनिवार्य हो गया।

वस्तुतः इस प्रकारका अति व्ययसाध्य कार्य केन्द्रीय अथवा प्रादेशिक सरकारों, विश्वविद्यालयों तथा उन सार्वजनिक हिन्दी संस्थानोंको करना चाहिए था जिन्हें सरकारकी ओरसे लाखों रुपयेका अनुदान मिलता है और जिन्हें वास्तवमें इस प्रकारका कार्य करना भी चाहिए था। किन्तु वे सब चुप बैठे रहे। कौन ओखलीमें सिर दे! सूर-पंचशती तो बार-बार आनेवाली नहीं है और फिर पिछले ५०० वर्षोंमें किसी सरकार, विश्वविद्यालय, पुष्टिमार्गीय गद्दी या हिन्दी संस्थाकी ओरसे

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूरके पदोंका न तो पूर्ण संग्रह ही कराया जा सका और न टीका-सहित प्रकाशित करनेका प्रयास किया गया। मथुराके पण्डित जवाहरलाल चतुर्वेदीने सूरसागरका सम्पादन स्वर्गीय गोवर्धनदासजी बिनानीकी प्रेरणासे कलकत्तेमें प्रारम्भ तो किया किन्तु एक खण्ड प्रकाशित होनेके पश्चात् उनका अवसान हो जानेके कारण वह कार्य वहीं रुक गया। डा० माताप्रसाद गुप्तने भी सूरसागरका सम्पादन किया था किन्तु वह भी अभीतक ग्रन्थ-रूपमें पूरा प्रकाशित नहीं हो पाया।

ब्रजभाषाके रससिद्ध महाकवि बाबू जगन्नाथदास रत्नाकरने जो सूरसागरका सम्पादन किया था वह नागरी प्रचारिणी सभा काशीने छापा तो सही पर उसका समुचित संपादन नहीं हो पाया। इस अवस्थामें परिषद्के सम्पादक-मण्डलने अत्यन्त मनोयोग, निष्ठा, त्याग, तपस्या और अध्यवसायके साथ छह वर्षोंमें यह सटीक सूर-ग्रन्थावली प्रकाशित कर दी जिसमें सूरसागर और साहित्य लहरीकी तो टीका दे दी गई है तथा सूर-सारावली और सेवाफल मूल रूपमें छाप दिए गए हैं। इस पंचम खण्डमें डा० सन्तनारायण उपाध्याय तथा पं० विश्वनाथ मुखर्जीने दुर्लभ और अप्राप्य पदोंकी खोज करके, प्रतिलिपि करके जो घोर परिश्रम किया उसके लिये वे निश्चय ही धन्यवाद और साधुवादके पात्र हैं।

जिन अनेक सहृदय सहयोगियों और मित्रोंने पूर्व ग्राहक बनकर या बनाकर इस पंचम खंडके प्रकाशनमें योग दिया है उनके प्रति हम हृदयसे कृतज्ञ हैं जिनमें श्री भागीरथजी कानोडिया, श्रीनथमलजी भुवालका, श्रीनन्दलालजी टाँटिया, श्रीरामकुमारजी भुवालका; श्रीशान्तिस्वरूपजी गुप्त, स्वर्गीय श्रीकेदारनाथजी अग्रवाल विशेष रूपसे अभिनन्दनीय हैं। इन सभी मित्रों और सहयोगियोंके हम हृदयसे ऋणी हैं।

गंगा-दशहरा **गयाप्रसाद ज्योतिषी**

सं० २०३६ वि० व्यवस्थापक

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संपादक-मंडलकी ओरसे • • •

• • • आत्म-निवेदन

लगभग छह वर्ष पूर्व अखिल भारतीय विक्रम परिषद्के संपादक-मण्डलको तुलसी ग्रन्थावलीके सम्पादनके पश्चात् सूर-ग्रन्थावलीके सटीक सम्पादनका भार भी सौंप दिया गया। सुप्रसिद्ध भविष्यवक्ता, अतीन्द्रिय द्रष्टा, संगीतज्ञ, कवि और काव्यशास्त्री स्वामी सूरदासजी जन्मान्ध थे। उन्होंने सं० १५६७ में महाप्रभु वल्लभाचार्यजीसे दीक्षा लेकर अपनेको श्रीनाथजीकी सेवामें पूर्णतः समर्पित कर दिया था। वे जीवन भर गिरिराज गोवर्धनपर स्थित श्रीनाथजीके मन्दिरसे कुछ दूरपर परासौली गाँवमें चन्द्र-सरोवरके पास निवास करने लगे और वहींसे नित्य नियमसे लगभग ७२ वर्षोंतक निरन्तर श्रीनाथजीकी कीर्त्तन-सेवाके ओसरेपर आते और लौट जाते थे। वे अपना अधिकाश समय अपने ओसरेके अतिरिक्त भी श्रीनाथजीके मन्दिरमें ही बिताते थे। महाप्रभु वल्लभाचार्यजी, उनके पुत्र गोसाईं विट्ठलनाथजी, अपने इष्टदेव श्रीनाथजी, अपनी आराध्या देवी श्रीराधाजीकी सेवामें ही उन्होंने अपना एक एक क्षण बिताता था। अन्य किसीसे भी न उनका लगाव था न सम्बन्ध था। यही उनका एक मात्र लक्ष्य था। वे अपने आराध्य देवोंमें इतने तन्मय हो गए थे कि वे दिनमें कृष्ण नामसे कृष्णके सखा और रातको चम्पकलता नामसे राधाकी सखीके भावमें मग्न रहते थे। उन्होंने जीवन भर कृष्णके सगुण रूपकी लीलाका गान करनेका ही कार्य किया। सूरदासकी यह सब जीवन-पद्धति जाने बिना सूरदासको समझा ही नहीं जा सकता।

सं० १५६७ में दीक्षाके समय महाप्रभु वल्लभाचार्यजीने उन्हें दशम स्कन्धकी अनुक्रमणिका सुनाकर उन्हें श्रीनाथजीके आगे कीर्तन करनेका काम सौंप दिया था। इसके अतिरिक्त उन्होंने अनेक कृष्णभक्तों, सन्तों, विद्वानों, महापुरुषों और पौराणिकोंके सत्संगसे भगवान् कृष्ण और श्रीराधाके सम्बन्धमें जितनी पुराणगत तथा लोक-प्रसिद्ध गाथाएँ सुनीं, जो उन्हें रसमय प्रतीत हुईं और अपनी दिव्य दृष्टिसे जो उन्होंने प्रत्यक्ष लीलाएँ देखीं उन सबको उन्होंने पदबद्ध कर डाला। पुराण, कोष, काव्यशास्त्र, छन्दःशास्त्र और संगीतके अतिरिक्त न जाने कितनी भाषाओं और विषयोंका उन्हें प्रौढ, व्यापक और अथाह ज्ञान था। ज्योतिष-विद्यामें ग्रह, नक्षत्र; वार, तिथि, योग, अंक आदिका उन्हे इतना विस्तृत ज्ञान था जितना हिन्दी-साहित्यमें ही नहीं विश्वके किसी भी कविके साहित्यमें प्राप्त नहीं हैं। उनके काव्यमें, जहाँ पौराणिक व्यक्तियोंसे सम्बद्ध विवरण मिलते हैं वहीं ग्रहों, नक्षत्रों, तारों. तिथियों और अंकोंसे सम्बद्ध जटिल विवरण भी प्राप्त होते हैं। उद्धव और गोपियोंके संवादोंमें हठयोग तथा निर्गुणवादके खोखलेपनकी खिल्ली उड़ाते हुए जो सगुणवादकी पुष्टि की गई है और मथुराके नरों और नारियों, कुब्जा और काले रंगवालोंको जैसी खरी-खोटी सुनाई गई है वह तो अपनेमें अप्रतिम है ही साथ ही विरहका जैसा मर्मस्पर्शी चित्रण सूरदासने किया वैसा दूसरा कोई कर नहीं पा सका। उन्होंने जो अनेक प्रकारके रूपक प्रस्तुत किए हैं उनमें योगी, व्यापारी, शिकारी, मछुए आदिके न जाने कितने पक्षोंको लक्ष्य बनाकर

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उन्होंने सगुणका महत्त्व और गोपियोंके प्रेमकी प्रबल निष्ठा प्रकट की है। कोई ऐसी विद्या, खेल, शिल्प, कला और जीवनका ऐसा पक्ष नहीं बचा रह गया जो उनके दिव्य नेत्रोंसे ओझल रह गया हो।

सूरदासजी मूलतः अतीन्द्रिय द्रष्टा और श्रोता (क्लेयरवौएंट) तथा गायक थे। संसारमें इस प्रकारकी सहज अतीन्द्रिय शक्ति बहुतसे लोगोंको प्राप्त होती है। उसके लिये कोई साधना नहीं करनी पड़ती। वह ईश्वर-प्रदत्त शक्ति होती है जो सूरदासमें भी थी। इसीलिये जहाँ आँखवालोंकी भी दृष्टि नहीं पहुँच सकी या पहुँच सकती वहाँ उनकी दृष्टि पहुँच गई थी।

सूरदासजी अत्यन्त सुकण्ठ गायक और संगीतशास्त्रके धुरन्धर पण्डित थे। वे अपने सब पद समय और ऋतुके अनुकूल रागों और भावके अनुसार गतिवाले तालोंमें बँधकर गाते थे। इसीलिये उनका माधुर्य अपनेमें निराला ही है।

सूरदासजीके पद किसने संग्रह किए इसका कहीं कोई विवरण नहीं मिलता। सूरसागरके दो रूप मिलते हैं—एक स्कंधात्मक दूसरा लीलात्मक। स्कंधात्मक संस्करणमें नवम सर्गका रामचरित (राम गीतावली), दशम स्कंध और विनयके पद तो उन्हींकी रचनाएँ हैं किन्तु अन्य स्कंधोंकी तुकहीन, दरिद्र, वर्णनात्मक शैलीकी रचनाको न जाने कैसे सूरकी रचना मानकर सूरसागरमें अन्तर्निविष्ट कर दिया गया। हमने वह सब अंश परिशिष्टमें इसलिये डाल दिया है कि सूरपर अनुसन्धान करनेवाले शोधकोंको उसका वास्तविक रूप समझनेमें सुविधा हो। लीलात्मक संस्करणकी प्रामाणिकताके सम्बन्धमें प्रथम खंडके प्रारम्भमें ही विस्तारसे विवेचन कर दिया जा चुका है।

सिद्ध गायक, प्रसिद्ध संगीत-शास्त्री, संसिद्ध कीर्तनिया, रस-सिद्ध महाकवि और भावसिद्ध कृष्ण-भक्त सूरस्वामी या सूरदासजी मूलतः अदृष्ट-द्रष्टा, सुकवि और सुकंठ गायक थे। उन्होंने संगीत-शास्त्र और काव्य-शास्त्रका अध्ययन कहाँ; किसके यहाँ किया, यह तो अज्ञात है, किन्तु यह निश्चय है कि उन्होंने व्यवस्थित रूपसे संगीत और काव्य-शास्त्रका गंभीर अध्ययन और अभ्यास किया था। उन्होंने पुराणोंका नियमित श्रवण और मनन किया था, ज्योतिष्में उनकी अप्रतिम गति थी, विशेषतः फलित ज्योतिष् उनकी सहज अतीन्द्रिय दृष्टिका प्रसाद था। ब्रज भाषाके साथ-साथ फ़ारसी, पंजाबी, गुजराती आदि भाषाओंपर भी उनका व्यापक अधिकार था। उन्होंने संस्कृत साहित्य-शास्त्रका तो अध्ययन किया ही था, शब्द-भांडारपर भी उनका असाधारण प्रभुत्व था। हमारे यहाँ कहा जाता है—

अवैयाकरणस्त्वन्धः बधिरः कोषवर्जितः।
साहित्यरहितः पंगुर्मूकस्तर्कविवर्जितः॥

[व्याकरण न जाननेवाला अन्धा, शब्दकोष न जाननेवाला बहरा, साहित्य न जाननेवाला लँगड़ा और तर्क न जाननेवाला गूँगा होता है।] सूरदासजी व्याकरणके पंडित थे या नहीं यह तो नहीं कहा जा सकता, किन्तु उनका कोष और पुराणोंका प्रचुर ज्ञान उनके सूरसागर और साहित्य-लहरीके कूट पदोंसे तथा तर्कका ज्ञान भ्रमर-गीतके संवादोंसे स्पष्ट व्यक्त हो जाता है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'सूर सूर, तुलसी ससी'में सूरको सूर्य और तुलसीको शशी कुछ बड़े-छोटेकी दृष्टिसे नहीं वरन् इसलिये कहा गया है कि जैसे सूर्यका ताप कोई नहीं सह सकता वैसे ही सूरके पदोंका अर्थ लगाना भी लोहेके चने चबाना है ।

सूरदासजी जन्मान्ध थे । उनका संलग्न प्रामाणिक चित्र और हरिरायजीका वक्तव्य साक्षी है कि वे सिलपट अन्धे थे । अतः उन्होंने स्वयं कुछ नहीं लिखा । उनके सहयोगी कीर्तनकारों तथा भक्तोंने जिस प्रकार उनकी रचनाओंका संग्रह किया, वह अत्यन्त अव्यवस्थित है । उन संग्रहकारोंको न तो वर्तनीका ज्ञान था, न भाषाका और न क्रमसे संपादनका । इसलिये सूरसागर किसी निश्चित परिमाण या क्रमका कोई व्यवस्थित ग्रन्थ नहीं है । यह केवल यदृच्छा-संग्रह मात्र है जिसमें पदोंकी भाषा, भाव, वर्तनी, क्रम, पदोंकी संख्या, पदोंके चरणोंका क्रम और उनकी संख्या, उनकी टेक, सब असम्बद्ध है । इसका दुष्परिणाम यह हुआ है कि छपी और हस्तलिखित, सब प्रतियोंके पाठ अत्यन्त अशुद्ध, अक्रम और असंगत हैं । विभिन्न प्रतियोंका मिलान करनेपर ज्ञात हुआ है कि सबमें कुछ न कुछ नये पद मिल जाते हैं और उनमें पदोंकी संख्या ३०० से लेकर ४५०० तक मिल जाती है । एक समानता सबमें अवश्य दिखाई पड़ती है कि सभी संग्रहकारोंने यथासम्भव सभी लीलाओंका समावेश करनेका प्रयत्न किया है, किन्तु लीलाओंके क्रममें फिर भी अन्तर बना रह गया है । कुछ सूरसागरोंमें तो केवल दशम स्कन्ध मात्र ही है । मान-लीला, पनघट-लीला, दान-लीला आदि लीलाएँ कीर्त्तनियोंकी अपनी कल्पना है जिनका भागवतमें उल्लेख नहीं है ।

कृष्ण-लीलाका गान करनेवाले सूरदास भी कई हो गए हैं इसलिये उन सूरदासोंकी रचनाएँ भी हमारे सूरकी रचनाओंमें आ मिली हैं । कुछ रचनाएँ ऐसी भी हैं जो तुलसीदास और सूरदास दोनोंके नामसे मिलती हैं । अतः यह बताना कठिन कार्य है कि वे मूलतः किसकी हैं ।

सूरदासजीकी प्रामाणिक रचनाएँ हैं—सूर-सागर (कृष्ण-लीला-सम्बन्धी पद-संग्रह), सूर-सारावली (सूरसागरकी पद्यात्मक विषय-सूची), साहित्य-लहरी (दृष्टिकूट-शैलीमें साहित्य-शास्त्रका ग्रन्थ), सेवाफल, विनयके पद और रामगीतावली (नवम स्कन्ध)। शेष स्कन्धात्मक रचना अत्यन्त निम्न कोटिकी दरिद्र तुकबन्दी है जिसे किसी अनाड़ी तुक्कड़ने सूरके नामसे चला दिया है। इसीलिये अन्य स्कन्धोंके आरम्भमें 'सूर कह्यौ भागवतानुसार' है किन्तु दशम स्कन्धके आरंभमें आता है—

नव स्कन्ध नृपसौं कहे, श्रीसुकदेव सुजान ।
सूर कहत अब दसमैं, उर धरि हरिकौ ध्यान ।।

सम्प्रदायमें भी लीलात्मक क्रम ही मान्य है ।

सूरदासजीको और परमानन्ददासजीको महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी 'सागर' कहा करते थे, इसलिये सूरकी रचनाओंको भी 'सूरसागर' कह दिया गया । 'जे पद तौ सूर सागरको है' का अर्थ है, यह पद उन महाकवि सूरदास-द्वारा विरचित है जो सागर थे । सम्प्रदायमें उन्हें कीर्त्तनिया ही माना जाता है, कवि नहीं । हम लोगोंने उनके कवि-रूपका इतना डिंडिम घोष कर दिया कि उनका गायक, संगीतज्ञ, कीर्त्तनिया, अदृष्ट-द्रष्टा, काव्य-शास्त्री, पौराणिक तथा दृष्टि-कूट-विधाता रूप पूर्णतः छिप गया ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूर-सारावलीके 'सरसठ बरस प्रवीन'का अर्थ यह नहीं है कि उनका जन्म १५६७ में हुआ था। यह तो उनकी दीक्षाका संवत् है जब (आगरा-मथुराके बीच जमुनाके किनारे) गौघाटपर उन्होंने महाप्रभुसे दीक्षा ली थी। उस समय उनकी अवस्था ३२ वर्षकी थी।

सूरदासके सम्बन्धसे प्रसिद्ध है कि उन्होंने सवा लाख पद लिखे थे। सूरसारावलीमें भी 'एक लक्ष पद-बंद' की बात आई है—

श्रीबल्लभ गुरु तत्त्व सुनायौ लीलाभेद बतायौ॥ ११०२॥
ता दिनतैं हरिलीला गाई एक लक्ष पद-बंद।
ताकौं सार सूरसारावलि गावत अति आनंद॥ ११०३॥

वास्तवमें पद-बन्दका अर्थ एक कड़ी अर्थात् दो पंक्तियाँ हैं, जैसे ग़ज़लके एक शैरको एक 'बन्द' कहते हैं। ३४, राजा सन्तोष रोड, कलकत्तेके श्री हनुमानप्रसाद पोद्दारजीके पास जो सूरसागरकी प्रति है, उसके ४६८ पृष्ठोंमें पद तो १८८१ ही हैं, किन्तु पद-बन्दोंकी संख्या १६००० दी हुई है। इन १८८१ पदोंमें भी ३४२ पूर्णतः नवीन पद मिल गए हैं। इस गणनाके अनुसार सूरदासने लगभग बारह सहस्र पद रचे होंगे। मथुराके पंडित जवाहर लाल चतुर्वेदी कहते थे कि मेरे पास सूरदासके १२००० पद हैं किन्तु वह संग्रह हमें प्राप्त नहीं हो पाया।

सूरदासने सूर, सूरदास, सूरज, सूरजदास और सूरदास स्वामी नामसे रचनाएँ की हैं। वे तथा उनके सखा सब स्वामी कहकर ही संबोधित किए जाते थे। कुछ पदोंमें 'सूर-स्याम' शब्द देखकर कुछ विद्वानोंको यह भ्रम हो गया है कि सूरने 'सूरस्याम'के नामसे भी रचना की है, यहाँतक कि एक कथा ही चल पड़ी कि कृष्णने ही 'सूरस्याम'की छापवाले पद ला जोड़े। किन्तु जहाँ 'सूरस्याम' आया है वहाँ 'सूर' शब्द तो सूरदासके लिये और 'स्याम' शब्द कृष्णके लिये आया है। और फिर, सूरसागर कोई सूरदासके हाथका लिखा ग्रन्थ तो है नहीं। यह तो संग्रह मात्र है, फिर कृष्ण जोड़ते तो कहाँ जोड़ते? सूरदासने कुछ लीलाएँ प्रबन्धात्मक रूपमें भी रची हैं जो छपे हुए सूरसागरोंमें 'दूसरी लीला' के नामसे मिलती हैं जैसे गोवर्धन-लीला, चीरहरण-लीला आदि।

ब्रजभाषामें माई=सखी और मइया (मैया)=माता होता है।

सूरसारावलीके अन्तिम पद-बंदमें फलश्रुतिके रूपमें जो 'सरस समतसर'की चर्चा आई है, वह रचना-कालका निर्देश नहीं है। उसमें 'सरस' शब्द तो 'संवत्सर-लीला'का विशेषण है जिसका तात्पर्य यह है कि "जो व्यक्ति कृष्णकी सरस वार्षिक लीलाओंका गान करेगा, उसे फिर कभी गर्भवासका दुःख नहीं सहना पड़ेगा।"

सरस समतसर लीला गावै, जुगल चरन चित लावै।
गरभ - बास बंदीखानेमें, सूर बहुरि नहिं आवै॥ ११०७॥

संगीतशास्त्रके अनुसार समीक्षण करनेपर ज्ञात होता है कि कुछ पदोंकी टेकें इतनी अव्यवस्थित हैं कि न वे तो अन्तरेके साथ पकड़में आतीं न तालमें आतीं। उनमें शब्द और मात्राएँ या तो अधिक हैं, या कम हैं, या अक्रम हैं। ऐसी टेकें यथासंभव ठीक कर दी गई हैं।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूरदासकी असंख्य रचनाएँ गायकों, कीर्तनियों, पुष्टिमार्गीय पद-संग्रहोंमें बिखरी पड़ी हैं जिनका संग्रह और सम्पादन अत्यन्त आवश्यक समझकर यहाँ कर दिया गया है। संयोगसे उनका कवि-रूप इतना अधिक उभार दिया गया कि उनका गायक और कीर्तनिया रूप पूर्णतः लुप्त हो गया। सम्प्रदायमें तो वे कवि माने ही नहीं जाते, केवल कीर्तनिया और अष्टसखाओंमें एक माने जाते हैं।

सूरको यमक बहुत प्रिय था। 'सारंग' शब्दपर उन्होंने बहुत शब्द-लीला की है। संयोग और विप्रलंभ शृङ्गारके सभी पक्षोंका उन्होंने निर्गुप्त और निःशंक होकर अनेक रूपों और असंख्य परिस्थितियोंमें अनेक रूपकोंके साथ वर्णन किया है। वे दिनमें कृष्णके सखा कृष्ण और रातको राधाकी चम्पकलता (चन्द्रावली) नामकी सखीके भावमें रहते थे। उन्होंने सब लीलाएँ अनेक रूपोंमें स्वयं अपनी अतीन्द्रिय दृष्टिसे देखकर उनका सटीक ज्योंका त्यों वर्णन किया है।

उन्होंने दृष्टिकूट काव्यके रूपमें नन्द-नन्दनदास अर्थात् कृष्णके भक्तों या सखा कृष्णदासके लिये साहित्य-लहरीकी रचना की थी जिसे समझना और जिसका अर्थ लगाना सामान्य वैदुष्यकी बात नहीं है। उनका साहित्यलहरी नामका यह ग्रन्थ काव्यशास्त्रका ग्रन्थ है जिसमें १०६ अलंकार, नायिका-भेद, रस, शब्दशक्ति आदि सबके लक्षण-सहित उदाहरण दृष्टिकूट पदोंमें केशवदास (सन् १५१०)-से बहुत पहले दे दिए गए थे, किन्तु साहित्यशास्त्रके किसी इतिहासकारने आजतक इस दृष्टिसे उसकी चर्चातक नहीं की।

सूरदासकी रचनाओंमें साहित्य-लहरीकी सबसे अधिक उपेक्षा हुई है। यह ग्रन्थ यद्यपि व्यवस्थित रूपसे साहित्यशास्त्रका ग्रन्थ है तथापि न तो किसी भी हिन्दीके इतिहासकारने इसकी गणना साहित्यशास्त्रमें की और न इस दृष्टिसे इसका अध्ययन ही हुआ। वास्तवमें शोधके योग्य सूरका कोई ग्रन्थ था तो यही था किन्तु इसे किसीने हाथतक नहीं लगाया।

इस खंडमें एक अंश सब खंडोंके पाठोंमें आई हुई अशुद्धियाँ, अर्थकी भ्रान्तियाँ तथा छूटी हुई पंक्तियाँ देनेका भी प्रस्ताव था जिसका शीर्षक था 'हमारी भूलें, जिन्हें सुधार लीजिए' और तीन खंडोंका यह कार्य हमारे विद्वान् सहयोगी डा० किशोरीलाल गुप्तने अत्यन्त मनोयोगके साथ किया भी था किन्तु यह विचार किया गया कि जब सूरदासके मूल पाठका कोई ठिकाना नहीं है तब शुद्धि-अशुद्धिका पचड़ा क्यों उठाया जाय और यह कार्य आगेकी पीढ़ीपर छोड़ दिया जाय किन्तु फिर भी जो ज्वलंत भूलें हो गई है उन्हें अन्तमें दे दिया जा रहा है।

इस पञ्चम खंडमें जो नवीन पद दिए गए हैं उनमें बहुतसे ऐसे हैं जिनकी आवृत्ति भी हुई है क्योंकि उनकी टेकों या चरणों या पाठोंमें बहुत भिन्नता है। यद्यपि ऐसे और भी पद थे किन्तु जिनमें एक आध शब्दका उलट फेर था, उन्हें छोड़ दिया गया। सूरदासके पदोंके संग्रह, संपादन, पाठ-शोधन और प्रामाणिक पदोंका चयन बड़ा बीहड़ कार्य है जो किया ही जाना चाहिए किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि सूर-पंचशतीके साथ-साथ सूर-जैसे पुष्ट जीव भी प्रवाह जीव बनाकर बहा दिए जायँगे और कोई नाम-तक लेनेकी कृतज्ञता नहीं प्रदर्शित करेगा।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यद्यपि सूरदासपर अनेक शोध-प्रबन्ध लिखे जा चुके हैं तथापि अभीतक भी सूरदासके पदोंके संग्रहका वास्तविक कार्य हो नहीं पाया है। यद्यपि पुष्टिमार्गी गद्दियाँ और गृहस्थ बड़े सम्पन्न हैं फिर भी उनकी ओरसे इस सम्बन्धमें कोई रुचि नहीं दिखाई गई। विश्वविद्यालय तो इतने बड़े वेदान्ती हैं कि सवा सौ विश्वविद्यालयोंमेंसे केवल ७ विश्वविद्यालयोंने ही सूर-ग्रंथावली मँगाई है। सरकारोंने तो कोई रुचि दिखाई ही नहीं अतः सहसा बिहारीका वह दोहा स्मरण हो आया—

चल्यौ जाइ ह्याँ को करै हाथिनकौ ब्यौपार।
नहिं जानत इहि पुर बसत धोबी ओड़ कुम्हार।

परिषद्ने इस ग्रन्थावलीका सटीक प्रकाशन करके केवल आगेके लिये मार्ग भर खोल दिया है जिससे लोग उसके पाठ और अर्थकी प्रामाणिकताके संबंधमें जमकर विचार कर सकें।

सूर-ग्रन्थावलीके सम्पादन-जैसे अत्यन्त दुरूह, श्रमसाध्य, गहन, जटिल, व्यय-साध्य और समय-साध्य कार्य करनेमें बाधाएँ तो बहुत आईं किन्तु 'अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति' (स्वीकार किए हुए कामोंकी पूरा करना भले लोगोंका काम ही है) इसलिये असाधारण तपस्या करके तन, मन, धन, श्रम, समय, आराम, गृहस्थ-कर्म, लोक-संग्रह सबका परित्याग करके निरालस होकर सूर-पंचशताब्दीके अवसरतक यह महाग्रन्थ प्रकाशित कर ही दिया गया। यह स्पष्ट है कि कोई भी व्यक्ति या समूह अनेक जन्मोंमें भी सूरदासकी कृतियोंका न तो पाठ शुद्ध कर सकता, न समुचित सम्पादन कर सकता, न ठीक टीका ही कर सकता क्योंकि डेढ़ सौसे कुछ ऊपर जो प्रतियाँ हमें प्राप्त हुई हैं उन सबके पाठ अत्यन्त भ्रामक, अशुद्ध, तुक और छन्दके दोषोंसे परिपूर्ण, अक्रम, बड़े-छोटे और अस्पष्ट हैं। टेक तो प्रायः सबकी भिन्न हैं। अनेक स्थल तो ऐसे भी मिले जहाँ विभिन्न प्रतियोंका मिलान करनेपर भी अर्थकी संगति नहीं बैठ पाई फिर भी बहुत परिश्रम करके ब्रज-भाषाके स्वरूपका ध्यान रखते हुए इस सूर-ग्रन्थावलीके सम्पादनका भगीरथ प्रयत्न किया गया और इस विश्वासके साथ किया गया कि आगे कोई न कोई ऐसी संस्था अवश्य उठ खड़ी होगी जो सूरदासके पदोंका पूर्ण संग्रह कराकर उन्हें क्रमसे लगवाकर उनकी और भी पुष्ट टीका कराकर पुष्टिमार्गीं भक्तों और साहित्य-प्रेमियोंको सन्तुष्ट कर सकेगी।

हमारा न तो यही आग्रह है कि हमारा ही पाठ पूर्णतः शुद्ध है न यही कि हमारा किया हुआ अर्थ ही पूर्णतः सटीक है, किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि हमारे सम्पादक-मण्डलने अत्यन्त निःस्पृहता और सत्यनिष्ठाके साथ जैसा सम्पादन-कार्य किया है वैसा पिछले पाँच सौ वर्षोंमें किसीने नहीं किया।

इसके लिये हमें अपने सहयोगी सम्पादकोंपर बड़ा गर्व है। मैं अपने सभी सहयोगियोंको इस पुनीत, महत्त्वपूर्ण, ऐतिहासिक और विराट् कार्यके लिये हृदयसे धन्यवाद और साधुवाद देता हूँ।

गंगा-दशहरा, सं० २०३६ वि०
उत्तर बेनिया बाग,
काशी—२२१००१

सीताराम चतुर्वेदी

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाकवि सूरका वास्तविक चित्र

[डॉ० गोवर्द्धननाथ शुक्ल, अलीगढ़ विश्वविद्यालय]

संवत् २०३५ में देशमें और विदेशोंमें भी आचार्य वल्लभ एवं महाकवि सूरका पंच-शताब्दी-महोत्सव बड़े उत्साहसे मनाया गया किन्तु उनके प्रामाणिक चित्रकी उपलब्धिके लिये कोई जिज्ञासा कहीं नहीं उठाई गई। सूर-पंचशती-महोत्सवपर गठित राष्ट्रीय समितिने भी प्रामाणिकताकी कोई विशेष चिन्ता न करके एक टोपेवाला चित्र अवश्य तैयार करा दिया जिसमें कलाकारकी केवल मानस-कल्पना ही प्रधान है। परन्तु राष्ट्रीय स्तरके उस चित्रकी प्रामाणिकताकी न तो खुलकर चर्चा ही हुई न उसके स्रोतका ही कोई संकेत दिया गया। यद्यपि केवल कंठी और टोपेवाला यह चित्र सूर-भक्तोंके मानस-रूपसे तनिक भी मेल नहीं खाता तथापि 'अभावे शालिचूर्ण वा'के सिद्धान्तके अनुसार इसीपर सन्तोष कर लिया गया। इससे अधिक और हो भी क्या सकता था !

सन् १९५४-५५ में अष्टछापके द्वितीय 'सागर' परमानन्ददासपर जब मेरा शोध-कार्य चल रहा था, तब मेरे मूल निर्देशक (अब स्वर्गीय) श्री द्वारकादासजी परीखने अपने दुर्लभ संग्रहसे मुझे 'सागर' के प्रकाशनके अवसरपर एक चित्र दिया था जिसमें गो० विट्ठलनाथजी (आचार्य वल्लभके द्वितीय कुमार)-के समक्ष आचार्य वल्लभके चार अष्टछापी शिष्य—कुंभनदास, सूरदास, कृष्णदास, परमानन्ददास—करबद्ध मुद्रामें एकके पीछे एक खड़े हैं। गो० विट्ठलनाथजीके पीठ पीछे मोरछल लिए एक खवास भी खड़ा है। स्व० परीखजी-द्वारा प्रदत्त यह चित्र गुजरातमें जलालपुरके

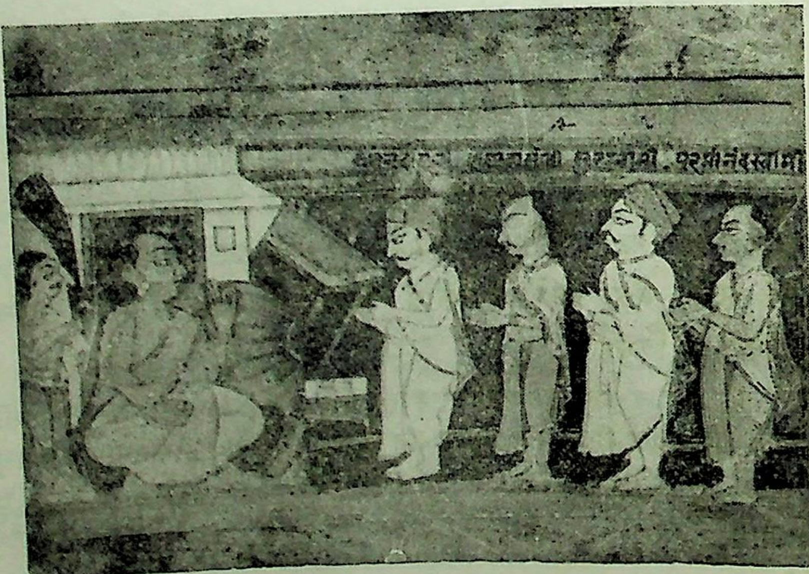

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उसे मकानका भित्ति-चित्र था जिसमें उस मकानके निवासी श्री रामकृष्ण नामक अपने एक सेवकको पुष्टिमार्गीय दीक्षा देनेके उपरान्त गो० विट्ठलनाथजीने वहाँ कुछ दिन निवास भी किया था। सम्भवतः उन्हीं दिनों रामकृष्णके सेवक वीठलदास खवासने अपने स्वामीकी बैठककी भित्ति-पर उनके दीक्षा-गुरु विट्ठलनाथजीका यह चित्रांकन कर दिया। दीक्षाकी यह घटना संवत् १६२० की है। उस समयतक श्रीनाथजीके ये चार कीर्तनकार ख्यातिके सुमेरुपर पहुँच चुके थे और विट्ठलनाथजीके अपने चार अष्टछापी शिष्योंकी अपेक्षा उनके अधिक सम्मान्य और दुलारे थे। यही कारण था कि खवासने भित्तिपर चित्रांकनमें गो० विट्ठलनाथजीके समक्ष उनके प्रेमास्पद कीर्तनकारोंको ही चित्रित किया। वीठलदास खवास जहाँ एक ओर अच्छे भित्ति-चित्रकार सिद्ध होते हैं वहीं लिखावटसे अधिक पढ़े लिखे नहीं लगते। चित्रमें प्रत्येक कविके ऊपर उसका नाम दिया गया है। हाँ, सूर स्वामी और कृष्णदासके नामोंमें भूलसे उलट-फेर हो गया है जिसे एक बाण-चिह्न-द्वारा ठीक कर दिया गया है। भित्ति-चित्रके नीचे उन्हीके हस्ताक्षरोंमें लिखा है—

॥ ० ॥ श्री आचार्य महा प्रभूके सेवक कृपा पात्र भगवदी ॥ ॥
॥ कुंभनदास जी कृष्णदास जी सुर स्वामी परमानन्द स्वामी ॥ ॥
॥ रामकृष्ण कृपा पात्र भगवदी विठल दास खवास ॥ ० ॥

अपने शोध-प्रवन्धके प्रथम भाग—परमानंदसागरके प्रकाशनके अवसरपर सन् १९५५ में मैंने परमानन्ददासजीका चित्र अलगसे निकलवाकर उसका ब्लौक बनवाकर ग्रंथमें दे दिया था। वर्षों उपरान्त मथुराके सुप्रसिद्ध इतिहासविद् एवं ब्रजभाषा - काव्यके विद्वान् पं० बालमुकन्द चतुर्वेदीने जब अपना सप्ततरंगात्मक सूरसागर संपादित किया तब उन्होंने प्रामाणिकताकी दृष्टिसे अपने ग्रन्थमें वही चित्र परिचय-सहित छापा था। परीखजीको तो मूल चित्र उसी समय लौटा दिया गया था किन्तु उसी समय उसकी कई प्रतियाँ करवा ली गई थीं। चतुर्वेदीजीके संस्करणमें ४१ वें पृष्ठपर यह चित्र आज भी देखा जा सकता है। श्रीपरीखजी चूंकि डभोईके रहने-वाले थे अतः चतुर्वेदीजीने उसे भूलसे डभोईका भित्तिचित्र लिख दिया जो संशोधनीय है।

आचार्य वल्लभके चार शिष्योंके साथ गो० विट्ठलनाथजीके चित्रित होनेके कारणका ऊपर संकेत दिया जा चुका है। वैसे भी संवत् १६०२ में अष्टछापकी स्थापनाके बाद गो० विट्ठल-नाथजी अपने पिताके शिष्योंको ही अधिक महत्त्व देते रहे थे। कृष्णदास अधिकारी-द्वारा उनका श्रीनाथजीके मन्दिरमें प्रवेश वर्जित कर दिए जानेपर भी वे कृष्णदासपर कृपा बनाए रहे। इसमें उनका चरम शील स्वभाव तो कारण था ही, अपने पिताकी मर्यादाका आदर-भाव भी निहित था। अतः स्पष्ट है कि गो० विट्ठलेशके मनमें अपने पिताके इन कीर्तनकार शिष्योंके प्रति कितना गहरा स्नेह-भाव था।

गुजरात प्रान्तके जलालपुर निवासी रामकृष्णका दीक्षा-काल विट्ठलनाथजीकी जीवनीमें सं० १६२० दिया हुआ है। गो० विट्ठलनाथजीने सं० १६०० से १६३८ तक गुजरातकी छह यात्राएँ की थीं। इन यात्राओंमें ये शिष्य प्रायः साथ रहते थे। ब्रजसे चलकर द्वारकातक पहुँचते-पहुँचते वे गुजरातमें अनेक स्थानोंपर कहीं निवास, कहीं विश्राम करते हुए भक्ति-प्रचार करते जाते

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

थे। इन स्थानोंमें वडाली, वसई, ईडर, छाला, गोधरा, वडनगर, विसनगर, पाटण, धोलका, नशनगर (जामनगर), सिद्धपुर, मेहसाणा, जलालपुर, गोकरिया, रूपपुरा, महुवा, अमरौली, नडियाद, उमरेठ आदि स्थानोंपर रहकर सेवकोंको दीक्षा देते हुए वे साम्प्रदायिक सेवा-मार्गका प्रचार भी करते चलते थे।

जलालपुरके रामकृष्णका दीक्षा-काल सं० १६२० कहा जा चुका है। उस समय गो० विट्ठलनाथजीका वय ४८ वर्षका था। चित्रमें इस वयकी अनुरूपता देखनेको भी मिलती है। यह यात्रा गढ़ासे द्वारका-तक हुई थी। इस यात्रामें ये चारों शिष्य साथ रहे ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है। सूरदास, परमानंददास, कुंभनदास आदि इस समय-तक पर्याप्त लोकप्रिय और कीर्तनकार भक्तोंकी प्रथम श्रेणीमें गिने जाने लगे थे। खवास वीठलदासने अपने स्वामी रामकृष्णके नित्य दर्शनके लिए उनके गुरुदेव गो० विट्ठलेशजीको चारों लीला-गायकोंके साथ भित्तिपर आलिखित कर दिया।

यही चित्रकी मूल कहानी है। चित्रका रचना-काल संवत् १६२० ऐतिह्य प्रमाणोंसे भी सिद्ध हो जाता है। चित्रमें साम्प्रदायिक पद्धतिकी छापपर भी विचार आवश्यक है। इस भित्ति-चित्रमें खवासकी वेशभूषा, मोरछल करनेका तरीक़ा, गावतकिया, गो० विट्ठलनाथजीकी अनोसर (मध्याह्न विश्राम)-के समयकी विशिष्ट वेशभूषा एवं बैठनेकी मुद्रा, अष्टछापी कवियोंकी वेशभूषा, सूरकी कंठी-उपरणा, नाभिसे ऊपर धोती बाँधनेकी साम्प्रदायिक विशिष्ट शैली, चोटी आदि समी सम्प्रदायानुकूल है। चित्रमें सूरके नेत्र 'सपाट' दिखाए गये हैं जैसा कि गो० हरिरायजीके चौरासी वैष्णवनकी वार्ताके टिप्पण 'भावप्रकाश' में स्पष्ट लिखा मिलता है। अतः चित्रकी प्राचीनता और प्रामाणिकता स्वयं बोल रही है। वीठलदास खवासने चित्रका परिचय भी स्वयं लिखा है। लिखावटकी फोटो स्टैट कॉपी भी प्रामाणिकताकी दृष्टिसे अलगसे करवा ली गई है। संक्षेपमें १७वीं शताब्दीका भित्तिपर आलिखित सूरदासका यही एक मात्र प्रामाणिक चित्र है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विचक्षण गायक, अतीन्द्रिय दिव्य द्रष्टा, काव्य-शास्त्रके धुरन्धर पंडित, कूट पदोंके एक मात्र स्रष्टा, अष्टछापके अष्ट सखाओंमें प्रमुख कीर्त्तनिया

भक्त-प्रवर स्वामी सूरदासजी

जन्म सन् १४७८ ई०--गोलोकवास सन् १५८२ ई०

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

५

सूर-ग्रन्थावली

[चतुर्थ खंडके परिशिष्ट ३, पृष्ठ सं० ११५ से आगे]

भजि सखि ! भाव - भाविक देव । कोटि साधन करौ कोऊ तउ न मानत सेव ॥
धूमकेतु - कुमार माँग्यौ, कौन मारग प्रीति । पुरुषतैं तिय -भाव उपज्यौ, सबै उलटी रीति ॥
बसन भूषन पलटि पहिरे भावसौं संजोय । उलटि मुद्रा दई अंगन बरन सूधे होय ॥
बेद - बिधिकौ नेम नहिं जहँ, प्रेमकी पहिचान । ब्रज - बधू बस किए मोहन चतुर, सूर, सुजान ॥
॥ ५३६५ ॥

सूचना—१. कुछ पदोंकी संख्यामें व्यतिक्रम इसलिये है कि जो पद दुबारा आ गए थे उन्हें निकाल दिया गया जिनके साथ उनकी संख्या भी निकल गई ।

२. चतुर्थ खंडके सब अंशोंकी जोड़ी हुई पृष्ठ संख्या २६२० के पश्चात् इस खंडकी पृष्ठ-संख्या प्रारंभ हुई है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

[संगीत-राग-कल्पद्रुमसे]

तैं निसा लाल - सँग रति मानी । राग भैरव : चौताल
सिथिल बसन कटि केस बिराजत । पग डगमग परत न सूधे मैं जानी ।।
यह छबि मो मन भाई न मिटिहै । आनन सुदेस बोलत कछु अटपटात बानी ।।
चंचलताई पीक-लीक पलक लगानी । सूरदास-प्रभु, रीझि रहे धन्य धन्य नवकुंज रानी ।।५३६६।।

हरे हरे कृष्न कृष्न राम राम राम । भैरव : एकताल
नारायन वासुदेव गिरिवरधर स्याम । दीनबंधु दीनबंधु बैकुंठहि धाम ।।
होत प्रात अति पुनीत हरिको लै नाम । दामोदर चक्रपानि नरकेहरि मुरारि ।।
मधुसूदन मधुसूदन साँवर बनवारि । जमुनाके नीर तीर बृंदाबन धाम ।।
सूर, स्याम रटत रटत राधावर नाम । भोर जागि सुमिरन करु होवै सब काम ।।५३६६।।

देखौ री ! इक बाला जोगी तेरे द्वारे आयो है । भैरव : तिताल
दिग अंबर ओढ़े बाघंबर सीस नाग लपटायो है ।।
माथेपै है तिलक चंद्रमा जोगी जटा बढ़ायो है ।
भीतरतैं निकसीं नँदरानी मोतिन थार भरायो है ।।
भिच्छा लेइ जाउ आसनकौं बालक अतिहि डरायो है ।
ना चाहौं मैं दुनिया दौलत, ना चाहौं यह मायो है ।।
लै आवौ अपने बालककौं मैं दरसनको धायो है ।
पाँच बेर परकरमा करिकै सिंगीनाद बजायो है ।।
देवकिनंदन कंसनिकंदन जसुदा-लाल कहायो है ।
स्रवन लागि कछु मंत्र सुनायौ हँसि बालक किलकायो है ।।
सूरदास - प्रभुकौ दरसन करि, संकर नाम बतायो है ।
(सूरदास-प्रभुके दरसनकौं जसुमति पलन झुलायो है ।।) ।। ५४०० ।।

नंदकुमार ! भोर भौ उठिए, उठौ जगावति हैं नंदरानी । भैरव : तिताल
झारीके जल बदन पखारौ, सुत मेरौ हौ सारंग - पानी ।।
माखन रोटी अरु मधुमेवा जो भावै सो लीजै आनी ।
सूर, स्याम - मुख निरखि जसोदा मन ही मन अतिही सुख मानी ।। ।।५४०१।।

खेलु अँगन छगन मगन कीजिए कलेवा । भैरव : दादरा
केत सार दधि साढ़ी ऊपरतैं काढ़ि धरी । झिंगुली लै पहिरु फेंट बाँधि लेहु मेवा ।।
ग्वालन सँग खेलतकौं भूखहू भुलाइ जाहु । कौन परी ललन तुम्हें निसिदिनकी टेवा ।।
सूरदास, मनमोहन घरहीमैं खेलु लाल । भौंरा चकडोर देउँ हंस अरु परेवा ।। ।।५४०२।।

प्राननाथ प्रात भयौ, जागौ, बलि जाऊँ । सोनकेरि गोफनसौं, बेनि मैं गुंथाऊँ ।। भैरव : दादरा
उगत सूर जोति भई, कुलह मैं बनाऊँ । पाँयँ बाँधि घुँघुरनकौं नाचिबौ सिखाऊँ ।।
सूरदास, मनमोहन तेरौ गुन गाऊँ । हरषि निरखि छबि ऊपर बलि बलि मैं जाऊँ ।। ।।५४०३।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इक कर दर्पन इक कर अँचरा, कजरा सँवारत मुख - कालिख दूरि करत ॥ टोडी
दूरि करति है मुख कालिख पै, उलटि भँवर फिरि आइ कमलन परत ॥
सीसफूल नगयुत अति राजत, कहो सीसमनि सेष मनो बरत ॥
करनफूल कर्ननहि सँवारति, अलक निवारि लिलार बंदन करत ॥
सूर, स्याम दुरि देखत दर्पन, मुख इकटकतैं पुलकहू न टरत ॥५४०५॥

टोडी

कान्ह कामरी काँध हाथ लै लटकी गइयन घेरै हो । बृंदाबनमैं धेनु चरावै धौरी धूमरि टेरै हो ॥
वेनु बजाय रिझाय लियौ मन, जह तहँ बन-बन फेरै हो । सूर, स्याम त्रिभुवन - पति मोहन पीतांबर फरहेरै हो ॥५४०६॥

गुर्जरी

दीनबंधु दीनानाथ याहितैं कहाए हो ।
जैसे द्वारकामैं तुम द्रुपदीकी टेर सुनी । ऐसे तुम गज काज नंग पाँय धाए हो ॥
जैसे तुम गनिकाके औगुन न गने नाथ । ऐसे तुम भिलनीके जूठ बेर खाए हो ॥
जैसे तुम भारतमैं भीषमकी प्रन राख्यौ । बंधनतैं राजनकौं जाइकै छुड़ाए हो ॥
मेरी बेर एती देर कहाँ कान मूँदि रहे । असरन-सरन - नाथ, सूर मन भाए हो ॥ ॥५४०७॥

धनाश्री : तिताला

गिरधारीसौं जाय कहौ रे ! बिनु देखे कल परत न ऊधौ ! अब तौ ब्रज ही आनि रहौ रे ॥
इहि बृन्दावन कुंजलता इहिं, रास केलि मन मान गहौ रे ॥
सूर, स्याम - बिनु कछू न भावै । बूड़त बिरहिनि बाँह गहौ रे ॥ ५४०८ ॥

मुलतानी धनाश्री : तिताल

महाप्रभू नरसिंह आरोग । छप्पन भोग छतीसो ब्यंजन नाना बिधिके भोग ॥
लछमी भोजन आप सुधारै मनमहँ बहुत अनंग । पनवारौ नारद मुनि ल्याए, जल भरि ल्याई गंग ॥
भाव प्रीति करि भोजन कीजै तुम ही प्रान आधार । अंतर घटके अंतरजामी सब बिधि जाननहार ॥
आरति साजि इन्द्र लै आयौ, दिय कुबेर पट चीर । सनक सनंदन चँवर ढुरावैं जन प्रहलादहि तीर ॥
गावत सूरदास यह लीला निज जन हरु भव-भीर । अब हौं सरन तिहारी आयौ राखौ प्रभु बलबीर ॥ ॥५४०९॥

विहाग : तिताला

निठुर अति या मधुबनके लोग । बेगि पठै दै स्यामसुँदरकौं सब ब्रज बिरह बियोग ॥
ना जानत तुम ऐसी करिहौ प्रीति करी धौं जोग । सूरदास-स्वामी मिलिबेकौं कब बनिहै संजोग ॥ ॥५४११॥

विहाग : तिताला

रासहि खेलत हैं प्रिय-प्यारी । सुभग बिलास बृँदाबन कुंजन रास करत बनवारी ॥
बाजत ताल मृदंग झालरी सुरमंडल सुखकारी । जैजैकार होत बसुधामैं गावत हैं सुर भारी ॥
नृत्यत प्रभु कालिंदी तटपै लै सिगरी ब्रजनारी । चतुर-सिरोमनि जुगल जोरिपै सूरदास बलिहारी ॥ ॥ ५४१२ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हमरी आँखिनके ये तारे । विहाग : तिताला
राधा-मोहन, मोहन-राधा, ये दोउ रूप उज्यारे । गौर-स्याम अभिराम मनोहर ब्रज-बरसाने-वारे ॥
सुक, सारद, नारद बलिहारी उपमा बरनत हारे । सूरदास, निज प्रभु-दरसनकौं बार बार बलिहारे ॥
॥ ५४१३ ॥

पलना गढ़िकै ल्याउ बढ़ैया । अगर चँदनकौ गढ़ौ पालना, झूलै कृष्न कन्हैया ॥ भैरवी : जंगला
मुतियनकौ है बन्यौ पालनौ सुंदर रतन जड़ैया । सूरदास-प्रभु पलना झूलैं, जसुमति लेत बलैया ॥
॥ ५४१४ ॥

फिरि बंसी बाजी री सजनी । भैरवी : तिताला
बृंदाबन द्रुम कुंजनमैं सखि! लाज गई तजनी । गुरुजन पुरजन छाँड़े सोवत छाँड़ि दई लजनी ॥
चाँदनि रात छिटकि रहि तारे बहुत गई रजनी । सूरदास-स्वामीके दरसन, चरन-कमल भजनी ॥
॥ ५४१५ ॥

राम भजै सो बड़ा साहु है, काम भजै सो है बड़ चोर । भैरवी : तिताला
तन, मन, धन कछु थिर न रहैगौ, काहे हूजिय इतौ कठोर ।
ते धनवंत, तेइ सुखवंता, कृष्न नाम जपते निसि भोर ॥
काम क्रोध मद लोभ मोहमैं विषय बासना लागी डोर ।
सूरदास - प्रभु सुमरिन करिलै नाहिंत जइहौ जमकी पोर ॥ ५४१६ ॥

रोवत आजु बाल जसुदाकौं । भैरवी : तिताला
ललित खिलौना ल्याइ लालपै मचलि फिरत आँगन नंदाकौ ॥
लेति उठाय, परत गिरि धरनी, मरम न जानै तनकौ मनकौ ।
अतिहि रिसाय उठी नँदरानी रार करत है अब ये लरकौ ॥
नँदकी बाँह पकरि दिखरावत सैनन माँगि चंद नंदाकौ ।
कंचन थारि बारि भरि ल्याई पकरि लेहु चंदा नंदाकौ ॥
सूरदास, छबि देखि मगन भे, यह सुख पावत जन नंदाकौ ॥ ५४१७ ॥

बंसीवारेसौं रति जोरी । लोग कहैं सो कमरीवारौ मेरौ लाख-करोरी ॥ झिंझौटी : तिताला
लोक-लाज कुलकानि सबनकौं लै जमुनामैं बोरी । सूरदास-प्रभुतैं मिलिबेकौं अबिचल रहु यह जोरी ॥
॥ ५४१८ ॥

औसर बार बार नहिं आवै । जो जानौ सो करौ भलाई कोऊ दुःख न पावै ॥ झिंझौटी : तिताला
गोधन जोबन सबही झूठे कोऊ काम न आवै । तन छूटे धन कौन कामकौ काहे कृपिन कहावै ॥
जाकौ मन ठाकुरसौं साँचौ, ताकौ झूठ न भावै । सूरदास-प्रभुके दरसनकौं बिमल बिमल जस गावै ॥
॥ ५४१९ ॥

झिंझौटी : तिताला
कृष्नचंद्र गोपाल आजु तौ तेरे हाथ बिकाइ । मोर मुकुट बैजन्ती माला पीतंबर फहराइ ॥
दीन जानिकै दरसन दीजै किरपा कीजै काज । सूर पतित अपनौ करि लीजै, बाँह गहेकी लाज ॥
॥ ५४२० ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऊधौ! करमन-हीकौ दोष। ऐसी प्रीति ललनकी ढरि गइ ज्यौं आँसू अरु ओस ॥ झिंझौटी : तिताला
ऐसी चंद्रमुखी जब कुबरी नाहिं कृष्नकौ दोष। सूरदास, यह भाग हमारौ मिटत न जियकौ रोष ॥
॥ ५४२१ ॥

झिंझौटी : त्रिताला

नैंकु चलौ तिहिं लगि नँदरानी। देखौ निज सुतकौ कौतुक तुम दूध मिलावत पानी ॥
हमरे सिरकी सुरँग चुनरिया लै गोरसमैं सानी। अनरस रीति कहाँ कह तुमसौं दिखरावत है ज्ञानी ॥
केतौ समुझायौ समुझत नहिं अपनी बातैं ठानी। सूरदास, ऊसरकी बरषा, थोरेमैं इतरानी ॥
॥ ५४२२ ॥

देखि आजु आली ! ब्रजराज कुँवर आवै। झिंझौटी : दादरा
केसरकौ तिलक भाल, बारिज लोचन बिसाल, मंजु गुंजमाल गरे मुरलिकौ बजावै ॥
कंबु कंठ अति अनूप, नटवर नव जलद रूप, भुज सुखकर सदन बदन, मदन कुल लजावै ॥
बरनत सुर, नर, महेस, दिनपति, गौरी, गनेस, हरि-चरनन महिमाकौं सूरदास गावै ॥५४२३॥

झिंझौटी : त्रिताल

स्याम मनमानी भइ कुबजा पटरानी अब तीन लोक नहिं कोउ कुबरीके समकी।
उनकौं बर आसन सिंघासन पटंबर दै हमकौं लिखि भेजि पाति जोगके रसमकी ॥
उनको सुख-सेज्या अरु मानदान सिगरौ सुख हमकौं है भेजी यह पोटली भसमकी।
सूरदास, हरि वाहि चरननके दास बने आई ब्रज गोपिनकौं तु खरची खसमकी ॥
॥ ५४२४ ॥

झिंझौटी : तिताला

इनमैं कौन राधिका रानी। बूझति हैं रुकमिनि सखियनसौं प्रेम बचन मृदु बानी ॥
नीलंबर जाके उर सोहै मुखपै लट लपटानी। सोइ वृषभानुसुता है कहियत, दै अंचल मुसकानी ॥
रसके बस कीन्हे मनमोहन सुनिकै यह मृदु बानी। ये अँखियाँ दरसनकी प्यासी मीन जथा बिनु पानी ॥
सिव, ब्रह्माहू पार न पावै तैसी ये महरानी। सूरदास-प्रभुसौं यह कहियौ हरिके हाथ बिकानी ॥
॥ ५४२५ ॥

सखि री ! स्याम बिना ब्रज सूनौ। झिंझौटी : धीमा तिताला
भरमत चित्त उदास रहत नित, बार बार सिर धूनौ। यहै अँदेस रहै नित ऊधौ! यहै बात तुम गूनौ ॥
सोवत कैसे एक सेजपै कृष्न-कूबरी दूनौ। कीधौं लिए फिरत वे साथै कीधौं खाट खटूनौ ॥
कीधौं नायक होत कूबरी मोहन होत नगीनौ। सूरदास-प्रभु ब्रज कब अइहैं, मिलि बिछुरन हरि कीन्हौ ॥
॥ ५४२६ ॥

जे न बिसारैं मोकौं ऊधौ ! तिन न बिसारूँ पाव घरी। झिंझौटी : तिताला
जो मोहनकौं भजैं ताहि मैं भजौं, यहै बस टेक परी ॥
वै मेरे मैं उनकौ ऊधौ ! भगत हेत मैं देह धरी।
काटौं जनम जनमके फंदा लै राखौं बैकुंठपुरी ॥
ध्रुव प्रहलाद रैनि-दिन ध्यावैं गुपुत रही सो प्रगट करी।
भारतमें भरदुलकौ अंडौ राखि लियौ गजघंट-तरी ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दुरजोधनकी कुटिल सभामैं दु:सासन जब चीर धरी।
सुमिरन करत द्रुपद - तनयाके चीर बढ़ायौ आपु हरी ॥
अंबरीष - धर गे दुरबासा, चक्र सुदर्सन भ्रमत फिरी।
सूर, स्याम गजराज उबारे, कृपासिंधु गोपाल हरी ॥ ॥५४२७॥

मधुकर! हम हैं स्याम-बियोगी। बिछुरन भए मिलन कब ह्वैहैं नदी-नाव संयोगी ॥ झिंझौटी-सिंध जंगला।
नंदनँदन मधुबनहिं सिधारे, अंत बटाऊ लोगी। देखत लोग हँसैया सारे सुख-संपतिके सोगी ॥
मुख पीरौ, कारौ तन मधुकर, कली कली रस भोगी। सूरदास, कब फिरि ब्रज अइहैं करिहौं प्रभु-सँग जोगी ॥
॥ ५४२८ ॥

जय नारायन ब्रह्मपरायन श्रीपति कमला-कन्तं। नाम अनन्त कहाँ लगि बरनौं सेष न पार लहन्तं ॥
मच्छ, कच्छ, सूकर, नृसिंह प्रभु, बामन रूप धरन्तं। परसुराम अरु रामचन्द्र ह्वै लीला कोटि करन्तं ॥
ह्वै बलदाऊ दैत्य सँहारे कंसहि केस गहन्तं। जगन्नाथ ह्वै जगमग चितवैं बैठे हैं निरवन्तं ॥
कल्की ह्वै हरिए कलंक ज्यौं जगदीसं गुनवन्तं। दसमस्कन्ध भागवत गावै रूप सरन भगवन्तं ॥
परब्रह्म पूरन पुरुषोत्तम आगम निगम भनन्तं। सूरदास - प्रभु पार न पावत अलख अनादि अनन्तं ॥
॥ ५४२९ ॥

मइया ! झूठे दोष लगावतिं। जंगला : तिताल
हौं वाकौ घर कबहुँ न देख्यौ दैन उरहनौ आवतिं ॥
जहँ मैं फिरत गैल ग्वालन-सँग, तहँतैं पकरि मँगावतिं।
सब ग्वालिन मिलि घेरि घेरिकैं बरबस मोहिं नचावतिं ॥
तोसौं झूठ-साँच कहिबेकौं मुख दधि - लेप लगावतिं।
कर गहि पकरि चोरकी नाईं तोकौं आनि दिखावतिं ॥
भेद स्यामकौ मरम न जानत बातैं बहुत बनावतिं।
सूरदास, ये चाल अटपटी जसुदहिं बहुतै भावतिं ॥ ५४३० ॥

जंगला : एकताल

केते दिन सुमिरन-बिनु खोए। परनिंदा रसनाके रसमें अपने पातर भोए ॥
बिबिध बनाव कियौ या तनकौ मलि मलि बस्तर धोए। तिलक बनाय चले स्वामी ह्वै विषयिनके मुख जोए
काल अचानक झपट्यौ सिरपै ब्रह्मादिक सब रोए। सूर अधमकी कौन चलावै, उदर भरेपै सोए ॥
॥ ५४३२ ॥

धिक जीवन नहिं प्रभु जाना हो। मुलतानी तथा जंगला : तिताल
ऐसेहि ऐसे दिन खोए तुम कैसे चतुर सुजाना हो।
करि लै हेत लाल मोहनसौं मधुर मधुर सुर गाना हो ॥
जीवन तबै सुफल होवैगौ जब हरि-हाथ बिकाना हो।
सूरदास, भगवन्त भजन-बिनु फिरि पाछे पछिताना हो ॥ ॥ ५४३३ ।

सुनि सखि ! बिलमि रहे कहुँ कान्हा। सिंधु : तिताला
हमकौं कह्यौ बिछावौ पलँका वहै बात हम माना ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आवन दै पिय अबकि बार कहुँ नित उठि ठगि ठगि जाना ।
सब सिंगार बतीसौ अभरन अंग सजे मन ताना ॥
हँसि खेलत ब्रजकी सखियनसौं करिहै कहा बहाना ।
सुंदर स्याम कमलदल-लोचन नंद महरकौ छाना ॥
मोर मुकुट पीतंबर सोहत कुंडल झलकत काना ।
साँवर मुखपै तिलक बिराजै जासौं मेरौ ग्याना ॥
बेनु बजावत गावत नीके मोहे हमरे प्राना ।
सूरदास - प्रभुके दरसनकौं चरन-कमलमैं ध्याना ॥ ॥ ५४३४ ॥

पैंजनियाँ पग पाँइ मनोहर । सिंधु : तिताला
चलत स्यामघन बाजत राजत निरखि बिनोद मगन सब सुरबर ॥
मन मन मुदित जसोदा रानी पाछे फिरत गहे अँगुरी कर ॥
मनो धेनु बन छाँड़ि बच्छ - हित प्रेम - पुलकि पय स्रवत पयोधर ॥
कुंडल लोल कपोल बिराजत, लटकत ललित लटैयाँ भूपर ॥
सूरदास, अवलोकनकौ सुख किलकत हँसत कान्ह अपनैं घर ॥ ॥ ५४३५ ॥

नामको अधारा तुव नामकौ अधारा । सिंधु : दादरा
भगतनकौ पच्छ कियौ आनि खंभ फारा । हिरनाकुस मारि जु प्रहलादकौं उबारा ॥
मेरि मेरि करत फिरत रैनि दिन बिसारा । रामनाम छाँड़ि और धन्धकौ पसारा ॥
हस्तीके तोरि दंत कंसकौ पछाड़ा । द्रुपदीकी लाज राखि अछै चीर बाढ़ा ॥
कंदुक लगि कूद परे कालिनाग तारा । भिलनीके बेर खाइ कीन्हों निस्तारा ॥
दुष्टन दल निदरि मारि संतन उद्धारा । लंकागढ़ घेरि राज छिनकमैं बिगारा ॥
सूरदास, सुरति लागि रामहि रखवारा । मोर मुकुट सीस धरे नंदको दुलारा ॥
॥ ५४३६ ॥

मन मस्त भया तव क्यूं बोलै । सिंधु काफ़ी : तिताला
घटता था जब चढ़ा तराजू पूर भया तब क्यूँ तोलै ॥
हंसा पायौ मानसरोवर मोती तजि काँकर अब को लै ।
तेरा साईं अंतर माहीं बाहर नैना क्यों खोलै ॥
इत उत काहैं भटकत मनुवा कृष्न नाम भज अनमोलै ।
सूर, सिंधु नित रहत भऱ्यौ है ताल तलैया क्यौं डोले ॥ ॥५४३७॥

मुलतानी : त्रिताल
मोहन ! जाने दे जल आनी । रोकत टोकत बाट घाटपै कैसे भरिहौं पानी ॥
अँचरा पकरत झकझोरत हौ करौं नंदकी कानी । सूरदास, कैसे ब्रज बसियइ करत आनकी आनी ॥
॥ ५४३८ ॥

केदारौ : तेवड़
तुम्हरौ बचन मेटि न जाइ ? परम नाथ कृपाल सिद्ध सुजान जादौ - राइ ॥
कहत पठवन बदरिकास्रम गूढ़ ग्यान सिखाइ । सकुचि साहस करत मन पै, चलत परत न पाइ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पताकाके दंडलौं तन लियौ संग लगाइ। कहा करि चित चरन-सनमुख बसन पौन नसाइ ॥
मम हिये नहिं हृदयके गुन, कठिन सर्व सुभाइ। सूर, सूखे बचन सुनिहू हियौ खंड न थाइ ॥
॥ ५४३९ ॥

केदारा : तिताला

करुनासिंधु कृपालु हरीसौं अब हौं कहा कहौं। प्रभु अंतरजामी सब जानत यह सुनि सोचि रहौं ॥
आयसु देत, जाहु बदरी-बन कहनौ कियौ चहौं। बिनु मन-बुद्धि, देह जडकौ मैं कैसै लै निबहौं ॥
समुझि आपनी करनि गुसाईं क्यौं नहिं सूल सहौं। मैं इहिं ज्ञान छली ब्रजबनितन कियौ सु क्योंन लहौं ॥
प्रगट पाप तन ताप सूर-प्रभु ! कापै हठहिं गहौं। अब उर बीच बिबेक अनल भरि बिरह-बिथाहिं दहौं ॥
॥ ५४४० ॥

कहँलौं गनुँ गुन कान्ह तिहारे। धनाश्री : तिताला

कृपा करी पाँचौं पांडवपै जहँ तहँ काज सँवारे। काल-कूट, लाखागृह राखे, पन्नग गए उबारे ॥
रोह बेध पन कर्‍यौ प्रगट करि गुपुतहिसौं रिपु मारे। करषत सभा द्रुपद तनयाकौं अंबर आपु सँवारे ॥
कौरव कुलहिं सँघारि, दियौ सुख, ये सब काज तिहारे। असुर जीति, नृप किए आपु-बस पारथके रखवारे ॥
भारतसिंधु, कृपासौं हित करि खेइत पार उतारे। सूरदास, कुंती जस बरनत हरि सतलोक सिधारे ॥
॥ ५४४१ ॥

ध्रुव छह मास तपस्या कीनी। राग नट : तिताला

वासुदेव भगवंत नमो है, यह कहि कहि रसना रँग-भीनी ॥
सुष्कपत्र तरुवरके खाए, जल अरु पौन भच्छ प्रन लीनी।
नारद मुनि उपदेस दियौ जब, गुह्य ग्यान मन लियौ प्रबीनी ॥
निसि दिन हरिकौ ध्यान धर्‍यौ दृढ, तत्त्व ग्यान हिरदैमैं चीनी।
सूर, स्याम प्रभु सीघ्र प्रगट भे, अचल राज हरि ध्रुवकौ दीनी ॥ ५४४२ ॥

कैसे धीर धरौं ऊधौ ! तुम जोग सिखावन आए। घनाश्री : तिताला

एक समै हरि इन करननमैं करनफूल पहराए।
ता करनन माटीकी मुद्रा मधुकर हाथ पठाए ॥
चीर चोरि, चित चोरि, चोरि दधि, चोरी करहि न पाए।
पाछिल प्रीति कहा भइ ऊधौ ! अब गुरु ग्यान लिखाए ॥
बेनी हार गुहे अपने कर एड़िन जावक लाए।
सरद समै बृन्दाबन मोहन रास-बिलास कराए ॥
लागी लगन न छूटै सजनी, चित हरिनै जु चुराए।
जस चकोर चंदाकौं निरखत इकटक रहत लगाए ॥
हरिजू हमसौं प्रीति जोरिकै मधुबन जाइ सिधाए।
तलफत जिउ जलहीन मीन सम ऊधौ कैस जिवाए ॥
कहा कहौं सखि ! मनमोहनसौं हमरि सुरति बिसराए।
कबहुँ कि सुधि आवति गोकुलकी जसुमति अरु नँदराए ॥
ग्वाल-बाल, गौ बच्छ, लता तरु सबहि रहे मुरझाए ॥
सूर, स्याम बेगिहि लै आवौ, जौ चहु प्रान जिवाए ॥ ५४४३ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धनाश्री : तिताल

साँवर ! जनि करि भोरहि रार । अपया-सुता तासु पति ऊपर जलसुत नैंकु निवार ॥
सुरभि-सुताकी नैंकु न मानत ढीठौ भयौ मुरार । कालनेमि मधु-कैटभ ऊपर तासौं करौं पुकार ॥
दधि-रस चाहौ लेहु साँवरे द्यौं छकरेहि उतार । गनपति-पिता तासु बैरी रस दइहै नँदकी नार ॥
इतनी सुनत गेंद गहि मारी सुनत मातुकी गार । रहसत बिहँसि चले कुंजनमैं, सूरदास बलिहार ॥
॥ ५४४४ ॥

पीलू : तिताल

मेरि न बनि महाराज सरनमैं आए सबकि बनी । ध्रुवकी बनि, प्रह्लादहुकी बनि, अंबरीष, गजराज ॥
सबरी और अहल्याकी बनि, गीध, व्याध, खगराज । सुक, नारद, भीषम, श्रुतदेवा, रखी द्रुपदिकी लाज॥
सिव, ब्रह्मा, इन्द्रादि देवता, रटत धरमके राज । पारासर, पुँडरीक, ब्यासजू, भीष्म, सुदामा, ताज ॥
हनूमान, सुक, सौनक, बल्लभ, सुभगग्रीव, रिषिराज । रंका, बंका, पीपा, नेमा, सेन, धना किय काज ॥
सदना, मीरा अरु रैदासा, कृपा करी ब्रजराज । बाँभन, छत्री, बनिक, निसाचर, अंत्यज, बनचर राज॥
और अनेक पतित तुम तारे कहँ लौं गिनौं सुकाज । सूर जथा हौं तथा तिहारौ, बाँह गहेकी लाज ॥
॥ ५४४५ ॥

बिहारी

ऊधौ ! मनमोहनकौ लावौ उन बिनु नाहिं सुहावै रे ।
जिय चटपटी, तलावलि मनकी, उन बिनु पल नहिं भावै रे ।
कुबिजाके रसबस अस मोहन, लाज सकुच नहीं आवै रे ॥
हम तलफत निसिदिन बियोगमैं रहि रहि जिय घबरावै रे ।
सूर, स्यामसौं कब मिलवौगे, छिन छिन जुगसम जावै रे ॥ ५४४६ ॥

बारहमासा

बरवा-देस

ऊधौ ! भोरहि मधुपुरि जाइ कन्हैयाकौं लै आवहु हो ॥
सीतल चंदन अंग लगाए, कामिनि करति सिंगार । बहुत दिना भै पिय नहिं आए, लाग्यौ मास अषाढ़ ॥
इक तौ ऊधौ ! बैसहु बारी, दूजे पिय परदेस । तीजे रिमझिम मेहा बरसै, सावन अधिक अँदेस ॥
भादौं ऊधौ! मेह बरसिगौ, निसि अँधियारी रात । बादर गरजै, बिजुरी चमकै, थरथर काँपै गात ॥
रहि कुआर मैं आस लगाए, पिय नहिं आए मोर । अबकि बेर जौ सइयाँ अइहैं, जिउ नहि पावैं मोर॥
कातिक पूरनमासी ऊधौ! सब सखि गंगा न्हायँ । हम ऐसी अबला अति सुंदरि, किहिकै गोहन जायँ ॥
अगहन ऊधौ! ठाढ़ी आँगन, बहु बिधि उपजै काम । चकई चकवा केलि करत हैं, हम बिरहिन हैं बाम ॥
पौषहि ऊधौ! पुहवा परिगे, भीजत अँगके चीर । जमुना-तटपै बंसी बाजति, सुमिरत नैनन नीर ॥
माघहि ऊधौ! पौन झकोरै, पिय बिनु जाड़ न जाय । अबकि बेर जौ सइयाँ अइहैं, राखौं हिये लगाय ॥
फागुन फगुआ ह्वैगौ ऊधौ ! पिय नहिं आए मोर । अबकि बेर जौ सइयाँ अइहैं, खेलौं रँग झकझोर॥
चैतै ऊधौ ! टेसू फूले, भौंरा अधिक लुभाय । का भँवरा तू लोटै पोटै, यह दुख सह्यौ न जाय ॥
बैसाखे बँसवा कटायकै, बँगला उधौ ! छवाय । यह दुख परै सौति कुबरीपै, हरि राखे बिलमाय ॥
जेठ मास हरि आए मेरे, गाए बारह-मास । सूरदास - प्रभुके दरसनतैं, पूजी मनकी आस ॥
॥ ५४४८ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्यामसुँदर बिनु मैं न जियौंगी ।। काफी : जत

अगमन लाग्यौ अगहन मास, सब सखियन मिलि करति हुलास ।
स्याम रहे हैं छाय बिदेस, लिखत न चीठि न पठैं सँदेस ।।
पूस मास तन ब्यापत सीत, कब धौं मिलिहै साँवर मीत ।
बिनु पिय जियकौ जाड़ न जाय, सिसकि सिसकि सब रैनि बिहाय ।।
माघ मास रितु लगौ बसंत, अजहुँ न आए हमरे कंत ।
कासौं बरनौं जियकी बात, बिपति बँटावन कोउ न लखात ।।
फागुन रंग रचै सब कोय, हम सब रैनि गँवावैं रोय ।
धन, धन, धन कुबरीकौ भाग, हमरे हरि-सँग खेलै फाग ।।
चैत मास तन कुसुमित केस, हम जानीं पिय आयँ बिसेष ।
कठिन कठोर हियेके स्याम, रहे लुभाय सवतिया धाम ।।
तपन लग्यौ बैसाख जु बीर, छिन छिन छीजत गोरि सरीर ।
उठै करेजे बिरह - दवारि, पिय बिन या गति भई हमारि ।।
जेठ चलै अति तात लपाट, कैसैं चलिहै बलमा बाट ।
सब सखि सोवैं सुखसौं खाट, पकरि खरी मैं द्वार कपाट ।।
गाढ़ असाढ़ मेघ चहुँ ओर, बोलत पपिहा नाचत मोर ।
सबके पिय घर आए , धाय, हमरे स्याम द्वारका छाय ।।
सावन झूलैं सखी हिंडोर, पिय बिनु लरजत हियरा मोर ।
कासौं कहुँ सखि ! जिय समुझाय, बिछुरे स्याम मिलावै ल्याय ।।
भादौं गरजत गगन गँभीर, नदिया उमड़ि चलीं भरि नीर ।
चमकै बिजुरी डरपै जीउ, आनि मिलावौ मेरौ पीउ ।।
क्वार कमलदल प्रफुलित ताल, आवनहार भए नँदलाल ।
उमगत छाति जनावत नेह, पुलकित रोम सीत भइ देह ।।
कातिक करम करै सब कोय, तुलसी पूजै निहुरि निहोय ।
हमरे हरिसौं मिलियौ धाय, सूरदास चरनन बलि जाय ।। ५४४६ ।।

आए हरी नाम बैपारी । राग गौरी
काहुन लादे खाँड़ खोपरा, काहुन लादी खारी । संतन-सँग लै नाम हरीका, पूरी खेप हमारी ।।
तुमही हमरे कुंभ कलस हौ, मैं खासी पनिहारी । नाम तिहारौ सिरपै राखौं, नैंकु न सिरतैं टारी ।।
तनकौ महल, सुरतिकौ पैंड़ौ, ग्यानकि गोन उतारी । सूरदास-प्रभु माल-खजानौ, लादे संत सुधारी ।।
।। ५४५१ ।।

बिहारी
माता ! मैं न रहौं बिनु राम । बनकौं गए राम - लछिमन - सिय, कहा करौं इहि ठाम ।।
कपटि कुचाली जहाँ बसत हैं सो जरि जावै गाम । होत प्रात मैं बनकौ जइहौं, इहाँ कौन है काम ।।
नगर अजुध्या सूनौ लागत, दसरथ गे सुरधाम । सुर, नर, मुनि सब दोष देत हैं, का करिहौं रजधाम ।।
चरन सरन रघुपति बिन मोकौं, छिन न परै बिस्राम । सूर, राम हैं चित्रकूटपै, नाहिं मोहिं आराम ।।
।। ५४५२ ।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सोहनी : तिताला

कान्हा ! मुरली नैंकु बजाऊँ ! जोइ जोइ तान होत मुरलीमैं, सोइ सोइ गाय सुनाऊँ ।।
तुम्हरे सीस रचौं गुहि बेनी, अपने मुकुट बँधाऊँ। तुम्हरे भूषन मैं पहिरौं हरि, अपने तोहिं पहिराऊँ ।।
तुम मानिनि ह्वै मान करौ पिय, मैं परि पाँय मनाऊँ। सूरदास-प्रभु ! होहु राधिका, मैं नँदलाल कहाऊँ।।
।। ५४५३ ।।

सोरठ

मुरली कौनै लई, बताय। राधे ! सो प्राननतैं प्यारी तेरौ ही गुन गाय ।।
बिनु देखे सो कल न परत है, पल छिन रह्यौ न जाय। वा बंसीमैं प्रान बसत हैं, मोकौ आनि दिखाय ।।
सिव सनकादिक ध्यान धरत हैं, सुर नर रहे लुभाय । सूरदास-प्रभु बंसी पाई, आनँद उर न समाय ।।
।। ५४५४ ।।

सोरठ

देवकि देखी दु:खभरी । कालिंदीके सुघट घाटपै बैठी सीस धरी।
जल-हित गई जसोदा रानी लै गगरी डगरी। कै घर सास ननद दुख दारुन, कै पीसौं झगरी ।।
ना घर सास ननद दुख दारुन ना पीसौं झगरी। सात सुवन लै कंस पछारे अष्टम गरभ भरी ।।
तुमरे सुतकौं पोसि पालिहौं चाहौ जो सु करी। सूर, स्याम हरि जनम लियौ है, कंसहिं बिपति परी ।।
।। ५४५५ ।।

भूपाली

प्यारी दधि बेचन मिस आवै।
गरब गहीली ग्वालिनि ! तेरी गति न कोउ लखि पावै। उझकत झाँकत बोल सुनावै।
राखि लाज पत अँचर छँड़ावै, चितवत अति आनँद मन भावै ।।
कबहूँ दौरत, कबहुँ परावै, काहूकी दधि - मटुकि गिरावै।
श्री झलकत सबही गोपिनमैं, कर धरि बेनु बजावै। सूरदास-स्वामी दरसनकौं रीझि रीझि गुन गावै ।।
।। ५४५६ ।।

खंभावती : तिताल

ऊधौ ! या विधि ब्रजमैं रहियत। जागत जाम जात हैं जुगसे अति जतननि निरबहियत ।।
बिरह समुद्र अगम है ऊधौ कैसे कै ठहरइयत। तुमसौं काज कौन कहिबेकौं जल बूड़त तृण गहियत ।।
एक बार दरसनकी आसा ता कारन सब सहियत। अबकी बार सूर-प्रभु मिलवौ, बहुरि नाहिं कछु कहियत ।। ५४५७ ।।

खंभावती : त्रिताल

ऊधौ ! यह मन बिगरि परे। मानत नाहिं ग्यान गीताकौ मृदु मुसुक्यान अरे ।।
बाँकी भौंह, बक्र दृग राँचे, याते अधिक खरे। सूध न होत पूँछ स्वानकी लौं, पचि पचि बेद मरे ।।
जोग गभीर अंधकूपनसौं याते दूर डरे। सूरदास, ऐसेहि रहन दे, स्याम - बियोग - भरे ।।
।। ५४५८ ।।

परज : त्रिताला

मेरौ गुपुत मतो तुम ऊधौ ! कहियौ हरिसौं जायकै।
दूध - भात कुंजनमैं खाते पहिले हमहिं खवायकै ।।
जलकी जबै चाह हरि होती, पीते हमहिं पियायकै।
अब तौ छानि छानि जमुना - जल पीयत हैं अँचवायकै ।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उहाँ जाइ कुबरीहिं बरी है, ब्रजकी सबै भुलायकैं ।
अब सुनियत हरि घंट बजावत तिन तिन बार नहायकैं ।।
नमस्कार सूरजकी कहियौ कबहूँ औसर पायकैं ।
नाम जपत हैं बैठी सिगरी अब हम सब गम खायकैं ।। ५४५९ ।।

काहू फिरि न कही वै बातैं । जे जे वर इहँ सुक्रित करिगे वा घरकी कुसलातैं ।। परज : तिताला
जैसे सती सरा चढ़ि बैठे निज स्वामीके जातैं । वाकौ भेद न कोऊ जानै सियरि जरी धौं तातैं ।।
जैसे सूर पिलत रन-भीतर सहत अनीकी घातैं । वाकौ दरद न काहू जानै सेल लगीं धौं सातैं ।।
इहि संसारहुकौ सब अदभुत आवत जात कहाँतैं । सूरज कहै देह-गति ऐसी समुझ न परै इहाँतैं ।।
।। ५४६० ।।

ऊधौ ! प्रीति करी पछितानी । हम जानी ऐसहि निबहैगी, उन कछु औरहि ठानी ।। परज : तिताला
और न हिया पतीजै कोऊ बोलत मधुरी बानी । औरनकौं बैराग सिखावत आपु करत रजधानी ।।
अब नहिं सेज सुहावत हरि बिनु सोचत रैन बिहानी । जबतैं गमन कियौ मधुबनकौं नैनन बरसै पानी ।।
ऊधौ ! कही स्यामसुंदरसौं उर अंतरके जानी । सूरदास-प्रभु मिलिकै बिछुरे, तातैं भई दिवानी ।।
।। ५४६१ ।।

ऊधौ ! सुनि सुनि आवति हाँसी । कहँ वै तीन लोकके ठाकुर कहाँ कंसकी दासी ।। परज : त्रिताला
इंद्रादिककी कौन चलावे, संकर करत खवासी । निगम नेति बंदीगन जाकैं, सेष सीसके बासी ।।
कमला जाके बसै हृदंतर कौन गिने कुबिजासी । सूरदास, परगट करि बाँधे, प्रेम प्रीतिकी फाँसी ।।
।। ५४६२ ।।

देखिय सौ समाज इक ठौर । छत्तिस ऊपर चंद्र बिराजै तापै सोभा और ।। परज:धीमा तिताला
धरपै गगन, गगनपै धरनी, ता ऊपर बिस्तार । कोटिन कोटि तरैया सोहैं रबि उनए भिनुसार ।।
गुन निरगुनकी सोभा बरनौं सबपै एही भाव । सूरदास यह दंत कथा नहिं पंडित अरथ बताव ।।
।। ५४६३ ।।

कालिंगड़ा : तिताला

स्याम मोहिं बावरि करि डारी । अँबवा डारि कोइलिया बोलै कुहू कुहू भयकारी ।।
दिन नहिं चैन, रैनि नहिं निंदिया, बिरह बिथा भइ भारी ।
सूरदास-प्रभु आउ मिलनकौं, तुम जीते हम हारी ।। ५४६४ ।।

कालिंगड़ा : तिताला

हम न करी हरिकी सेवकाई ।
कोमल चरन महा कंटक मग, तापै बन हम धेनु चराई ।।
अपने सुख-संपति के कारन, आगैं करि दीने दोउ भाई ।
सूर, स्याम मानत है नातौ प्रेम सहित बोलत नँदराई ।। ५४६५ ।।

कालिंगड़ा तिताला

रसिया हरि बृन्दाबनबासी ।
जमुना तीरे धेनु चरावै, गावै करि करि हाँसी । उरझि रह्यौ मन सुरझत नाहीं प्रेम फंदकी फाँसी ।।
मोर मुकुट पीतंबर सोहत मुरलि बजावत खासी । वृन्दाबनकी कुंज-गलिनमें रास रचत अबिनासी ।।
इत गोकुल उत मथुरा नगरी बीच मिल्यौ ब्रजबासी । सूरदास-प्रभुके दरसनकौं लगी प्रेमकी फाँसी ।।
।। ५४६६ ।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बंसी बाजी जमुना-तीर । सावन-भादौं नदी चली मनु ब्रजनारिनकी भीर ॥ परज : तिताला
कैसी वेनु बजाइ मोहिनी मोहन बलके बीर । सूरदास रस-बस करि लीनी सुंदर स्याम सरीर ॥
॥ ५४६७ ॥

नाहिं दुरत नैना रतनारे । भैरव : तिताल
जनु बंधूक बिसाल सुमनपै सुंदर स्याम सिलीमुख तारे ॥
लटकत अलक कुटिल कुंडलपै मो-तन चितवत चितै बिसारे ॥
सिथिलं भौंह धनु गहे मदन गुन रहे कोकनद बान बिषारे ॥
मंदे ही आवत ये लोचन लीक पलक उघरत न उघारे ॥
सूरदास-प्रभु कहु को ऐसी बनिता जासौं रति-रन हारे ॥ ५४६८ ॥

सोहत घूँघर बार अरुझि रह, मुकुताहल निरवारत बार ॥
रति मानी सँग नंदनंदके, छुटि कंचुकि बँद टूटे हार ॥
निसि जागे दोउ नैन उरझि रह, चलति तरुनि जोबन मद-भार ॥
सूर, स्याम - सँग यह सुख लूटत, रीझत उनपै बारंबार ॥ ५४७० ॥

भैरव : एकताल
नंद दुवारे जोगी आया सृंगीनाद बजाया । ससि जटा ससि बदन सुहायौ अरुन नैन छबि छाया ॥
रोवत, खीझत कृष्न साँवरे रहत नाहिं दुलराया । लियौ उठाइ गोद नँदरानी द्वारे जाइ दिखाया ॥
अलख-अलख करि लियौ गोदमें चरन चूमि उर लाया। स्रवनि लागि कछु मंत्र सुनायौ हँसि बालक किलकाया
चिरजीवै सुत महरि तिहारौ हौं जोगी सुख पाया । सूरदास, रमि चल्यौ रावलो संकर नाम बताया ॥
॥ ५४७२ ॥

चलना रे प्रभु के दरवारा । काल बली जहँ चौकीदारा ॥ भैरव
इहिं हजूरमैं याद तिहारी । चलनेकौं अब करौ तयारी ॥
जामैं हुरमत रहै तुम्हारा । ऐसी करनी कर लो यारा ॥
जाको खादिम पकरि बुलावै । जतन करे कछु बन नहिं पावै ॥
बिनु मरजी कोउ रहन न पावै । क्या गरीब क्या साहु कहावै ॥
जब यम आवै कछु न बसावै । छिनमैं बाँधि पकरि लै जावै ॥
तब ताकौं कहु कौन छुड़ावै । ढिग बैठा कलपै कलपावै ॥
मौजुदात तैयारी कीजै । दरसन तलब बेगि चलि लीजै ॥
गो खादिम तोहिं देखि पसीजै । कंठ लगाय रंगमैं भीजै ॥
करनीका कर कमर कटारा । सील सिपर तप तेग दुधारा ॥
धरे लेपकर ध्यान पियारा । ज्ञान तुरगपै ह्वै असवारा ॥
जो तू ऐसा होइ चलेगा । मालिक मनमैं बहुत खिलैगा ॥
काम क्रोध मद मोह बहेगा । यह संसार अपार दहेगा ॥
निसि बासर हरि नाम कहेगा । परम पदहिं तू शीघ्र लहेगा ॥
सूरदास, जो तू सुख चावै । तौ गोबिंदके गुन तू गावै ॥
पतित-उधारन बिरद कहावै । चरन सरन प्रभुकी नित ध्यावै ॥ ५४७३ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रामकली : तिताल

सइयाँ रैनि बिदा ह्वै लागी। ज्योति घटी तारे मलीन भे फूल वासना फागी ॥
सब सिंगार बतीस अभूषन प्रियतमके सँग जागी। सूरदास-प्रभुसौं मिलनो है, हरि हमरे अनुरागी ॥
॥५४७४॥

रामकली

आपु तन देखि ग्वालि ! लाल तन देखिए। भीति जौ होय काहु चित्तहि अवरेखिए ॥
पाँच बरस साँवर यह रोय दूध माँगै। मस्त ढीठ ग्वालिनि री ! फिरति ऐंठि आगै ॥
मेरौ तौ तनक स्याम बड़ नख छत तेरै। मष्ट होहु भेंटनकौं कहँ भुज हरि केरै ॥
ग्वालिनि मुख देहि हँसी सोभा अति बाढ़ी। सूर, भई अनउत्तर महर-द्वार ठाढ़ी ॥
॥५४७६ ॥

रामकली

अजु हरि पकरि न पाए चोरी। लैगौ चोर चोरि मन-माखन, जो मेरौ धन हो री ॥
बाँध्यौ कंचन-खंभ-कलेवर उभय भुजा दृग डोरी। राख्यौ कठिन कठोर कुचन-बिच सक्यौ न कोऊ छोरी ॥
अधर दसन खंड्यौ रस-गोरस छुयौ न काहूको री। काम दंड दंडीपै घरकौ नाम न लेइ बहोरी ॥
तब कुलकानि आनि आड़े भइ छमि अपराध किसोरी। सिरपै हाथ धराइ सूर-प्रभु सोच-मोच सिर ढोरी ॥
॥ ५४७७ ॥

रामकली

हर्षित जुवति देखि मुरारि। थकित जित तित अमर मुनिगन, नंदलाल निहारि ॥
बेनि बिनु सिर केस लट चहुँ दिसा छुट की झारि। सीसपै धरि जटा मनु सिसुरूप किय त्रिपुरारि ॥
रुचिर भव्य ललाट केसर-बिंदु सोभाकारि। मनहु रोष तृतीय लोचन रहे रिपु-जन जारि ॥
कुटिल हरि-नख हृदै हरिके सुभग इहिं अनुहारि। ईस जनु रजनीस राख्यौ भाल तेज उतारि ॥
कंठ सीपज नीलमनिमय रची माल सँवारि। नील गिरिवर गरल मानो लाय लइ मदनारि ॥
बदन तन रज स्याम मंडित सोह इहिं अनुहारि। मनौ अंग बिभूति राजत संभुसौं मधुहारि ॥
त्रिदसपति ह्वै मातु आगैं असनकौं कर आरि। सूरदास, बिरंचि जाकौ जस जपत मुख चारि ॥
॥ ५४७९ ॥

रामकली

जमुने ! पतित दासके चिह्न प्यारे।
भगवदीको जु भगवत्संग मिलि रहै ताके बसत हिय प्रान प्यारे ॥
गूढ जमुना बात जोई अब जानही तासु मनमोहन नयन तारे ॥
सूर सुखसागर निरधार वह पावही जापै होय वल्लभ कृपा रे ॥ ५४८० ॥

भोरहि स्यामा-स्याम खरे। जलद नवीन मिली मनु दामिनि बरषि निसान झरे ॥ ललित
सिथिल बसन तन नील-पीत दुति आलस-जुत पहिरे। कछुक बुंदपै रति-स्रमकनिका बादर बरष करे ॥
भूषन बिबिध भाँति मिड़वारी रतिरस उमगि भरे। कज्जल अधर तमोल नयन रँग अँग अँग झील परे ॥
प्रेम प्रवाह चली मनु सरिता टूटी माल गरे। सोभा अमित बिलोकि सूर-प्रभु क्यों सुख जात तरे ॥
॥ ५४८३ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मेरे नैननहीं सब खोरि । ललित
स्याम बदन छबि निरखि जु अटके बहुरे नाहिं बहोरि ।।
जौ मैं कोटि जतन करि राखति घूँघट ओट अगोरि ।
तौ उड़ि मिले बधिकके खग-ज्यौं पलक पींजरन तोरि ।।
बुधि, बिबेक, बल, बचन-चातुरी पहिलै लई अँजोरि ।
अति अधीन भइ संगहि डोलति जैस गुडी - बस डोरि ।।
अबधौं कौन हेत है हमसौं, बहुरि हँसत मुख मोरि ।
मनहु सूर, द्वै सिंधु सुधा भरि उमगि चले मिति फोरि ।। ५४८५ ।।

बिलावल
पिया पिय नाहिं मनायौ माने ।
श्रीमुख बचन मधुर मृदु मादक कठिन कुलिसतैं जाने ।।
सोभित सहित सुगंध स्याम - कच कल कपोल अरुझाने ।
मनहु बिधुंतुद ग्रस्यौ कलानिधि तजत नाहिं बिनु दाने ।।
बाल भाव अनुसरति भरति दृग अग्र अंसुकन आने ।
जनु जठरातुर खंजरीट-जुग, लेत सुभख अकुलाने ।।
नैन निकट ताटंक गंडपै झलकत कबिन बखाने ।
जनु खद्योत चमकि चलि सकत न निसिगत तिमिर हेराने ।।
यह सुनिकै अकुलाय चले हरि कृत अपराध छमाने ।
सूरदास - प्रभु मिले परसपर मानिनि मिलि मुसकाने ।। ।। ५४८६ ।।

सखि ! हौं जागौं तौ कोऊ ढिग, नाहीं उठि लागी अकुलान ।
मैं जान्यौ साँचैं ही मिलिगे, माधव भूलि रही अनुमान ।।
नींदहिमैं मुरझाइ मदन हौं, राखी प्रथम पंच संधान ।
तामैं और तिमिर माई री ! चपल छुटे छबिके मधु बान ।।
सूर, सक्ति जैसे लछिमन - तन वह ब्रनकौं कछु अंग न आन ।
लाउँ सजीवन मूरि मुकुंदहि ज्यौंऽब रहै तनमैं अब प्रान ।। ।। ५४८८ ।।

पाग खसी, सिर पेंच लटपटी, घूमत नयन उनींद उजागरि । रामकली
पीक कपोल अधरपै काजर, कंगन पीठि गड़्यौ अति सुंदरि ।।
जात उतै इत पाँवँ चलें क्यौं, बोलत हौ तुतरात लिए दरि ।
प्रात समै किततैं उठि आवत, सूरज - प्रभु अनुराग-भरे हरि ।। ५४८९ ।।

आए, अजु लटपटात लालन अनुरागे । भूषन अँग-अंग रैनि आलस भरि जागे । रामकली
लटपटि सिर पेंच पाग छूट बँदन बागे । सूर, स्याम जिहिं रस-बस हे, सो तिय बड़भागे ।।५४९०।।

ललित
कान्ह उनींदे आए मेरे नैन भरे रसमाते । डगमग पाइँ धरत धरनीपै बेनु बोल अरुझाते ।।
अँग-अँग सीतल स्रमजल भींजे बारंबार झपाते । काजर-रेख रही अधरनपै काहे स्याम लजाते ।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिनु गुन माल बिराजत उरपै नख-छत नाहिं छिपाते । सूरदास-प्रभु अब्र साँची कहु कौन तिया रँग राते।
॥ ५४६१ ॥

स्यामाजूकी नैन-भाँति री सखि ! मोपै बरनी नहिं जाई ।
सुधा किरन बिच जुग मनु खंजन पान किए सोवत जु अघाई ॥
चुंबन राग रँगीले रसमस कहा कहौं अति सुंदरताई ।
मरकत बिद्रुम कमल कोषमैं लै जावककी रेख बनाई ॥
आलस तिरछि चहत बिच ही बिच कछु बिगसित जब लेत जँभाई ।
मनमथ जय करि हरि जीतनकौ दयौ बान भ्रू-धनुष चढ़ाई ॥
देखि लाल लोचन बिथकित भे परम चतुरता सब बिसराई ।
सूर, स्याम-रस रीझि रहे तहँ हम सहचरिकी कौन बड़ाई ॥ ५४६२ ॥

ललित

आई तू डगमगाति ऐंड़ाति अति ही जँभाति, पीके रँग रंग पगी अंग रंग भरिकै ।
चंद्र उदै मुख देखति दर्पन प्रतिबिंब लखति, पीकलीक धौं निहारि नैना छबि परिकै ॥
बिथुरे कच सुथरे मुख सुधा मनौ पीवत सुख, अलिकुल निज पाँति बाँधि आनँदसौं हरिकै ॥
सूरजप्रभु रसिक राय, रसबस कीन्हौं बनाय, सुख दीन्हौं मन अघाय रीझे मन ढरिकै ॥५४६३॥

लागे सबै अंग दुख दैन ।
अपुनि पिसुनता कहा कहौं सखि ! बिधना कियौ कुचैन ॥
लोचन भ्रमर भए उड़िबेकौं बदन-कमल मधु लैन ॥
कान नेम ब्रत लियौ सुननकौं बिना बदन बिधु बैन ॥
नासा खसत बचन नहिं निकरत, मन न धरत कछु सैन ॥
पग न चलत इक पैंड़ नीठिकैं, तन-पुर पसरौ मैन ॥
अब लावौं ब्रजनाथ निकट तोहिं तौ लौं यहउ सहै न ॥
सूर, निमिष सम होत जुगहि जुग क्यौं बिरमावौं रैन ॥ ५४६४ ॥

इहिं बल कितकु जानि जदुराई ।
तुम जु चले हम अबलनिपैतैं तरकि उहाँ छिटकाई ॥
कहियत हौ अति चतुर सकल बिधि जानत और उपाई ॥
तौ जानौं जौ अब एकौ छिन सकौ हृदैतैं जाई ॥
सूरदास - स्वामी श्रीपतिकौ भावत अन्तर भाई ।
सहि न सके रति बचन उलटिह्वै लीन्हीं कंठ लगाई ॥ ५४६५ ॥

होरी माच रही है ब्रजमैं नन्दनन्दके द्वार ।
इक गावत इक मृदंग बजावत इक नाचत दै तार ।
भरि भरि झोरि गुलाल उड़ावत रही न काहु सँभार ॥
आउ सबै मिलि खेलैं होरी यह फागुन दिन चार ॥
एक ओर डफ झाँझ बजत है अरु मुरली झनकार ॥
एक ओर तरुनी अरु बाला गावत दै दै तार ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऐसी धूम मची या ब्रजमैं होरी होरि पुकार।
अबिर अरगजा चन्दन बन्दन केसरकी पिचकार॥
अँबर भिजोवत सुनत न काहू ऐस लँगर बटपार।
काहूकौं वै झपटत लपटत काहूकौं दै गार॥
सूरदास - प्रभु फाग रच्यौ है बारबार बलिहार॥ ५४९६॥

सुनि री सखी ! आज दूसरि ढिग बिलमि रहे कहुँ काना। जंगला
हमैं कह्यौ तुम पलँग बिछावौ हम उन बातैं माना॥
आवन दै पिय अपुनि बारकौं नित उठि ठगि ठगि जाना।
सबै सिंगार बतीसौं अभरन अंग सजे मन माना॥
डोलत फिरत अनत जुवतिनमैं मोसैं हँसि हँसि जाना।
खेलत ह्वैहै ब्रज - सखियनमैं करिहै आइ बहाना॥
गोकुल ढूँढ़ि बृँदावन ढूँढ्यौ उनकौं कौन ठिकाना।
सुंदर स्याम कमलदल लोचन नंद महरके छाना॥
मोर मुकुट पीतांबर सोहत कुंडल झलकत काना।
स्यामल मुखपै तिल जु बिराजै जासौं लगियौ ग्याना॥
बेनु बजावत गावत नीके मोह लियौ है प्राना।
सूरदास - स्वामीके दरसन, चरन-कमलकौं ध्याना॥ ५४९८॥

ब्रज - कुंजनमैं जाय पकरिकै ल्याई नँदके लाला। सोरठ-पहाड़ी
हहा करावत, पाँय परावत सिगरी ब्रजकी बाला। एक सखी कर पकरि नचावत बहुत बजावत गाला॥
नैनन अंजन खंजन करिकै लोग कहैं ब्रजवाला। आनि जसोमति यह छबि देखौ मोहन मुरलीवाला॥
पाँय पैंजनी अधिक बिराजै बेंदी भाल बिसाला। बेसरिकी छबि कहँलौं बरनौं झूमै मोतिन माला॥
बृन्दाबनकी कुंज-गलिनमैं खेलत नँदके लाला। सूर, स्याम-छबि कहँ लगि बरनौं मोहि लई ब्रजबाला॥
॥ ५४९९॥

बृन्दाबनकी कुंज गलिनमैं मोहन खेलत होरी हो। परज-तिताल
इत मोहन उत राधा आई ख्याल रच्यौ अति भोरी हो॥
सब सखियन मिलि रंग बनायौ केसर कुंकुम घोरी हो।
लाल गुलाल लाड़िली डारै कान्ह मलै मुख रोरी हो॥
कुंकुम बदन भए मनमोहन सबै हँसे दै तारी हो।
बाजत ताल मृदंग मुरलिया गावत दै दै गारी हो॥
भरि पिचकारी मुखपै मारी भीज गई तन सारी हो।
उड़त अबीर अरुन भौ अंबर सोभा बढ़ी अपारी हो॥
महल चढ़ीं जसुमति हैं जोवत खेलत खोरि मँझारी हो।
सूरदास, मनभावत फगुवा दीन्हौ कुंज - बिहारी हो॥ ॥ ५५००॥

सुनि सुत ! कथा कहौं इक प्यारी। बिलावल
कमल-नैन-मन आनँद उपज्यौ रसिक-सिरोमनि देत हुँकारी॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नगर एक रमनीक अजुध्या बड़ी बनी जहँ अगम अटारी ।
बहुत गली पुर बीच बिराजैं भाँति भाँतिके हाट-बजारी ॥
तहाँ नृपति दसरथ रघुबंसी जाके नारि नवल सुखकारी ।
कौसिल्या, केकई, सुमित्रा तिनके जनम लिए सुत चारी ॥
चार पुत्र राजाके प्रगटे तिनमैं एक राम व्रत - धारी ।
जनक धनुष-पन कियौ जानकी त्रिभुवनके सब नृपति हँकारी ॥
राजा - सुतन देवऋषि ल्याए सुनत जनक जन तहँ पगुधारी ।
धनुष तोरि मुख मोरि नृपनकौं जनकसुता तब बरी दुलारी ॥
भेरि बजी जब पौर नृपतिके तब केकइ मुख बोलि निवारी ।
बचन माँगि नरपतिसौं लीन्हौ रघुपतिके अभिषेक सँभारी ॥
तात बचन सुनि रामचंद्र निज भ्राता घरनि सहित बनचारी ।
उनके जात पिता तनु त्यागौ अति ब्याकुल ह्वै जीव बिसारी ॥
चित्रकूट गे भरत मिलन बन पग - पाँवरि दै करी कृपा री ।
जुवती हेत कपट मृग मान्यौ राजिव-लोचन गर्ब - प्रहारी ॥
रावन हरन कियौ सीताकौं, सुनि करुनामय नींद निवारी ।
सूर, स्याम तब रच्यौ धनुष कहँ, लछिमन देहु, जननि भ्रम भारी ॥ ॥ ५५०१ ॥

बिलावल

बात कहति मैं सुनि हरि ! तोसौं ।
आरि करै जिनि, सुनि मनमोहन, देउँ हुँकारी, कहि कहि मोसौं ॥
सूरज-बंस भयौ नृप दसरथ तिनके पुत्र भए हे चारी ।
राम, भरत, लछिमन, सत्रुहन, खेलत घर - आँगनके द्वारी ॥
करिकै मख-रच्छन कौसिककौं तिन तारी गौतमकी नारी ।
मिथिला जाइ धनुष - सिव तोर्‌यौ जनक-सुता माला उर डारी ॥
बरि बिबाह जब घरकौं आए भरत गए मातुलके धामा ।
नृप मन सोधि कह्यौ गुरु आगे चाहौं राज देहुँ श्रीरामा ॥
केकइ बचन पिताकी आज्ञा बनहिं चले तापस अनुहारी ।
लछिमन - सहित सती बर नारी लै सँग चले चाप कर धारी ॥
पंचबटी बिच रहत तिया-सँग रावन हरन कियौ तिहिं काला ।
इतनी सुनत सूरके स्वामी चौंकि कह्यौ दै धनुष उताला ॥ ॥ ५५०२ ॥

कल्याण

बंदौं चरन कमल हरि राई । जाकी कृपा - कटाच्छ आँधरे सबै कछू दरसाई ॥
बहिरे सब्द मूक पुनि बोलै चलै रंक सिर छत्र ढुराई । सूरदास-स्वामी करुनामय बार बार बंदौं तिहिं पाई
(बंदौ श्रीहरिपद सुखदाई) ॥ ५५०३ ॥

खमाच

ऊधौ ! प्रीति नई नित मीठी ।
काटे ऊपर नोन लगावत लिखि लिखि भेजत चीठी ॥
सूरदास - प्रभु आस चरनके जरि बरि भई अँगीठी ॥ ॥ ५५०४ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सोवत राधेहिं स्याम जगाई। परज

सुबरन गड़वा, लौंग दतूनी, धाय सखी जमुना जल ल्याई ॥
निकट होय बैठी नँदनंदहिं नींद भरी अखियाँ अलसाई।
मोतिन माल गरे बिच सोहै अलकैं छुटी भुजनपै आई।
सूरदास - प्रभु तुम्हरे दरसन, रूप देखि पद हृदै लगाई ॥ ५५०५ ॥

ऊधौ ! कैसी ल्याए पाती ? रामकली

तेरी जोग - कथा न सुहाती। या पाती कुबिजाकौ दीजौ, जाकी सीतल छाती। जानि परी अब तुम्हरे मनकी तुमहूँ स्याम-सँघाती। सूर, स्याम! अब कैसे बनिहैं बतियाँ ठकुरसुहाती ॥
॥ ५५०७ ॥

हमरी सुरत लियौ रहियौ। सिरपै हमरे सौति कूबरी जो सहाय सहियौ ॥ ब्रजकी बिथा सुनी तुम ऊधौ! हरि आगैं कहियौ। सूर, स्याम-बिनु कल न परत है बिरह-बिथा दहियौ ॥
॥ ५५०८ ॥

कोउ कहूँ देख्यौ री इत उत रूप गरबली राधा ॥ सोरठ

चंपक बरन गात मनरंजन खंजन नैन मीन मदगंजन।
अमल कमल मुख जोति बिलोकत होत सरद ससि आधा ॥
हे मराल मानसके बासी, हे मलिंद मकरंद उपासी।
देहु बताय मया करि मोकौ, होत अपद अपराधा ॥
हे कदंब, हे अंब्र, निंब, बट, सोभित सुखद छाँह जमुना तट।
संतत देत गोप गोधन सुख, हरत तापकी बाधा ॥
कबहूँ सहि न सकत मेरौ दुख अबहिं मौन क्यों साधा।
आरत बचन पुकारत लालन, मदन जालसौं बाँधा ॥
अतिसै दुखित देखि बनवारी प्रगटी भानु - दुलारी।
सूरदास - प्रभुकौ लगाय उर पुरवति रसकी साधा ॥ ५५०९ ॥

पुष्टिमार्गीय पद-संग्रह भाग ३ से

जमुना ! पुलिन तिहारो भावै। राग रामकली

सुर ब्रह्मादिक ध्यान धरत हैं, सो सुपने नहिं पावै ॥
बिच बिच कुंज सदन अति सुंदर स्यामा स्याम सुहावै।
चहुँ दिसि सकल फूल अति फूले गुहि गुहि कंठ धरावै ॥
कुसुमनके बिजना जु सँवारे सखियन बाँह ढुरावै।
सूरदास - प्रभु सब सुखसागर दिन दिन सोभा पावै ॥ ॥ ५५१० ॥

राग भैरव

नंदकुँवर ! भिनुसार भयो अब जगवत है नँदरानी। झारीके जल बदन पखारौ प्रिय सुत सारँगपानी ॥ माखन रोटी अरु मेवा जो भावै लीजै आनी। सूरदास, मुख निरखि जसोदा मनही मनहि सिहानी॥
॥ ५५११ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राग रामकली

मोहन ! जागि हौं बलि गई। तुमहि कारन स्यामसुंदर नई मुरली लई ।।
ग्वाल बाल दुवार ठाढ़े बेर बनकी भई। गउनके सब बंद छूटे बन डगरकौं गई ।।
पीत पट करि दूर मुखतैं छाँड़ि दै अलसई। अति अनंदित होति जसुमति देखि दुति नित नई ।।
जगे जंगम जीव पसु खग और ब्रज सबई। सूरके प्रभु दरस दीजै होत आनँदमई
।। ५५१२ ।।

राग भैरव

छँगन मँगन ललन लाल कीजिये कलेवा।
छींकेतैं सिगरी दधि ऊखल चढ़ि काढ़ि लेहु। पहिर लेहु झँगुली ल्यौ बाँधि फेंट मेवा ।।
जमुनातट खेलनकौं भूख नाहिं लगै कहूं। कौन परी ललन लाल निसि-दिनकी टेवा ।।
सूर, स्याम मनमोहन घर ही क्यों खेलत नहिं। दइहौं चकडोर, मोर, हंस अरु परेवा ।।
।। ५५१४ ।।

राम विभास

अबहि जसोदा माखन लाई। मैं मथिकै अब हीं जु निकास्यौ तुव कारनहि कन्हाई ।।
माँगि लेहु ऐसे ही मोपै मेरे आगे खाहू। और कहूँ जनि खइहौ मोहन दीठि लगेगी काहू ।।
तनक तनक ही खाओ लालन जौ बढ़ि आवै देही। सूर, स्याम कछु और बड़े हौ बैरिनके मुख खेही ।।
।। ५५१५ ।।

राग देवगंधार

करत सिँगार जसोदा भावत।
सीतल जल गुन-गुन करि राख्यौ लै लालनकौं बैठि न्हवावत ।।
अंग अँगोछि चौकि बैठारत प्रथमहि लै तनिया पहिरावत।
देखौ लाल और सब बालक घर घरतैं कैसे बनि आवत ।।
पहिरौ लाल झँगा अति सुंदर आँखि आँजिकै तिलक बनावत।
सूरदास-प्रभु खेलत आँगन लेत बलैया मोद बढ़ावत ।। ५५१६ ।।

राग विभास

उरझ्यौ नीलांबर पीतांबर महियाँ।
कुंडलसौं लर लट, बेसरसौं पीत पट, हारहीमैं बनमाल बहियाँमैं बहियाँ ।।
हंसगति अति छबि, अंग-अंग रही फबि, उपमा अवलोकिबेकौं पटतर कछु नहियाँ ।।
कामके कलोल छूटैं, सेजहूके सुख लूटैं, सूर-प्रभु बिलसत कदंबहिकी छहियाँ ।।
।। ५५१८ ।।

राग नट

बनी सहज लूट हरिकेलि गोपिनकैं, सुपनेहू यह कृपा कमला न पावैं।
निगम निरधारि त्रिपुरारि हूँ बिचारि रह्यौ, पचि रह्यौ सेष नहिं पार पावैं ।।
किंनरी बहुत अरु बहुत गंधर्विनी, अनगिनी चितवन नहिं माँझ पावैं।
देत कर तार वै लाल गोपालसौं, पकरि ब्रजबाल कपि - ज्यौं नचावैं ।।
कोउ कहै ललन पकराव मोहिं पावरी, कोउ कहै लाल बलि लाउ पीढ़ी।
कोउ कहै ललन गहाव मोहिं सोहनी, कोउ कहै लाल चढ़ि जाहु सीढ़ी ।।
कोउ कहै लालन लखौ मोर कैसे नचैं, कोउ कहे भ्रमर कैसैं गुंजारैं।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कोउ कहै पौरि लगि दौरि आओ लाल तुम, कोउ रीझि मोतिनके हार-लर वारैं ॥
जो कछु कहति ब्रजबधू सोइ सोइ करत, तोतरे बैन बोलत सुहावैं ।
रोय परत वस्तु जब भारी न उठै तबै, चूमि मुख जननि उरसौं लगावैं ॥
बैन कहि लोनी पुनि चाहि हेरत बदन, हँसिकै स्वभुज लै लै कलोलैं ।
धामके काम ब्रजबाम सब भूलि रहीं, कान्ह बलरामके संग डोलैं ॥
सूर. गिरिधरन मधु चरित मधुपान कै, और अंम्रित कछु आन लागै ।
और सुख रंककी कौन इच्छा करै, मुक्ति हू लोनसी खारि लागै ॥ ५५१९ ॥

राग भैरव

भली कीन्हीं भोर आए लाल ! मेरे अँगना ।
अरुन उनींदे नैन, आलस वलित बैन, कुमुदिनी चित्त चोर्यौ चंद बसै गगना ॥
अधरन रंग नीकौ काजर, कपोल पीक जावक ललाट लीक कहत गोपि ललना ।
भुजन वंदन बनी कुच हार मुद्रिका फबी नख रेख छाती छबी पीठ गड्यौ कँगना ॥
बसन सुहात नीले चिकुर छूटे छबीले चरन धरत ढीले निसि कियौ जगना ।
सूरदास श्रीगुपाल सुरत - समै अति बिहाल ताँहियै सिधारौ लाल जहाँ मन लगना ॥५५२०॥

राग ललित

देखौ मेरी ओर किसोर तुम, बिनति करत भो भोर ।
हौं चितवति तुम चितवत नाहीं, मेरे करम कठोर ॥
जनम जनमकी दासि तिहारी, तापै इतनौ जोर ।
सूरदास - प्रभु रोम रोमपै, वारौं कंचन - खोर ॥ ५५२१ ॥

राग ललित

प्यारे वाकैं सब निसि जागे मेरे आये भोर । साँचि कहौ वहि तिरियाकी सौं पाय प्रेम रस चोर ॥
कहुँ अंजन कहुँ पीक लागि रहि दुरत न नंदकिसोर । सूरदास-प्रभु तुम बहुनायक रंग रँगे चहुँ ओर ॥
॥ ५५२२ ॥

राग ललित

नंदसुत कहाँ बसे सब रात । चारि पहर चौजुग सम बीते तुम आए परभात ॥
लटपटि पाग नींद भरि अँखियाँ काजर लाग्यौ गात । चोलीके बँद चुभे देहमें सिथिल भयौ सब गात ॥
रहौ रहौ वृषभानुनंदिनी सुनिहै जसुदा मात । सूरदास-प्रभु तुम्हैं मिलनकौं रैनि कलप सम जात ॥
॥५५२३ ॥

राग ललित

आजु तौ अतिहि उनींदे लाल ।
तुम पौढ़ौ हौं चरन पलौटौं ना जानौं जिय ख्याल ॥
नख छत पिय उर पीर हमारे दिखियत हौ बेहाल ।
सुनत सूर, यह कठिन बचन तिय भरि लीन्हें अँकमाल ॥ ५५२४ ॥

राग ललित

आजु तौ बहुत उनींदे लाल ।
अरुन नयन पियके अलसाने बिनु-गुन बनि उर माल ॥
डगमग चरन धरत धरनीपै मैं जु लखे बेहाल ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अति तुतरावत बात बनावत लागौ मोंहिं रसाल ।।
हमसौं कपट औरके बस भे हमैं मरन नहिं ख्याल ।।
तुम बहुनायक सुखके गाहक, सूर, बाल बेहाल ।। ५५२५ ।।

राग ललित

जरीके जराइबेको, ताते तन ताइबेकौ, कटे लौन लाइबेकौं द्वार आय ठरे हौ ।।
रैन बसे और ठौर, अब आए मेरि ओर, वाही पै पधारौ कान्ह जाके बस परे हौ ।।
बिनु-गुन माल सोहै, अधरनपै अँजन-रेख, मेरी सौं कान्ह अब जाहु तुम भरे हौ ।।
चार जाम बीते मोंहि घड़ी भर कल नाय, सूर, स्याम हियहूँतैं नैकहूँ न टरे हौ ।।
।। ५५२६ ।।

लालन तुम पाये हो जानि । रामें बिलावल
तुमसौं कौन बलया बोले, निपट कपटकी खानि ।।
औरनिसौं तुम हँसि खेलत हौ, हमसौं रहु मुख तानि ।
सूरदास - प्रभु अपनी गरजनि, होवत परम सुजानि ।। ५५२७ ।।

सौंह दिवाय बूझि रहि, मोहन ! यह कहु साँची मोसैं बात । राग टोडी
छूटी अलक बदनपै राजत, कछु ऐंड़त कछु कछु जमुहात ।।
अंजन - रेख अधरपै सोभित, भूषन बसन सिथिल सब गात ।
उरज चिन्ह उरपर है दिखियत, दूरि करौ अब हियौ पिरात ।।
सुनि सुनि स्रवनन बचन हमारे, झूठी कहत न तुमसौं बात ।
वाहीके तुम रंग रँगे हौ, जासौं अंग अंग लपटात ।।
कहियै कहा, कह्यौ नहिं आवै, जइये तहँ जहँ जागे रात ।
सूरदास - प्रभु ! निपट निलज तुम, एतेपै ठाढ़े मुसुकात ।। ५५२८ ।।

फूल्यौ री बन सघन, कोकिला करति तहाँ है गान । राग मालकौंस
चलु रि बेगि बृषभानुनंदिनी, छाँड़ि कठिन मन मान ।।
नव रितुराज आइगौ नेरे, मिलि कीजै मधुपान ।
सूरदास, मनमोहन रिझवौ गाइ माधुरी तान ।। ५५३० ।।

राग मालकौस

बालापन गो आयौ जोबन कामिनिके मन फूलैं । पिय-सँग हास बिलास रंगमें खेलैं जमुना कूलैं ।।
यह औसर नीकौं सुनु सजनी और साज सम तूलैं । प्रीति करौ सखि स्यामसुंदरसौं सूर, रसिक रस मूलैं ।। ५५३१ ।।

हे हरि ! हम हारी तुम जीते । नागर नट! पट देहु हमारे काँपत हैं तन सीते ।। राग रामकली
कानन कुंडल, मुकुट बिराजत, कान्ह कुँवर हम वारी । हा हा खात, परत हैं पैयाँ अब हैं, चेरि तुम्हारी।।
तब दैहौं अंबर री सजनी! जलतैं होवहु न्यारी । सूरदास-प्रभु तुम्हें मिलनकौं तुम जीते हम हारी ।।
।। ५५३२ ।।

तुमकौं टेरत हैं जू कान्ह । गोरी भोरी थोर दिननकी कछु इक वैस उठान ।। राग रामकली
छूटी अलक लाल पट ओढ़े नागरि चतुर सुजान । कहा कहौं मुख-अंबुज सोभा मानौ ऊग्यौ भान ।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बंसी बटकी ओर गई हैं रसिक - सिरोमनि जान। सूरदास-प्रभु मिलिबे आई भई नई पहिचान ॥
॥ ५५३३ ॥

दधिकी मथनी टेकि अरे। आरि करौ जनि स्याम मनोहर, बासुकि संभु डरे॥ राग बिलावल
मंदर डरत, सिंधु तन काँप्यौ, अब बलि कहा करे। तीनौं लोक देखि बिस्मित भे फिरि जनि मथन करे॥
सुर अरु असुर देखि पुनि काँपत प्रभु मरजाद टरे। सूरदास-प्रभु मुगुध जसोदा ह्वै मुख बिंदु गरे॥
॥ ५५३५ ॥

त्यौं त्यौं गिरिधर नाचैं ज्यों ज्यों रई घमरकौ होय। राग बिलावल
तैसिय किंकिनि - धुनि पग - नूपुर रसहि मिले स्वर दोय॥
सुबरन कठुला द्वै लर मोती बघना राख्यौ पोय।
नंद - नँदन मुख निरखन - कारन सुर नर मुनि रहि जोय॥
देखत बनै कहत नहिं आवै उपमा दीजै कोय।
सूर, भवनकौ तिमिर नसावै जननी सुखी जसोय॥ ५५३६ ॥

सखि री ! देखि अदभुत रूप। राग बिलावल
एक अंबुज मध्य दिखियत बीस दधिसुत रूप॥
एक अवली दोय जलचर उभय अर्क अनूप।
पंच वारिज एक ही ढिग कहौ काह स्वरूप॥
सिसूगतमैं भई सोभा करौ अर्थ - बिचार।
सूर श्रीगोपालकी छबि राखिये उर धार॥ ॥ ५५३८ ॥

सखि ! हौं स्याम मोहिनी घाली। राग बिलावल
अबहिं गई जल भरन अकेली हरि चितवन उर साली॥
कहा कहौं कछु कहत न आवै लगी मरमपै भाली।
सूरदास - प्रभु मन हरि लीन्हौं बिबस भई हौं आली॥ ॥ ५५४० ॥

कान्हा खेलत दूर गयौ री ! राग बिलावल
सँग सँग धावत डोलत कैधौं बहुत अबेर भयौ री॥
पलक ओट छाँड़त नहिं मोकौं कहा कहौं तोहिं बाता।
नंदहिं तात तात कहि बोलत, मोहिं कहत है माता॥
इतनी कहत स्यामघन आए ग्वाल सखा सँग कीन्हौ।
दौरि जाय उर लाय सूर-प्रभु, हरषि जसोदा लीन्हौ॥ ॥ ५५४१ ॥

राग बिलावल
मोकौं माखन मिसरी भाय। जो मेवा पकवान देत तू मोहिं नाहिं रुचि आय॥
ब्रज-जुवती इक पाछे ठाढ़ी सुनत स्यामकी बात। मन मन कहति कबहुँ मेरैं घर देखौं माखन खात॥
बैठैं जाय मथनियाके ढिग मैं तब रहौं छिपाय। पाछैं आनि अचानक हरिकौं गहौं औचका धाय॥
राखौं कठिन उरोजनके विच तजौं बेद कुलकानि। सूरदास-प्रभु अंतरजामी ग्वालिन मनकी जानि॥
॥ ५३४२ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आजु कान्ह मनिखंभ निकट ह्वै जहँ गोरसकी गोरी। राग बिलावल
निज प्रतिबिंब सिखावत यों सिसु प्रगट करौ जनि चोरी ॥
अर्ध बिभाग आजुतैं हम तुम भली बनी है जोरी।
माखन खाउ, कितहिं डारत हौ, छाँड़ौ हो मति भोरी ॥
हिस्सा सबै लियौ चाहत हौ यहै बात है थोरी।
मीठो परम अधिक रुचि लागै दैहौं काढ़ि कमोरी ॥
प्रेम उमँग धीरज न रह्यौ तब प्रगट हँसी मुख मोरी।
सूरदास - प्रभु सकुचि निरखिकै भजे कुंजकी खोरी ॥ ॥ ५५४३ ॥

राग बिलावल
हरि किय ग्वाल - संग बिचार। चोरि माखन खाहु सब मिलि करौ बाल - बिहार ॥
यह सुनत सब सखा हरषे भली बात कन्हाइ। हरि परसपर देत तारी सौंह करि नँदराइ ॥
कहाँ तुम यह बुद्धि पाई चतुर स्याम सुजान। सूर-प्रभु मिलि ग्वाल-बालन करत हैं अनुमान ॥
॥ ५५४४ ॥

देखत फिरे ग्वालिनी द्वार। राग बिलावल
तब यह बुद्धि रची अपने मन डाँकि परौं पिछवार ॥
सूने भवन कहूँ कोउ नाहीं मानौ यहिकौ राज।
भाँड़े धरत, उघारत, मूँदत, दधि - माखनके काज ॥
रैनि जमाइ धर्‌यौ हौ गोरस, पर्‌यौ स्यामके हाथ।
लै लै खात अकेले आपुन, सखा नहीं कोउ साथ ॥
आहट सुनि जुवती घर आई, देखे नंदकुमार।
सूर, स्याम मंदिर अँधियारौ निरखै बारंबार ॥ ५५४५ ॥

आजु गुपाल पाहुने आए निरखे नैन अघाय री। राग धनाश्री
सुंदर बदन कमलकी सोभा मो मन रह्यौ लुभाय री ॥
कै निरखूँ कै टहल करौं मैं बनत न कछू उपाय री।
जैसे लता पवन - बस द्रुमसौं छूटत फिरि लपटाय री ॥
मधु, मेवा, पकवान, मिठाई ब्यंजन बहुत बनाय री।
राग - रंगमैं चतुर सूर - प्रभु कैसैं सुख उपजाय री ॥ ५५४६ ॥

सखन - सहित हरि जेंवत छाक। राग सारंग
प्रेम-सहित मइया दै पठई बहुबिधि हितसौं कीन्हें पाक ॥
सुबल सुदामा सँग मिलि भोजन अति रुचि करि करि सबही खात।
ग्वालन - करतैं छाक छुड़ावत मुखमें मेलि सरावत जात ॥
जे सुख कान्ह करत बृंदाबन सो सुख तीनि लोक विख्यात।
सूर, स्याम भगतन - बस, एते ब्रह्म कहावत हैं नँद - तात ॥ ५५४८ ॥

बनमैं स्याम चरावत गइयाँ। राग सारंग
बृन्दाबनमैं मुरलि बजावत बैठि कदमकी छइयाँ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भाँति भाँतिके छाक साजिकै पठए जसुदा मइया।
सूरदास - प्रभु तुम चिरजीवौ, मेरे कुँवर कन्हइया ॥ ५५४९ ॥

उत्तर मैं कहिहौं कहा जायकै पियासौं हौं आई तौ ही यहाँ मैं सखी आथयेकी। राग पूर्वी
अर्ध निसा बीती हौं हारी तू जीती है मैं जु कही बात तेरे भाएँ बूंद तयेकी ॥
तासौं कहा कहिए आली टुकहू न ध्यान देत कहि कहा ताहि बुद्धि नाहि सिखयेकी।
सूरदास, मनमोहन कबके मग जोवत तुव, तीन जाम बीते तहँ बैठे छाँह छयेकी ॥ ५५५१ ॥

जसुदा क्यौं नहिं मंगल गावै। पूरन ब्रह्म सकल अबिनासी ताकौं गोद खिलावै ॥ राग गौरी
कोटि कीट ब्रह्मंड रचयिता मुनिजन जाकौं ध्यावैं। ना जानौं वे कौन पुन्यतैं तेरी धेनु चरावैं ॥
ब्रह्मादिक सनकादिक नारद जपत ध्यान नहिं आवै। सेष सहस मुख जपत निरंतर हरिकौ पार न पावै॥
सुंदर बदन कमलदल लोचन गोधनके सँग आवै। करत आरती मातु जसोदा सूरदास बलि जावै ॥
॥ ५५५३ ॥

देखि रि देखि राधा - रवन। मदन मूरति स्याम घन तन बढ़त सोभा भवन ॥ राग सोरठ
कुसुम - कुंचित केस बिच बिच मंजरी बंधूक। कहूँ कहुँ नच्छत्र दिखियत मनौ उपमा मूक ॥
स्रवनमैं नव झलक मानौ लसत कुंडल किर्न। अंग अँग छबि चलत सोहत मनौ बादर बर्न ॥
मुरलिका स्वर बरष चहुँ दिसि छुटी धुरवा धार। मनो बूड़ि बिनोद बिहरत निपुन बंधु बिहार ॥
धनुष उर बनमाल राजत, गिरा गर्ज गँभीर। सूर, श्रीगोपाल वन ब्रज सदा पावस धीर ॥
॥ ५५५४ ॥

देखि रि देखि सुंदरताइ। चपल नैनऽरु नासिका इकटक रहे ठहराइ ॥ राग सोरठ
परसपर जुवती बिचारत नाहिं उपमा पाइ। मनौ खंजन बीच सुक बसि मनहु जात लजाइ ॥
कछू इक तिल-सुमन आभा मन रह्यौ ललचाइ। सूर, हरिकी नासिका वर कौन बरनै जाइ ॥
॥ ५५५५ ॥

देखि रि देखि रूप-निधान। स्याम घन तन पीत अंबर लसत तडित समान ॥ राग सोरठ
नील कुंतल तिलक मृगमद भृकुटि सरस कमान। सीस सिखर-सिखंडि राजत मुरलिका कल गान ॥
कमल नैन बिसाल चंचल चितवनी सुखसार। सुधा बरषत चित्त करषत निरखि बिथकित मार ॥
ललित लोल कपोल कुंडल मनौ नृत्यत काम। नासिका बेसरि बिराजति देखि प्रमुदित बाम ॥
अरुन बिंबा अधर मानो दसन कुंद कलीन। हँसत क्रीडत छैल गिरिधर नंदगाँव गलीन ॥
चिबुक सुंदर सोह अति तन कंबु कंठ सुदेस। कोटि रबि ससि मनि प्रकासित मदनमोहन बेस ॥
चंद्रमनि हाटक खचित उर पदिक-पाँति अनूप। बड़े भागन दृष्टिगोचर कृष्न ब्रजके भूप ॥
बिपुल बाहु सु कमल फेरत हेरि राधा ओर। बलि बली इहि रूपकी सुख-सिंधु-रासि किसोर ॥
ताप-नासन उदर त्रिवली-नाभि सब जगकूल। बैजयंती मालके बिच पारिजातक फूल ॥
लाल कछनी ललित किंकिनि सुभग कटितट चारु। वनज धातु विचित्र चित्रित अंग अंग सिंगार ॥
मनौ कदली खंभ जंघा परचौ रूप रसाल। सुभग पाद सरोज मंगल मत्त गजकी चाल ॥
ध्वजा अंबुज वज्र अंकुस स्याम चिह्न मुरारि। चित्र मानौ बहु बिचित्रित थकित देखि बिसारि ॥
सकल भूषन भूषना ब्रजनाथ गोकुल राय। पलक ओट न सहि सकैं हैं रहे नैन लुभाय ॥
जब न देखौं मदन मूरति नैन बरसत तोय। हिलग मनकी सोइ जानै जाहि बीती होय ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सकल प्रमदा घोष बाँध्यौ मनुज खग मृग गाय । कृष्न दरसन डोरि लागी कछु न आन सुहाय ॥
नंदनंदन जगत - बंदन दीनबंधु दयाल । सूरदासहि भक्ति दीजै रूपरासि गुपाल ॥५५५६॥

यह छबि देखि री उठि धाय । तरसती जा दरस-कारन पौरि निकस्यौ आय ॥ राग सोरठ
जटित मनिमय क्रीट नग छबि-निकर जगमग जोत । मनौ घनतें सरद ससि सत लिय नछत्र उदोत ॥
तिलक चारु सुभाल केसर बन्यौ बिंदु गुलाल । मनो सावक हेमद्रुमपै लसत मुनिया लाल ॥
कनक कुंडल-किरन मानो परत बिब कपोल । मनो स्वच्छ अगाध जलनिधि करत मच्छ कलोल ॥
छूट चहुँ दिसि चिकुर चखपै बाँसुरी सुर थोर । मनौ अहि मृग निकसि ठाढ़े सुनत हैं घन घोर ॥
अरुन अधरन दमक दसनन सुभग पाँत बिसाल । बीज दाड़िम बिधुकला - कन करत गुस प्रवाल ॥
कंठ कोमल कोकिला स्वर सिखी कीर कपोत । मनो नाना कुसुमपै बिधु धरे बिद्रुम जोत ॥
बाहु बारिज जुगल इहिं बिधि मुदित हैं इहि ओर । मनो वक्रित भानु ससि दोउ रहे हैं मुख मोर ॥
उर सरोज सजे जु ;संपुट कली कुंद सरीर । मनो दधि-सुत मिली सुरसरि बोलि चकवा तीर ॥
और बृन्दा हार राजत रोम नाभि गँभीर । मनौ संगम त्रिबिध मिलिकैं परत जलनिधि नीर ॥
स्याम अंग सुरंग रंजित पीत पट फहराय । मनो कंचन बरन बादर रहे तहँइ लुभाय ॥
किंकिनी कटि क्वनित केहरि जटित लाल प्रवाल । मनो मिलि खद्योत सेना रही लपटत माल ।
अति हि चित्र विचित्र सोहै काछनी कलधार । मनु लता फैली कदलिपै फूलती फुलवार ॥
चरन नूपुर बजत रुनझुन करत अति झनकार । मनो निसिकर अवनि कूजत कुञ्ज कुञ्ज बिहार ॥
सूर, रसना बिना निरखे कहै काह अनूप । मूक ह्वैकै छबि निहारौं बरनुँ काह स्वरूप ॥५५५७॥

तन मन धनहु डारौं वारि । स्याम सोभा-सिंधु मानो अंग अंग निहारि ॥ राग सोरठ
पचि रही मन ध्यान करि करि लहत नाहिंन तीर । स्याम तन जलरासि पूरन महा गुन गंभीर ॥
पीत पट फहरात मानौ उठै बीचि अपार । निरखि छबि तकि तरन पैठी कहुँ न वारापार ॥
चलत अंग त्रिभंग करिकै भौंह भाव चलाय । मनौ बिच बिच भ्रमर डोलत चितै चित भरमाय ॥
स्रवन कुंडल मकर मानो नैन मीन बिसाल । सलिल झलकत रूप आभा देखि री नँदलाल ॥
बाहुदंड भुजंग मानो जलधि-मध्य बिहार । मुकुत-माला मनो सुरसरि बहि चली द्वै धार ॥
अंग अँग भूषन बिराजत कनक क्रीट बिलास । उदधि-मंथन प्रगट कीन्हों श्री पियूष प्रकास ॥
चकित भईं तिय निरखि सोभा देह मति बिसराय । सूरप्रभु-छबि-रासि सागर जानि कापै जाय ॥
॥ ५५५८ ॥

स्याम पहिरिकै जलसुत-माला अति अनुपम छबि छाजै री । राग सोरठ
मनहु कपोल कला नव घनपै यह उपमा कछु भ्राजै री ।
पीत हरित सित अरुन माल वन राजत हृदय बिसाल हरी ।
मानहु इंद्रधनुष नभमंडल प्रकट भयौ तिहिं कालै री ॥
भृगुपद चिन्ह उरस्थल ग्रीवा कौस्तुभ मनि ढिग दरसत री ।
बैठे मानौ षट्पद, बिधु इक अरु घनसौं मिलि हरषत री ॥
भुजा बिसाल स्यामसुंदरकी चंदन खौर चढ़ाए री ।
सूर सुढंग अंगकी सोभा ब्रज - ललना ललचाये री ॥ ५५५९ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहौं कहा हरि-रूप-सुरस ही । राग सोरठ
अपनैं ही तन भेद बिबिध बिधि रसना जानि न नैन बिरस ही ॥
जिन देखे ते आहि बयन-बिनु जिनहिं बचन दरसनन तरस ही ॥
बिनु-वानी अति उमँगि प्रेमजल सुमिरि सुमिरि यह रूप-क जस ही ॥
यहै समुझि पछितात मनहि मन कहा करौं मोहिं बिधि नहिं बस ही ।
सूर, सकल अंगनकी यह गति कहा रच्यौ बिधि पख द्वै दस ही ॥
॥ ५५६१ ॥

राग गौरी
अंग अभूषन जननि उतारति ।
दुलरी ग्रीवमाल मोतिनकी केयुर लै भुज स्याम निहारति ॥
छुद्रावली उतारत कटितैं धरत महीपै तन मन वारति ।
रोहिनि ! भोजन करहु चँड़ाई बार-बार कहि करि करि आरति ॥
भूखे भए स्याम अरु हलधर तिनके प्रति यह प्रेम विचारति ।
सूरदास, तब मातु जसोदा, पट लै दुहुँन अंग रज झारति ॥ ५५६२ ॥

एक हि जननि दोउ उर लावति । राग गौरी
सुमना-सुत अँग परसत रोहिनि बलि बलि कहि कहि सुतहि न्हवावति ॥
सरस बसन तन पोंछि गई लै षटरसके जिमवार जिमावति ।
अँचयौ सीतल जल कपूर रस झारी कनक लिये अँचवावति ॥
भऱ्यौ चारु मुख धोय तुरत ही पीरे पान बिरी मुख नावति ।
सूर, स्याम, सुख जानि मुदित मन सेज्जापै सँग लै पौढ़ावति ॥
॥ ५५६४ ॥

हौं दुहिहौं, मोहिं दुहन सिखावौ । राग गौरी
कैसे गहत दोहनी घुटुरुन, कैसे बछरा हाथन लावौ ॥
कैसै लै नोई पग बाँधत, कैसे वाय चरन अटकावौ ।
कैसै धार दूधकी बाजति सो सो बिधि तुम मोहिं बतावौ ॥
निपट भई अब साँझ कन्हैया गाइनकी कहुँ चोट लगावौ ।
सूर, स्यामसौं कहत ग्वाल यौं, धेनु दुहन भोरहि उठि आवौ ॥ ५५६५ ॥

माई ! अरुयौ बाल गुबिंदा । राग इमन
गहि अँचरा मोहिं गगन बतावै, खेलन माँगै चंदा ॥
भाजनमैं जल मेलि जसोदा लै कर चंद दिखावै ।
रुदन करत ढूँढत पानीमैं चंद धरनि कत आवै ॥
दूध दही पकवान मिठाई माँगौ देउँ खिलौना ।
लट्टू चकई पाटकि लटकन माँगौ मेरे छौना ॥
दैत्य - दलन गजदंत उखारे केसी कंस - निकंदन ।
सूर, स्याम बलि जाइ जसोदा, सुख-सागरके कंदन ॥ ५५६६ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राग इमन

लइहौं री माँ चंदा ल्यौंगो। कहा करौं जलपुट भीतरकौ बाहिर चौक गहौंगो ॥
दलमलात यह तौ झकझोरत कैसेकैं जु लहौंगो। वह तौ निपट निकट ही दीपत बरज्यौ हू न रहौंगो ॥
तुम्हरो प्रगट प्रेम मैं जान्यौ बहुराए न बहौंगो। सूर, स्याम जब कर गहि ल्याऊँ तब तन ताप दहौंगो ॥
॥ ५५६७ ॥

राग इमन

लालन ! तुम यह चंदा लइहौ ? कमलनैन बलि जाइ जसोदा नीकैं नैंकु चितइहौ ॥
जा प्रकार तुम सुनु सुंदरवर कीन्हीं इती अनइहौं। सोइ सुधाकर लखु दामोदर या भाजनमैं लइहौं ॥
नभतैं निकट आनि राख्यौ है जलपुट जतन सु गहिहौ। लै अपनै कर काढ़ि चंदकौं जो भावै सौ कइहौ ॥
गगन मँडलतैं गहि आन्यौ है पंछी एक पठइहौ। सूर, स्याम प्रभु इती बातको कित रे लाल हठइहौ ॥
॥ ५५६८ ॥

राग कान्हरी

माखन रोटी लेहु जु बारे। ताती ताती रुचि उपजावत त्रिभुवनके उजियारे ॥
और लेहु पकवान मिठाई मेवा बहुबिध सारे। औटचौ दूध सद्य घृत अरु मधु रुचिसौं खावौ प्यारे ॥
तब हरि उठिकै करत बियारू भगतन प्रान पियारे। सूर, स्याम भोजन करिकै सुचि जलसौं बदन पखारे ॥
॥ ५५६९ ॥

राग कान्हरो

राधा मोहन करत बियारी। इक कर थार सँवारै सुंदरि एक हि रूप उज्यारी ॥
मधु मेवा पकवान मिठाई दंपति अति रुचिकारी। सूरदासकौं जूठन दीनी, अति प्रसन्न ललिता री ॥
॥ ५५७० ॥

राग विहाग

कीजिय पान लला ! है लाई दूध जसोदा मइया।
कनक कटोरा भरि भरि लीजै यह लीजै सुख देहु कन्हइया ॥
आछौ मेवा भरि औट्यौ सुठि नीकौ रुचिकर लेहु नन्हइया।
बहुत जतन करि लाल लड़ैते तुम कारन राख्यौ बल भइया ॥
फूंकि फूंकि जननी पय प्यावत सुख अरु आनँद उर न समइया।
सूरदास-प्रभु बल पय पीवत जननी दोउन लेत बलइया ॥ ५५७१ ॥

राग इमन

ए री माई सिथिल मेखला बाँधति ही मैं आपनि कटिमैं।
अपने आँगन ठाढ़ि हुती री तब ही स्याम अचानक आए ॥
रही ठगीसी बोल न आवै, छबि निरखत कछु और न भावै।
यहै साध मेरे जियमैं रहि काहू सखि बतियाँ न लगाए ॥
हाथहुतैं कंगन जु गयौ गिरि तब हरि आप उठाय बनाए।
ऐसी कृपा करी हरि मोपै मिलिकै सिगरे दुख बिसराए ॥
सूरदास, मनमोहन मोकहँ ना जानौं जु ठगौरी लाए।
सकुचि रही ता छिन मैं ऐसी भरि भरि अँखियन देखि न पाए ॥ ५५७२ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

माई ! लोचन लुबुध भए री । रोक न सहत प्रेमके माते पलक कपाट दए री ।। राग नायकी
लै मन दूत पवन ह्वै निकसे बहुरि हरीहि गए री । खरे सूर-स्वामी सौदागर बिनु-गथ मोल लए री ।।
।। ५५७३ ।।

अवधि बदी घर आवनकी । राग नायकी
जिहि जिहि जानी तिहिँ रति मानी, टेव परी रि ! खिझावनकी ।।
बहुत गई अब थोरी सी रहि, बिरहिनि बिरह जगावनकी ।
सूरदास - प्रभुसौं यौं कहियौ, रीझे आप रिझावनकी ।। ५५७४ ।।

प्यारे सिगरी अवधि टरी । राग नायकी
जिहिं डर डरपत सोइ भई है, ना जानौं कत दृष्टि करी ।।
एक निमिष नहिं रह्यौ परत है, उड़िकै जाऊँ अलि नभ री ।
सूरदास - प्रभु वै बहुनायक, बिरह - अगिनिमैं जात जरी ।। ५५७५ ।।

री ! मग निकसी आय अचानक कान्हा ठाढ़े आपनि पौर । राग अड़ानो
दृष्टि - दृष्टिसौं मिलि जिय सीतल तनमैं ब्यापी काम - मरोर ।।
लाल पाग झुकि रहि माथेपै स्याम गात चंदनकी खौर ।
सूरदास - प्रभु सरबस लैगे मन आवत मिलि आऊँ पौर ।। ५५७६ ।।

राग बिहागरो
मनमोहन हैं ठाढ़े आली सुंदर जमुना तीर री । जबतैं दृष्टि परी वा मुखपै तबतैं परत न धीर री ।।
मृगमद तिलक अलक घुँघुरारी नासा मुकता कीर री । सूरदास - प्रभु बेनु बजावत थाक्यौ सरिता–
नीर री ।। ५५७७ ।।

बलि बलि जाऊँ कुँवरि राधिका नंदसुवन जासौं रति मानी । राग बिहागरो
तू अति चबुर सु चतुर सिरोमनि प्रीति करी कैसैं रहि छानी ।।
वै जु धरत तन कनक पीतपट सो तौ सब तेरी गति ठानी ।
ते पुनि स्याम सहज वै सोभा अंबर मिस अपनैं उर आनी ।।
पुलक रोम अबहीं ह्वै आयौ निरखि रूप निज देह सयानी ।
सूर, सुजान सखीके बूझें प्रेम प्रगट करि मनहिं हँसानी ।। ५५७८ ।।

राधिका! मान तजु कान्ह भजु मामिनी । राग बिहागरो
सुंदर ललित स्याम रजनी रही जाम तेरौ जपत नाम कान सुनु कामिनी ।।
तरनि - तनया तीर मोर कोकिला कीर पौन राजत धीर सरद सुख जामिनी ।।
कुसुम सोभित सेज सरदकौ ससी तेज प्रेम पाउँ धारौ सुनौ गजगामिनी ।।
सुनत स्यामा चली सखिन आगे दई मनमैं मगन भई स्याम - सँग स्वामिनी ।।
सूर, मिलि सुकुमार दोऊ कर बिहार ज्यौं राजत घनमैं है दमक दामिनी ।। ५५७९ ।।

राधा ! हरि जू अतिथि तिहारे । राग बिहागरो
रति - पति असन - काल गृह आए, उठि आदर दै, कहे हमारे ।।
आसन आधी सेज सरकि दै, सुख पग परसि सनीर पखारे ।
अरघादिक आनंद अमृत लै, ललित लोल लोचन जल ढारे ।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धूप सुबास स्वास सौरभ मुख, बिहँसनि दर धरि दीप उज्यारे।
बचन रचन भ्रूभंग अवर अँग, प्रेम मधुर रस परुस न न्यारे॥
उचित केलि कटु तिक्त करज द्विज, अमल उरज फल कठिन करारे।
मर्दन क्षार, कषाय कचग्रह, चुंबन - आदि समर्पि सँभारे॥
अधर सीधु उपदेस सींचि सुचि, बिधि पूरन मुख - वास सँवारे।
सूर, सुकृत संतोषि स्यामकौं, बहुत पुन्य यह ब्रत प्रतिपारे॥ ५५८१॥

राग कान्हरो

राधाजूकौं लजिता मनाय लिय आवत हरिजूके कान परी नूपुर भनक।
तल्प रचो किसलय-दल कान्हा निज हाथ रहे प्रतिधुनि हिये भई बाज झनक॥
जब मिली जाय लपटानी हरि हिये त्यों त्यों ह्वाँ फेर मिटति ज्यों काँसिकी ठनक।
सूरदास, मनमोहन स्याम रिझै परसपर हँसत हँसत पौढ़े दोऊ परजंक खनक॥५५८२॥

राग केदारौ

कुंज - महल पिय प्यारी पोढ़े।
अँगसौं अंग मिलाय परसपर अलकैं छूटीं मोढ़े॥
कोक - कला परवीन रीति अति एक एकतैं च्योढ़े।
सूर, सुरत संग्राम जीति दोउ, पीत पिछौरी ओढ़े॥ ५५८३॥

राग केदारौ

पौढ़े रंग रमनी-रवन। सुमन-सेज सँवारि सखि री कुंज-कुसुमन भवन॥
रसिक मोद अपार सुखनिधि कोक कोटिक दवन। अति अनंदित मिलत दोऊ सुखद सीतल पवन॥
तरनि-तनया तीर सुभ्र सरोज चाँदनि चवन। सूर-प्रभुके गीत गाऊँ, सुनत हरि निज स्रवन॥
॥ ५५८४॥

राग विहाग

रे मन! समुझ सोच बिचार। भगति-बिनु भगवंत दुरलभ कहत बेद पुकार॥
साधु-संगति डारि पासा, फेरु रसना-सार। पर्‍यौ अबकै पाव पूरन जीत भावै हार॥
भाख सत्रह सुनु अठारह पंचहीकौं मार। दूर ही तजि तीन काने चतुर चौक निहार॥
काम क्रोध जँजाल भूल्यौ ठग्यौ ठगिनी नार। सूर, हरिके पद-भजन बिन चल्यौ दोउ कर झार॥
॥ ५५८६॥

राग बिहाग

वल्लभ! भले बुरे तौ तेरे। तुम हि हमारी लाज बड़ाई विनति सुनौ प्रभु मेरे॥
अन्य देव सब रंक भिखारी देखे बहुत घनेरे। हरि प्रताप बल गनत न काहू निडर भए सब चेरे॥
सब तजि तुव सरनागत आए दृढ करि चरन गहे रे। सूरदास-प्रभु तुम्हैं मिलैंते पाये सुख जु घनेरे॥
॥ ५५८७॥

राग विहाग

यामैं कहा घटैगो तेरौ। नँदनंदन करु घरकौ ठाकुर आपु होय रहु चेरौ॥
भली भई जौ संपति बाढ़ी बहुत कियौ घर घेरौ। सुत-बनिता बहु जूथ सकेले बैभव भयौ घनेरौ॥
कहुँ हरि कथा कहूँ हरि सेवा कहुँ भगतनकौ डेरौ। सूर, समर्पन करौ स्यामकौ यह साँचौ मत मेरौ॥
॥ ५५८८॥

राग विहाग

मन रे! भूल्यौ जनम गँवावै। खबर नाहिं तेरे सिर ऊपर काल सदा मँडरावै॥
खान-पान अटक्यौ निसि-बासर जिभ्या लाड़ लड़ावै। गृहसुख देखि फिरत फूल्यौ सो सुपने मन भटकावै।
कै तू छाँड़ि जाइगौ इनको कै तोहिं यहै छुड़ावैं। ज्यों तोता सेंवरपै बैठ्यौ हाथ कछू नहिं आवै॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मेरी मेरी करत बावरे आयुष बृथा गँवावै । हरिहिं बिसारि विषय-सुखके हित बिष्ठा चित मन भावै।।
गिरिधरलाल सकल सुखदाता स्तुति पुरान सब गावै ! सूरदास, वल्लभ उर अपने चरन-कमल चित लावै।।
।। ५५८६ ।।

सब दिन होत न एक समान । प्रगटत है पूरबकी करनी तज मन निज अग्यान ।। राग विहान
कबहुँक राजा हरिश्चन्द्र गृह संपति मेरु समान । कबहुँक दास स्वपच घर ह्वैकै, अंबर हरत मसान ।।
कबहुँ जुधिष्ठिर राज-सिँहासन, अनुचर श्रीभगवान । कबहुँक द्रुपद-सुता कौरव-बस केस दुसासन तान।।
कबहुँक दूलह बन्यौ बराती चहुँदिसि मंगल गान । कबहुँक जात मृतक ह्वै आपै कर लंबे पद पान ।।
कबहुँक राम समेत जानकी बिचरत पुष्प बिमान । कबहुँक रुदन करत है डोलत बन बन अरु उद्यान।।
जननी जठर जन्यौ जा दिनतैं लिख्यौ लाभ अरु हान । सूरदास, सब भूठे जतनन बिधिके अंक प्रमान।।
।। ५५९० ।।

दुर्मति यह संसारकी । हरि-सो हीरा छाँड़ि हाथतैं बाँधत पोट बिकारकी ।। राग विहाग
भूठे सुखमैं भूलि रहे सब सुधि बिसरी करतारकी । नाना बिधिके करम कमाए, खबर नहीं सिर भारकी।
कोउ खेती,कोउ बनिज,चाकरी,कोउ आसा हथियारकी । अंधाधुंध फिरत दसहूँ दिसि फूटी आँख गँवारकी।
नरक जानिकै मारग चाले सुनि सुनि विप्र लबारकी । अपने हाथ गरेमैं डारत फाँसी माया जारकी ।।
बारंबार पुकारि कहत हौं सुनियौ सज्जन हारकी । सूरदास, यह बिनसि जाइगी देह छिनकमैं छारकी ।।
।। ५५९१ ।।

मन रे स्यामसौं करि हेत । नाम हरिकौ जाप करि ले तौ बचैगो खेत ।।
मन सुवा तन पींजरा है ताहि,बाँध्यौ हेत । काल-रूप मँजार डोलै अब घरी तोहि लेत ।।
विषय विष-रस छाँड़ि दै रे उतरु सायर सेत । सूर, श्रीगोपाल भज ले गुर बताए देत ।।
।। ५५९२ ।।

श्रीपति दुखित भगत अपराधे । राग विहाग
संतन द्वेष दोष, हित करिकै आरति - सहित जु मोहिं अराधे ।।
सुनौ सकल बैकुंठ - निवासी साँच कहौं जनि मानौ खेदैं ।
तिनपै कृपा करौं कैसी बिधि पूजत पाँव कंठकौं छेदैं ।।
जनसौं बैर प्रीति मोसौं करि मेरौ नाम निरंतर लैहैं ।।
सूरदास, भगवंत बदत यौं मोहिं भजैं पै जमपुर जैहैं ।। ५५९३ ।।

हरि-रस तबहीं जानन पइये । राग विहाग
स्वाद, बिबाद, हरष, आतुरता, इतने दंड जु सहियै ।।
कोमल बचन दीनता सबसौं सदा प्रफुल्लित रहिये ।
गत नहिं सोच आप नहिं आनँद ऐसे मारग बहिये ।।
ऐसी जौ आवै जिय माहीं तासु भाग का कहिये ।
सूर, स्यामपै आठौं सिद्धी जौ चहिये सो लहिये ।। ५५९४ ।।

चिंता मत कर पेटकी । राग विहाग
हलन चलन यामैं कछु नाहिन कलम लिखी जो ठेटकी ।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जीवजंतु जेते जल-थलके तिन निधि कहा समेटकी ।
समै पाइ सबहिंन कहँ पहुँचे कहा बाप कह बेटकी ।।
जाकौ जितनौ लिख्यौ बिधाता ताकौं पहुँचे तेटकी ।
सूरदास तिहिं क्यों नहिं सुमिरै जो हैं ऐसे चेटकी ।। ५५६५ ।।

राग विहाग

हरिदासनतैं गरब न करिबौ ।
यह अपराध परम पदहूँतै उतरि नरकमैं परिबौ ।।
हौं धनवंत और यह भिच्छुक यह मनमैं नहिं धरिबौ ।
गज सिंहासन अस्व-पालतैं भवसागर नहिं तरिबौ ।।
खान पान ऐंड़ात चालसौं कारज बहु नहिं सरिबौ ।
सूरदास, यह सत्य कहत हौं, भगतन संग उबरिबौ ।। ५५६६ ।।

राग केदारो

तजि मन हरि बिमुखनकौ संग । जाके संग कुमति मति उपजत परत भजनमैं भंग ।।
खरकौं कहा अरगजा लेपन, मरकट भूषन अंग । कागहि कहा कपूर चुगाए स्वान न्हवाए गंग ।।
कहा भयौ पय-पान कराये बिष नहिं तजत भुजंग । सूरदास, खल कारि कामरी चढ़त न दूजौ रंग ।।
।। ५५६७ ।।

बसन्त तथा धमारके पद

(बसंत, धमार, डोल, होरी, रसिया आदि)

कीर्त्तन-संग्रह द्वितीय भाग से

राग भैरव

आजहिकी वानिकपै लाला बलि बलि मैं जु गई ।
बिगलित कचतैं सुमन पाग हू ढरकि बाम रहि अँग लसई ।।
अलस नैन झपि जात जँभातै पीक गालपै रही छई ।
धनि सुहाग तिहिंके सूरज-प्रभु जिहिंके सँग सब निसि बितई ।।
।। ५५६८ ।।

राग वसंत

राधे ! बन्यौ आज बसन्त । मदन मानु बिनोद बिहरत नागरी नव कंत ।।
मिलि सिलीमुख पाटली पट मत्त मान जु हीय । प्रथम वेलि समागमनतें कच धरित्रि गुहीय ।।
केतकी कुच कलस कंचन गरे कँचुकि कसीय । मालती मिस बिसद लोचन निरखि मुखहि हँसीय ।।
बिरह व्याकुल कमलिनी कुल भई वक्त्र निकास । पवन परिमल सहचरी पिक ह्वै गान-बिलास ।।
उत सखी चंपक चतुर अति कदम नूतन माल । मधुप मनिमाला मनोहर सूर श्रीगोपाल ।।
।। ५५६९ ।।

राग वसंत

आई हैं हम नँदके द्वारैं । खेलन फाग बसंत पंचमी सुखद समाज बिचारैं ।।
कोउ लै अगरु कुंकुमा केसर काहू मुखपै डारैं । कोऊ अबिर गुलाल उड़ावें आनँद तन न सँभारैं ।।
मोहनकौं गोपी निरखत सब नीके बदन निहारैं । चितवनिमैं सब ही बस कीन्हीं नागर नंद-दुलारैं ।।
ताल मृदंग मुरलि डफ बाजै झाँझनकी झनकारैं । सूरदास-प्रभु रीझि मगन भे गोपबधू तन वारैं ।।
।। ५६०० ।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मनमोहन - सँग बिहरत ललना रितु बसंत है आई। राग वसंत
लै लै छरी राधिका कुँवरी कमल - नैनपै धाई ॥
द्वादस बन रतनारे दिखियत चहुँदिसि टेसू फूले।
बौरे अंब और द्रुम-बेली मधुकर परिमल भूले ॥
सिसिर रितूकौ गयौ सीत अति, रबि उत्तर दिसि आयौ।
प्रेम उमंगि कोकिला बोली बिरहिनि बिरह जगायौ ॥
ताल मृदंग मुरलि बीना डफ गावत मधुरी बानी।
देतिं परसपर गारि मुदित ह्वै तरुनी बाल सयानी ॥
सुरपुर नरपुर नाग-लोक जल - थल क्रीडा रस पावै।
प्रथम बसंत पंचमी लीला सूरदास गुन गावै ॥ ५६०१ ॥

बन ठन आइँ सकल ब्रज-ललना खेलन फाग बसंत। राग वसंत
श्रीपंचमिकौं परम महोच्छव मनहर गोकुल कंत ॥
सुभ दिन सुभग सरोज प्रफुल्लित गुंजत भँवर सुवास।
खेल मच्यौ नँद - आँगन अदभुत नंदकुँवर सुख - रास ॥
केसर कीच मची मनि - आँगन केसर कुसुम सुरंग।
अबिर गुलाल उड़ावत गावत प्रगट्यौ अंग अनंग ॥
निज करसौं कर देत पियनकौं सोभा कह कहि आव।
सूरदास-प्रभु सब सुख क्रीडत ब्रजजन अंग लगाव ॥ ५६०२ ॥

महरि न बरजौ अपनौ बाल। अपनौ बालक रसिक गुपाल ॥ राग वसंत
स्नान करन गइ जमुना तीर। कर कंगन अभरन धरि तीर ॥
मेरी जल प्रवाह - तन दीठि। पाछे कान्ह मलत हौ पीठि ॥
खाय न अन्न न पीवे खीर। कितिक बार गो जमुना तीर ॥
हौं वारी ग्यालिनि तुव ग्यान। पलना झूलै बारो कान्ह ॥
तरुन लखे बृन्दावन कान्ह। घर आये पै भये अयान ॥
चली ग्वालि जिय उपजी लाज। सूरदास, ये प्रभुके काज ॥ ५६०५ ॥

बरजौ जसुमति अपनौ कान्हा। राग वसंत
मैं जमुना जल भरन जात ही बरजत ही गगरी लै फोरी लै अबीर मुख साना।
सखि सब देत जु ताना ॥
मेरौ लाल पालना झूलै बालक है नादाना। यह क्या जानै रसकी बतियाँ कैसौ खेल जहाना।
कहँ तुम भूली माना ॥
तुम साँची तुमरौ सुत साँचौ हम ही करत बहाना। सूरदास ब्रजवास न त्यागैं ब्रज तजि अनत न जाना।
करौ अपना मनमाना ॥ ५६०६ ॥

बन्दौं पद-पंकज नंदलाल। जे भवतारन पूरन कृपाल। राग वसंत
चित चिंतत होवत बुधि बिसाल। जे कृपाकरन अरु दीनपाल ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुम सदा बसौ यहि हृदय आय। निज कुँवर माधुरी चितहि धाय।
तुम तिमिर-हरन सुखकरानंद। मुनिजन - बन्दित आनंद-कंद ॥
घन स्याम मुकुट-मनि कमलनैन। तुव छविपै लाजत कोटि मैन।
गोकुलपति गुन नाहिंनै पार। श्रीनंद - सुवन सुमिरौं उदार ॥
निगमागमकौं सब ओघ-सार। बृन्दाबन-सो प्रगटयौ बिहार।
यह रितु बसंत पहिलौ समाज। तहँ मुदित जुवति-जन सजे साज।
अति मुदित चले जहँ, सूर, स्याम। बासंत बधावन नंदगाम ॥ ५६०८ ॥

बन फूले द्रुम कोकिल बोली मधुप झँकारन लागे।
सुनि वह सोर, रोर बन्दी - जन मदन महीपति जागे ॥
रनहू दीने अंकुर पल्लव जे द्रुम पहिले लागे।
मानो रति - पति रीझि नायकन बरन बरन दिय बागे ॥
नई लतापै नये पात अरु पुहुप नये रस पागे।
नवल केलि बिलसति गिरिधर - सँग, सूर, रंग अनुरागे ॥ ५६१४ ॥

आयौ आयौ पिय रितु बसंत। दम्पति-मन सुख, बिरहिनी अंत ॥ राग वसंत
है फाग खिलायो संग कंत। हाहा करिकै तृन गहति दंत ॥
तब तुरत गये हरि लै मनाय। हरि मिले हरखि तिहिं कंठ लाय ॥
तुरतहिं डार्‌यौ सब दुख भुलाय। सो सुख दुहुँअनके उर न माय ॥
सब रितु बसंत आगमन जानि। नागरि नहिं राख्यौ मान कानि ॥
तब सूरदास - प्रभु मिले आनि। रचि राख्यौ हरि रति रंग ठानि ॥ ५६१५ ॥

बृन्दाबन बंसी बटके तट ब्रजभूषन खेलत हैं होरी ॥
अगर अबीर गुलाल उड़ावत नन्दलाल बृषभानु - किसोरी ॥
अपुने अपुने गृहतें निकसीं आली सास ननदकी चोरी ॥
और सखी सब छाँड़ि स्यामने कर मरोरि पहुँची गहि तोरी ॥
सूरदास-प्रभु सब सुख - दायक कंचन अरु पारसकी जोरी ॥ ५६१६ ॥

रहसि रहसि घर समधिन आई। ए सब सजननके मन भाई ॥ राग धनाश्री
समधिनसौं समधौरी कीजै कीरति यह मन आई। नंदगामतें महरि जसोदा समधिन न्यौति बुलाई ॥
समधिन आई तब मन भाई निसि समधी-सँग खेली। खोलि हुलास आय ढिग बैठी मुहरनकीसी थेली॥
अति सुरंग सारी समधिनकी लहँगा अतिहि सुढारा। फाटि रही सिगरी समधिनकी चोली जोबन-भारा॥
समधिनकौं हाथीकौ भावै आछौ नीको पूरो। रंगरँगीलो अति चटकीलो हाथ भरेकौ चूरो ॥
समधिन तौ दीयौ ही चाहत खोलि डबाकी गाँठी। अपनी समधिनके नेगिनकौं हीरा पन्ना बाँटी ॥
समधिनकी है गली साँकरी समधी आवन जोगा। आधो भीतर आधो बाहर बहुत बराती लोगा ॥
समधिनके मेल्यौ ही चाहत गल फूलनकौ हारा। काढ़न कह समधीसौं समधिन डोलाके जु कहारा ॥
यह लीला सुर-नर-मुनि गाई देखत रहे लुभाई। चिरजीवौ दुलहे अरु दुलहिन, सूरदास बलि जाई॥
॥ ५६१६ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अपने पिय - सँग खेलौ होरी पिचकारिन रँग भरि गोरी । राग धनाश्री
गृह गृहतैं बानिक बनि आई सुघर सलोनी सुंदर भोरी ॥
बाजत ताल मृदंग मुरज डफ बिच बिच मुरली धुनि थोरी ।
चोवा चंदन और अरगजा लै अबीर भरि भरि झोरी ॥
मैं अपनौ बर पायौ सजनी बाँधि प्रीति - रसकी डोरी ।
सूर, स्याम प्रभु रस भरि खेलत, मनमोहन - राधा जोरी ॥ ५६२१ ॥

चलौ सबै मिलि जायँ वहाँपै खेलन सँग सँग होरियाँ । राग काफ़ी
अपनी अपनी सुरँग चूनरी मोतिन माँग भरोरियाँ ॥
थरहरात अधरनपै मोती अँगिया केसर बोरियाँ ।
चोवा चंदन अगर कुमकुमा भरि भरि देत कमोरियाँ ॥
अँगसौं अंग गुलाल बिराजत भली बनी यह जोरियाँ ।
केहरि लंक नितंब बिराजत गज - गति चाल चलोरियाँ ॥
पिचकाई मोहनपै डारत बिहँसी घूँघट खोलियाँ ।
बाजत ताल, मृदंग और डफ पढ़ि पढ़ि बोलत बोलियाँ ॥
नैन आँजि मुख माँड़ि स्यामको सब मिलि करत कलोरियाँ ।
सूरदास - प्रभु सब सुख क्रीडत बिहरत ब्रजकी खोरियाँ ॥ ५६२२ ॥

लोनी स्यामा मन हरि कीन्हीं रस-बस नंदकुमार । राग काफी
सब जुवतिनमें राजत आली भलि वृषभानुकुमारि ॥
नख सिखलौं अँग अँग प्रति मानौ उदयौ कोटिक मार ।
चरन - कमल बर सुभ कंचनके नूपुरकी झनकार ॥
मनहु मराल बालकी मंडलि बोलत डोलत चार ।
कदली - खंभ जंघ जुग मानो मद गयंद अतिचार ॥
केहरि कटि किंकिनि, हाटक - तन परे नीलपट सार ।
नीवि नाभि त्रिवली रोमावलि कुच कंचुकी बिहार ॥
मानौ सुभग सुमेरु अंगतैं धसी गंग द्वै धार ।
कर पहुँची फुँदना मुद्रावलि कंकन चुरी सुढार ॥
राजति अति फल फूल भरी द्वै मनौ कल्पतरु डार ।
वदन इंदु अरबिंद नैन भे मनहु मधुप गुंजार ॥
ताटँक स्रवन सरस नकबेसर बिंदु चिबुक सिंगार ।
हँसत दसन दुति अधर बिंब छबि मृगमद तिलक लिलार ॥
रसना इक छबि सरसि सीस छबि मनु तरंग निधि-वार ।
अपनी बुधि हरि हेत बिरँचि रचि जनु राधा - सी नारि ॥
सूरदास - प्रभु मोहन नागर निरखत बदन निहारि ॥ ५६२४ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

खेलत जाके संग रह्यौ हौ ब्रजवासिन - सँग फाग।
बीना ताल मृदंग झाँझ डफ बाजत बंसि रसाल॥
गावत गिरिधर रुचि उपजावत बिबस भईं ब्रजवाल।
लाल गुलाल लिये झोरनमैं बहु बिधि केसर घोरि॥
मोहन हाथ कनक पिचकाई क्रीडत ब्रजकी खोरि।
मधुमंगल श्रीदामा तुमहूँ होहु तियनकी ओर॥
जाके खेलत सुख उपजत है यों कह नंद - किसोर।
गारी देहिं जसोदाकौं सब प्रेम प्रीति रस सानि॥
यह छबि फबी कहाँ लगि बरनैं बुद्धि थकित अनुमानि।
गोरे नंद जसोदा गोरी कान्हा काहे स्याम॥
प्रथमहिं न्हाय जसोदा बैठी देखे हैं बृषभान।
हलधर कह्यौ भुजा ऊँची करि कारे जो बृषभान॥
कीरति कह्यौ कौनसौं जाई राधा रूप-निधान।
बहुर्‌यौ सिमिटि सकल ब्रजसुंदरि बेनी गुही बनाय।
माँग सँवारि तिया-सम कीन्हें पँचरँग पाग छिनाय॥
श्रीराधा चोली पहराई ललिता लहँगा सारि।
आभूषन सब अंग बनाये निरखि थकीं ब्रजनारि॥
राधे बोलि कह्यौ सखियनसौं रही रूपरस पागि।
जौ पुरुषारथ देहि बिधाता ऐसी कामिनि लागि॥
कान पकरि गुलचे चंद्रावलि सखियन पहुँचीं जाय।
राधा मगन भई बिहरत ही सकुचि रही सिर नाय॥
उपरन पँचरँगि पगिया सिरपै बाँधि चली इक नारि।
निकट गई, मोहनके धोखें हलधर गहे सँभारि॥
कोउ नीलांबर लै भागी कोउ बेनु बखानत नाम।
काहू दई कपटकी बीरी लीजै जू बलराम॥
सारी सुरँग चूनरी हमकौं आभूषन बहु मोल।
इतनौ फगुवा दै छूटौगे दो श्रीदामा ओल॥
तब हलधर जुवती सनमानी मेवा दियौ मँगाय।
स्वर्न थार भरि हीरा मानिक, सूरदास बलि जाय॥ ५६२५॥

राग काफी

निर्तत दोउ गति लै ललना बृषभानुनंदिनी - लाल॥
नवसत साज सिंगार किये अँग मोपै बरनि न जाय।
राधे आधे कोरे चितवत हरि चित लियौ चुराय॥
मोर मुकुट मकराकृति कुंडल घूंघरवारे बार।
मृगमद तिलक बन्यौ भृकुटी - बिच ब्रज - जुवतिन फँसवार॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अधर कपोल नासिका मोती दृग चंचल मनु मीन।
देखि मुखारबिंदकी सोभा राधा भई अधीन॥
जूथन जूथ चलीं ब्रजबनिता लै भरि मोद अबीर।
आय मिली वृषभानुनंदिनी रबि-तनयाके तीर॥
गोप ग्वाल मिलि चले घोषतैं नाना स्वाँग बनाय।
गावत, हँसत करत कौतूहल मिले स्यामपै जाय॥
उत हलधर ब्रजवासी लै सँग, इत सब ब्रजकी नार।
दोऊ मिलि रस - रंग बढ़ावत गावत फाग धमार॥
ताल मृदंग झाँझ डफ बाजत बिच मुरलीकी घोर।
पून्यौ चंद बदन मोहनकौ राधा नैन चकोर॥
लीन्हीं हाथ कनक पिचकाई गोकुलके नर - नार।
खेल मच्यौ वृषभानु - पौरिमैं कोउ न मानत हार॥
उड़त गुलाल अबीर कुंकुमा रह्यौ दसौं दिसि छाय।
प्रेम - मगन भईं फिरत ग्वालिनी आनँद उर न समाय॥
नील कमल लीन्हें गोपिन कर ग्वालन फेंके मारि।
हो हो हो करि होरी खेलत देत परसपर गारि।
कोउ हलधरकौं कोउ स्यामकौं भेद न कछू उपाय॥
सावधान ह्वै फिरत ग्वाल सब दृष्टि न इत उत जाय॥
सात पाँच मिलि गोप वेष धरि हलधर पकरे जाय।
फेंट पकरि सब किए, कह्यौ, छूटौगे आँखि अँजाय॥
तब मोहन किय भेष सखीकौ औरन सखी बनाय।
जाय गहे वृषभानुनंदिनी दाऊ लिये छँड़ाय॥
जित तिततैं सब धाईं ग्वालिनि मोहन घेरे जाय।
राधा कहै जान नहिं पावैं, मुरली लई छिनाय॥
राधा जाय गहे मनमोहन अंचल लियौ छँड़ाय।
कै नाचौ कै रहौ हारि तुम फगुवा देहु मँगाय॥
मोहन सखा बुलाय आपने मेवा बहुत मँगाय।
आपुन चाखि चखावत ग्वालन गोपिन अँगुठ दिखाय॥
तब प्यारी उठि धाय सखिन लै मेवा लयौ छँड़ाय।
आपुन खाय खवावति गोपिन ग्वाल रहे डहकाय॥
मोहन हँसि बस करीं ग्वालिनी लीन्हें सबै मनाय।
राधा - माधौ केलि करौ दोउ रति-पति अति सुख पाय॥
सिव विरंचि सुरपति सुधि बिसरी चकित रह्यौ रथ भान।
बरषत सुमन सुरेस त्रिया सब वारत तन मन प्रान॥
जुगल किसोर सदा मन मेरे रहौ रूप रस माय।
सूर, स्याम - स्यामा प्यारी छबि निरखत दृग न अघाय॥ ५६२७॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राग काफी

दीन्हीं नँदनंदन मोहिं गारी। ढीठ लँगर बरज्यौ नहिं मानत कान्ह बड़ौ बटपारी ॥
हौं दधि बेचन जात रही री ठाढ़ौ कृष्न मुरारी। बाँह पकरि झकझोरी ललना तोन्यौ मोतिन हारी ॥
अब कैसे घर जाउँ सखी री करिये कहा विचारी। सूरज-प्रभुसौं हिलिमिलि रहिए दीजै सरबस वारी ॥
॥ ५६२६ ॥

राग सारंग

नंदनँदन बृषभानु-कुंवरिसौं बाढ़यौ अधिक सनेह।
अब कित दूर साँवरे ढोटा फगुवा हमरौ देहु ॥
जब तौ गोहन नैंकु न छाँड़त अब भजि पकन्यौ गेहु।
सबै सखी मिलि चलीं नंदपै मोहन माँग्यौ देहु ॥
दिना चार औसर होरीकौ बहुरि आपनौ लेहु।
मोहन माँगे नाय मिलैंगे घटै कछू भर देहुँ ॥
लाय तराजू तोलौ मोहन घटै सु दूनौ लेहु।
अधिक बार खिलवार होरिकी पिचकारिनसौं नेहु।
गौर स्याम मिलि यौं राजत हैं ज्यौं भादौंको मेहु ॥
बिह्वल भइँ तनमन नहिं सूझै सबहिंन बिसन्यौ गेहु।
सूरदास, मोहनके बदले जो चाहौ सो लेहु ॥ ५६३३ ॥

राग सारंग

खेलि फाग घर आयौ मोहन जसुमति करत बधाइ।
बिबिध लिये उपहार हाथ सब ब्रजजन मंगल गाइ ॥
कनक थार भरि मुकुताफल लै हरि आरति उतराइ।
नँदनंदनकी या छबि ऊपर सूरदास बलि जाइ ॥ ५६३४ ॥

राग गौरी

परिवा प्रथमहिं होरी खेलन निकसे स्यामा स्याम।
फागुन मास सुहावन सो अति नृपति भयौ तहँ काम ॥
द्वैज दुहूँ दिसि गावत हैं सब अलि पिक कोकिल कीर।
नव बसंत द्रुम फूले चहुँदिसि मलयज मंद समीर ॥
तीज तरुनि-तन कंचुकि सोभित अरु मोतिनके हार।
सेंदुर माँग सँवारि नवेली नवसत साजि सिँगार ॥
चौथ चतुर चलि गावत झूमक महर नंदके द्वार।
सुनि कामिनि-कोलाहल निकसे घरतैं हलधर ग्वार ॥
पाँचे पंच सबद अति बाजत बाजे बिबिध प्रकार।
इतकी ओर सबै ब्रजसुंदरि उत श्री नंदकुमार ॥
छठकौं छैल छबीलौ निकस्यौ बाहर खेलन फाग।
मोहन बेनु बजावै सुंदर गावै गौरी राग ॥
सातैं चंदन बंदन केसर घसि घसि सुघर बनाय।
कृष्नागुरु कस्तूरी टेसू लै लै कलस भराय ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आठैं कंचनकी पिचकारी भरि-भरि लीन्हीं हाथ।
तकि तकि नवल किसोरी छिरकी ऊपर श्रीब्रजनाथ ॥
नवमी नवल राधिका गोरी दियौ अरगजा डारि।
हो हो हो हो बोलत डोलत नाचत दै दै तारि ॥
दसमी दसहूँ दिसितैं अबलन जाइ लियौ पिय घेरि।
नैन आँजि मुख माँडति हँसि हँसि कान्ह बदन-तन हेरि ॥
एकादसी एक सखि ढार्यौ सुभग सुरंग गुलाल।
एक जु चूमत हरिके मुखकौं एक गहे बनमाल ॥
द्वादसि फगुवा माँगति हँसि हँसि गिनि-गिनि गारी देहिं।
एक जु मुरली छीनि रही लै एक कहै हम लेहिं ॥
तेरस तरुनी-जन सब मिलिकै, सुगह गहे बलबीर ॥
कुमकुम लै लै मुख लपटायौ छिरकत नवल अबीर ॥
चौदस चहूँ दिसातें आईं लीन्हीं गाठैं जोरि।
मनमोहन नव दूल्हा बनिगे दुलहिन राधा गोरि ॥
पूरन ससि पून्यौ दिन होरी सब मिलि हरषि लगाय।
परिवा बसन जु साजे नव नव चलीं जमुन-जल न्हाय ॥
इहि बिधि होरी खेलहिं ब्रजजन फगुवा मंगल गाय।
सूरदास बलि जाय कन्हैया गिरि गोबरधन-राय ॥ ५६३५ ॥

खेलत हैं हरि हो हो होरी। ब्रज-तरुनी रस-सिंधु झकोरी ॥ राग गौरी
बाल वयस्क और नव तरुनी। जोबन भरी चपल दृग हरनी ॥
नव-सत सजि गृह गृहतैं निकसीं। मानौ कमल-कलीसी बिगसीं ॥
पिक-बैनी तन चंपक-बरनी। उपमाकौं नहिं मनसिज-घरनी ॥
बरन बरन कंचुकि अरु सारी। मानौ काम रची फुलवारी ॥
द्विदस आभरन सजि कंचन तन। मुख ससि, आभूषन तारागन ॥
मनौ मनोभव मनतैं कीन्हीं। अस त्रिभुवनकी सोभा लीन्हीं ॥
देखत दृष्टि न छिन ठहराई। झलमलात ज्यों जल महँ झाँई ॥
ताल मृदंग उपंग बजावत। डफ-आवज स्वर एक मिलावत ॥
मधुरितु कुसुमित बन नव गोरी। गावत फाग राग रति गोरी ॥
आईं सकल नंदके द्वारे। अगनित सकल सुगंध सँवारे ॥
झूमि झूमि झूमक सब गावैं। नमत नमत दुहुँ दिसितें आवैं ॥
रस सागर उमड़्यौ न समाई। मानो लहर चहूँ दिसि धाई ॥
खोरि खिरक गिरि जिहि जहँ पावैं। धाय जाय ताही गहि लावैं ॥
करि छाँड़त अपनौ मनभायौ। उड़त गुलाल सकल नभ छायौ ॥
घरमेंतैं मनमोहन झाँके। दूर भये, तब जुवतिन ताके ॥
एक हि बेर सबै जुरि धाईं। पौरि तोरि रावलमें आईं ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मोहन गहत गहत छुटि भागे। पीतांबर तजि तन भे नाँगे ॥
दौरि अटा चढ़ि दए दिखाई। उततैं स्याम घटा जनु आई ॥
सुघर स्याम मनि-गन तन राजैं। गिरा गँभीर मेघ ज्यौं गाजैं ॥
टेरि टेरि पीतांबर माँगै। गोपी कहैं आउ तौ आगैं ॥
पीतांबर राधिका उढ़ायौ। हरिजू निरखि परम सुख पायौ ॥
पीतांबर तहँ सोभा पाई। घन तजि दामिनि खेलन आई ॥
तबहि अरगजा स्याम मँगायौ। अपनैं करवर घोरि बनायौ ॥
ऊँचे चढ़ि जिमि घन बरषायौ। धाराधर जानौं उनि आयौ ॥
तब इन जसुमति ठाढ़ी पाई। सोंधे गागर सिरतैं नाई ॥
उततैं निरखि रोहिनी आई। बीच छाँड़ि ह्वै महरि बचाई ॥
आँगन भीर भई अति भारी। जसुमति देत दिवावत गारी ॥
गोपिन नंद दुरे गहि काढ़े। कंचन गिरिसे आगे ठाढ़े ॥
मनो जुवति ऐरावत लाईं। पूजत हस्ति गौरिकी नाईं ॥
नंद जसोदा गोरे गोरी। छिरकत चंदन बंदन रोरी ॥
पूजि-पूजि वर माँगत मोहन। बिन पाये छाँड़त नहिं गोहन ॥
एक कहै मोहनहिं बतावौ। तब लगि हमपै छूट न पावौ ॥
एक सिखावत एक बतावत। तारी दै दै एक नचावत ॥
एक गहे कर फगुवा माँगै। एक नयन काजर दै भागै ॥
बसन-अभूषन नंद मँगाये। दये बसन जैसे जिहि भाये ॥
देत असीस सकल ब्रजबाला। जुग जुग राज करौ नँदलाला ॥
मनमोहन पियके गुन गावै। सूरदास चरनन रज पावै ॥ ५६३६ ॥

राग गौरी

खेलत फाग कहत हो होरी।
इत समाज कामिनी बिराजत उत गिरिधर हलधरकी जोरी ॥
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ बीच बीच मुरली धुनि थोरी।
स्रवन सुहाई गारि देत हैं तान लेति ऊँचे तिय गोरी ॥
कोटि मदनतैं सुंदर स्यामा देखत मोहि जात मति भोरी।
मोहन नंद-नँदन रस बिघकित क्यौं हू दृष्टि जाति नहिं मोरी ॥
कुंकुम रँग भरि भरि पिचकारी हरि-तन छिरकति नवल किसोरी।
जनु अनुराग उमड़ि सम्मुख ह्वै धावत बंस-मेंड़ वर तोरी ॥
कबहुँक दस बीसक मिलि आवत लेतिं छुड़ाय मुरलि झकझोरी।
श्रीदामा जावै लै आवै दैन कहै बहु भाँति पटोरी ॥
कनक कलस कुंकुम भरि लीने अरु कस्तूरी वहु घसि घोरी।
खेलत गोकुल बीच कीच मचि अधिक सुगंध भई ब्रज खोरी ॥
भरि कर-कमल अबीर उड़ावत गोबिंद निकट जायकै चोरी।
मनहु प्रचंड बात-बस पंकज घनन गगन सोभित चहुँ ओरी ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ग्वाल बाल सब संग मुदित मन जाय जमुन-जल न्हाय हिलोरी।
नवल बसन आभूषन पहिरत औरन देत पटंबर कोरी॥
द्वैज अनंद समेत करत द्विज तिलक फूल फल रोचन रोरी।
सूरज-स्वामि विप्र भाँटनकौ देत कनक रतननकी बोरी॥ ५६३७॥

होरी अब हो हो हो होरी। राग गौरी
खेलत अति रस-रीति प्रगट भइ इत हरि उतहि राधिका गोरी॥
बाजत ताल मृदंग मुरज डफ बिच मोहन मुरली धुनि थोरी।
गावत दै दै गारि परसपर ऊँचे तान लेत तिय गोरी॥
मृगमद साध जवादि कुंकुमा मलय कपूर लाइ मथि घोरी।
भरत रंग राजत सुखसागर सीस उमगि बेला भरि ढोरी॥
छूटी लोकलाज कुल सजनी गनत न गुरु गोपिन उत को री।
रही न मन मरजाद अधिक सुख चोर भोर निकसत हैं चोरी॥
बरनि न जाय बचन-रचना रुचि यह छबि झकझोरा झकझोरी।
मदन द्वंद कल कुंज बिराजत सहचरि सखत गाँठ गहि जोरी॥
उन पट पीत किये रँग राते पीत रंग इन कंचुकि बोरी।
सूरदास, सारदा सरल-मति सो यह नटन देखि भई बौरी॥ ५६३८॥

हो हो हो हो होरी बोलै। गोरसको री! मातो डोलै॥ राग गौरी
ब्रजके लरिकन सँग लै डोलै। घर-घर केरी खिरकी खोलै॥
डरपि जाइ जो कोउ घर बैठै। कर बरजोरि ताहिके पैठै॥
आय अचानक अँखियाँ मींचै। रूप-सुधा-रस नैनन सींचै॥
गनत नाहिं प्रमुदित नर-नारी। बचत नाहिं बिनु खाये गारी॥
कुंकुम कीच मची अति भारी। उड़त गुलाल अटार अटारी॥
अलकावलि अति सिथिल बिराजत। धावत मत्त गयंद लजावत॥
ब्रजमैं डोलत भूले भूले। भ्रमर उड़े मनु अंबुज फूले॥
जुवती जब मोहन गहि आनी। कुमुदिनि मानो भ्रमर लुभानी॥
तारी देइ घेरि जब लीने। क्यौं छूटौ बिनु फगुवा दीने॥
गुंजावलि मुकुतावलि टूटे। पीतांबर गहने दै छूटै॥
सखी सखा मिलि खेलैं होरी। कह बरनौं री मो मति थोरी॥
निसि-बासर बाढ़चौ सुखसागर। सूरदास-प्रभु मोहन नागर॥ ५६३९॥

होरी खेलन आई हो हो, होरी खेलन आईं। राग जैजैवंती
सरसानी मधुबनकी नारी अपने अपने पति तजि धाईं॥
घेरि लियौ गोकुल चहुँ दिसितैं हरि धरिबेकी लाह लगाई।
ग्वालबाल सब भए दुचित्ते ललिता गहि हलधरकौं लाई॥
आतुर-बस जब भए लालजू भूलि गए सब ही चतुराई।
ऐसी मार परीहि परसपर नंद-पौरितैं जमुना ताईं॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

फेंट पकरि कोउ फगुवा माँगत कोउ बंदन रोरी लै धाई।
अंचल ढाल दई मुख ऊपर नैंनन सैनन बान चलाई॥
नवसत साजि चलीं सजनी सब मनु छूटे गज गेह सजाई।
सूरदास, हलधर धरि रोके लगी गुहार गुपाल गुसाइं॥ ५६४०॥

ब्रज बनिता ब्रजपति बृन्दाबन मुरली ताल बजावै। राग कान्हरौ
सबहीकौ मन अति हुलास ह्वै राग कान्हरौ गावै। चोवा चंदन और अरगजा अबिर गुलाल उड़ावै॥
टेसू कुंकुम पिचकाई भरि छिरकैं अरु छिरकावैं। सूरज-प्रभुकौं गँधरब गन सुर नर मुनि देखन आवैं॥
॥ ५६४१॥

बृन्दाबन मोहन दधि लूटी बृन्दाबन। रसिया
कहँ री हार कहाँ नकवेसर कहँ मुतियनकी लर टूटी॥
गोकुल हार मधुर नकबेसरि कुंजगलिनमैं लर टूटी।
सूरदास-प्रभुके मिलिबेकौं सरबस दै ग्वालिनि छूटी॥ ५६४७॥

दरसन दो नाथ ध्वजाधारी! दरसन दो।
तिहरे दरसकौं जिय तलफत है तीनि लोक महिमा भारी॥
ब्रजहि छाँड़ि मेवाड़ बसाई लगी भूमि वह प्यारी री।
सूरदास-प्रभुके मिलिबेकौं भई भीर अति भारी री॥ ५६४८॥

हो नँदके द्वार मची होरी हो नँदके।
उतमैं ठाढ़े कुँवर कन्हैया इतमैं हैं राधा गोरी॥
पाँच बरसके कुँवर कन्हैया सात बरस राधा गोरी।
हाथन लाल गुलाल फेंट भरि डारत हैं भरि भरि झोरी॥
सूरदास, ब्रजबासिन कारन अबिचल रहियौ यह जोरी।॥ ५६४४॥

वर्षोत्सव भाग २ से राग बिलावल

जागी महरि पुत्र मुख देख्यौ आनँद तूर बजायौ। कंचन कलस होम द्विज-पूजा चंदन चौक लिपायौ॥
दसहूँ दिसितैं बरषि कुसुम अति फूलन गोकुल छायौ। नँदजूकी इच्छा मन पूजी मनबांछित फल पायौ॥
आनँद भरे करत कोलाहल उदित मुदित नरनारी। निरभै भए निसान बजावत, देत निसँक ह्वै गारी॥
नाचत महर मुदित मन कीने हाथ बजावत तारी। सूरदास-प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा कंस-प्रहारी॥
॥ ५६५३॥

गावौ मंगलचार बधावौ गावौ मंगलचार। आवौ आँगन कलस साजिकै दधि फल नूतन डार॥
उरसौं उर मिलि नंदरायके ग्वाले सबै निहार। मागध सूत और बन्दी मिलि द्वार करत उच्चार॥
पायौ पूरन आस भयेपै सब मिलि देत असीस। नंदरायकौ कुँवर लाड़िलौ जीवौ कोटि बरीस॥
तब ब्रजराज अनंद मगन-मन दीने बसन मँगाय। ऐसी सोभा देखि देखिकै सूरदास बलि जाय॥
॥ ५५५४॥

हे दैया! मतवाला जोगी द्वारे मेरे आया है। राग आसावरी
जटा जूट सिर गंग बिराजत त्रैलोचन मन भाया है। बृष ऊपर असवार होयकै श्रीगोकुलकौं धाया है॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बाघंबर पाटंबर सोहै अंग छार लपटाया है। कर त्रिसूल डमरू लै खप्पर सिंगीनाद बजाया है ॥
अरुन नैन बिजया जु चढ़ावै आक धतूरा खाया है। तिलक चंद्रमा भृकुटी ऊपर जोगी जुगुत बनाया है॥
रुंडमाल गर बीच बिराजत सेषनाग लपटाया है। अद्‌भुत रूप देखि जोगीकौ जिय गोपाल डराया है ॥
देखौ मइया तेरौ बालक जिन मोहिं चटक लगाया है।सूर, स्याम चरनन-रज बन्दौं दरसनतैं सचु पाया है॥
॥ ५६५५ ॥

राग आसावरी

आयौ है अवधूत कन्हैया जोगीको दिखरावै ।
हाथ त्रिसूल, दूज कर डमरू सिंगीनाद बजावै ॥
जटाजूटमें गंग बिराजै गुन मुकुंदके गावै ।
भुजग अभूषन भसम बिलेपन गर रुंडनकी माला ॥
आधौ चंद्र ललाट बिराजै, ओढ़नकौं मृगछाला ।
संग सुंदरी परम मनोहर बाम भाग इक नारी ॥
हम आये हैं कासीसे अब वृषभ किये असवारी ।
कहै जसोदा, सुनि री सखियो इन भीतर जिन लावौ ॥
जो माँगैं सो दीजै इनकौं बालक मती दिखावौ ।
अंतरजामि सदासिव जान्यौ रुदन कियौ अति गाढ़ौ ॥
हाथ फिरावन लाइ जसोदा अंतरपट दै आड़ौ ।
हाथ जोरि सिव अस्तुति कीनी लालन बदन उघार्‍यौ ॥
सूरदास - स्वामीके ऊपर संकर सरबस वार्‍यौ ॥ ५६५६ ॥

राग आसावरी

किहु जोगीकी दृष्टि लागि है कान्हा मेरौ रोवै । घरघर पूछत फिरत जसोदा दूध पियै ना सोवै ॥
कहाँ गयौ जोगी नँद-घरतैं ब्रजमैं फिरि फिरि हारे । सखि ! जोगीकौ ढूँढ़ि निकासौ सुतकौ ताप निवारै॥
बलि रे जोगी नंद-भवनमैं जसुदा मातु बुलावैं । लटकत लटकत संकर आवैं मन ही मोद बढ़ावैं ॥
आये जोगी नंद-भवनमैं राइ लोन कर लीन्हें । वारि फेरि लालनके ऊपर हाथ सीसपै दीन्हें ॥
रोग दोष सब दूरि गयौ है किलकि हँसे नँदलाला । मगन भई नँदजूकी रानी दीनी मोतिन - माला ॥
रहु रहु जोगी नंद-भवनमैं ब्रजमैं बासा कीजै । जब जब मेरौ लाला रोवै तब्र तब दरसन दीजै ॥
तुम तौ जोगी परम मनोहर तुमकौं बेद बखानै। बूढ़े बाबा नाम हमारो, सूर, स्याम मोहिं जानैं ॥
॥ ५६५७ ॥

राग धनाश्री

तेरौ चिर जीवौ गोपाल ।
बेगि बढ़ौ, बड़ होय बिरिध लट महरि मनोहर बाल ॥
उपजि पर्‍यौ यह कोखि भाग्यबल समुद सीप जस लाल ।
सब गोकुलके प्रान जिवन - धन बैरिनके उर साल ॥
सूर, कितौ जिय सुख पावत है देखत स्याम तमाल ।
रज आरज लागौ इन अँखियन रोग दोष जंजाल ॥ ५६५८ ॥

राग धनाश्री

धनि गोकुल जहँ गोबिंद आए ।
धनि धनि नंद सुमंगल निसिदिन धनि जसुमति जिन गोद खिलाए ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धनि यह बाल - केलि जमुना - तट, धनि बन सुरभी - वृन्द चराए।
धनि यह समय, धन्य यह लीला. धनि यह बेनु अधर धरि गाए ।।
धनि यह चरन सदा सुखकारी, संत जननके हृदैं रहाए।
सूर धन्य ऊखल, जाके हित, मोहन आपुन जाइ बँधाए ।। ५६५९ ।।

कृष्न जनम आनंद बधाई। राग सारंग
सुरतरु कामधेनु चिंतामनि बिबिध भाँति कछु बरनि न जाई ।।
अंतरिच्छ जन फिरत अवनिपै मिलत परसपर दूब बँधाई।
हृदै प्रफुल्लित ब्रजबासिनकौं बाल बिरिध गावत हरषाई ।।
भई भीर नाचत नरनारी बाजे बजत गने नहिं जाई।
सुरपुर अति आनंद भयौ है हरषि पुहुप बरषा बरषाई ।।
सुतकौं बदन निहारि सखी सब वारतिं भूषन लेत बलाई।
रतन कोखि रानी जसुमतिकी निरधन जाकी करत बड़ाई ।।
तब नँदराय मगन भे ठाढ़े कनक रतन मनि धेनु मँगाई।
बिप्र पुनीत बेद धुनि उचरत दान मनौ बरषा बरषाई ।।
नंदलालकौ बदन निहारत हरषत सब मिलि करत बधाई।
तिहूँ लोक आनंद भयौ है, सूरदास निरखत बलि जाई ।। ५६६० ।।

नँदके मन आनंद भयौ अति। राग सारंग
पुत्र - जनम सुनिकै मन फूले दान देत जियमैं बाढ़ी रति ।।
करत बेद-धुनि बिप्र बिमल मन येई हैं जग-जीवनकी गति।
सूरदास - प्रभुकी सुंदरता देखि लजाने कोटिक रतिपति ।। ५६६१ ।।

कौन सुकृत इन ब्रजबासिनकौं कह बिरिंचि सिव सेष। राग गौरी
श्रीहरि जिनके हेत प्रगट भे धरिकै मानुष बेष ।।
ज्योतिरूप जगधाम जगतगुरु जगतपिता जगदीस।
जोग, जग्य, जप, तप, ब्रत दुरलभ सो गृह गोकुल-ईस ।।
इक इक रोम बिराट रूप सम अनँत कोटि ब्रह्मण्ड।
लिये उछंग वाहि नँद-जसुदा धारे निज भुजदंड ।।
जाके उदर लोक त्रय जल थल पंचतत्त्व चहुँ खान।
बालक ह्वै झूलत ब्रज पलना जसुमति भवन निधान ।।
अनुदिन स्रवत सुधारस सो पय चिंतामनिसी धैनु।
सो तजि जसुमतिकौ पय पीवत भगतनकौ सुख दैनु ।।
करन हरन प्रभु दाता मुकता बिस्वंभर जग जानि।
तिहिं लगाय माखनकी चोरी बाँध्यौ है नँदरानि ।।
रबि ससि कोटि कला सम लोचन त्रिबिध तिमिर मिटि जात।
अंजन देत हेत सुतके चख लै कर काजर मात ।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कमला - नायक हरिपद - दायक दुख-सुख जाके हाथ ।
काँध कमरि, कर लकुट, नगन पद बन बछरनके साथ ॥
बेद उपनिषद्‌कौ रस, षड्रस अरपत भोगत नाहिं ।
गोप ग्वाल सँग बैठि कन्हैया हँसि हँसि जूठन खाहिं ॥
छिति नापी तीनहि पद हरिजू बलि छलि दियौ पतार ।
देहरि उलँघि सकत नहिं सो प्रभु खेलत नंददुवार ॥
बकी, बकासुर, सकट, तृनाव्रत, अघ, धेनुक, बृषभास ।
कंस, केसिकौ यह गति दीनी राखे चरन निव्रास ॥
भक्तबछल प्रभु पतित उधारन रहे सकल भरपूर ।
मारग रोकि पर्‌यौ हठि द्वारैं पतित-सिरोमनि सूर ॥ ५६६४ ॥

ब्रजमंडल आनँद भयौ, प्रगटे मोहनलाल । ब्रज-जुवती लै भेंट चलि, हाथन कंचन थाल ॥
जाय जुरे नंदरायपै, बाँधी बंदनवार । कुंकुमके दिय साथिये, सोहर मंगल गाय ॥
कान्ह कुँवर देखन चले, हरषित होत अपार । देखि देखि ब्रजसुंदरी, अपनौ तन मन वार ॥
जसुमति लेत बुलायकै, अंबर दिय पहराय । आभूषन बहु भाँतिके, देत सबन मन भाय ॥
दै असीस घरकौं चले, चिर जिउ कुँवर कन्हाइ । सूर, स्याम बिनती करै, नंदराय मन भाइ ॥
॥ ५६६५ ॥

राग रामकली

जसुमति पलना सुतहिं झुलावै ।
निरखि मुखारबिंदकी सोभा मनमैं अति सचु पावै ॥
बिबिध भाँतिके लिये खिलौना बैठी आप खिलावै ।
देखि देखि मुसुकात मनोहर द्वै दँतियाँ दरसावै ॥
लै पलनातैं हुलसि हुलसिकै अस्तन पान करावै ।
यह सुख तीनि लोकमैं नाहीं, सूर कहा कहि गावै ॥ ॥ ५६७० ॥

राग देवगंधार

माई पलना लाल झुलायौ । सुर नर मुनि कोटिक तेतीसौं कौतिक अंबर छायौ ॥
जाकौ अंत न ब्रह्मा जानै सिव सनकादि न पायौ । सो सुत देख्यौ नंद जसोदा गोपिन हाथ खेलायौ ॥
नाचत, हँसत, करत किलकारी मन अभिलाष बढ़ायौ । सूरदास, भगतन हित कारन नाना भेष बनायौ ॥
॥ ५६७४ ॥

राग बिलावल

झुलावै पलनैं सुंदर स्याम । नख - सिखलौं सिंगार सु सोहत मोहत कोटिक काम ॥
देखनकौं जुरि आईं सकल मिलि सुंदर ब्रजकी बाम । सूरदास-प्रभु झूलत पलना, झुलवति हैं ब्रजबाम ॥
॥ ५६७५ ॥

राग आसावरी

गिरिधरलाल पालनैं झूलैं जसुमति आप झुलावै । देखि देखि मुख कमलनैनकौ बालचरित जस गावै ॥
कबहुँक सुरँग खेलौना लै लै नाना भाँति खेलावै । चुटकी दै दै लाड़ लड़ावै अरु करताल बजावै ॥
पुत्र सनेह चुचात पयोधर आनँद उर न समावै । चिरजीवौ नँदके दोउ ढोटा सूरदास हुलरावै ॥
॥ ५६७७ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राग आसावरी

जसुदा मइया लाल झुलावै। आछे बारेकौं हुलरावै।
कनियाँ कनियाँ अइयाँ अइयाँ यौं कहि लाड़ लड़ावै। हुलुलुलु हुलुलुलु हाँहाँहाँहाँ कहि कहि गोद खेलावै॥
दोउ कर पकरि जसोदा रानी ठुमकी पाँयँ धरावै। घननन घननन घुँघरू बाजै झाँझरिया झमकावै॥
सूरजदास, मदनमोहनकौं याही भाँति रिझावै। मम् मम् पप् पप् चच् चच् ता थेइ यहि बिधि लाड़ लड़ावै॥
॥ ५६७७॥

राग सारंग

तेल भरे भरे केसहु सौंधे औ अंग भरे सब स्वच्छहि सारी।
उमित कुंभ भरे उर दोउ तँबोल भरे मुख दै चुचकारी॥
गोद लिये निज त्रिभुवन मंडन अंक जसोइ चुखावति भारी।
नैन दोऊ हिरदैपै लग्यौ नहिं दूरि करै अँचराहु बिडारी॥
बैठिके पीढ़ेपै नीचेकै पाँवन ठाढ़ी तहाँ समुहें सुकुमारी।
देखत सूर भयौ अति सीतल गति न करै अंतर मति हारी॥ ५६८०॥

राग रामकली

उगिलौ प्यारे लालन माटी। बार बार अनरुचि उपजावत जसुमतिके कर साँटी॥
महतारीकौ कह्यौ न मानत कपट चतुरई ठाटी। बदन उघारि दिखायौ अपनौ नाटककी परिपाटी॥
बड़ी बार भइ लोचन मूँदे भरम जवनिका फाटी। सूरदास, नँदरानि थकित भइ कहत न मीठी खाटी॥
॥ ५६८१॥

राग रामकली

हौं वारी हरि तेरे मुखपर।
मेरी दीठि लगौ जिन माई! मसि बिंदुका दै भ्रूपर।
सरबस मैं पहले ही दीनौ दँतियाँ नान्हीं नान्हीं दूपर॥
कहा करौं न्यौछावर अब हौं सूर त्रिभंगी-सोभा ऊपर॥ ५६८४॥

राग बिलावल

बलि जाउँ लला इन बोलनकी।
घूंघरवारि लटैं लटकैं छबि कुंडन लोल कपोलनकी॥
दंतकि पंगति कुंद कली अधरामृत बोलन खोलनकी।
चपला चमकै तन बीजु छटै उर मोतिन माल अमोलनकी॥
रुनक झुनक पग पैंजनि बाजै चलन चटक इन डोलनकी।
सूरदास-प्रभु करि न्यौछावरि लटक भुजा गल मेलनकी॥ ५६८५॥

राग बिलावल

गिरिधर डोलत पाँइन पाँइन।
अँगुरी गहैं नंद बाबाकी निज घुटुरुनके चाइन॥
लटपटाइ पग धरत अटपटे जसुमति लेत बलाइन।
कठुला कंठ बाघ-नख राजत अंग-अंग सुखदाइन॥
यह सुखब्रह्मादिककौं दुरलभ जीवत संत जु पाइ न।
सो सुख, सूर, स्याम क्यौं पइयत जो सुख ब्रजकी गाइन॥ ५६८६॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राग बिलावल

कान्हा एकौ द्वै नहिं जानै। दूध और दावानल दोऊ एकहि करिकै मानै ॥
कमल और गोवर्धन लालहिं दोउ एक करि लेखे। सूर, कितिक लीलाकौं गावै देव न सपनहुँ देखे ॥
॥ ५६८७ ॥

धौरीकौ पय पीजै लाला जासौं बेनि बढ़ै। राग आसावरी
सब लरिकनमें सुनि सुंदर सुत तुम सिर अधिक चढ़ै ॥
देखि-देखि औरउ ब्रजबालक बलि अरु बच्छ बढ़ै।
कंस केसि अरु सब बैरिन उर अनुदिन अनल दढ़ै ॥
छिन चितवत छिन ही छिन टोवत ऐसहि जननि रढ़ै।
सूरदास, मुसकाय जसोदा सिरतैं कढ़ि न कढ़ै ॥ ५६८८ ॥

राग आसावरी

काहू जोगी नजर लगाई मेरौ कान्ह रोवै। घर-घर हाथ दिखावै जसुदा दूध पिवै नहिं सोवै ॥
चार डाँड़िकौ सरल जु सुंदर हरि पालने झुलावै। पलने नाहीं सोवै मोहन गोद लियैं हुलरावैं ॥
मेरि गली जिन बोल्यौ जोगी अलख अलख कहि आवै। राई लौन उतारि जसोदा, सूरज प्रभुहिं सुवावै ॥
॥ ५६८९ ॥

आजु गुपाल हमहिंकौं दै री। राग धनाश्री
देखौं बदन कमल नैनन भरि पुनि तू अपने लाला लै री ॥
अति कोमल कर चारु सरोजैं अधर दसन नासा सोहै री।
लटकन सीस कंठ मनि भ्राजत मनमथ कोटि वारनैं कै री ॥
दिवसहिं निसा बिचारत हौं सखि! यह सुख कबहुँ न पायौ मैं री ॥
निगम निधान सनातन बालक भाग बड़ो, पायौ है तैं री ॥
ताकौं रूप जगतके लोचन, कोटि चंद रवि आलय है री।
सूरदास, बलि जाय ग्वालिनी गोकुलनाथ पूतना-बैरी ॥ ५६९० ॥

लालन! तेरे मुखपर वारी। राग धनाश्री
बलि हरि मेरे नैनन लागै रोग बलाय तुम्हारी ॥
सुंदरताकौ पार न पावत रूप देखि महतारी।
उर अंतर आनंद बढ़ावत हँसत देत किलकारी ॥
अलप दसन तुतरात बोल बिवि तहाँ न जात बिचारी।
सूर, सिंधु मैं बिंदु भई मिलि मनसा मगन हमारी ॥ ५६९१ ।

राग टोड़ी

देखौ, राजत हैं नंदलाल। सीस किरीट स्रवन मनि कुंडल उर गुंजा बनमाल ॥
बागौ सरस केसरी सोहै फेंट छोर रसमाल। सुरत केलि रस मुरलि बजावत चंचल नैन बिसाल ॥
आसपास सब ग्वाल मंडली मधि नायक ब्रजपाल। सूरदास-प्रभु यह सुख वाढ्यौ बड़े गोपके बाल ॥
॥ ५६९२ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बलि जाऊँ मैं लालकी। राग इमन
धूसर धूरि घुटुरुवन टेकत बोलन बचन रसालकी ॥
कछुक हाथ कछु मुखमैं माखन चितवनि नैन बिसाल की।
मोतिन हँसत नासिका नथुनी गर बघनख बनमालकी ॥
छिटकि रही चहुँदिसा लटुरियाँ लटकन सोहै भालकी।
सूरदास-स्वामी सुखसागर पल न तजैं ब्रजबालकी ॥ ५६६३ ॥

ल्याय न किन तू दै री मैया मोकौं गढ़िया आँम की। राग बिहाग
नंद हँसत मन मुदित जसोदा सुनि सुनि बतियाँ स्यामकी ॥
तजि खोवा बासौंदी मेवा बलिहारी या नामकी।
अटकत माँगत मीसी रोटी भुरकी सोहै कामकी ॥
धनि धनि ब्रज, धनि धनि गोपीजन ब्रज समीप नँदगामकी।
सुख बिलसत हुलसत मुख निरखत सूर, सँपति सब स्यामकी ॥ ५६६४ ॥

राग देवगंधार
अजु बरसाने बजत बधाई। प्रगट भई वृषभानु गोपकैं सबहिंनकी सुखदाई ॥
आनँद मगन कहत जुवतीजन महरि बधावन आई। बंदीजन मागध जाचक-गन गावत गीत सुहाई ॥
जय जयकार भयौ त्रिभुवनमैं प्रेमबेलि प्रगटाई। सूरदास-प्रभुकी यह जीवन-जोरी सुभग बनाई ॥
॥ ५६६५ ॥

रावलमैं अजु बजत बधाई। धन्य कोख ताहीकी जिन यह कुँवरि सुलच्छिनि जाई ॥ राग सारंग
निरखि निरखि फूलत गोपीजन भई हमारी भाई। पूरब सुकृत बिचारत अपनौ अनायास निधि पाई ॥
कहत गर्ग सुभ घरी बिचारत सोचि रहे अरगाई। अति लहनौ वृषभानु गोपकौ भाग्यदसा चलि आई ॥
जासौं प्रेम सुलच्छनि कहियत सो यह बेदन गाई। सूरदास-स्वामीतैं बढ़िकै तीनहुँ लोक बड़ाई ॥
॥ ५६६८ ॥

राग सारंग
प्रगट भई सोभा त्रिभुवनकी श्रीवृषभानु गोपकैं आई। अद्‌भुत रूप देखि ब्रजबनिता रीझि रीझिकैं लेत बलाई ॥
नहिं कमला, न सची रति रंभा उपमा उर न समाई। जातें प्रगट भए ब्रजभूषन धन्य पिता धनि माई ॥
जुग जुग राज करौ दोऊ जन इत तुम उत नँदराई। उनके मनमोहन, इत राधा, सूरदास बलि जाई ॥
॥ ५७०० ॥

लखी सुता बृषभानकी। जननी सँग आई ब्रज रावरि सोभा रूप-निधानकी ॥ राग सारंग
नैंकु सुभाय भृकुटि टेढ़ीसी बाँकी सरस कमानकी। नैन कटाच्छ रहत चितवत ही चितवनि निपट अयानकी ॥
पग जेहरि कंचन रोचनसी तनकसि पहुँची पानकी। खगवारी गर ढ्रैलर मोती तनक तरौनी कानकी ॥
लै बैठी हँसि गोद जसोदा मनमैं ऐसी बानकी। सूरदास-प्रभु मनमोहन हित जोरी सहज समानकी ॥
॥५७०१॥

नवल नागरी सब गुन आगरी। राग धनाश्री
सौभग-सींवा हरि भुजग्रीवा। गौर-स्याम छबि पावती, स्यामहिंके मन भावती ॥
सिसुतामें है आलि री! जोबन कियौ प्रवेस। कहा कहौं छबि रूपकी, नखसिख परम सुदेस ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

व्रजपति केलि-सरोवरी, सैसव जल भरपूर । प्रगटित कुच उरकी स्थली, सोभित जोबन सूर ।।
छुटे केस मज्जन समै, लखि बिरुधे अहि भोर । मोर कुहू निसि मेरुतें, उतरि चले उहि ओर ।।
कंचन तन मज्जन कियौ, केसर हेम कलाय । मानहु चंदन तरुवरी, नाग रहे लपटाय ।।
सिर बेनी नख खोलही, बनी छबी इहि भाँति । मनौ कमल मुकुलित किये, बाल भृंगकी पाँति ।।
सीस सचिक्कन स्याम कच, दिय सीमंत सँवार । पसरी किरन पतंगतैं, भई द्विधा तमहार ।।
खटुला सुभग जड़ावके, मनि मुकुता छबि देत । उदित भयौ घन-मध्यतैं, ससि मनु नखत-समेत ।।
केसर आड़ ललाट है, बिच सिंदुरकौ बिंदु । चक्र तरौना, नैन मृग, रथ बैठ्यौ मनु इंदु ।।
नैनन ऊपर हे सखी ! यों राजत भ्रू-भृंग । जुआ बनावत चंद्रमा, चपल होत सारंग ।।
चंचल नैन बिसाल हैं, मधि झलकैं घनस्याम । अंबुज दल मनु मुख दिये, लघु लघु सालग्राम ।।
चंप-कलीसी नासिका, राजत अमल उद्योस । ऊपर मुकुता ज्यौं लसै, पर्‌यौ भोर कन ओस ।।
बेसरमैं मुकुता-मनी, दै नासा बजनारि । गुरु भृगु सनि बिच भौम है ससि समेत ग्रह चारि ।।
मुकता आप बिकायकै, उर बिच छिद्र कराय । अधरामृत हित तप करै, अध मुख ऊरध पाय ।।
गुंजा जैसी छबि बनी मुकता अति बड़ भाग । नैननकी लै स्यामता अधरनकी अनुराग ।।
सुंदर सुभग कपोल हैं, मुख तमोल भरपूर । कंचन संपुट द्वै पला - मध्य भर्‌यौ सिंदूर ।।
स्वेत कांति दसनावली, रहि तँबोल - रँग भींजि । बदन ससीमैं हैं बये मधि अनारके बीज ।।
अधरनकी छबि कह कहौं, सदा स्याम अनुकूल । बिंब प्रवाली राजहीं, मुसकनि बरषत फूल ।।
चिबुक दिठौना जब दियौ मो मन धोखैं जात । निकसत अलि - सुत कंजतैं मनो भये परभात ।।
देखि बदनकौ रूप सखि ! मोहन रहे लुभाय । इकटक रहे चकोर ज्यौं दृष्टि न इत उत जाय ।।
यह मारग बन बाटिका निकसत सहज सुभाय । मधुप कमल बन छाँड़िकै संग रहे लपटाय ।।
तोंहि स्याम सोहैं सखी ! बढ़ी निरंतर प्रीति । आपु रहैं आधीन ह्वै पाये हैं हरि जीति ।।
जहीं जहीं तू पग धरै, तहीं तहीं मन साथ । तू ही तन-मन स्यामके, चितवत तेरे हाथ ।।
धनि धनि मातु प्रभावती, धन्य पिता वृषभान । जिहिं कुल जनमी राधिका, सुंदर चतुर सुजान ।।
मनमोहन मोहे सखी, अति प्रवीन नँदलाल । सूरदास गावै सदा, कीरति बिसद बिसाल ।।
।। ५७०२ ।।

राग बिलावल

मटुकी लइ उतारि नँदलाल । दान दान कहि लूटत हमकौं परे हमारे ख्याल ।।
चलि री! जसुमति आगैं हम सब कौन चलाई चाल । सूरदास-प्रभु क्यौं निबहैगी गति मति मदनगुपाल ।।
।। ५७०४ ।।

राग नट

वृन्दाबनमैं दधि है लूटी ।
कहँ है हार कहाँ नकबेसर कहँ मोतिनकी लर टूटी ।।
बरजि जसोदा अपने मोहन झकझोरत मटुकी फूटी ।
सूरदास प्रभुके मिलिबेकौं सरबस दै ग्वालिनि छूटी ।। ५७०६ ।।

राग सारंग

द्वारें ठाढ़े हैं द्विज बामन ।
सुनत बचन हिरदैं सुख उपज्यौ भयौ कहाँ तैं आवन ।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चरन धोय चरनोदक लीनौ कहौ बिप्र मन भावन।
तीन पैंड़ धरती हौं माँगौं परन - कुटी इक छावन ।।
अहो बिप्र ! माँग्यौ तुम केतिक बहुत देहुँ धन गाँवन।
सूर, सुबल हरि सरबस लीन्हौं दियौ पीठ पग पावन ।। ५७०८ ।।

राधा प्यारी कह्यौ सखिनसौं साँझि धरौ री माई। राग गौरी
बिटियाँ बहुत अहीरिनकी मिलि गईं जहँ फूल अथाई ।।
यह बतियाँ जानी मनमोहन कह्यौ सबन समुझाई।
गइया बछरा देखत रहियौ मइया छान धराई ।।
ऐसे कहिकैं चले स्याम तब गए जहाँ सब आई।
सखी रूप धरि मिले लाड़िले फूल लिये हरषाई ।।
करसौं कर राधा सँग सोभित साँझी चीती जाई।
षटरसके व्यंजन अरपे तब मन अभिलाष पुजाई ।।
कीरति रानी लेत बलैयाँ बिधिसौं बिनय सुनाई।
सूरदास, अबिचल यह जोरी मुख निरखत न अघाई ।। ५७०९ ।।

जबहीं मुरली अधर लगावत। राग रामकली
अंग अंग रस भरि उमगत है तातें पुनि पुनि भावत ।।
औरै दसा होत पलकनमैं अगम प्रीति परकासत।
तब चितवत काहू तन नाहीं जबहिं नाद मुख भाषत ।।
ग्रीव नवाय देत है चुम्बन सुनि धुनि दसा बिसारत।
सूर, मुरुछि लटकत ताहीपै ताही रहस बिचारत ।। ५७१० ।।

जब मुरलि अधरन धारि। सुनि सिव समाधिहु टारि ।। राग बिलावल
सुनि थके ब्योम बिमान। सुरबधू चित्र समान ।।
ग्रह नखत तजत न रास। बाहन बँधे धुनि - पास ।।
सुनि उमगि आनँद भारि। चल थके अचलहु टारि ।।
चल अचल गति बिपरीत। सुनि बेनु कल पद गीत ।।
झरना झरैं पाषान। गंधर्ब मोहैं गान ।।
खग मृगहु मौन धराइ। फल तृनन सुधि बिसराइ ।।
सुनि धेनु मृग थकि जात। तृन दंतहू न गहात ।।
बछरा न पीवैं छीर। पंछी मनौ मुनि धीर ।।
द्रुम बेलि चपल भये रि। नव अँकुर प्रगट नये रि ।।
तहँ बिटप चंचल पात। अनुराग नैन चुचात ।।
सुनि पवन चंचल थाक। जल सरित चलि नहिं साक ।।
सुनि थक्यौ मंद समीर। उलट्यौ जु जमुना नीर ।।
सुनि धुनि चलीं ब्रजनार। सुत देह गेह बिसार ।।
यह रूप मोहन धारि। मद कामकौ सब हारि ।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नव नील तन घनस्याम। नव पीत पट अभिराम ॥
नव मुकुट नव मनि - दाम। लावन्य कोटिक काम ॥
मन हर्‌यौ मदन गुपाल। तन स्याम नैन बिसाल ॥
श्री - मदनमोहन लाल। सँग नागरी नव बाल ॥
नव कुंज जमुना कूल। लखि सूरकौ मन फूल ॥ ५७११ ॥

बंसि बजावै साँवर कान्हा किहिं मिस देखन जाउँ री। राग बिलावल
मैं तोहिं पूछौं हे रि सखी री ! कहा कुँवरकौ नाउँ री ॥
मोर मुकुट माथे है वाकैं ललित त्रिभंगी पाउँ री।
लाल काछनी पीतंबर री पग नूपुर झनकार री ॥
कुंजन निरतत जहाँ साँवरौ मधुप करैं गुंजार री।
कोमल कर कटि पट पकरे री करत मुरलि धुनि गान री ॥
नाद सुनत मन रहत न मेरौ कैसैं राखौं प्रान री।
पचि हारी हौं पियसौं, मेरौ कह्यौ न मानै कंत री ॥
बरबस वाके परी जाय मैं लेवै चाहे अंत री।
दया - बिहूनौ निर्दय मेरौ पीउ न जानै पीर री ॥
चलती बेर रह्यौ आड़े ह्वै कबकौ दामनगीर री।
माइ बाप बर खोजि खोजिकै बेड़ी डारी पाँव री ॥
कमलनैन निरखे बिनु मेरौ रह्यौ न ऐसौ हाव री।
इतनौ कहिकै चली ग्वालि ज्यौं केंचुरि तजिकै नाग री ॥
सूर, स्यामसौं जाय मिली ज्यों कंचन मिलै सुहाग री ॥ ५७१२॥

मुरली अधरनपै रहि लागी। राग सारंग
जा रसकौं षट रितु तन गार्‌यौ सो रस पिवत सभागी ॥
कहाँ रहत कहँतैं यह आई कौनैं याहि बुलाई।
चकित कहत भईं यौं ब्रज ग्वारिनि यह तौ भली न आई ॥
सावधान क्यौं होत नाहिं तुम उपजी बुरी बलाई।
सूरदास - प्रभु हमपै याकौं कीन्हीं सौत बजाई ॥ ५७१३ ॥

बावरी सो जो बाँसुरीसे लरै। राग सारंग
वह उनसौं प्रेम नेमसौं तुमसौं नहिन आली, यातैं गिरिधारीलाल लै लै अधर धरै ॥
जौं लौं मधु पिवत रहत तौं लौं जोवत है, घरी घरी पल पल छिन छिन नहिं बिसरै ॥
सूरदास - प्रभु वाके रस बस भे रहत आली ! तातैं वाकी सरवर कहौ धौं कवन करै ॥
॥ ५७१४ ॥

राग सोरठ
मुरली ! कौन तप तैं कियौ। रहत गिरिधर मुखहिं लागी अधरकौ रस पियौ ॥
नंदनंदन पानि परसे तोहिं तन मन दियौ। सूर, श्रीगोपाल बस भे जगतमैं जस लियौ ॥
॥ ५७१५ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तेरे साँवरेने माय ! बंसी बजाई है। राग जैजैवन्ती

थकित जमनाकौं नीर, बछरा न पीवैं छीर, धीर न धरैं कीर, अचल चलाई है ॥
थकित उडुगनपति, पवनकी मंद गति, यही गीत जादौपति, जैजैवन्ति गाई है।
सूरके प्रभूकी बंसी, बाजी है अति नीकी, सुनि जाकौ लाग्यौ बान सोई तन भाई है ॥
॥ ५७१७ ॥

राग मारू

ही परदेसिन नारि अकेली। बिनु रघुनाथ और नहिं कोऊ मातु पिता न सहेली ॥
रावन रूप धर्‍यौ तपसीकौ कित मैं भिच्छा मेली। अग्या नाहिं हीन मति मेरी लखन-रेख पद पेली ॥
बिरह ताप तन अधिक जरावत जैसैं दव बन-बेली। सूरदास-प्रभु बेगि न मिलिहौ प्रान जात हैं खेली ॥
॥ ५७१८ ॥

राग मारू

लछिमन ! सीता कौन हरी। यह जु मढ़ी बैरिन भइ हमकौं कंचन मृग जु छरी ॥
जोपै सीता होत मढ़ीमैं झाँकत द्वार खरी। सून्य मढ़ी देखत रघुनंदन आयौ नैन भरी ॥
इक दुख हतौ पिता दसरथकौ दूजौ सीय करी। सूरदास-प्रभु कहत भ्रातसौं, बनमैं बिपति परी ॥
॥ ५७१९ ॥

राग मारू

जानकि ! हौं रघुपतिकौ चेरौ। बीरा दै रघुनाथ पठायौ सोध करनकौं तेरौ ॥
दस अरु आठ पदुम बनचर लै चाहत हैं गढ़ घेरौ। तुम्हरे कारन स्याम-मनोहर निकट दियौ है डेरौ ॥
अब जिय सोच करौ जनि जननी ! जनम जनम हौं चेरौ।सूरदास-प्रभु तुम्हें मिलनकौ सरद रंक कित फेरौ॥
॥ ५७२१ ॥

राग मारू

जारौं गढ़ लंक आज, रावन भय मानै। सीतापति सेवक मोहिं आयौ को जानै ॥
एक एक रोमनपै हते लक्ष बाना। त्यौं त्यौं कपि फेरत है रामचंद्र आना ॥
एक भेंट उनकी लै उनहीकौं दीजै। ज्यौं ज्यौं लंगूर उठै त्यों त्यों कपि खीजै ॥
रामचंद्र बिपद-हरन कितहूँ नहिं भूले। सीता दुख परम कठिन ब्यापत उर सूले ॥
इतने सुख कनक-भवन सब बिधि तजि हारे। ते मंदिर पवनपूत बिषम ज्वाल जारे ॥
बीच बीच धूमधाम बिच बिच झंकारे। बीच बीच देखियै जु, सूर, स्याम कारे ॥
॥ ५७२२ ॥

आजु रघुबीरकौ बीर आयौ। राग मारू

जारि लंका सकल, मारि राक्षस बिकल, सीय-सुधि लै कुसल, फिर सिधायौ ॥
कहत मंदोदरी, सुनहु दसकंध पिय ! बड़ौ अपमान करि गयौ तेरौ ॥
अजहुँ मन समुझिकै मूढ़ ! मिलि रामसौं, सूर, मतिमंद अब कह्यौ मानि मेरौ ॥
॥ ५७२३ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बैरि सहज होय बस बल तौ न कीजै। राग मारू
रीति महापुरुषकी आदितैं अंत - लौं, जानिकै काहुकौ दुख न दीजै ।।
जाइ अंगद कहौ आपनी साधुता यह बचन कहत कछु दोष नाहीं।
लाभ अति होयगौ सत्रु करि मित्रता दीनता भाखियै जाइ ताहीं।।
साधुके पास जगदीस कोऊ कहै बोलियै साधुता, टेक छोरी।
बालिनंदन - प्रति राम ऐसे कहैं सबनकी सूर - प्रभु - हाथ डोरी।। ५७२४ ।।

श्रीराम आदेस अंगद चल्यौ लंककौं, प्रभु जब दोउ करन पीठ थापी। राग मारू
धरनि धँसि सिंधु गई, सभा उलटी भई, इनहिंमैं कौन रावन प्रतापी।।
रामकौं सत्रु कर आप सिर छत्र धरि, रहि न पावै कहूँ ऐस पापी।
ठौर ही ठौर बहु रूप रावन भये, सबहि अंगद प्रतिहि बोले।।
सूर, अंगद कहै माँ हुती सूकरी, बहुत रावन जने पेट खोले।।५७२५।।

आउ रघुबीरकी सरन अंगद कहै, मानि रे मूढ़मति ! बचन मेरौ। राग मारू
जाउ रे जाउ जब कोपि लंकेस कह, भुजन मेरी बस्यौ काल तेरौ।।
सुर असुर नाग बलि जेते हैं जगतमें, इंद्र ब्रह्मा सबहिं मैं नवाये।
बात अदभुत सबै और पाछें रही, रीछ कपि लैन गढ़ लंक आये।।
वाम करकी यहै अल्पसी आँगुरी, लंक गढ़ बंक छिनमैं ढहाऊँ।
का करौं नैंकु मोहिं संक रघुबीरकी, रंक तोहिं मारि अबही उड़ाऊँ।।
होहि ऐसो बली काउ ना मुगुध ! बल, बालिसे बापकौ बैर लीनौ।
तातके भ्रातने मातु पत्नी करी, सत्रुकी सरन जाय मूँड़ दीनौ।।
हुते मम तातके रावरेसे लच्छन जो, धर्मकी मेंड़ जिन तोड़ डारी।
पारिहैं धूरि तत्काल अब तुव बदन, राम अवतार खल दंड धारी।।
सुनत ही बचन मनु फनगकौ फन चप्यौ, सिंहकी पोंछ सोवत मरोर्‌यौ।
ज्वलित पावक सदृस बीस लोचन बिकल, पटकि भुज उठत मंत्री निहोर्‌यौ।।
तौलौं आवै ऐंड़ि अभिमान मनमैं धरत, ग्रीवमें बंक दै दृष्टि डीठी।
सुरसुरी बंकुरी भुजा रघुबीरकी, जौलौं मतिमंद तैं नाहिं दीठी।।
चपल बनचरनकी जाति अति बोलनी, कहा राजानसौं बोल जानैं।
छत्रकी छाँह इंद्रादि थरथर कहैं, बंक यह ढीठ नहिं संक मानैं।।
करौं जिय संक, जो अधिक तोकौं गनौं, जो कछु अपनपौ घट बिचारौं।
भुजनसौं पलटि दिगपाल सब दलमलौं धरनि-नभ छत्र ज्यौं फारि डारौं।।
रहि रे सुभट समसेर अधसेर तू, अपुनकौ बल जिय नहिं बिचारै।
कहत परधान महराज रावन बली, अवनि रहि आभसौं बाँधि मारै।।
पर्‌यौ बलि - द्वार परिहार बामन गदा, किंकिरी कोर दै दै जिवायौ।
तात मम पालने आनि बाँध्यौ जबै, रैपटन मार कै बार खायौ।।
मरमकौ बचन सुनि खेद हियमैं भयौ, चटपटी लाय भृकुटी चढ़ावै।
है कोऊ सूर सामंत मेरी सभा, मारि लीजौ मंद नहिं जान पावै।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक रैपट दिये मुकुट उड़ि जायँगे, सभा सब चरनसौं चाँपि डारौं।
बालिकौ पूत ह्वै सोच जियमें करौं, सिंह ह्वै मेंढ़कन कहा मारौं ॥
करत अपराध उतपात छोटेनकूँ, बड़नकौं छमा भूषन कहावै।
जान देहु दूत अबलौं न मान्यौ कहूँ, पसुनसौं लरत जिय लाज आवै ॥
सूर, जब बात बालिनन्दन कह्यौ सीस अब कौन तोसौं पचावै।
नैंकु धरि धीर रनधीर रघुबीर भट, देखि तरवार कैसी चलावै ॥ ५७२६ ॥

राग मारू

पिय जू ! लंका बनचर आयौ।
करि परपंच हरी तैं सीता लंका कोट ढहायौ ॥
तबहूँ मूढ़ ! मरम नहिं जान्यौ जबही मैं समुझायौ।
अब किन मिलि अपराध छमावै रामचंद्र चढ़ि आयौ ॥
ऊँची ध्वजा देखि रथ ऊपर लछमन धनुष चढ़ावै।
गहि पद, सूरदास, भामिनि कह, राज बिभीषन पायौ ॥ ५७२८ ॥

राग मारू

देखि हो कंत ! रघुनाथ आयौ।
छिप्यौ ससि सूर अति चाह चकृत भयौ धूरिसौं पूरि आकास छायौ ॥
तब न मानौ कह्यौ आपने मद रह्यौ देहके गर्ब अभिमान बाढ्यौ।
सुनौ हो कंत ! अब कठिन भौ छूटिबौ गहे भुज बीस करवाल गाढ्यौ ॥
सिंधु गंभीर दल छाँड़ि दै मुग्ध बल तैं न कीन्हीं कहूँ टेक गाढ़ी।
बचैं क्यों डूबते माँझ लाग्यौ धका लंकसी नाव द्वै टूक फाड़ी ॥
कहत सुनि, सूर, तू गिन्यौ पंछीनमें आनि अचरजपर आज खेले।
भजे क्यों उबरिहै बाज हनुमानपै मूढ़ ! जब जानकीनाथ मेले ॥ ५७२६ ॥

राग सारंग

जन्य जननि जौ सुभटहिं जाये। भीर परे रिपुकौ दल मलिकै कौतुक प्रभुहिं दिखाये ॥
जीवत सुख भोगे जस होवै बहु बिधि कीरति गाये। मरिकै मंडल भेदि भानुकौ सुरपुर जाय बसाये ॥
कौसल्यासौं कहत सुमित्रा जिन स्वामिनि दुख पाये। लछिमनतैं हौं भई सपूती रामकाज जो आये ॥
लीह गहे लालच जौ जियकौ औरौ सुभट लजाये। सूरदास-प्रभु जीति सत्रुकौं कुसल छेम घर आये ॥
॥ ५७३० ॥

राग टोड़ी

सुनौ स्याम ! इक बात नई।
आज रात राधा अवलोक्यौ मेरे मन अति फूल भई ॥
हँसि बोलन, डोलन, बन बिहरन, जात न वे चितवन चितई।
कौन कहै वृषभानुनंदिनी ! प्रगट भई मनु मदन-जई ॥
तुम सम नैन, बैन तुम ही सम, तुम सम आनँद केलि भई।
तुमरौ रूप धरे तुमरी सौं तुमहिं परसि भइ तुमहिं मई ॥
माथे मुकुट पीत पट मुरली बनमाला छबि छाय रई।
रंचक भेद रह्यौ या तनमैं और सकल छबि पलट लई ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

त्रिया अलिंगन पिय अवलंबन पियकौ हँसिकै अंक दई।
फिरि चितवन अरु मुरि मुसकावन उघटन मिस कर नृत्य ठई ॥
यह कौतुक अनुपम मनमोहन मनौ घोष रसबेलि छई।
सूरदास - प्रभुके उरपै सत बलित ललित बलिहार गई ॥ ५७३१ ॥

गज निरख्यौ फहरान बसनकी।
लग्यौ ललकि मुख-कमल बिलोकन, भूलि गई सुधि ग्राह-ग्रसनकी ॥
मनु रथपै आवत दरसावत, भुज भूषित जन सिर परसनकी।
फूल उपारि लपेटि सूँडसौं भेंट दियौ मनु भाव असनकी ॥
मनिमाला हलकत उर झलकत पीतांबर कटि फेंट कसनकी।
सूर, स्याम जनकौ प्रन राख्यौ, गज पठयौ जहँ डर न खसनकी ॥ ५७३४ ।

[लघु-कीर्त्तन-कुसुमाकर से]

राग कान्हरौ

अपनौ जन प्रहलाद उबार्‌यौ।
खंभ-बीचतैं प्रगटे नरहरि, हिरनकसिपु उर नखन बिदार्‌यौ ॥
बरषत कुसुम सब्द जै जै धुनि, सुर देखत सब कौतुक हार्‌यौ।
कमला हरिके निकट न आवत, अस सरूप हरि कबहुं न धार्‌यौ ॥
परहलाद चूमत अरु चाटत, भगत जानिकै क्रोध निवार्‌यौ।
सूरदास, बलि जाय दरसकौं, भगत-बिरोधी दैत्य सँहार्‌यौ ॥ ५७३८ ॥

राग झलार

माई! नइ बरषा रितु आई। उमड़ि घटा चहुँ दिसितैं जुरि जुरि बिजुरी चमक सुहाई ॥ दादुर, मोर, पपैया बोलत कोमल सब्द सुहाई। निसिदिन रहत सदा प्रीतम-सँग निरखत नैन अघाई॥ धनि जमुना, धनि पुलिन मनोहर, बहत बायु सुखदाई। सूरदास, प्रभुकी छबि-ऊपर, नैनन नीर बहाई॥
॥ ५७३९ ॥

राग हिंडोल

कैसैं आऊँ, भींजे सारी।
इक घन गरज, झकोर पवन दुज, तीज रैनि अँधियारी ॥
इक जीवन, सिर दही-मथनियाँ, बीच जमुन-जल भारी।
सूरदास - प्रभु बेसर अरुझी, लालन आप सँवारी ॥ ५७४० ॥

राग हिंडोल

तुव मन गिरिधर-बिनु न रहैगो। बोलहिं मोर मुरलिकी धुनि सुनि तब तोहिं मदन दहैगो ॥ तब जानै मानैगी आली ! प्रेम प्रवाह बहैगो। सूरदास-प्रभु प्यारि हठीली नित उठि कौन कहैगो ॥
॥ ५७४१ ॥

राग हिंडोल

बदरी काहे ब्रजपै घोरी। चमकत बीजु महावन ओल्हर हैं दुख पाव किसोरी ॥ भीजत गोपी सघन कुंज-तर चूवत चुँदरी कोरी। सूरदास-प्रभु तुम बहुनायक, राधा-मोहन जोरी ॥
॥ ५७४२ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राग हिंडोल

सावनकी तीज झूलै हिंडोरे राधा प्यारी, सुनिकै मनमोहनहू आये हैं झूलनि।
सखी-भेष किये स्याम आये प्रान-प्यारी पास, अंग-अंग भूषन सजि, बेनी भरी फूलनि ॥
नैनन काजर सोहे, देखत त्रिभुवन मोहे, तापै है बेसरके मुकताकी झूलनि।
सूरदास - प्रभु अब नारीकौ रूप किये, प्यारी-संग झूलत हैं जमुनाके कूलनि ॥
॥ ५७४४ ॥

राग गौरी

सबै संग लै राधा प्यारी बिनत सुमन बन-माँह हो।
साँझी पूजनकौं हरि आतुर ठढ़े कदमकी छाँह हो ॥
सखी भेष दै मोहनकौं लै चली आपुने गेह हो।
पूछी कीरति, को यह सुंदरि, मेरी कह्यौ सनेह हो ॥
साँझी खेलि बिदा करि सबकौं पौढ़े सेज सँभार हो।
सगरी रैनि सूरके स्वामी बसि सुख कियो अपार हो ॥ ५७४७ ॥

राग झिंझोटी

री तुम कौन सबनि सखि होरी, फुलवा बीननिहारी ॥
नेह लगनिकौ लग्यौ बगीचा, फूल रही फुलवारी।
राम-कृष्ण बनमाली आए क्यौं न बोलु सुकुमारी ॥
तब ललिता हँसि कह्यौ लालसौं, ये बृषभानु-दुलारी।
तुम्हरी कहा लगी निधि बनमैं, रोकत कुञ्ज हमारी ॥
स्याम सखा सखियन समुझावत; हठ न करौ तुम प्यारी।
कुंज-द्रुमनके फल-फूलनकी हमहिं करत रखवारी ॥
श्रीराधा फल-फूल लिये गुहि बिधिसौं माल सँवारी।
सूर, स्याम-मुख स्यामा निरखत इकटक रही निहारी ॥ ५७४८ ॥

राग कान्हरौ

कान जगाय गुपाल मुदित मन हटरी बैठि गुबरधन-धारी।
हलधर-संग सुबल श्रीदामा, गोप ग्वाल सब गाय सिंगारी ॥
देखनकौं मोहे सुर नर मुनि, रावल-माँझ भीर भइ भारी।
जै-जैकार होत चहुँ दिसितैं, सुरपति करत कुसुम बरषा री ॥
कञ्चन रतन जटित हीरा नग, बिसुकर्मा रचि सुबिधि सँवारी।
परम बिचित्र बनी अति सुंदर, जगमगात कुछु तिमिर दिवारी ॥
नंद-भौन पकवान धरे बहु, अगनित मेवा, गरी, छुहारी।
टेरि टेरिकै देत सबनकौ सिव-ब्रह्मादिक गोद पसारी ॥
करत आरती मात जसोदा, मंगल गावत सब ब्रजनारी ॥
सूर, रसिक गिरिधर सुख बिलसत बरस-बरस प्रति परब दिवारी ॥ ४७४९ ॥

राग बिलावल

अपने अपने टोल कहत ब्रजवासियाँ ॥ टेक ॥
सरद कुहू निसि जानि दीपमालिका जु आई। गोपन-मन आनंद फिरत उनमद अधिकाई ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

घर घर थापे दीजिये, घर घर मंगलचार। सात बरसकौ साँवरौ खेलत नंद-दुवार ॥
बैठि नंद उपनंद बोलि वृषभानु पठाये। सुरपति पूजा होति जानि तहँ गोबिंद आये ॥
बार बार हा हा करैं, कहौ बबा मोहिं बात। घर घर उच्छव होत हैं कौन देवकी जात ॥
स्याम! तुम्हारी कुसल जानि इक मंत्र उपइहौं। षट रस भोजन साजि भोग सुरपतिकौं दइहैं ॥
नंद कह्यौ चुचुकारिकै जाउ दमोदर सोइ। बरस दिवसकौ द्यौस है महामहोच्छव होइ ॥
हरि बोले सब गोप मतौ बहुर्‍यौ फिरि कीन्हौ। आदि पुरुष निज जानि रैनि सुपनौ मोहिं दीन्हौ ॥
सब देवनकौ देवता, गिरि गोबरधन राज। ताहि भोग किन दीजिए सुरपतिकौं कह काज ॥
बाढ़ै गोधन-वृंद दूध-दधिकौं कह लेखौ। इह परचो बिदमान नैन अपनैं किन देखौ ॥
तुम देखत बलि खायगो, मुँह माँग्यौ फल देइ। गोप कुसल जो चाहिये गिरि गोबरधन सेइ ॥
गोपन कियौ बिचार सबै मिलि सकटा साजे। बहुबिधि करि पकवान, चले तहँ बाजत बाजे ॥
एक बनहि बनकौ चले, एक जमुनके तीर। एक न पैंड़ा पावहीं, उमड़े फिरत अहीर ॥
इक पैंड़े, इक उबटि, एक बनहीं बन छाहीं। इक गावै गुन कान्ह, उमगि उमगे न समाहीं ॥
गोपनकौ सागर भयौ गिरि भौ मंदरचार। रतन भईं सब गोपिका कान्ह बिलोवनहार ॥
ब्रज चौरासी कोस परे गोपनके डेरा। लंबे चौवन कोस आज ब्रजबास बसेरा ॥
सबहिनकौ मनि साँवरौ दोसै सबन मँझार। कौतुक भूले देवता आये लोक बिसार ॥
लीने बिप्र बुलाइ जग्य आरंभन कीनों। सुरपति पूजा भेंटि राज गोबरधन दीनों ॥
देव दिवारी सामही सब मिलि पूजन जाय। तात प्रतीति न मानहीं तुम देखत बलि खाय ॥
प्रथम दूध दधि आदि बहुरि गंगाजल ढार्‍यौ। बड़ौ देवता जानि कान्हकौ मतौ बिचार्‍यौ ॥
जैसेई गिरिराज हैं, तैसइ अनकौ कोट। मगन भये पूजा करैं नर, नारी, वड़, छोट ॥
जहाँ तहाँ दधि धरी कहौं कह उज्वलताई। उदधि सिखर ह्वै रही भातमैं देह छिपाई ॥
चहूँ ओर चक्रा धरे चंदहि पटतर गोय। ठौर ठौर वेदी रची बहुबिधि पूजा होय ॥
जैसी कंचनपुरी दिव्य रतननतैं छाई। बलि दीनी इहिं भाँति छाँह फिरि पूरब आई ॥
बदरौला बृषभानुकी दही बिलोवनहारि। ताकी बलि इन देवता लीनी भुजा पसारि ॥
सहस भुजा उर धरे करैं भोजन अधिकाई। नख सिखलौं अनुहार, दूसरौ मनौ कन्हाई ॥
ललिता राधासौं कहै, तेरे हृदै समाय। गहे अँगुरिया नंदकी, सो ढोटा पूजा खाय ॥
पीत दुसाला बन्यौ कंठ मोतिनकी माला। भूषन बसन अनूप झलमलै, नैन बिसाला ॥
स्यामकि सोभा गिरि भयौ गिरिकी सोभा स्याम। जैसो परबत भातको ढिग भइया बलराम ॥
सब सामग्री अरपि गोप गोपिन कर जोरे। अगनित कीन्हें स्वाद कहा बरनौं मति थोरे ॥
इहिं बिधि पूजा पूजिकै, कह्यौ कान्हसौं जाय। स्याम कह्यौ हो सूरसौं लीला सरस बनाय ॥
॥ ५७५१ ॥

बेगि स्याम तुम भले चले हो होरी खेलन रंग भरी। राग रामकली
चोवा चंदन और अरगजा केसर गागरि भरी धरी ॥
उड़त गुलाल लाल भे बादर, पिचकाइनकी लगी झरी।
सूरदास-प्रभु तुम बहुनायक, चेरी ह्वैकै पायँ परी ॥ ५७५३ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राग धमार

आँखिन डारो न मोरि अबीरा। रतन - जटित पिचकाई लै कर अरु भरि केसर - नीरा॥
ललितानै प्रीतम मुख माँड्यौ चरच्यौ स्याम सरीरा। सूरदास, रसबस करि लीनौ, इन हलधरके बीरा॥
॥ ५७५४ ॥

करौं कपोलन लाल, लाल ! अँगिया मत छूवौ। राग होरी

यह अँगिया नहिं धनुष जनककौ, छुवत टुट्यौ ततकाल।
यह अँगिया नहिं गौतम - नारी, छुवत उठी ततकाल॥
गिरि उठायकैं भे गिरधारी, नहिं जानी ब्रजबाल।
जाओ खाहु सुदामा - तंदुल, संतनके प्रतिपाल॥
कहा बिलोकत भृकुटि कुटिल करि, नाहिं पूतना काल।
काली नाग नाहिं यह अँगिया, नाथ्यौ जाहि पताल॥
इतनौ सुनि, मुसकाय साँवरौ, लियौ अबीर - गुलाल।
सूरदास - प्रभु निरखि छिरकि अंग, सखियन कियौ निहाल॥ ५७५५॥

रसिया

येइ हमारे सिरीनाथजी जग भव तारनहार। देव न जानौं और दूसरौं मन मान्यौ जु मुरार॥
नेम; धरम, ब्रत को करै रे जप तप तिरथ अपार। सूरदास, दो अखर कहै रे सबै सारकौ सार॥
॥ ५७५६ ॥

रसिया

या ब्रजमैं हरि होरि मचाई। (हरि होरी मचाई या ब्रजमैं हरि होरी)॥
इततैं आइं कुँवरि राधिका उततैं कुँवर कन्हाई। हिलिमिलि फाग परसपर खेलत सोभा बरनि न जाई॥
नंदघर बजत बधाई।
बाजत ताल मृदंग, बांसरी, बीना, डफ, सहनाई। उड़त गुलाल लाल भे बादर रह्यौ सकल ब्रज छाई॥
मनो माधव झर लाई॥
लै लै रंग कनक पिचकाई सनमुख सबै चलाई। डारत रंग अंग सब भीजे, झुकि झुकि, चाँचर गाई॥
परसपर लोग लुगाई।
राधे सैन दई सखियनकौं झुंड झुंड घिरि आइं। लपट झपटकै स्यामसुंदरकौं सबै पकरि लै आइं॥
लालकौं नाच नचाई॥
छीनि लई मुरली पीतंबर चूनरि दई उढ़ाई। बेंदी भाल हगन बिच अंजन, नक - बेसर पहराई॥
मनो नइ नारि बनाई।
मुसुकत है मुख मोरि मोरिकै कहाँ गई चतुराई। कहाँ गये हैं पिता नंदजू कहाँ जसोदा माई॥
तुम्हें अब लेहिं छड़ाई॥
फगुवा दिय बिनु जान न पइहौ कोटि करौ चतुराई। लइहैं काढ़ि कसक सब दिनकी तुम चितचोर चवाई॥
बहुत दधि-माखन खाई।
कृष्ण रंग फगुवा जु भावतो दै कै बहुत रिझाई। स्यामा-स्याम जुगल जोरीपै, सूरदास बलि जाई॥
प्रीति उर रही समाई॥ ५७५७॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सांवर कान्ह न अजहूँ आयौ। रसिया
लिखि पतियाँ छतियाँहि लगावौं ऊधौ सखा पठायौ ॥
कहा जानि बिसवास करौंगी फिरि संदेस न आयौ।
मोहिं बिष घोरि पिआयौ ॥
क्रूर अक्रूर कहाँतैं आयौ घर - घर होरि जरायौ।
इक होरी अँग अंग जरत है, सपनहु सुख नहिं पायौ।
मास फिरि फागुन आयौ ॥
ब्रजबनितनकौ संग छाँड़िकै मधुपुरि जाइ बसायौ।
कांत कुबड़ीक कहायौ ॥
दासीकूं पटरानी कीनी ब्रजकौ नाम लजायौ।
आपुन जाइ मधुपुरी छाये, हमकूं जोग पठायौ। हमकूं जोग भोग कुबिजाकौं ऐसौ निठुर कहायौ।
रह्यौ पुनि अहिरक जायौ ॥
तलफि तलफि ब्रज छांड़ि राधिका कृष्न मधुपुरी छायी सूरदास अबला अरजत है आप कियौ मन भायौ।
जरेपै लौन लगायौ ॥ ५७५८ ॥

गलियन बिच धूम मचावै री। रसिया
ग्वाल-बाल लै कुँवर कन्हैया नित उठि भोरहि आवै री ॥
हाथ अबीर गुलाल फेंट भरि गागर रंग ढुरावै री।
सुनि ऊधम अति ही रसियाकौ जियरा अति डरपावै री ॥
बाजत ताल मृदंग बाँसुरी गारी और सुनावै री।
सूरदास - प्रभुकी छबि निरखे नैनन हा हा खावै री॥ ५७५९ ॥

बरसाने चलु खेलें होरी।
ऊँच गाँव बरसानौ कहियत, जहाँ बसति राधा गोरी ॥
पाँच बरसके कुँवर कन्हैया, सात बरस राधा गोरी।
चोवा चंदन और अरगजा, केसर गागर भरि घोरी ॥
इततैं आये कुँवर कन्हैया, उततैं चलि राधा गोरी।
सूरदास - प्रभुतैं मिलिवेकूं, चिरंजीव रहु यह जोरी ॥ ५७६० ॥

डफ धरिकै मार गई परकी। रसिया
खेलत खेलत देह पिरानी और मलीन भई तरकी ॥
सैन अनंग सकल सकुचानी, कुम्हली कमल कली सरकी।
सूरदास-प्रभु रसिक - सिरोमनि, सरनागत राधा - वरकी ॥ ५७६२ ॥

बड़ो धन हरिजनकौ हरि नाम। राग विहाग
बिनु रखवार, चोर नहिं चोरत, सोहत है दिन - याम ॥
दिन दिन बढ़त सवायौ दूनौ, घटत नाहिं कछु दाम।
सूरदास, हरि सेवा जाके, पारसकौ कह काम ॥ ५७६३ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अब तौ साँचइ कलिजुग आयौ। राग विहाग
पुत्र पिताकौ कह्यौ न मानत, करत आप मन-भायौ ॥
पुत्री बेचि पिता धन पावत, दिन दिन मोल सवायौ।
तातैं बरषा अलप भई है, कालै सब जुग खायौ ॥
धटत गुबर्धन छिपत बृंदाबन, कालिंदि रूप छिपायौ।
सूरदास - प्रभु यहि कलिजुगमैं, काहे मोहिं जिवायौ ॥ ५७६४ ॥

करि मन हरि - भगतनकौं संग।
जाकैं संग सुमति मति उपजत बढ़त भजनमें रंग ॥
उग्र स्वभाव कृष्न - पद - सेवा जैसे जलमैं गंग।
ध्यान धरत ही श्रीगिरिधरकौ मनमैं उठत तरंग ॥
सुर - बिमान जहँ कौतुक भूले क्रीडत गोपिन संग।
सूरदास व्रज - बास कियेतैं बाढ़त भाव - तरंग ॥ ५७६५ ॥

[नित्यकीर्त्तनमृसे]

नाम - महिमा ऐसी जु जानो। राग रामकली
मर्यादादिक कहें लौकिक सुख लहें पुष्टिकौ पुष्टि पथ निश्चय मानो ॥
स्वाति जल बूंद जब परत है जाहिमैं ताहिमैं होत तैसो जु बानो।
यमुने कृपा जानि स्वाति जल बहुमान सूर गुन पूर कहँलौं बखानो ॥ ५७६८ ॥

सखि री ! हरि-दरसकौ चाय। साँवरेसे प्रीति बाढ़ी, लाख लोग रिसाय ॥ राग रामकली
स्यामसुंदर लोल लोचन, देखि मन ललचाय। सूर, हरिके रंग राँची, सीस रहु या जाय ॥५७६९॥

आनँद भरि दधि मथति जसोदा घमक मथानी घूमै हो।
निरतत लाल ललित मोहन पग धरत अटपटे भूमैं हो ॥
चारु चकोड़ा रचित कुचनपै मनु मुकुताहल हूमै हो।
मनु मकरंद बिंदु लै मधुकर सुत-हित प्यावन भूमै हो ॥
कहत मधुर अति तोतरि बतियाँ हँसि लसि दँतियाँ हूमै हो।
सूरदास, वारी पल पलपै, जननि कमल-मुख चूमै हो ॥५७७ ॥

वाके सब निसि जागे मेरे प्यारे आये भोर। राग ललित
साँचि कहौ वाई तियकीसौं पाय प्रेम-रस चोर ॥
कहुँ अंजन, कहुँ पीक लागि रहि, दुरत न नंदकिसोर।
सूरदास-प्रभु ! तुम बहुनायक रंग रँगे चहुँ ओर ॥ ५७७२ ॥

ब्रजमंगलकी मंगल आरति। राग बिलावल
वहु बिधि रतन जटित थारी भरि ता मधि चित कपूर लै बारति ॥
लेत बलाय करत न्यौछावर तन मन प्रान वारने वारति।
सूरदास, रस - भरी जसोदा मगन भई अपनेपै वारति ॥ ५७७३ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जब मैं देख्यौ नँदनंदनकौं, मन भइ आलि ! प्रीति करिबेकी ।
कहुँ अँचरा, कहुँ गागर परिगौ, दृष्टि कहूँ नहिं जल भरिबेकी ॥
ब्रजपति देखि देह बिथकित भइ गृह तन चाव न पग धरिबेकी ।
सूर, मदनमोहन पिय देखे बिसरि गई सुधि जल भरिबेकी ॥ ४७७४ ॥

देखे री हरि ! नंगम - नंगा । राग सारंग
जलसुत - भूषन अंग बिराजत बसन - हीन छबि उठत तरंगा ॥
अंग अंग अति अमृत माधुरी निरखत जित छबि कोटि अनंगा ।
दधिसुत लेप दिये मुख ऊपर, सूर हँसत ब्रज - जुवतिन संगा ॥ ५७७५ ॥

मिलें लाल सोई दिन नीकौ । राग सारंग
ज्योतिष, निगम, पुरान बड़े ठग फाँसी जानि इन्हें सब जीकौ ॥
जौ बूझैं तो उत्तर दीजै बिन बूझे मन लागत फीकौ ।
अपने अपने ठौर रहे सब तब क्यौं हरन भयौ हो सी-कौ ॥
भद्रा भलि, भरनी भय हरनी, परत मेघ अरु होत जु छींकौ ।
सूर, धरम धन लाभ गँवावै तौ ऐसौ प्रेमी कौड़ीकौ ॥ ५७७६ ॥

षष्ठ निधि बालकृष्ण (सूरत) की कीर्त्तन प्रणालिकासे

राग रामकली

जसुदा पलने कान्ह भुलायो । नर, मुनि, देव कोटि तैंतीसो कौतिक अंबर छायो ॥
जाकौं ब्रह्मा अंत न पावै सिव सनकादि न पायो । सो सुत देखौ नन्द जसोदा गोदी घालि खिलायो ॥
नाचत, हँसत, करत किलकारी मन अभिलाष बढ़ायो।सूर, स्याम भगतन हित कारन नाना भेष बनायो ॥
॥ ५७७८ ॥

माँगत मोपै चंद खिलौना । राग रामकली
बरजि रही, बरज्यौ नहिं मानत, ऐस हठी जसुमतिकौ छौना ॥
लै प्रतिबिंब दिखावति जननी, लै मेरे अति चपल ढुटौना ॥
सूरदास - प्रभु चंदा माँगत धर्‌यौ गिरिहिं जस करपै दौना ॥ ५७८० ॥

राग नूर सारंग

मेरे क्यों आए हैं वामन । सुनिकै बेद हृदै रुचि बाढ़ी कह्यौ जु भीतर आवन ॥
चरन धोय चरनोदक लीनो, माँगु विप्र मन भावन । तीन पैंड़ हौ माँगौं धरती द्वार कुटी इक छावन ॥
वाकौ विप्र कहा तुम माँग्यो, हीर रतन धौं गामन । सूरदास-प्रभु इतनौ माँग्यौ लग्यौ पीठ पद पावन ॥
॥ ५७८५ ॥

यह ब्रज मेरे मन भाये जू । राग भैरवी
श्रीजमुना विश्रांति न्हायके नीके नेम लिवाये जू ॥
देवी दरसन करिके तुरतहि महाप्रभू दरसाये जू ।
मधुबन ताल कुमुद बहुला वन शांतनुकुंडमैं न्हाये जू ॥
राधाकुँड अरु कृष्णकुंडकी महिमा बरनि न जाये जू ।
गोवर्धनकी दे परिकरमा मानसि गंगा न्हाये जू ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परमदरा आदी बदरीवन, साँकरि खोरि न आई जू।
कामा काम कामना पूरन यह बन अति सुखदाई जू॥
बरसाने बसि नंदगामपै कोकिल दहिने लाई जू।
वट सँकेत बृन्दावन बसिकै लीने चरन पुजाई जू॥
सेषनाग छाया हरिदासन जहँ पौढ़े जदुराई जू।
खेलन बन अरु चीरघाटपै नंदघाट दरसाई जू॥
बलभद्दर, भांडीर, सकल बन मानसरोवर न्हाये जू।
करि विश्राम लौहबन बसिके बलदाऊ परसाये जू॥
गोकुल और महावन महिमा सारद पार न पाई जू।
यह ब्रज धनि मथुरा बृन्दाबन धन्य जसोदा माई जू॥
जिनकी महिमा को कवि बरनै प्रगटे कुँवर कन्हाई जू।
बारह बन बारह उपबनकी लीला गाइ सुनाई जू॥
सूरदास, भगवंत भरोसे चित्त चरनमैं लाई जू॥ ५७८६॥

जो पै राम रजायसु पाऊँ। राग मारू
संक न करौं लंक गढ़की कछु, सायर खोदि बहाऊँ॥
बढ़ौं सरीर पीठ परमित करि सकल कटक पहुँचाऊँ।
कहौं तु रावन कुल-समेत सब बाँधि चरणतर लाऊँ॥
हौं सेवक हरि ऐसौ तुम्हरौ, कहा एक मुख गाऊँ।
सुर अरु असुर सबै जुरि आवैं, रन नहिं पीठ दिखाऊँ॥
रावन मारि सिया घर लाऊँ तौ तुव दास कहाऊँ।
सूरदास–प्रभु कारज बिन किय मुख नहिं आनि दिखाऊँ॥ ५७७९॥

राग मारू
चढ़े हरि कनकपुरीपै आज। कँपी धरनि थरहरयौ अंबर देखि दलनको साज॥
असुर सबै पंछी ज्यौं भाजे लछिमन छूटे बाज। सूरदास-प्रभु लंका आए, दैन विभीषन राज॥
॥ ५७९०॥

राग बिलावल
गोकुलको कुल देवता, प्यारो गिरिधर लाल। कमलनैन घन साँवरो, बपु बाहू सुबिसाल॥
वेगि करौ मेरे कहैं बहु पकवान रसाल। बल मघवा बलि लेत है, करि करि के बड़ गाल॥
इनके दीये बाढ़ि है, गैया बच्छरु बाल। सँग मिलि भोजन करत हैं, जैसे सब पसु-पाल॥
गिरि गोबर्धन सेइये, जौ जीवन गोपाल। सूर, सदा डरपत रहै, जातैं जम अरु काल॥
॥ ५७९१॥

ब्रज घर-घर सब भोजन साजत। सबके द्वार बधाई बाजत॥ राग बिलावल
सकट जोरि लै चले देव-बलि। गोकुल ब्रजवासी सबही मिलि॥
दधि लोनी मधु साजि मिठाई। कहँ लग कहौं सबै बहुताई॥
घर घरतैं पकवान चलाए। निकसि गामके ग्वैंडे आये॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ब्रज - बासी तहँ जुरे अपारा। सिंधु समान पार नहीं वारा ॥
पैंडे चलन नाहिं कोउ पावत। सकट भरे सब भोजन आवत ॥
सहस सकट तौ नंद महरके। और सकट केते घर घरके ॥
सूरदास - प्रभु महिमा सागर। गोकुल प्रगट भए हरि नागर ॥ ५७६५ ॥

देखौ री ! हरि भोजन खात। राग सारंग
सहस भुजा धरि उत जेंमत हैं इत गोपनसौं करत जु बात ॥
ललिता कहत देखि हो राधा जो तेरे मन बात समात।
धन्य सबै गोकुलके वासी संग रहत गोकुलके तात ॥
जेंमत देखि नंद सुख दीनों, अति आनँद गोकुल नर-नारि।
सूरदास - स्वामी सुखसागर गुन आगर नागर दै तारि ॥ ५७६७ ॥

यह लीला सब करत कन्हाई। राग सारंग
उत जेंमत गोबर्धनके सँग, इत राधासों प्रीति लगाई ॥
इत गोपिनसौं कहत जिमायो, उत आपुन जेंमत मन लाई।
आगे धरे छहों रस व्यंजन, चहुँ दिसितैं अति रूप बढ़ाई ॥
अंबर चढ़े देवगन देखत, जय धुनि करत सुमन बरषाई।
सूर, स्याम सबके सुखकारी, भक्त - हेत अवतार सदाई ॥ ५७६८ ॥

राग बिलावल चौकड़ा

हो हो मेरी प्राण पियारी। भोरहि खेलन कहाँ सिधारी।
कुंकुम भाल तिलक किन कीनो। किन मृदमदको बेंदा दीनो ॥ चाल ॥
बेंदि मृगमद दियौ मस्तक निरखि ससि संसय पर्‍यौ।
सरद निसिकी कला पूरन मैन - नृपको मद हर्‍यौ ॥
बिहँसिकै मुख कहत जननी अलप बेनी किन गुही।
सूर के प्रभु मोहिबेको रची मनमथ ही तुही ॥ चाल ॥
नंद महरकी तरुनि जसोवै। मेरो मुख फिर फिर सो टोवै।
खेलत डोलत ढिग वैठारी। कछु मनमें आनँद किय भारी ॥ ढाल ॥
आनंद मनमें कियौ भारी निरखि सुत बिह्वल भई।
बबाजूको नाम लै लै तोहिं हँसि गारी दई ॥
पारि पाटि सँवारि भूषन गोदमें मेवा भरी।
सूर के प्रभु निरखि मनमैं बिधनसौं बिनती करी ॥ चाल ॥
सुनि यह कीरति मन मुसुकानी। मैं ब्रजरानीके जिय जानी।
मेरी सुता रूपकी रासी, वह कान्हा बनवासि उपासी ॥ ढाल ॥
कान्ह बनवासी उपासी रंगढँग ये क्यों बनै।
ढिग हमारे रत्नऽमोलक काँच कंचन क्यों सनै ॥
कह्यौ ललिता बिसाखासौं तुम लली तजि कित रही।
सूरके प्रभु भवन - बाहिर जान दीजौ मत कहीं ॥ चाल ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उठि बैठी तब बदन सँभारे । कछु मोहन तन हँसत निहारे ।
मुरि बैठी मन भयौ हुलासा । कीरति गइ अपने पति पासा ।। ढाल ।।
अपने जु पतिपै गई कीरति प्रीति रीति बिचारहीं ।
मँगनि कीन्हीं व्याहकी सब सखी मंगल गावहीं ।।
बृँदावनमैं रचि स्वयंबर पुष्प मंडप छाइयो ।
सूरके प्रभु स्याम दूल्हे राधिका वर पाइयो ।। चाल ।।
बिधना ही बिधि सब कुछु कीनी । मंडप करिके भाँवर दीनी ।
बिबिध कुसुम देवन बरषावैं । तहँ भामिनि मिलि मंगल गावैं ।। छंद ।।
गावैं जु भामिनि मिली मंगल कहत कंकन छोरियो ।
नाहिं यह गिरि उचक लैबो, लला हँसि मुख मोरियो ।।
छोर्यौ न छूटै डोरना यह प्रीति रीति गुँथी कई ।
सूरके प्रभु युवतिजन मिलि गारि मनमानी दई ।। ५८०० ।।

राग ललित

बैठे ब्रजराज गोद मोदसों गुपाल लाल देत हैं हरषसौं आए द्विजनकौं दान ।
ब्रज बधू मंगल थार साजि करमें लिये गावत सुघर सुजान तरंग गान ।।
आय निकट जसुमतिके आँगन लाई भीतर भवन माँझ बिबिध भाँत किये सनमान ।।
सूरज-प्रभुकी महिमा सारी सुरँग मँगाय ब्रज-तरुनी पहिराय सब पठईं भवन कीन दान ।।
।। ५८१० ।।

कहत नँदरानी गुपालसों तातको बुलाय लाओ पर्यौ है बड़ो परब आज उत्तरायन ।
द्विजनको दान देहौं आसिस बचन पैहौं, खेलन न जाओ लाल, बैठि रहो आँगन ।।
यह सुनि मोहन कियौ सब सिंगार सखा संग चले खिरक गोदोहन देखे बिन न चैन ।
सूर, स्याम बाबासों कहत है जू आज कहा तिहारे मइया कहो मोसों यह सुनि ले आये भवन ।।
।। ५८१२ ।।

राग बसन्त

मनके मोहन ललना बिहरौ सरस बसँत रितु आयौ ।
देखि बसन्त सबै ब्रज सुन्दरि निरखि स्याम मन लायौ ।।
सिसिर समीप गयौ तजि सागर रबि उत्तर दिसि आयौ ।
उमगी प्रेम कोकिला बोलै विरहिनि बिरह जगायौ ।।
चहूँ दिसि बन रतनारे सोहैं चहुँ दिसि केसर फूले ।
भौंरे अंब सघन द्रुमबेली मधुकर परिमल भूले ।।
चोआ चंदन और अरगजा भरि छिरकत पिचकारी ।
उड़त गुलाल अरुन भौ अंबर निसि बासर अँजुआरी ।।
इहि बिधि होरी खेलि बृँदावन ब्रजमैं बिपिन - बिहारी ।
प्रथम बसंत पंचमी पूजा, सूरदास बलिहारी ।। ५८१३ ।।

राग वसंत

जागिहो लाल गुपाल गिरिवर - धरन सरस ऋतुराज बसन्त आयौ ।
फूले द्रुमबेली फल फूल बौरे अंब मधुप कोकिला बीर सैन लायौ ।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जाओ खेलन सबै ग्वाल टेरत द्वार खाउ भोजन मधु घृतौ मिलाय।
सखी जूथन लिये आई है राधिका मच्यो गहगह रागरंग छायौ ।।
सुनत मृदु बचन उठे चौंकि नँदलाल कर लिये पिचकाई सुबल बुलायौ।
निरखि मुख हरषि हिये वारि तन मन प्रान, सूर यहि मिसहि गिरिधर जगायौ ।। ५८१४ ।।

डारौ जिन आँखिनमें जु अबीर। राग : धनाश्री
रतन - जड़ित पिचकाइन कर लै भरि भरि केसर नीर ।।
ललिता मोहनकौ मुख माँड्यौ चरच्यौ स्याम सरीर।
सूरदास - प्रभु बस करि लीनौ इन हलधरके बीर ।। ५८१६ ।।

खेलत मोहन रंग भरे हो सुंदर सब सुखरासि। राग काफी
स्याम संग खेलन चलि स्यामा सब सखियन लै जोर ।।
सकल सुगंध सँवारि अरगजा बहु कंचन घट घोर।
फूलनकी गेंदुक नवला - सी कनक लकुटिया हाथ ।।
आनि गहे व्रज खोरि राधिका कोटिक जुवतिन साथ।
उततैं हरि आए जबै हो खेलन ग्वालन संग ।।
कान परी सुनिए नहीं बहु बाजत भेरि मृदंग ।।
पहिले सुधि पाई नहीं अब घिरे साँकरी खोरि ।।
अब हलधर उलट्यौ कहा तुम पावहु ग्वालन जोरि।
भरत लरत राजत गेंदुक भाजत नवला सी मार ।।
रसन बसन छूटत न सँभारत टूटत मुक्ताहार।
अन्तर उड़त अबीर अँधारी घेरि लई सब बाम ।।
पर्‌यौ गुलाल नयन मींडत हैं गहि पाये सखि स्याम।
आज हमारे बस परिगे हो भल हो जाहु छुड़ाइ ।।
कै बल छूटो आपनके कै जसुमति माय बुलाइ।
मोहन पिय इकले करि पाये चहुँ दिसितैं रहि घेरि ।।
वोलहु जू अब आनि छुड़ावैं बल भैयाको टेरि।
एक स्रवनमैं कहि कछु भाजत एक भरति अँकवारि ।।
एक निहारति रूप माधुरी रहति अपुनपौं हारि ।।
एक उठावति बदन चिबुक गहि हम तन स्याम निहारि।
एक नैंनकी सैन बतावत बैननि देतिय गारि ।।
एक बनाइ देति बीरी कर - पल्लव छुवत कपोल।
वल्लव जुवति बड़ भागिन हैं हरि बस किय जिन विन मोल ।।
एक गहति कर एक पीतांबर फेंटहि लियौ छड़ाइ।
राधा हँसति दूर भइ ठाढ़ी सैनन देत सिखाइ ।।
आइं भूमि सकल ब्रजनारी हरि देखे जब ओर ।।
राधाजूपै दृष्टि परत ही हरिके नैन चकोर ।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उड़त गुलाल सकल नभ छायौ छाई मानौ साँझ।
राधा प्रगट करे नाहीं मुख चंद निलांबर माँझ ॥
हरिजू अपने करबरसौं तब घूंघट कीनौ दूर।
हँसत प्रकास चहूँ दिसितैं मनु सुधा किरनि भरपूर ॥
तब तुम बसन हरे जु हमारे कीन अनेक उपाइ।
तब क्यों नगन करी हुति हमकौं करिहैं तुमह नँगाइ ॥
आँखि दिखावत हौ कह अब तुम करिहौ कहा रिसाइ।
हम अपनौ भायौ करिहैं अब छाँड़िहिं तुमहि नचाइ ॥
मुखकी कहे सबै जूठी-सी मनमैं अधिक सनेहु।
छूटि करेंगे बल भैया अब मोहिं छाँड़ि किन देहु ॥
खेलि फाग अनुराग सिंधु बढ़ि मची अरगजा कीच।
ब्रजनारी कुमुदिनि-गन फूली हरि ससि राजत बीच ॥
देखत सोभा सुख सम्पतिकी मनमैं यहै विचारि।
ब्रजनारी हम क्यों न भई यौं कहतिं सकल सुरनारि ॥
कोटि काम रति कोटि भानु अरु कोटि रमा रहि नाल।
रोम रोम प्रति कोटि कोटि ससि सुधा किरन बहु भाल ॥
अष्ट सिद्धि नव निधि ब्रजबीथिन डोलत घर घर द्वार।
सदा बसंत रहत बृन्दावन लता लता द्रुम डार ॥
जुगल किसोर चरन रज जाँच्यौ सरस धमारहि गाइ।
मनमोहनकी या छबि ऊपर सूरदास बलि जाइ ॥ ५८१६ ॥

राग आसावरी

जमुना तट खेलत गोपी हो।
नँदको लाल गुबर्धनधारी ताके नखमनि ओपी हो ॥
चल री सखि! जैये जहँ छिनहुँ निज जियरा न रहाई हो।
बेनु सब्दनै मन हर लीनौ नाना रंग बजाई हो ॥
सजल जलद तन पीतांबर है कर मुख मुरली धारी हो।
लटपट पाग बनी मनमोहन ललना रही निहारी हो ॥
नैनन नैन मिले करसौं कर भुजा ठई हरि ग्रीवा हो।
मधि नायक गोपाल विराजत सुंदरताकी सींवा हो ॥
करत केलि कौतूहल माधौ मधुरी बानी गावै हो।
पूरन चंद सरदकी रजनी संतन सुख उपजावै हो ॥
सकल सिंगार सजी ब्रजवनिता नख सिख-लौं न लखानी हो।
लोक बेद कुल और धर्मकी नैक न राखत कानी हो ॥
वलि बलि बलके बीर त्रिभंगी संतनके सुखदाई हो।
सकल जु बिथा हरी या तनकी हरि हँसि कंठ लगाई हो ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

माधो नारी, नारी माधो छिरकत चोवा चंदन हो।
ऐसौ खेल रच्यौ जु परस्पर नंदनँदन जगबंदन हो।
ब्रह्मा इंद्र देवगन गँधरब सबै एक रस बरसै हो॥
सूरदास, गोपी बड़भागी हरि सुख क्रीड़ा दरसै हो॥ ५८२०॥

राग काफी

श्री जमुना के तट गुलालकी मार पड़ी हो आली री।
तुम देखो राधे रँग भरि हो आली री हो आली री॥
इत मोहन उत राधेके बिच नाचे ग्वालन रँग भारी।
हो मेरी आली री हो हो हो हो मेरी आली री॥
मोहनजूकी मधुर बांसुरी लीनी राधा छीनी हो।
फगुवा दियो मँगाइ तबै हो आली री हो आली री॥
सूरदास - प्रभु सरस सांवरो सब सखियन सिंगारी री॥ ५८२४॥

राग सोरठ

कामणगारी रे कनैया तोरी बाँसुरी रे।
जब बाजे तब नींद न आवे बिरह सतावे जिय अकुलावे। भर भर आवत हियरा मोरी बाँसुरी रे॥
ननद हमारी खरी धुतारी आन सुनावे गारी। जाय सिखावत सुन्दर मोरी सासुरी रे॥
सूरदास-प्रभु बेनु बजावे सबकी सुधहूँ बिसरावे। वृन्दावन गोपिनमैं रमते रासु री रे॥
॥ ५८२६॥

राग सोरठ

मैया मोरी कामर कौन लई; गाय चरावन जात वृँदाबन खिरकमैं खोय गई॥
एक कहे तेरी कारी कमरिया सुरभी खाय गई। एक कहे तेरी कारी कमरिया जमुनमें जात बही॥
एक कहे नाचो हम आगे अबही देहुँ नई। सूरदास, अब नैनन आगे अँसुवन धार बही॥
॥ ५८२७॥

राग भैवर

आरति श्रीजगन्नाथ मंगलाकरी। परसत चरनारबिंद आपदा हरी॥
घनन घनन घंटा धुनि बेनु बाँसुरी। बाजत मिरदंग ताल नाद किय हरी॥
इन्द्र - दवन सिंधु गाज रोहिनी खरी। मरकंडे सत गंगा आनँदे भरी॥
कंचन मनि दीपदान जोत जगभरी। अगर धूप नवल तेल बाति हू करी॥
सुर नर मुनि गाव ब्रह्म वेद उच्चरी। धन धन हो, सूर, धन्य आजकी घरी॥
॥ ५८२८॥

राग मल्हार

अजु बन उमगि रही ब्रजनारी।
फूली फिरति निसँक गुन गावति झुलवति प्रान पियारी॥
एक कुसुम लै डारति ऊपर इक चितवत रहि ठाढ़ी।
एक जु धाइ आइ मोहनकौं अंक भरति है गाढ़ी॥
नील पीत अँग अंग बिराजत और सिंगार सँवारी।
सूरज - प्रभु सँग विलसति भामिनि नैकु न होती न्यारी॥ ५८३०॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राग मल्हार

हिंडोरे झूलत हैं नँदलाल । गावति सरस सकल ब्रज-सुंदरि बाढ़्यौ रंग रसाल ॥
सँग वृषभाननंदिनी राधा उर मोतिनकी माल । कनक-बेलि छबि यह दिखियत है उरझी स्याम तमाल ॥
बाजत ताल पखावज मुरली पग नूपुर झनकारि । सूरज-प्रभुके रोम रोमपै तन मन डारति वारि ॥
॥ ५८३२ ॥

श्रीपतिको यह चित्र हिंडोरना भावै । राग मल्हार

कल्पद्रुमके खंभ रोपे मलयगिरिकी पाटि । भौंरसे मरुवा अजरमय नकस बहु बिधि काटि ॥
पिरोजनकी बनी डाँडी कनक पटुली बानि । बिस्वकर्मा रच्यौ पचि पचि रत्न नाना आनि ॥
आनि रत्न सु रच्यो पचि पचि अति अनूपम भाँति । जच्छ किंनर देव नर मुनि देखि मोहे कांति ॥
तिहिं उपम त्रैलोक नाहीं देउँ पटतर छाँटि । कल्पद्रुमके खंभ रोपे मलयगिरिकी पाटि ॥
बृँदावन कालिन्दिके तट हरित सोभित भूमि । लता बीरुध द्रुम कुसुम मुकुलित सु झूमक भूमि ॥
लाल मुनिया झुंड बैठे मत्त अलिकुल गुंज । हंस चक्र चकोर चातक कीर कोकिल पुंज ॥
पुंज कुंज मयूर निर्तत करत नाना नाद । हरिल भृंग परेव राजै द्विज कपोत निनाद ॥
बोलहीं तहँ मधुर बानी गगन गरजत घूमि । बृँदाबन कालिन्दि के तट हरित सोभित भूमि ॥
झूलतीं ब्रजसुन्दरी रस रूप सम बहु रंग । परम मंगल गीत हरि गुन मिलि जु गावे संग ॥
रास - हास - बिलास - क्रीडा हरखि सिंधु कलोल । कृष्ण सन्मुख चमचमावै अलक कुंतल लोल ॥
लोल कुंतल अलक कुंडल ललित फहरत चीर । अति बिचित्र सुहावने जनु धुजा मनमथ कीर ॥
वलय कंकन रसन मुखरित सकल भूषन अंग । झूलतीं ब्रजसुन्दरी रसरूप सम बहु रंग ॥
स्याम सुन्दर कमल लोचन पीत पट बनमाल । मोर पिच्छ किरीट कुंडल तिलक ससि सम भाल ॥
अंग कुंकुम खौरि सोहै गुंज हार बनाइ । कोटि काम लवन्य मूरति बँध्यौ तहँ मन धाइ ॥
धाइ तहँ मन बँध्यो रति रस रूपसागर पारि । मगन भौ सो फिरि न आयो प्रेम आनंद भारि ॥
भक्त हित अवतार लीनो ललित संग गुपाल । सूरके प्रभु स्यामसुंदर पीत पट बनमाल ॥
॥ ५८३४ ॥

आजु तो हिंडोरै झूलै छैया कदमकी । सब सखी ठाढ़ी जैसे चित्रके सदनकी ॥
पीताम्बर मुक्तमाल तिलक हू बन्यो है । भाल मुकुट कुंडल छबि छूटी अलकनकी ॥
स्रवन कपोल नैन अति ही रसीले बैन । कोटि काम थके सोभा देखिके बदनकी ॥
मुरलीकी धुनि सुनि सब मोहे सुर नर मुनि । सिवसे अचल ध्यानी तारी छूटी तनकी ॥
सूरदास, नाचे गाये लीला देखि सचु पावै । भयो है मगन क्रीडा देखि स्याम घनकी ॥
॥ ५८३५ ॥

झूलत फूल हिंडोरे प्यारी । अति सुकुमार झूल दोउ बैठे नवल कुँवर गिरिधारी ॥ राग कान्हरो
बरन बरन फूलनकी रचना चंपक बेलिन वारी । फूली सखी झुलावत गावत रंग रह्यौ अति भारी ॥
बरसत कुसुम देव मुनि हरषित फूलनकी बरसा री । मनमोहनकी या छबि ऊपर सूरदास बलिहारी ॥
॥ ५८३५ क ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुन्दर वदन देखे आज । मुकुट क्रीट सुहावनो मनभावनो ब्रजराज ॥ राग मल्हार
लियौ मन आकर्ष मुरली रहि अधर पै गाज । पलक ओटन चाहि चित लखि महामनहर साज ॥
गोपिजन तन प्रान वारत, रह्यौ मनमथ लाज । सूर, सुत यह नंदको श्री बलभकुल सिरताज ॥

भूलैं ब्रजराज कुँवर फूल हिंडोरना हो । राग मारू
सँग भूलै वृषभान - नंदिनी भुलवत ब्रजकी नारी ॥
फूलनके दोउ खंभ मनोहर फूलन डाँडी चारी ।
फूलन चौकी तकिया गादी पीरोजा फुलवारी ॥
फूले सुर ब्रम्हादिक नारद फूले मँद घन गाजै ।
धरनि फूलि पै फूलि फिरत सब कोटि काम छबि लाजै ॥
बसन फूल आभूषन फूलन फूले हैं पिय प्यारी ।
फूलन साज समाज लिये सब सूरदास बलिहारी ॥ ५८३७ ॥

राग मल्हार

सावन तीज हिंडोरे भूलति सखी लिए सँग राधा ।
गावति हँसति करति कोलाहल, बाढ़चो रंग अगाधा ॥
सुनि नँदसुत आतुर अति आये कहत ताथेई ताधा ।
सूरदास - प्रभु बिहरत हैं सँग मेटि काम रस बाधा ॥ ५८३९ ॥

राधे जू ! देखिये बन सोभा । राग जेतश्री
बरषा रितु नवकुंज सुहाय, जहाँ तहाँ कोकिल कल गाय ॥
मुदित परस्पर करत कलोल, देखत मेरे नैन सलोल ।
जहाँ तहाँ प्रफुलित बन जुही, मानहु फूलनि अलकें गुही ॥
अरुन पीत रँग फूले फूल, मानहु सोभित अंग दुकूल ।
बन उपवनके चंचल पात, हरित अरुन अनुराग चुचात ॥
हालति लता लता पै जात, हिलिमिलि करत तिहारी बात ।
फूली डारैं मदन डुलाव, लता मान करि मधुप मनाव ॥
उत्कंठा सों तुमहि बुलाव, डोलत पवननि खेह उड़ाव ।
वृन्दा बिपिन भूमि हरियारि, इन्द्रबधू डोलति रँग भारि ॥
मानहु बए कामके बीजु, तुम भूलौ सुख सावन तीजु ।
श्रीराधा प्रति कहत गुपाल, बसिये आजु कुंज ब्रजबाल ॥
सूरदास, मनमोहन स्याम, करहु केलि मम मन अभिराम ॥ ५८४० ॥

राग परज

दंपति अति रति रसाल बर हिंडोर भूले री । गावत जस बिहँसि बिमल अंग अंग फूलें री ॥
कनक खंभ रतन जटित मुक्ता मनि जोती । फोंदा पचरंग पाट लटकत गज मोती ॥
स्यामा अभिराम स्याम दरसन सुखरासी । कमल नैन सुख निधान कुंज सदन वासी ॥
राधाके कंठ चारु मनि किसोर सोहै । सूरदास, मनमोहनकी उपमाको को है ॥
॥ ५८४२ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राग परज

सुंदर सुख सदन मधु हिंडोरना सुहाए। ललितादिक दुहुँ दिसि रस जस अनुपम गाए।
बाम भाग बिधु-वदनी गति रसाल राजे। दच्छिन दिसि प्रेम पुंज सुषमा छवि साजे॥
हेम खंभ रतन जटित हारावलि सोहै। मुक्ता लर अधिक बनी निरखत मन मोहै॥
चौकी अति चित्र पटुलि पीरोजा लागे। सूरदास मनमोहन भूलत अनुरागे॥
॥ ५८४३ ॥

राग बिहाग

भूलत स्यामा स्याम हिंडोरे।
राधे तनपै सुरँग चूनरी सोहत मोहन पीत पिछोरे॥
बिबिध सिँगार दुहूँ तन सोभित हीरा रतन अमोले।
मानिक मोतिन माँग सुहानी अति छबि बढ़ी अतोले॥
झोंटा देत सखी ललितादिक राधा चौंकि हिंडोरे।
डरपि डरपि लागत पियके उर कहति झुलावौ थोरे॥
यह सुख निरखत सब ब्रज भामिनि वारि वारि तृन तोरे।
सूरदास-प्रभु सब सुख सागर, करि कटाच्छ झकझोरे॥ ५८४४॥

राग मल्हार

आली ! भूलत स्यामा स्याम॥
बिस्वकर्मा खंभ रचए काम कुंद चढ़ाइ, हरित चूनी जटित नग सब लाल हीरा लाइ॥
बहुत बिद्रुम, बहुत मुक्ता ललित लटके कोर, रंग रसमें बरुहि बरुहा होत राग झकोर॥
स्याम स्यामा संग भूले सखी देत भुलाइ, सबै सरस सिँगार रूप न आज बरन्यौ जाइ॥
नील सारी, लाल लहँगा, सेत अँगिया अंग, रोमअवलिन होय जमुना परसि त्रिवलि तरंग॥
कहूँ जूथनि जुवति ठाढ़ी कहूँ ठाढ़े ग्वाल, कहूँ तरुनी गीत गावे कहूँ करि अति ख्याल॥
कहूँ दादुर, कहूँ चात्रक, कहूँ बोलत मोर, चहूँ चितइ चकोर रहिगे देखि री इहि ओर॥
द्युती दसन अनारकी सी हँसी जब मुसुकाइ, दरकि दामिनि निरखि लज्जित गई बहुरि छिपाइ॥
कंज खंजन मीन माते उड़त नाहिंन भोर, बिंबके ढिग कीर बैठे गहि न पावत ठोर॥
लंक लखि कहि जाइ नहिं री अंक देखि बिचारि, सुभग कटिकौ देखि मानो गयौ केहरि हारि॥
चाल देखि मराल लज्जित गयौ तजि सर गेह, जानिके अभिमान गज सिर अजहुँ डारत खेह॥
देखि री दोउ उरज कंचन ईस धरिय बनाय, नाहिं श्रीफल सुन्दरी ना कली पद्म सुहाय॥
बीच मुक्ताहार मनु सुरसरी उतरी धाय. वार चकई पार चकवा मिलत दिनहुँ न आय॥
सबै राग मिलाय गावैं सुघर गौड मलार, सूह सारँग टोडि भैरव और राग किदार॥
मालवी श्रीराग गौरी मिलि असावरी राइ, कानरो हिंडौल कौतुक तान बहुबिधि लाइ॥
देखि सखि री ! यहै अचरज राहु-ससि इक ठौर, उड़त अंचल लपटि बेनी रपटि झपटै मोर॥
कनक जटित जराव बाजू कवि जु उपमा काइ, सूर ससि हैं एक ब्रजमैं उपजि तीन्यौ आइ॥
॥ ५८४५ ॥

राग बिलावल

लालन सिर सोहत जु टिपारो।
मल्लकाछ काछे छबि आछे मुरलि बजावत प्यारो॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बन - बन ठाढ़े सखा अंस भुज यह है जमुन किनारो।
सूरदास, प्रभु बेनु बजावत उठत तरँग रँग भारो ॥ ५८४६ ॥

राग : सारंग

देखु सखी ! राजत नँदलाल। सीस किरीट स्रवन मनि कुंडल उर राजत बन-माल ॥
बागो सरस जरकसी सोहे फेटा जोर रसाल। सुरत केलि रस मुरलि बजावत चंचल नैन बिसाल ॥
आस-पास सब सखा मंडली मधि नायक गोपाल। सूरदास-प्रभु यह सुख बाढ़चौ बड़े गोपके लाल ॥
॥ ५८५१ ॥

राग सारंग

लालन सीस टिपारो सोहे। तापर तीन चंद्रिका राजत ब्रजजनको मन मोहे ॥
धोति उपरना केसर रँगके उर राजत बनमाला। कमल फिरावत नैन नचावत कूजत बेनु रसाला ॥
आगे गोधन पाछे आपुन वन प्रवेस सब कीनो। सूरदास-प्रभु सबके स्वामी भक्तनको सुख दीनो ॥
॥ ५८५२ ॥

राग हमीर कल्याण

वनतैं आवत नटवर लाला। झूमत आवत मद गयंद सम छबि निरखत ब्रजबाला ॥
सीस टिपारो बन्यौ अनूपम मल्ल काछ करि राजे। पग नूपुर धुनि रुनझुन बाजे हँसत कमल कटि राजे॥
सुरभि वृन्द चहुँदिसि रहि ठाढ़ी सिंहपौर आनंदे। सूर, निरखि मुख अतिहि प्रफुल्लित मात जसोदा नंदे॥
॥ ५८५३ ॥

राग अडानो

ए हो रीझी आज तिहारी बानिक रूप चटकतें अटकी।
कहि न जात सोभा वा पटकी कुंडल मुकुट लटक वा लटकी ॥
कह री कहौं कहत नहिं आवै सोभा उन पिय नागर नटकी।
सूरदास - प्रभु तुम्हें मिलनको सुधि भूली अपने घट - पटकी ॥ ५८५४ ॥

राग मल्लार

अजु अति राजत हरी हरे। तन सोभित है हर्यौ पिछोरा सिर हरि पाग धरे ॥
हरी चंद्रिका सीस बिराजत हरे हरे हि बढ़े। सूर, स्याम प्रभु सब दिन राजत दिनदिन प्रीति चढ़े ॥
॥ ५८५७ ॥

राग मल्लार

अज, पट पीतहिनै छबि पाई।
स्याम घटा जुरि सघन देखियत नन्हीं बूँदें आई ॥
मोर चंद सिर मुकुट बिराजत इन्द्रधनुष तिहिं ठाँई।
कानन कुंडल दामिनि दमकत बरसत नीर सुहाई ॥
मोतिन माल मनो बग पंगति सुन्दरता झर लाई ॥
सूरदास - प्रभु कहँलौं बरनौ यह छबिकी अधिकाई ॥ ५८५८ ॥

राग मल्हार

देखौ सुन्दर गिरिधर लाल। सुन्दर मुकुट कुँडल हीरा मनि सुन्दर झलके भाल ॥
सुन्दर बने कपोल जु सुन्दर सुन्दर नैन बिसाल। सुन्दर हार दसन ब्रजसुन्दरि सुन्दर वचन रसाल ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुन्दर अँग भूषन अति सुन्दर सुन्दर सँग ब्रजबाल। सुन्दर कटि पीतांबर सुन्दर सुन्दर चाल मराल ॥
सुन्दर अंग अंग बर सुन्दर सुन्दर सुख बनमाल। सुन्दर सोभा सूर हृदय धरि सुन्दर झलकत भाल ॥
॥ ५८६१ ॥

राग मल्लार

गुबर्धन ठाढ़े नंदकिसोर। क्रीट मुकुट अरु ओढ़ि पितंबर जैसे नाचत मोर ॥
नन्हीं नन्हीं बूँदन वरषत तैसइ पवन झकोर। सूरदास - प्रभु वे बड़भागी निरखि रहीं मुख ओर ॥
॥ ५८६२ ॥

राग मल्हार

लालन ठढ़े कुंजके द्वार। सीस मुकुट मकराकृत कुंडल गरे गुंजको हार ॥
मुरली मधुर बजावे मोहन सुनि धाई ब्रजनार। सूरदास-प्रभुकी छबि ऊपर तन मन धन बलिहार ॥
॥ ५८६६ ॥

राग मल्हार

अजु मोहन छबि अधिकै भारी। सोभित तीन चन्द्रिका माथे धरत गुबर्धनधारी ॥
मल्ल-काछ सोहत है नीके मोति माल ब्रहु सारी। सूरदास - प्रभुके दरसनकौं मोहि रहीं ब्रजनारी ॥
॥ ५८६८ ॥

राग मल्हार

हिंडोरे झूलत गिरिधर लाल। लाल दुमालो सीस बिराजत उर राजत बनमाल ॥
सँग झूलत बृषभान-नंदिनी बोलत बचन रसाल। सूरदास-प्रभुकी छबि निरखत ब्रिबस भई ब्रजबाल ॥
॥ ५८६९ ॥

राग सारंग

भोजन करत गुबर्धनधारी।
छप्पन भोग छतीसों व्यंजन परुस धरे ललिता री ॥
आरोगत षटरस रुचिसौं प्रति श्रीवृषभानदुलारी।
अँचवनको लाई चन्द्रावलि श्रीजमुनोदक झारी ॥
सुगँध वीरि अरुगाति बिसाखा अँग अँग फूलत भारी।
मुकुट दिखावत चंपकलतिका सूर, स्याम बलिहारी ॥ ५८७० ॥

कहुँ कोऊ देखी गरबीली सरस पियारी राधा।
खंजन नेन मीन मधु गंजन लेप ललित मनरंजन ॥
अमल कमल मुख ज्योति बिलोकिनि होत सरद ससि बंधन ॥
अहो कदंब अंब वंसीबट सीतल सुन्दर छाया।
यमुना-तटपै हरत ताप तन बाधा ॥
अहो मराल मानसरवासी अहो अली मकरंद उपासी।
देहु बताय मया करि मोपै सोभा सिंधु अगाधा ॥
सतत देख गोपी गोधन मुख कबहुँ न सकत सही है।
मेटो दुख अब क्यों न मौन जो साधा ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आरत वचन पुकारत लालन जैसे मनुज बिरहके ख्यालन
जैसे मदन ज्वाल सों बाधा ॥
अतिसय विकल देखि बनमाली प्रकट भई वृषभान-दुलारी ॥
लिये लगाय सूर-प्रभु उरसों पुजवत मन सुख साधा ॥ ५८७१ ॥

मुखपर लट लटकत लटकारी। राग बिहाग
मानो अहिकुल त्यागि भुजंगिनि भई यूथतें न्यारी ॥
कनक भूमिपै कनक सोह तन, तन तनसुखकी सारी।
निरखत नैन स्वरूप बिकल ह्वै करतैं मुरली डारी ॥
सहज सुभट पिय वस कीने हो लाल गुबर्धनधारी।
सूर, स्याम खटको सुनिके हो पट कंचुकी सँवारी ॥ ५८७२ ॥

भरोसौ दृढ़ इन चरनन केरौ। राग बिहाग
श्रीवल्लभ नखचन्द्र छटा - बिन सब जगमैं जु अँधेरौ ॥
साधन और नाहिं या कलिमें जासौं होय निबेरौ।
सूर, कहा कह द्विविध आँधरौ बिना मोलको चेरौ ॥ ५८७३ ॥

[कलकत्तेके श्रीहनुमानप्रसाद पोद्दारजीके सूरसागरसे प्राप्त नवीन पद-संग्रह]

प्रथम स्कन्ध

करुनामय - गति लखि न परै जू।
अधरम धरम, धरम करि अधरम, अकरन करन करै जू ॥
जय अरु बिजय कर्म कह कीन्हौ ब्रह्म - सराप दिवायौ।
असुर जोनि ताहूपै दीनी धर्म उच्छेद करायौ ॥
पिता - बचन खंडै सो पापी, सो प्रहलादहिं कीनौं।
निकसे खंभ - बीचतैं नरहरि ताहि अभयपद दीनौं ॥
दान - धरम बहु कियौ भानुसुत सो तुव बिमुख कहायौ।
बेद - बिरुद्ध सकल पांडव सुत सो तुम्हरे मन भायौ ॥
जग्य करत बैरोचनकौ सुत बेद बिमल बिधि कर्मा।
सो छल बाँधि पताल पठायौ कौन कृपानिधि धर्मा ॥
द्विज कुल पतित अजामिल बिषयी गनिका नेह लगायौ।
सुत - हित नाम लियौ नारायन, सो बैकुंठ पठायौ ॥
पतिबरता जालंधर - जुवती सो पतिव्रततैं टारी।
दुष्ट पुंश्चली अधम जु गनिका, सुवा पढ़ावत तारी ॥
मुक्ति हेतु जोगी स्रम कीनौं, असुर बिरोधहि पावै।
अबिगत गति करुनामय तेरी, सूर, कहा कहि आवै ॥ ५८७४ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

द्वितीय स्कन्ध

यह ब्रत धरैं लोकमैं बिचरै सम करि गनै महामनि काँचै।
सीत उष्न सुख दुख नहिं मानै हानि भये कछु सोच न राँचै।
जाइ अमाइ, सूर, वा निधिमैं बहुरि न उलटि जगतमैं नाचै॥ ५८७५॥

नवम स्कन्ध

राग मारू

आयौ बालिनंदन बिकट बनचर बली महाकार रघुबीरकौ बीर आयौ।
पौरितैं दौरि दरबान दससीसकौं जाइ सिर नाइ यह कहि जनायौ॥
स्रवन सुनि दस-बदन सदन अभिमान करि सैन करि दूतकौं अंगद बुलायौ।
देखि लंकेस कपि भेस हिय हरष्यौ सुनौ भटक कटक इहि पार पायौ॥
बिबिध आयुध धरे सुभट सेवत खरे छत्रकी छाँह निरभय जनायौ।
देव-दानव महाराज रावन - सभा, कहनकौ मंत्र तहँ कपि सुझायौ॥
रंक रावन ! कहा तोहिं यह ढक परी इतौ दोउ कर जोरि बिनती बिचारौं।
परम अभिराम रघुनाथके रोमपै बीस भुज, सीस दस वारि डारौं॥
झटकि हाटक मुकुट, पटकि भट भूमिपै डारत सुरारि तेरौ सिर सँधारौं।
जानकीनाथ हाथ तेरौ मरन होहिं कहा मतिमंद तोहिं मध्य मारौं॥
पाक पावक करै, वारिपति जल भरै, पवन पावन करै द्वार मेरे।
गान नारद करै, नाद सुरपति कहै, बेद ब्रह्मा पढ़ै पौरि हेरे॥
सेष बासुकि प्रभृति नाग गंधर्ब - गन सकल बस जीति मैं करे चेरे।
सुनि अरे सठ ! दसकंठकौ कौन डर राम तपसी कियौ आनि डेरे॥
तप बली और तापस बली तप बिना बारिपै कौन पाषान तारै।
कौन ऐसौ बली सुभट जननी जन्यौ एक ही बानतैं ताकि बालि मारै॥
परम गंभीर रनधीर दसरथ तनय सरन गए कोटि औगुन बिसारै।
जाइ मिलि अंध दसकंध गहि दंत तृन तौ ही प्रभु तोहिं मृत्यु-मुखतैं उबारैं॥
कोपि करवार गहि कह्यौ लंकाधिपति, मूढ़ ! कहा रामकौं सीस नाऊँ।
चढ़ी, रावन ! सुनौ सीस तव मीचु अब तोरि भुजदंड करि रुंड धाऊँ॥
सीस तब धुन्यौ मंदोदरी कहि बार बार भजि रनरंग रघुबीर आए।
रुंड करि मुंड धुकि धुकि तव धरनि परै रुधिर सरिता नहीं पार पाए॥
राम सर लागि मनु आइ गिरितैं गिरी उछरि छनछन सरनि भानु छाए।
मारि दसकंध, करि बंधुको, सूर - प्रभु नैन राजीव घर सिया ल्याए॥ ५८७७॥

बदत बिरंचि बिसेष सुकृत ब्रजबासिनके, श्रीहरिजूके भेष सुकृत ब्रजबासिनके॥
जोतिरूप, जगनाथ, जगतगुरु, जगतपिता, जगदीस।
जोग, जग्य, जपतप मुनि दुर्लभ सो प्रभु गोकुल ईस॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इक - इक रोम विराट कोटि तन अनँत कोटि ब्रह्मंड।
ताहि उछंगे लेति जसोदा अपने निज भुजदंड ॥
अनु दिन सुर - तरु पुंज सुधारस चिंतामनि सुख धेनु।
सो तजि जसुमतिको पय पीवत भक्तनकौं सुख दैनु ॥
रबि-ससि कोटि कलासे लोचन त्रिबिध तिमिर भजि जात।
अंजन देत हेत सुतके चख कर गहि जसुमति मात ॥
कमला - नायक बैकुंठ - दायक दुख सुख जाके हाथ।
काँधे काँवर हाथ लकुटिया बिहरत बछरा साथ ॥
जाके जठर - लोकमैं जल थल पंचतत्त्व बहु खान।
सो बालक ह्वै झूलत पलना जसुमतिके गृह आनि ॥
छिति मपि त्रिपद करी करुनामय बलि छलि दियौ पतार।
देहरि उलँघि सकत नहिं सो प्रभु खेलत नंद - दुवार ॥
हरन, करन, दाता, भुगता प्रभु बिस्वंभर जग जानि।
तिहिं लगाइ माखनकी चोरी बाँधत है नंदरानि ॥
बदत बेद उपनिषद छहौ रस अरपै मुकता जाहि।
गोपी ग्वाल गोप - मंडलमें हँसि - हँसि जूठनि खाहि ॥
बकी, बकासुर, सकट, त्रिनाव्रत, अघ, प्रलंब, वृषभास।
केसि कंसकौं वह गति दीनी राखे चरन निवास ॥
भक्त - बछल प्रभु पतित उधारन रह्यौ सकल भरि पूरि।
मारग रोकि पर्‌यौ हठ द्वारें पतित सिरोमनि सूर ॥ ५८७९ ॥

पैयाँ चलन सिखत गोपाल।
धूरि धूत तन अंजन नैनन चलत अटपटी चाल ॥
डगमगात ढरि परत पानिपै भुज भ्राजत नँदलाल।
ज्यों सरसिज वर जानि अधोमुख हरषित होत मृनाल ॥
लए लगाइ अँगुरियाँ ग्वारिनि सुंदर स्याम तमाल।
जनु पग धरत अपुन बिसरी गति बिहरत वाल मराल ॥
अलक तिलक अरु चारु चखौड़ा सुठि सोभा भ्रूभाल।
सूरदास, ऐसो मुख निरखत जग जीवै बहु काल ॥ ५८८० ॥

तब ही माखन जसुदा लाई, मथि अबही धरि राखौ।
तुम्हरे कारन कुँवर कन्हाई लौनी लैकै चाखौ ॥
माँगि लेहु या विधि करि मोहन मो आगे तुम खाहू।
बाहर कहूँ कछू जिन खैहो दीठि लगै जिन काहू ॥
तनक तनक कछु खाहु लाड़ले ज्यों बढ़ि आवै देही।
सूर, स्याम अब होहु सयाने सत्रुनके मुँह खेही ॥ ५८८१ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नमो नमो बृन्दावन - चंद । जदुकुल नभ तिथि दुतिय देवकी प्रगटे त्रिभुवन-चंद ॥
जठर कुहूतें निकसि बारुनी दिसि मधुपुरी सुछंद । बसुद्यौ संभु सीस धरि आने गोकुल आनँदकंद ॥
ब्रज प्राची जसुदा राका निसि सरस सरद रितु नंद । उड़गन सहित सखा संकरषन तमकुल दनुज निकंद ॥
गोपीजन चकोर चित बाँध्यो निमि निवारि पल बंद । सूरजदास, कला षोडस परिपूरन परमानंद ॥
॥ ५८८२ ॥

देवक उदधि जु सीप देवकी वसुद्यौ स्वाती वरष्यौ ।
उपज्यौ सुवन बिमल मुकताहल निरखि सकल जग हरष्यौ ॥
निरमोलक नग हाथ जसोदा नँदकौ चित आकरष्यौ ।
बिधि बासव सिव सेस जौहरी तिनहू जात न परष्यौ ॥
सिद्ध साधुजन ध्यान धरत हैं सो ब्रज जन प्रति निरष्यौ ॥
सो उर हार बसत राधाके सूर हरी रस बरष्यौ ॥ ५८८३ ॥

तुम जनि मोहन गहौ मथानी ।
दही बिलोवन देहु नंद-सुत ! मानु बबाकी अपनैं आनी ॥
कबहूँ भोग तृप्ति न पावत कबहूँ मिलि माखन रुचि मानी ।
कबहूँ मुनि जन ध्यान न पावत कबहुँ खिलावत है नँदरानी ॥
कबहूँ तीन पैंड भुव मापत कबहूँ देहरि उलँघि न जानी ।
सूरदास; बलि बलि बिनोदके रूप - रासि रचना बहु ठानी ॥ ५८८४ ॥

अरन्यौ मेरौ बाल - गुबिंदा ।
कर - पल्लव गहि गहि दिखरावत, खेलन माँगै चंदा ॥
भाजनमैं जल डारि जसोमति या बिधि चंद दिखावै ।
रुदन करत, ढूँढ़त नहिं पावत चंद धरनि क्यौं आवै ॥
मधु, मेवा, पकवान, मिठाई माँगि लेहु रे छौना ।
चकई, फूल पातके लटकन लेहु न लाल खिलौना ॥
संत - उबारन; असुर - सँहारन दूर करन दुख दंदा
सूरदास; बलि गई जसोमति उपज्यौ कंस - निकंदा ॥ ५८८५ ॥

जसुमति लेति बलाइ, भोर भौ कुँवर कन्हाई ॥
संग लिये सब सखा द्वार ठाढे बलभाई ॥
सुंदर नैन दिखाइकै, हरु नैननकौ ताप ॥
नैन - कमल मुख धोइकै, करौ कलेवा आप ॥
नंद - सुवन हो लाड़ले, सब ब्रज जीवन - प्रान ॥
बार बार माता कहै, जागौ स्याम सुजान ॥
माखन रोटी लेहु सद्य दधि रैनि जमायो ॥
पटरस पय मिष्टान सोइ जेंवौ रुचि पायो ॥
मोपै लीजै माँगिकै, जो जो भावै तोहि ॥
सँग जेंवौ बलरामके, रुचि उपजावहु मोहि ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तब हँसि चितये स्याम सेजतें बदन उघारौ ॥
मनौ पयोदधि मथन भयौ है चन्द उजारौ ॥
सखा सुनत देखन चले, मानो चन्द चकोर ॥
जुगल कमल ज्यों इंदुपै, बैठि रहे मनु भौंर ॥
तब उठि आए कान्ह मातु जल बदन पखान्यौ ॥
बोलि उठे बलराम स्याम कत उठौ सबान्यौ ॥
दाऊजू कहि हँसि मिले, बाँह गहे बैठाइ ॥
माखन रोटी सद दधी जेंवत रुचि उपजाइ ॥
जल अँचयौ मुख धाइ उठे बल मोहन भाई ॥
गाइ लईं सब घेरि चले बन कुंवर कन्हाई ॥
टेर सुने बलरामकी, बालक आए धाइ ॥
लै आए सब जोरिकैं, घरतैं बछरा गाइ ॥
सबन कान्हसौं कह्यौ आजु बृन्दावन जैये ॥
जमुना तट तृन बहुत सुरभि - गन तहाँ चरैये ॥
ग्वाल गाइ सब लै गए, वृन्दावन समुहाइ ॥
अतिहि सघन बन देखिकै हरषि उठीं सब गाइ ॥
कोउ कोउ हेरी देत परसपर स्याम सिखावत ॥
कोउ टेरत, कोउ हाँकि सुरभिगन जोर चलावत ॥
अन्तरजामी कहत जिय, हमैं कहावत टेरि ॥
कान्ह कहत अबके गयें पुनि धौं लीजै फेरि ॥
कोउ मुरली कोउ सबद कोउ सृङ्गीको टेरै ॥
कृष्न कियो मन ध्यान असुर इक बस्यौ अँधेरै ॥
बाल बच्छ सब राखिहौं एक वेर लै जाउँ ॥
कछुक साथ लै अपनपौ, अचल रहै तिहि ठाउँ ॥
असुर - कुलहि संघारि धरनिकौ भार उतारौं ॥
कपट रूप धरि दनुज वाहि अब तुरत पछारौं ॥
गिरि समान धरि अगम तन लीन्यौ बदन पसारि ॥
मुख भीतर घन, वन, नदी रूप महा घुनिहारि ॥
पैठि गए मुख ग्वाल धेनु बछरा सब लीने ॥
देखि महाबन भूमि रहे तृन बहु सुख कीने ॥
कहन लगे सब आपमें, सुरभी चरैं अघाइ ॥
मानो परबत कन्दरा, मुख सब गए समाइ ॥
सब मुख गए समाइ असुर तब गात सकोन्यौ ॥
अंधकार इमि भयौ मनौ निसि बादर जोन्यौ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अति हि उठे अकुलाइकै, बालक बछ सब गाइ ॥
त्राहि त्राहि करिकैं उठे, परे कहाँ हम आइ ॥
धीर धीर, कहि कान्ह, असुर यह, कन्दर नाहीं ॥
अनजाने सब परे अघासुरके मुख माहीं ॥
जिय त्याग्यौ यह सुनत ही, अब को सकै निवारि ॥
तातैं दूनो बपु धर्‍यौ, असुर न सक्यौ सँभारि ॥
सबद कर्‍यौ आघात अघासुर टेर पुकार्‍यौ ॥
रह्यौ अधर दुइ चाँपि बुद्धि बल सुरति बिसार्‍यौ ॥
ब्रह्म - द्वारकौं फोरिकै, निकसे गोकुलराइ ॥
बाहर आवहु निकसिकै, मैं करि लियौ सहाइ ॥
बालक बछरा धेनु सबै मनमैं मुसकाने ॥
अंधकार मिटि गयौ देखि जहँ तहँ अतुराने ॥
आए बाहरि निकसिकै, मन सब कियौ हुलास ॥
हम अजान कत डरत हे, कान्ह सहाई पास ॥
धन्य कान्ह, धनि नंद, धन्य जसुमति महतारी ॥
धन्य लियौ अवतार, कोख धनि सो जिहि धारी ॥
गिरि समान तन अति अगम, पन्नगकी अनुहारि ॥
हम देखत छिन एकमें, मार्‍यौ दनुज प्रचारि ॥
हरि हँसि बोले धेनु संग जो तुम नहिं होते ॥
तुम सब कियो सहाय भयो तब कारज मोते ॥
हम तुम सब मिलि बैठिकैं, भोजन करैं बनाइ ॥
बंसीबट भोजन बहुत, जसुमति दियौ पठाइ ॥
ग्वाल बहुत सुख पाइ कोटि मुख करत प्रसंसा ॥
कहैं, बहुत जो भए पूत, एको ए बंसा ॥
चढ़ि बिमान सुर देखहीं, गगन रहे भरि छाइ ॥
जय जय धुनि सब करत हैं, पुहुप हरषि बरषाइ ॥
ब्रह्मा सुनि यह बात अमर घर घरन कहानी ॥
गोकुल लीनों जन्म कौन यह मैं नहिं जानी ॥
देखौं घर घर खोज लै सोच पर्‍यौ मन - माँह ॥
सूर, स्याम सब लै चले वंसीबटकी छाँह ॥ ५८८७ ॥

कैसी बातें करत कहत नहिं आवै री । स्यामसुँदर पिय प्यारो जिय अति भावै री ॥
तान तरंगन अंगन रसिक रिझावै री । जंगम थावर करै थावरहिं चलावै री ॥
जब मुरली धरि अधर ऊँच सुर गावै री । ब्योम जानि पति गति बसंत बिसरावै री ॥
लहर छुभित जल-निधिहू सनमुख धावै री । नंदलाल लालची ललन ललचावै री ॥
कामिनि धीरज धरैं सु कौन कहावै री । सूरदास - प्रभु प्रेम हिये न समावै री ॥५८८७॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अति बिसाल हरि लोचन लोल।
चितै चितै अति चारु बिलोकनि मनु माँगत हैं हिरदै ओल॥
अरुन अधर नासा अति सुन्दर कुंडल बलित सु देखि कपोल।
मुख मुसकानि अधिक छबि उपजत स्रवन सुनत अति मीठे बोल॥
चितवत रहति चकोर चंद-ज्यों गोपी पल न लगावति डोल।
सूरदास, हरि दरसन कारन दासी सकल भईं बिनु मोल॥ ५८८८॥

मेरे लोचन ललचि भए।
सारँग-रिपुके रहत न रोके हरि स्वरूप ठगए॥
काजर कुलफ कियैं ही राखति पलक कपाट दए।
बरज रही बरजे नहिं मानत स्यामहिं बहुरि गए॥
छाके रहत रूपके माते नँदनंदन रिझए।
सूरदास-प्रभु मोहन मूरति बिनु गथ मोल लए॥ ५८९०॥

मुरली तुम हरि मोहिं सिखाउ।
तुम सुर पूरौ प्राननाथ बस, कर अँगुरी न चलाउ॥
मधुर-मधुर अति तान रागिनी हम सौं ही उपजाउ।
जैसी भाँति रूचै गिरधरजू तैसैं पवन चलाउ॥
करि निज अंक अंस बाहू धरि सर्बस सुख उपजाउ।
सूरदास, अटकै, न चलै पल मन[illegible] अभिलाष बढ़ाउ॥ ५८९१॥

मेरे नैनन बानि परी।
सब सुख सदन बदन देखे बिन रहत न एक घरी॥
इनकै लिये लोक-निंदा सब मेलै तारि धरी।
ज्यौं ज्यौं मात-पिता मोहिं त्रासत त्यौं त्यौं चोप खरी॥
मुरली घोर सोर सुनि सजनी! आनँद उमँग भरी।
सूरदास, रसरंग भरेतैं इकटकतैं न टरी॥ ५८९२॥

हरि-रस लोभी मेरे नैंन।
तृपिति न मानत, पिबत कमल-रस सुंदरता मधु बैन॥
दिन अरु रैनि-दिवस रचना रचि निमिष न राखत चैन।
सोभा-सिंधु समाय कहाँ-लौं हृदय साँकरै ऐन॥
बिरह अजीर्न उमँगि जल थाप्यौ अब लागे दुख दैन।
सूर, बैद्य ब्रजनाथ मधुपुरी काहि पठाऊँ लैन॥ ५८९३॥

देखौ, स्याम दसन छबि लागी।
एक अचंभो देखि सखी री! प्रतिबिंबहि जु सुहागी॥
दधि-सुत सुफल कीरपै सोभित कीरति गति अनुरागी।
सलिल सघन-माँझे दधि सुत-ज्यों प्रमुदित तनया जागी॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दधि - सुतमैं ज्यौं दधि - सुत बेध्यौ दधिसुत कमल उमागी ।
सूरदास, गिरिधरकै परसत, दधिसुत - तनया भागी ।। ५८६४ ।।

कहुँ रजनी बिधु अधिक सुहाई ।
षोडस कला सरद परकासित रबिसौं नूतन प्रीति बनाई ।।
यह बिपरीत जहाँ - तहँ आपुन अंबुज सोह मकर गहि लाई ।
ता ऊपर बंधूक प्रकासत रस्मीलता सूरकी पाई ।।
द्वै ससिहर द्वै सूर प्रगट भे मानहु तमचुरकी रति आई ।
सूरदास - स्वामीकी सोभा मारग कौन भाँति बिलगाई ।। ५८६५ ।।

अजु वै कमल धरत उर लाय ।
राजत रमा कुंभ रस वेला दोऊ बनि जु रहे उरभाय ।।
वेनतेय संपुट सनकादिक चतुरानन अरु सुजन सखाय ।
औसर ताकि बिसारदतामैं निगम छंद सुर गावत धाय ।।
जलधि पिबत सोइ अमिय निमेषन सहसनि बर अरु बदन रिझाय ।
कनक दंड बिबि धारत कीरति हाहू सिव नारद मुनि गाय ।।
गावत संत सदा सुखदायक नायक मिलि आनंद विहाय ।
ताके चरन कमल सूरज - प्रभु आय मिले गुरु कृपा सुनाय ।। ५८६६ ।।

गिरि-रिपु परत बदनतैं अंबु ।
मानहु माँग सुरसरी धँसि धर सो महि सींचत संभु ।।
कटि केहरि डगमगत सीस घट सुन्दरताकै खंभु ।
मुक्तावली बनी उर ऊपर कंचुकि नलिन विलंभु ।।
सगवगि अलक बदन बिधु झलमल मधुपहि कंवल अचंभु ।
सूरदास - प्रभु निरखत गिरधर विसरि गए सब दंभु ।। ५८६७ ।।

मन हरि लियो जात मेरो री! हो खेलै गृह आव सखी री ।
अचका ह्वै हौं चितवन लागी जनु लिखि गयौ चितेरौ री ।।
ठगि मन निधि उन संग लै गयो बहुरि न कीनौ फेरो री ।
पय-पानी ज्यों मिलिगौ सखि अब, को करि सकै निबेरो री ।।
तू तो सखि ! बरजत हुति बहुतैं, कह्यो न कीनौं तेरो री ।
लोक लाज बिसरी अब सखि री ! भयौ परायौ चेरो री ।।
मोहन सुंदर गड़े आइ उर तिरछी चितवन केरो री ।
बिन देखे नहिं परे सखी री अब कत करत अबेरो री ।।
सूरदास - प्रभु आनि मिलैं जो तौ सु बसे यह खेरो री ।। ५८६८ ।।

सखि री ! सुमिरि सनेह पुरानौ ।
कह्यौ मान मेरौ जु सयानी ! औसर जात दुरानौ ।।
या तनकौ रति - पति नहिं रीझत तो पिय प्रेम बुरानौ ।
अबकी बिछुरि कौन दिन मिलिहै, करतैं सुगथ चुरानौ ।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वैसी कह वैसेकी सुधि लै कर जल तारु झुरानौ।
उलटि चलहु सखि जहाँ रिसानी जब लगि अंत भुरानौ ॥
या नइ रुचि दिन द्वैकै सुखको अंत बिछोह बरानौं।
सूरदास - प्रभुसौं मिलि सुंदरि ! अचल सुहाग धुरानौं ॥ ५८९९ ॥
लावहु संग कंत हा हा करि तृन गहत दंत तुरत गई हरि लिए मनाइ।
हरष नैन उर कंठ लगाइ दुख डार्‌यौ तुरत भुलाइ ॥
सो सुख दुहुँके उर न समाइ रितु बसंत आगमन जानि।
नारिनकौं राख्यौ मन मान सूरदास - प्रभु मिले आनि ॥
रस राख्यौ रति रंग बानि ॥ ५९०० ॥

मोहन मुखकी सुनि बतियाँ।
कहि पठई हित चितकी हरिजू कछुक बनाइ कही अधरतियाँ ॥
बन घन सुभट प्रगट संबर अरि नृप आसन बैसे करि सतियाँ।
कुमुद बिसिष सर चाप लिये कर चंद किरन बैसी पंगतियाँ ॥
चँवर ढाल मारुत भे गुन - निधि बरहा नट निरतत अनुमतियाँ।
कुंज बितान गान अलिकुल कृत जस गावत पिक करी अनतियाँ ॥
तुव कुच ओट दुर्‌यौ चाहत हैं स्यामसुँदर पियकी ये बतियाँ।
सूरदास, प्यारेको जितवहि सुजस प्रगट मनसिजकी हितियाँ ॥ ५९०१ ॥

प्रीति प्यारि नँदनंदन तेरैं।
प्रभु पूरन - चित धरतइ छाये यहै करी जिय मेरैं ॥
इत निरबल चित रहत सकत नहिं निसि-बासर इकटक उन-केरैं।
नैकहि चूक परत सेवातैं तब बिपरीतहि उलटिहि प्रेरैं ॥
कैसहुँ अपजस कहत नाम जस संश्रिल मुकुत अनत नहिं हेरैं।
जानि भजौ बकसत जु सुतन तजि समझी हौं हरि सूरज चेरैं ॥ ५९०२ ॥

चकोरहि त्रासत है राकेस।
कँवल उड़ावत अलि - जूथनकौं अटपटि या ब्रज देस ॥
गिरि - मघवा संजोग देखियत मृग लुबधक इक संग।
उभैं बिंब बदवत कोकिलकौं सुक स्वासित सब अंग ॥
कनक-लता बाँधत केहरिकौ बरषा सरि सकुचाय।
ढाँकत, सूर, बसनके अंतर तुम रस त्रिय दरसाय ॥ ५९०३ ॥

कुंज - मौनतें निकसि भोर ही स्यामा स्याम खरे।
जलद नवीन तरुनि दामिनि मिलि बरषि निसा उघरे ॥
गौर स्याम तन नील पीत पट आलस चितहि धरे।
स्रम जल बूंद कहूँ कहुँ उडुगन बादरमैं निकरे ॥
भूषन बिबिध हुते मुदवारे अति रस उमगि ढरे।
काजर अधरन बोरि नैन रँग अँग अँग झील भरे ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रेम प्रवाह छुटी जनु सरिता टूटी माल गरे।
सोभा अमित बिलोकि सूर - प्रभु नाहीं जात टरे ॥ ५६०४ ॥

वह वन जात नाहिंन कोय। कालिह तिहिं वन दुहत बिसरे बाँसुरी अरु नोय॥
सुरभि केस सुदेस ग्रंथनि औरपै नहिं होय। धरनि उड़ि अलिमाल मानौ चली कँवल बिगोय॥
रूप सेली फनी निजवत बैन सो कहि जोय। मुरलिकामें प्रान मेरौ हृदै देखौ टोय॥
बाँसुरी करि चोरि लीनी गई तन मन भोय। सूर, जिहि अँग बिरह व्यापै पीर जानै सोय॥
॥ ५६०५ ॥

नवल रँगील सखा सँग लीनै। राजत अंग अंग रँग भीनै॥
नंदकुँवर ब्रज - बीथिनि डोलैं। रँग भीनो हो हो लै बोलै॥
ताल मृदंग मुरज डफ बाजै। ढोल ढमक नव घन ज्यों गाजै॥
सुनि नव वधु आनँद अति बाढ़ी। निकसि निकसि पौरनि सब ठाढ़ी॥
उत हि नवेलि रँगीली नारी। रंग भरतिं अरु गावतिं गारी॥
अँजुलि अबीर छुटत छबि पावै। पंकज मनहु पराग उड़ावै॥
पिचकारिन रँग उछरतु भारी। उड़त गुलालहु अटा अटारी॥
जल गुलालसौं पिचकारीमैं करि। तब लगि भामिनि दामिनि सी भरि॥
ज्यों कोउ नवल वधू भरि भागे। रंगी मोहन गौहनु लागे॥
धाइ जाइकै धरत छबीलौ। जैसो चाहत करत रँगीलो॥
जाइ परत ललना मंडल जब। घेरि लेत कर तारी दै सब॥
अंग अंग भुज हियै भरो री। सूरदास तहँ बलि बलि हो री ॥ ५६०६ ॥

नंद बबाकी धेनु चरावत एक गाइ संध्या नहिं आई।
ढूंढत ढूंढत सब ब्रज ढूंढ्यौ भोर भए बृन्दाबन पाई॥
मोर मुकुट मुरली पीतांबर एक बातकी बीस बनाई।
सूरदास - प्रभु पिया मिलनकौं अकथ कथा गोपाल सुनाई॥ ५६०७ ॥

उनींदे आए हो जू लाल।
कोइन फीके अति अलसाने बिन गुन है उर माल। लटपट पाग लपेटे पेंचन मेरे दीनदयाल॥
डगमग पग सु धरत धरनीपै मैं निरखे नँदलाल। अति आतुर बातन तुतुराने ल्याए मोहि रसाल॥
हमसौं कपट औरसौं रसबस हमें मरन तुब ख्याल। तुम नाइक कुबिजा रस पागे, सूर, बाल बेहाल॥
॥ ५६०८ ॥

प्रथम परम रुचि बंदऊँ नारायन गुरु पाँइ। नारद ब्यासहि गौरि सुत, सारद करहु सहाइ॥
गोबिंदके गुन गाउँ मैं चतुर चातुरी रीति। सुनत संत सुख पावहीं मन उपजै अति प्रीत॥
परमानंदा प्रगट प्रभु, पावन पूरन काम। परम दयालू परम गुरु, कारुन करुनाधाम॥
जनु जग राखत पोषतै कछु अरसानै गात। निद्रापै मनु है कियौ निसि जानी जब आत॥
नाना रूपरु रंग गुन, नाना कर्म सुभाय। जिय जातेक सब संग लै बालक लिये बुलाय॥
बिहरत बासर बीसऊ फिरत पिरानौ पाय। अव सिसु सँग मिलि पौढ़िगे जहाँ प्रकृति पिय धाय॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सब रचाइ हरि सूतिगे पन्नग पलँग डसाय। ओढि सुपेदी समुदकी कमला कंठ लगाय ॥
नानहु माह महा निसी बीती प्रलै अभेद। प्रात समै है आयऊ बंदी बोलैं बेद ॥
स्वास सदनतें नीकसे, अपने रूप बनाय। बोलत बहुतै बिरद बिधि नाना भाँति सजाय ॥
जै जै जगत सिरोमनी, जै जै अजित अनंत। कलिमल हरन कृपानिधी, केसौ कमला - कंत ॥
सुनत सुजस मन सामुझै, जिय जान्यौ भौ भौर। चितवत सकलहि भवनमैं, निकस्यौ नाभि सरौर ॥
ता भीतर चतुराननहु सोभित छुरित परान। मानौ बिगसत कमलके निकसत मधुप बिहान ॥
चितवत चक्रित दिसि चहूँ मन सोचै अकुलाय। देखि बिकल बिधि बालकहिं हरि हँसि लिये बुलाय ॥
ब्रह्मा सिर बंद्यौ तुरत प्रभु बोले सुसुकाइ। फागुन मास मनोज मन सबही तौ घर जाय ॥
सुनि विधि बिरम न कछु कियौ चल्यौ चरन सिर नाय। ता अंतर ऊपर बिधी बहुर्यौ बैठै आय ॥
जो जहँ है सुख सोवता सो तहँ लिये बुलाय। अज्ञा आपु जनायके साथिन यहै सुनाय ॥
सनक सनंद सनातनहिं संतत सनतकुमार। सुनहु सुमति सुत नारदहु कर्दम करहु विचार ॥
सुनि नारद बिधिकी सिषव तिनहिं कही यह बात। प्रभु अज्ञा माथै धरौ बिरम न कीजै तात ॥
कमल कुसुम दल तव रच्यौ भवन चतुरदस फेर। तापै कनक सु कनिका थाप्यौ दंड सुमेर ॥
सब समाज भय खायकै आतुरई घन लैन। काल कर्म गुन मायही लै आये इक ऐन ॥
इंद्री तत्त्व बिषै रसहु अंतर बहिर बिकार। सवहुँन सघन समेटिकै ऊपर हैं त्रिन जार ॥
उपजौ कोलाहल बहुत भई सकल जग जाग। सोवतकै उठि धाएऊ सिसु सुर नर खग नाग ॥
जूथनि जूथनि बालकन चौरासी लख जाति। सब सुभ असुभ समेटते अपनी अपनी भाँति ॥
मिलि मंगल आरँभ कियौ परिवातैं दिन तीस। अपनै अपनै रावटे खेलैं तीन्यौं ईस ॥
ब्रह्मा धरी धरोहरी कीनी बहुत बढ़ाय। हरि रषवारे राखिकै जिहि बिच बिनसि न जाय ॥
जुरे जीव बहु रूपके नटवर बपुकी खानि। प्रभु कौतिगके कारनैं औसर प्रगटे आनि ॥
सजि श्रुति संग मिलाइकै रच्यौ राग आकास। आनि एक मारग मिले तन मन दृष्टि बिलास ॥
मुदित मधुर सुर गावही बिबिध बजावै बीन। ताल पखावज आव घन, नाचैं नारि नवीन ॥
मुरज उपंग अधोरती सुरमंदिर कठताल। जलतरंग कर बीनकौ जंत्र रवाब रसाल ॥
एक निमेष धरे उहँ बरन बनाये च्यारि। नृत्तहि नेम निरन्तरहिं तिहीं तिहीं उनहारि ॥
एकनि आश्रम काछिकै अपनै अपनै अंग। श्रुति सबदनि मिलि उघटही उपजहि बहुत तरंग ॥
इकरस गीत सुनावहीं ताल फागुनी भेद। ग्राम नाम नाना रसहि तान तरंग अखेद ॥
गतिमैं गत्यौ दिखावही नयनी खंजन भान। मीन मरालहि हरन हिय तिन मिलि उपजहि आन ॥
भ्रमरी भ्रमहीं वहुत विधि सिर कर अँगुठा एक। दान यज्ञ तप संजमहि साधन धर्म अनेक ॥
वै गोबिंद रिझावहीं अभिनव मंडल मान। परम प्रसादहिं पावहीं परम पदारथ दान ॥
हरि समाज सुख क्रीडते चौदह तिथि गै-बीति। पुनि पून्यौं निसि आ गई सभै सराहत रीत ॥
ढोल भेरि डफ झाँझ मिलि गोमुख पटह निसान। संख बंस घन झल्लरी घंटा झाँझ बिषान ॥
वहुं बिधि बाजन बाजही अति रव रोके कान। धर अंबर पूरन भई सुनि सुर नर अकुलान ॥
तव होरी हरि पूजिकै संख सबद दइ फूँकि। लागै फिरन चहूँ दिसी अरि सबहिन दइ कूकि ॥
गारी देहिं परसपरहि मातर गनिके नाम। तिन सब लोगन गायऊ बल गहि घरकी धाम ॥
जरत बढ़ी जग ज्वालहू द्वादस रबि आकास। जोगिनि जूथ भयानकहु तनु सेकहि चहुँ पास ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नगन भए हरि नाचहीं भस्म धरे सब अंग। भैंरौं डाकिनि साकिनी गावहिं गीत निसंक॥
जटा जूट मुकरायकै दिसा नवै धै सूल। सेसहुके सिर डोलहीं निरतत पद प्रतिकूल॥
मेघन मंडल साजियो घन पिचकारी हाथ। छिरकत छिति छित भीतरैं परिपूरन भइ प्रात॥
खेलत खीन भये अती जल सम बरसत खेह। चले उलटिकै मिलि सबै मनौ पिताके गेह॥
जननी अति आदर करी उबटि न्हवाये अंग। बसन विचित्र बनाइके, लै रचाय पिय संग॥
बरष बरष पिय आवही हरि होरी इहि नाम। गावत सुनत सुनावतै जन पावहिं बिस्राम॥
उत प्रतिपालन प्रलय रस हरि खेलहिं इहिं फाग। सूर, सुमन रुचि उपजही हरि चरनन अनुराग॥
॥ ५६०६ ॥

आग्या यहै मोहि प्रभु दीनी। यह अवतार चहत प्रभु लीनी।
दैत्य - दलन सुरके हितकारी। अब मारौ प्रभु कंस प्रचारी॥
यह सुनि हँसे सुरनके नाथा। जब गाई नारद यह गाथा।
श्रीमुख कह्यौ जाइ समुझावहु। नृप आयसु करि मोहिं बुलावहु॥
अंजुलि जोरि देवमुनि हरषे। कृपाबचन तिनसौं हरि बरषे।
तुरत चले नारद नृप पासा। यहै बुद्धि मन करत प्रकासा॥
संकरषन हिरदै प्रगटाई। जे बातें रिषि गए सुनाई।
आदि पुरुष उद्घोष बिचारी। सेष रूप हरिके सुखकारी॥
अंतरजामी हैं जग - ताता। अनुज हेत जग मानत नाता।
यहै बचन हलधर कहि भाष्यौ। सुनि सुनि बचन हृदै धरि राष्यौ॥
तुम जनमे भुवि भार उतारन। तुम हो अखिल लोकके तारन।
तुम संसार -सारके सारा। जल थल जहाँ तहाँ बिस्तारा॥
तब हँसि कही भ्रातसो बानी। जो तुम कहत बात मैं जानी।
कंस - निकंदन नाम कहाऊँ। केस गहौं भूपै घिसटाऊँ॥
इहिं अंतर मुनि गे नृप - पासा। मन मारे मुख किए उदासा।
हरषि कंस मुनि निकट बुलायौ। आदर करि आसन बैठायो॥
कह्यौ कंस, क्यों रिषि मन मारे। कह चिंता चित बढ़ी तुम्हारैं।
नारद कह्यौ, सुनो हो राऊ। कह बैठे, कछु करौ उपाऊ॥
त्रिभुवनमैं तुम सर को ऐसौ। देख्यौ नंद - सुवन ब्रज जैसौ।
करत कहा रजधानी ऐसी। यह तुमकौं उपजी कहु कैसी॥
दिन दिन भयो प्रबल वह भारी। हम सब हितकी कहैं तुमारी।
तब गरबत नृप बोले बानी। कहा बात नारद तुम ज्ञानी॥
कोटि दनुज मो सम मो पासा। जिनकौ देखि नरन तन त्रासा।
कोटि कोटि तिनके सँग जोधा। को जीवै तिनके तन क्रोधा॥
मंत्रिनके बल कहा बखानौं। जिनके दरसन काल डरानौ।
कोटि धनुषधर सेवत द्वारैं। बचै कौन तिनके जु हँकारैं॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक कुबलया त्रिभुवन - गामी। ऐसो और किते हैं नामी।
ग्वाल - सुतनकी कहा चलावहु। यह वानी कहि कहा सुनावहु ॥
प्रजा लोग ब्रजके सब मेरे। सेवा करत रहैं नित नेरे।
तातैं सकुचत हौं उहि काजा। बालक सुनत होत जिय लाजा ॥
भली करी यह बात चलाई। सहज बुलाइ लेउँ दोउ भाई।
और सुनौ नारद मुनि मोसौं। स्रवनन लागि कहौं कछु तोसौं ॥
कितिक बात बलराम कन्हाई। मो देखत अति काल डराई।
आजु काल्हि अब उनैं बुलाऊँ। कहि पठवौं ब्रज सहित मँगाऊँ ॥
और प्रजा ब्रज आनि बसाऊँ। अपनैं जियकी खुटक मिटाऊँ।
तिनपै क्रोध कहा मैं पाऊँ। रंगभूमि गज चरन रुँधाऊँ ॥
मेरी समसरि कोऊ नाहीं। यह सुनिकै नारद मुसकाहीं।
सत्य बचन नृप, कहत प्रचारी। अब आनौ उनकौ तुम मारी ॥
यह कहि मुनि बैकुंठ सिधारे। त्रिभुवनमैं को बलहि तुमारे।
कंस पर्यौ मन यहै विचारा। राम कृष्ण हैगे बड़ भारा ॥
दनुज हृदै हरि यहै उपायौ। नारद कही सुनत मन आयौ।
अब मारौं नहिं गहरु लगाऊँ। मथुरा जहाँ तहाँ बल छाऊँ ॥
धकधकात जिय बहुत सँभारै। कैसैं मारैं बुद्धि बिचारै।
सूरज - प्रभु अबिगत अविनासी। कंस काल यह बुद्धि प्रकासी ॥ ५६१० ॥

सुनौ अक्रूर यह बात तुमसों कहौं, काहि पठवौं कोउ जात नाहीं।
कमल जबतैं उरग पीठि ल्याए हुतै है वहै खुटक मम हृदय माहीं ॥
देखिबेकी साध बहुत मोकौं बिकल अतिहि सुंदर सुनैं दोउ अमोले।
प्रीति करि नंदसौं सहज बानी कहौ तुरत ल्यावौ दुहुनि नृपति बोलैं ॥ ५६११ ॥

कान्हा ! किहि अवलंबौं प्राना।
निष्ठुर वचन कठोर कुलिसतैं कहत मधुपुरी जाना ॥
क्रूर नाम, गति क्रूर, क्रूर मति काहे गोकुल आयौ।
कुटिल कंस नृप बैर जानिकै हरिकौं लैन पठायौ ॥
जिहिं मुख तात कहत ब्रजपतिकौं, मोहि कहत है माई।
तिहिं मुख चलन सुनत जीवन हौं बिधिसौं कहा बसाई ॥
को कर कमल मथानी गहिहै को माखन अरि खैहै।
वरषत मेघ बहुरि ब्रज ऊपर को गिरिवर कर लैहै ॥
हौं बलि बलि इन चरन - कमलकी इहैंई रहौ कन्हाई।
सूर, स्याम अवलोकि जसोदा धरनि परी मुरझाई ॥ ५६१२ ॥

भवन भयानक लागै अब तौ माई! स्याम बिना। देखहिं जाइ कहो लोचन भरि नंदनँदन अँगना ॥
काहि उठाइ गोद करि लीजै करि करि मन मगना। लैगे कूर अक्रूर ताहिकौं ब्रजके प्रानधना ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कौन सहाय करै ग्रह अपने ये हैं बिघन घना। सूरदास, मोहन दरसन-बिन सुख संपति सपना ॥
॥ ५६१३ ॥

यद्यपि पाई है रजधानी।
बारबार बृंदाबनकी हरि कहि कहि उठत कहानी ॥
जद्यपि कनक जटित मनि मंदिर रची रुचिर कमनीया।
तद्यपि कुंज-भवनकी सोभा लागत मोहिं रमनीया ॥
द्वारावति परगार पौरिवर बिद्रुम फटिक रची है।
तद्यपि गोकुलगिरि पुर-पट्टन उपमा सबै बची है ॥
छत्र मुकुट सिंहासन मनि गन मागध बंदी सूता।
तद्यपि वे रमनीय मुकुट छत ग्वाल सु थान अभूता ॥
जदपि प्रजंक अंक बहुबनिता सौरभ कुसुम बनी है।
सो सुखपत्र डसाय राधिका सोवत रुचि अपनी है ॥
ए बहु रूप भूप नाना बिधि चतुरंगनि बनि आई।
तद्यपि ग्वाल समाज गाय सब मोहिं परम सुखदाई ॥
भेरि निसान पणव गोमुख रव सबै कहत नृप सोभा।
पुनि वै बेनु बिषान बाँसुरी मो मन लागत लोभा ॥
ए बसुदेव देवकी मइया बहुत भाँति मोहिं प्यारे।
नंद - जसोदा बालपनैं सुख दीनै न्यारे न्यारे ॥
जद्यपि भूषन बहुत भाँति किय मरकत लालमनी जू।
सूर, पीत पट गुंज पुंजकी सोभा पै न बनी जू ॥ ५६१५ ॥

सखि री ! कारेनकी यह रीत।
मन दै हरत परायो सरबस, करत कपटकी प्रीत ॥
ज्यों षटपद अंबुजके अंतर बसत निसा रति मान।
रबिके उदै अनत उठि बैठत फिरत न करत पिछानि ॥
भवन भुजंग पिटारौ पारौ ज्यौं जननी निज तात।
कुल करतूत तजत नहि कबहूँ सहज सुबस भजि जात ॥
कोयल काग कुरंग स्याम घन हमहिं न देखे भाव।
सूरदास, अनुहार स्यामकी छिन छिन सुरत कराव ॥ ५६१६ ॥

ऊधौ ! हम जानी चतुराई।
बार वार तुम कहत अध्यातम पावत कौन बड़ाई ॥
जो तुम कहत अगाध अगोचर हरि - रस तज्यौ न जाई।
बाहर भीतर स्याम बरनतैं सुनियत दूर भलाई ॥
क्यों तुम कहत अनीति आपतें क्यों तुम कहत कहाई।
सूर, स्यामके बिरह जरी हम, बिन पावक दौं लाई ॥ ५६१७ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इहँ तुम कौनैसौं रति जोरी ।
काके भये कौनकै ह्वैहौ बँधे कौनकी डोरी ॥
त्रेता जुग इक पतनीको व्रत सोऊ बिलपति छोरी ।
सिंधु - सुताकौं ब्याहन आये नैंकु न वर तब हो री ॥
बालक ही ते हती पूतना सुत - मरजादा फोरी ।
अधिकहि प्रीति जसोदासौं तुम छिनक माँझ गहि तोरी ॥
आरज - पथहि छँड़ाइ गोपिका स्वारथ लगि सब घोरी ।
अपनी चोप निबाहि सूर - प्रभु, फिरि चितये न बहोरी ॥ ५६१८ ॥

ऊधौ ! अपनौ जतन करौ जू ।
हितकी कहत अहितकी लागत कत बेकाज परौ जू ॥
जाय करौ उपचार आपको हौं जु देत सिख जीकी ।
कछुवै कहत कछू कहि आवत धुनि नहिं देखत नीकी ॥
साध असाध भये तुम अबही करि औषध उपचारी ।
सूर, सुबैद स्यामसुंदर वर औषध कुबिजा नारी ॥ ५६१९ ॥

घरके बाढ़े रावरे ।
नाहिंन मीत वियोग परे बस अनबूझे अलि बावरे ॥
अधर सुधारस मुरली पोषे जोग जहर कत प्याव रे ।
अबला कहा जोगकी जानैं ज्यों जल बिनुकी नाव रे ॥
बरु मरि जाय चरै नहिं तिनुका केहरि इहै सुभाव रे ।
जानत, सूरदास यह महिमा हरि तजि अनत न आव रे ॥ ५६२० ॥

कहु रे मधुकर ! तन मन कारे ।
कहूँ न सेत साधुता तनकी परखे अंग तुम्हारे ॥
कीने कपट कुंभ बिष - पूरन पै मुख प्रगट उघारे ।
बाहिर बैन भलौ सूरज - प्रभु, रूप बचन कटु खारे ॥ ५६२१ ॥

अब तुम कहत कौनकी बातैं ।
सुनि ऊधौ ! हम समुझत नाहीं फिरि बूझति हैं तातैं ॥
को नृप कंस, कौन है मार्‍यौ को बसुद्यौ-सुत आही ।
इहैं जसुमति - सुत परम मनोहर जीजति हैं मुख चाही ॥
नित प्रति जात धेनु बन चारन गोप-सिसुनके संगा ।
वासरके बीते रजनी मुख करत नैन गति पंगा ॥
को अबिनासी अगम अगोचर को बिधि बेद अपारा ।
सूर, वृथा कत बाद करत हौ, इहिं ब्रज नंदकुमारा ॥ ५६२३ ॥

कहिये तासौं, होय बिबेकी ।
तुम तौ अलि ! उनहीके संगी अपनी गौंके टेकी ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऐसी को ठाली है बैसी तोसौं मूँड पचावै।
झूठी बात तुसी-सी बिनु-कन फटकत हाथ न आवै।।
अजहूँ लौं हठ होड़ न छाँड़त यह मूरख मन भोरौ।
मन, क्रम, बचन, सूर, अभिअन्तर नंद-नँदन हित मोरौ।। ५६२४ ।।

ऊधौ! कहि नहिं जानत बात।
फूंकि फूंकि हिय रीसि लगावत उठि न इहाँतैं जात।।
जिहिं उर बसत जसोदा-नन्दन निरगुन कहाँ समात।
कत झटकत डारत कुसुमनसौं तुम किन पात चबात।।
जदपि सकल बल्ली-बन बिहरत बँधत आनि जलजात।
सूरदास, ब्रज मिलवन आये सादीकी कुसलात।। ५६२५ ।।

ऊधौ! यह मत ह्याँ लै आये।
इक हम जरी बरी पहिलैकी खोजि खिझावन धाये।।
मानौ सिखै पढ़ाये उनके वे हैं सखा तुम्हारे।
प्रान एक इक सार मित्रके सज्जन कहत पुकारे।।
सुन रे मूढ़! छलत अबलनिकौं हम दूसर नहिं जानैं।
निपट गँवार होइ जो मूरख तेरी बातैं मानैं।।
जौ कछु कहौ सुनैं हम हितसौं पै नहिं हिये समाई।
हम रुचि करी सूरके प्रभुसौं दूजौ मन न सुहाई।। ५६२६ ।।

हमसौं अब कैसी पहिचान।
पहिली प्रीत न देखौ हरिकी बैठि रही जिय जानि।।
नन्दगाँव बसि गोकुल कबहूँ हम पतिया न पठाये।
अब तौ निठुर भये जादौपति जाय द्वारका छाये।।
ऊधौ-हाथ सँदेसो सुनि सखि! मैं पठये कहि केते।
जोपै स्याम हमारे होते कबहूँ तौ सुधि लेते।।
कहँ वह पहिली प्रीत सूर-प्रभु कहँ अबकी निठुराई।
कहा करौं सखि! नँद-नंदन जिय ऐसीयै बनि आई।। ५६२७ ।।

मधुकर! कहैं कौनके पास।
जे तुम नारायन करि राखे ते दासीके दास।।
तुमसौं कहा कहैं हम ऊधौ! हमरै जिय बहु आस।
प्रीति जतनकी जानत नाहिन हमैं ब्रजहि बिस्वास।।
रैन दिना हम इहाँ रटत ही ज्यों चात्रिग जल प्यास।
सूरदास-प्रभुपै यह माँगैं चरनन सुखी निवास।। ५६२८ ।।

मधुकर! ब्रज किय चाहत कासी?
अपुन देसकी रीति न छाँड़त जु हौ जहांके बासी।।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऊधौ जोग सुनावन आये नीके सुनौ निरासी।
इन बातन मन कैसे मानैं हम चरननकी प्यासी॥
रास - बिलास कियौ हम चाहत वै तो लोग उदासी।
सूरदास - प्रभुकी बातैं सुनि मोहिं आवत है हाँसी॥ ५६२६॥

जौ पै अलि ! मथुरा लै जाहु।
आरति हरहु स्त्रवन नैनंनकी मेटहु उरकौ दाहु॥
बुधि बल बचन जहाज बाँह गहि बिरह सिंधु अवगाहु।
पार लगावहु मधु-रिपुकै तट फंदत ज्यों मनु राहु॥
देखहिं जाइ रूप कुवजाको सहि न सकतिं यह दाहु।
जीवन जनम सुफल करि लेखहिं, सूरज, सबन उछाह॥ ५६३१॥

ऊधौ ! तौ ये प्रान रहैं।
आवत जात बहुर फिरि समुझत जीवत अवधि गहैं॥
तिनसौं क्यौं कीजैं ये बातैं जे कुल लाज बहैं।
दाम उलूखल बाँधे तब हरि बदन सु देखि चहैं॥
चुभि जु रही नवनीत चोर - छबि भुलत न ज्ञान गहैं।
सूर, स्याम सुख - सागर परिहरि निघनै नीर बहैं॥ ५६३२॥

जब वह सुरति होति है बात।
सुनहु मधुप ! या वेदनकी गति छाँड़े बनै न खात॥
एक ही भाँति सदा या ब्रजमैं वीतत है दिन - राति॥
सूरदास - प्रभुकौ मिलि बिछुरन सुमिरि, सूर, पछितात॥ ५६३३॥

हरिकी प्रीति लरकवनि खेलहि।
घरिक माँझ रस बिरस घरिक ज्यों ग्वालिकि चिड़ियाडेलहि॥
जमुना तीर बैठि सिकतामैं रचि रचि कोट बनावत।
जब परिपूरन होत चलत, उठि फिर सिकताहि मिलावत॥
इक राजा इक प्रजा दास है छिन छिन पाँइ परै जू॥
सुध आये चेटक - सौ उतरै छिन ही माँझ लरै जू॥
ऐस हि कियौ स्याम घन हमसौं सुनि मधुकर मन भाये।
बातें करत सूरके प्रभुकी नैन नीर भरि आये॥ ५६३५॥

ललित त्रिभंगी फेरि न दीठी।
देख्यौ चाहत मूरति मीठी। काहे करते झूठ बसीठी॥
तुव बातैं लागत हैं सीठी। सुफलक सुत सम अबुधरु हीठी।
गए द्वारिका सुरतहु मीटी। सूरदास - प्रभु ऐसे ईठी॥ ५६३६॥

ऊधौ ! हरि हम काह बिसारी ?
प्रेम - तरँग बूड़त ब्रज - बासी तरत स्यामसौं हारी॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रिपु माधौ, पिक बचन सुधाकर मरुत मंद गति भारी।
सह नहिं सकति बियोग त्रास जिय अगिनि सलाकन जारी॥
सारँग अनिलऽरु ब्याल हरावलि कपि-सैना रिपु सारी।
सुमिरि सुमिरि तुम्हरे गुन सुंदर दिन दिन भई दुखारी॥
जो जल थाकै, मीन करै का, त्यौं हरि मेलि उजारी।
विजय-धाम खल-दमन सूर-प्रभु कहियहु बिपति हमारी॥ ५६३७॥

कबहूँ सुमरत हैं वे बतियाँ।
बेनु बजाय रंग रस कारन बन बोली अधरतियाँ॥
केली करत फिरत बन इक सँग घन बरषत बहु भँतियाँ।
अपुन पीत पट मोहिं उढ़ावत हँसि लागत मम छतियाँ॥
निसि दिन यहई ध्यान जपत हौं अस ब्यापै तन रतियाँ।
सूर, स्याम हम चित दै बिसरीं को बाँचै इहि पतियाँ॥

राग मारू

भैया केवट! लै उतराई। महाराज रघुपति इत ठाढ़े, तैं कित नाव दुराई॥
अबहिं सिलातैं भई देवगति; जब पद-रेनु छुवाई। हौं कुटुंब कैसैं प्रतिपारौं, जौ वैसी ह्वै जाई॥
जाके चरन-रेनुकी महिमा सुनियत अधिक बड़ाई। सूरदास-प्रभु अगनित महिमा, बेद पुरानन गाई॥
॥ ५६३६॥

राग सारंग

इन मुरली कछु भलो न कीनो।
अधर सुधारस-वर जु हमारौ आपु पियौ अरु औरन दीनो॥
बीरुध, द्रुम, तृन सोह सलिल-तट पूजत गौरि भयौ तनु छीनो।
सो मधु, सूर, कुटिल चित मुरली सबहिनके देखत हरि लीनो॥ ५६४०॥

राग गुंडमलार

खेलत तहँ रंग रह्यौ एक ओर ब्रजसुंदरि सखा लिए सबै संग एक ओर मौंहन।
बरन बरन ग्वाल बने महर नंदगोप जने इक गावत नृत्यत इक एक रहत गौंहन॥
बजवत मिरदंग ताल अरस-परस करि बिहार सोभा को बरनि पार इक इक दै सौंहन।
कनक लकुट करन लिए धाए सब हरषि हिए ब्रज ललना सूरज-प्रभु, मन मन मिलि भौंहन॥
॥ ५६४१॥

राग मलार

सखि री! स्याम कहा हितु जानैं। कोऊ प्रीति करै कैसेहूँ, वे अपनौ गुन ठानैं॥
देखौ या जलधरकी करनी बरषत पोषै आनै। सूरदास, सरबस जो दीजै कारौ कृतहिं न मानै॥
॥ ५६४२॥

राग मलार

नैनन नैननकी सुधि लीजै।
गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब दीन मलीन दिनहिं दिन छीजै॥
नैन सजल जलधार बढ़े अति, बूड़त ब्रज किन कर गहि लीजै।
इतनी बिनती सुनहु हमारी बार एक पतिया लिखि दीजै॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चरन - कमल दरसन तव नौका करुनासिंधु जगत जस लीजै।
सूरदास-प्रभु आस मिलनकी, एक बार आवन ब्रज कीजै ॥ ५६४३ ॥

मिटायौ जोग पाति-ब्यौहारु। राग धनाश्री
मधुबन बसि मधुरिपु सुनु मधुकर ! छांड़े ब्रज आभारु ॥
धरनी - धर कर गिरिवर धरिकै मुरली - धर सुखसारु।
अब लिखि जोग सँदेसौ पठवत ब्यापक अगम अपारु ॥
हाँसी अरु दुख सुनहु सखी सो, स्रवनन दसा बिचारु।
सूर, प्रान तन तजन न मानैं, सुमिरि अवधि आधारु ॥ ५६४४ ॥

रटत मन अनुदिन प्रीति दुरी।
सुनि अलि ! कमलनैनकी बातैं, तोरि न प्रीति जुरी ॥
नैनन भली करी भृंगी - ज्यौं रूपहि ध्यान जुरी।
तेहूँ बहुत कठित कंपित ज्यों जोग - सँदेस भुरी ॥
जोरि प्रीति पिय - संग रमी सो अब क्यौं जात मुरी।
सूर, प्रेम - फल पक्यौ न, काट्यौ तीखी धार छुरी ॥ ५६४५ ॥

दोऊ एकै मते भए। ऊधौ अरु अक्रूर कुसलमति, ब्रज आखेट जए ॥
बचन फाँसि बिधि वै मृग माधौ रथपै नाथ लए। इनहू इहाँ मृगी गोपी सब सायक ज्ञान हए ॥
जोग अगिनिकी दाव देखियत चहुँ दिसि लाय दए। कैसैं जीवहिं सूर-प्रभू ब्रिन चातक मेघ गए ॥
॥ ५६४६ ॥

ऊधौ ! जनि मधुबन - तन देखौ।
कछुक दिवस बृन्दाबन बसिकै जनम सुफल करि लेखौ ॥
कहा जाय लइहौ वहि मथुरा जहाँ राजकी बातैं।
बाल किसोर गुवार निरखि मुख घर घर माखन खातैं ॥
तुम निरगुन नित कहत निरंतर निगम नेति इहि नीती।
प्रगट रूप मदमत्त नैनकौ छायौ दरस - प्रतीती ॥
सिव, बिरंचि; सनकादिक मुनिगन संतत जाकौं ध्यावैं।
सूरदास - प्रभु गोप - सुतन - सँग गोधन - बृन्द चरावैं ॥ ५६४७ ॥

इहँ कछु नहिंन नेह भयौइ।
मधुप ! तुमसौं कहौं इहि बिधि ब्रजहि बृच्छ उयौइ ॥
अवनि - उर सुचि धर्म - जुत बन रुचिर अंकुर ठौइ।
प्रेम - जनित सु खाद कारन लागि सो उगयौइ ॥
बिना बनमाली बदन मनु आलबाल बयौइ।
इहै स्रम तजि स्यामसुंदर बिमल बृच्छ बढ़यौइ ॥
मुरलि मुख छबि पत्र साखा दृग दुरेफ चढ़यौइ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कमल तजि मन चहत नाहीं आककै आमोद ।
सूर, जोग न बचन परसत बिनु गुपाल बिनोद ॥ ५६४८ ॥

मधुकर ! कहि मधुबनकी रीत ।
राजा ह्वै जदुनाथ तिहारैं कहा चलाई नीत ॥
निसिलौं करत दाह दिनकर ज्यौं हुतौ सदा ससि सीत ।
पुरवा पवन कह्यौ नहिं मानत गयौ सहज बपु जीत ॥
कंस काज कुबिजाकैं आए भई निरंतर प्रीत ।
सूर, बिरह ब्रज भलौ न लागत जहँ ब्याहतकौ गीत ॥ ५६४९ ॥

इनमैं अलि ! कोऊ हरि नाहीं ।
कहा जानि उपमा कबि दइहैं, ससि-सम कहत तेउ सठ आहीं ॥
इंदु उदै नित प्रति प्रीतम हित बिबिध रूप धरि धरि नभ-माहीं ।
आपुन चलि आवत चकोर प्रति ससिपै कहु चकोर कस जाहीं ॥
जलधर कहत जगत सब आयौ जल बिनु जलज परे अकुलाहीं ।
ग्रीषम बिरह तपै अवनीपै घन बनि ब्रजकौ आन सिराहीं ॥
कहियत कल्प-तमाल स्यामघन सो सम करत सबन सिर छाहीं ।
जिन लायौ तिन दलहु न पायौ, सूर, सु और सुधाफल खाहीं ॥ ५६५० ॥

ऐसी बातैं कितकौं राखी ।
सुनि सुनि बचन तुम्हारे ऊधौ ! संतहु करहिं न साखी ॥
पंचम बेद उधौ लै आए ताकि रिचा इक भाखी ।
अबलनि जोग भसम तन लेपन कहत मूँदि लौ आँखी ॥
ऐसौ सतगुरु कब पावहिंगी वा रसकी अभिलाषी ।
गिरिधरलाल छबीली मूरति दरसनकी है काँखी ॥
औरै कहत, सुनत औरै कछु, बिरह सिंधु परिभाषी ।
मन क्रम बचन सबै करि सूरज परी स्यामकी पांखी ॥ ५६५१ ॥

ऊधोजू ! यह कौन बदी है ।
अंधकूप - जल - आस तृषा-रत छाँड़त निकट नदी है ॥
ज्यौं हाटक-गिरि तजै, हाटकौं हेम-काज पुनि धावै ।
हाटक हाथ चढ़ै न कैसहूँ आपुन आन गँवावै ॥
तुम निरगुनके गुन बहु भाषत ग्यानहीन हम देखे ।
निरगुनसौं गुनि मिलत निरगुनी हम तौ सगुन सुलेखे ॥
ऐसौ मंत्र तुम्हारौ हरि हरि जो मतिहीन सु मानै ।
सूर, प्रकासत जो बनखंडहिं गृह सम क्यों पहचानै ॥ ५६५२ ॥

निहोरौ कौन काहि है देत । अपने सुखकौं ब्रजहिं बसे अरु मथुरा कुबजा हेत ॥
अपनैं अपनैं काज मल्ल मथि सकल सखान समेत । मामहिं मारत सरम न आई नानहिं टीकौ देत ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मंत्री तुमसे सुफलकसुतसे जोते ऊसर खेत। अब तन करत छार काकौ तुम जानत हौ कछु हेत ॥
ऊधौ ! जियत निहारैं मुरली, मुकुट, बाँसुरी, बेंत। कहियो जाइ प्रीति हम देखी सूर किरनसी सेत॥
॥ ५६५३ ॥

मधुकर प्रीति ऐसी होय। सुनत बात गुपालकी चख पूर आवत तोय॥
नाहिंनै छानौ रहत यह छिनकु राखत गोय। लगे जोग समाधिके कहि कौन दीनों रोय॥
कहा करिहौ जाइ मथुरा अरु रहौ दिन दोय। करनकौं जो काज आयौ प्रगट मिलवहु सोय॥
नंदनंदन - रूप - जलसौं मलिन मुख किन धोय। सूर, सर्ब बिसारि ऊधौ ! रहौ आस समोय॥
॥ ५६५४ ॥

मोपै क्यों खीझत ब्रजनारी।
यामैं भाग नाहिँ काहूकौ हरिकी कृपा सु न्यारी॥
कुबिजा लिख्यौ सँदेस सबनिकौं अरु कीन्हीं मनुहारी।
हौं ही दासी कंस रायकी देखौ हृदै बिचारी॥
फलन - माँझ जैसे कटु तुँबड़ी रहै घूरपै डारी।
पै सो हाथ परी जोगीके बाजत राग दुलारी॥
तन टेढ़ौ सब कोई जानत परसि भई अधिकारी।
सूरदास - स्वामी करुनामय अपने हाथ सँवारी॥ ५६५५ ॥

अब वह भली कंसकी दासी।
एक बैस, इक गाँवँ, एक रस, कौन काज ब्रजबासी॥
आक फूल जब लौं नहिँ पइयै तब लौं आन सुबासी।
यनि हाटक आभरन भले हैं जब लगि राँग न काँसी॥
भले देस सुरसरि - प्रयागतें उत्तम मगह - निवासी।
दिनकर हू दबि जाय न्याय जब पटबीजन-परकासी॥
बुर-भलेकौ डर सब छूट्यौ नाँवँ पऱ्यौ अबिनासी।
हमरी ओरहु दृष्टि दीजिए, सूर, स्याम सुखरासी॥ ५६५५ ॥

तौ गोपाल तुम्हैं तजिगौ री।
बिछुरत तब न चरन गहि राखे यहै सोच जिय भौ री॥
देखि सरूप नंदनंदनकौं घसि चंदन लै दौरी।
जान्यौ भगत - हेत कुबिजा - जिय मान्यौ कहौ भलौ री॥
सूरदास, उनकी गति अबिगत जानै कौन बियौ री।
ऊधौ ! कृत अपनौ हम पायौ लिख्यौ करम गतिकौं री॥ ५६५७ ॥

अचरज करि है कौन सयानी।
क्यौं न बने कुबिजा अरु स्यामहिं कपटी रूप निदानी॥
वह कुबरी तन - मनकी टेढ़ी, वह त्रिभंग कबहूँके।
दुहुँन बऱ्यौ पतिब्रत त्रेताकौ, देखे धरम दुहूँके॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वाको कुल सब कोऊ जानैं वे अनकुल अबिचारे।
दोउ मिले जैसेको तैसे जाति - पाँतितैं न्यारे ॥
ते तन स्याम, स्याम मन कुबिजा, मिले एक परिपाटी।
सूरदास, चंदन चढ़वत ही, कुल - करनी सब काटी ॥ ५९५८ ॥

नाहिन रह्यौ मनमैं ठौर।
नंदनंदन अछत कैसैं आनिए उर और ॥
द्यौस जागत चलत चितवत, सुपन सोवत राति।
हृदैतैं वह मदन - मूरति छिन न इत उत जाति ॥
कथा नैंकु सुनाइ ऊधौ ! लोक - लोभ दिखाय।
कह करौं तन प्रेम पूरन घट न सिंधु समाय ॥
स्याम गात, सरोज आनन, ललित गति, मृदु हास।
सूर, ऐसे रूप - कारन मरत लोचन प्यास ॥ ५९५९ ॥

ऊधौ! तुम्हरौ जोग अटपटो सुनै सु ऐसी को है? हम अहीर, अबला, ब्रजवासिनि, हमैं जोग क्यों सोहै ॥
बूची खुभी, आंधरी काजर, नकटी पहरै बेसर। मुड़ली पटिया पार्‍यौ चाहै कोढ़िन लावै केसर ॥
बहिरी पियसौं बात कहत तब ऊतर कासौं पावै। यहै रीति तीनहु लोकनकी जो अब जोग सिखावै ॥
जहँ चंदन तहँ भसम चढ़ावैं सुनि सुनि लाज मरीजै। नासागति तुम ध्यान बतावत बेसर कहाँ धरीजै ॥
मुद्रा न्यास अंग अँग भूषन पतिब्रततैं न टरैंगी। सूरदास, सुनि यह ब्रत हमरे, हरि मिलि नहिं बिछुरैंगी ॥
॥ ५९६० ॥

कहि ऊधौ ! हरि छाँड़िकै को जोगहि लइहै। पलटे मनका काँचके मरकतमनि दइहै ॥
कामधेनु तजि कौन है जो अजा दुहावै। कौन सगुनकौं छाँड़िकै निरगुन मन लावै ॥
निज पति छाँड़ि औरकी जो कथा चलावै। ता अबलाकौं जग सब बिभिचार लगावै ॥
जिभ्या स्वाद मयारि को बासन सिर नावै। सूर, बिना रस, कंठमैं घेरौ लटकावै ॥
॥ ५९६२ ॥

भलि लै आए ऊधौ ! पाति।
सुनहु न आय सखी ! इनके मुख गहे करद कर घाति ॥
लादे जोग साहु जदुपतिकौं पहुँच्यौ ब्रज अधराति।
दुख अरु हांसी ग्यान मधुपकौ करत सबै हैं बाति ॥
बेग न आनि संचरत गोकुल जुरै जोगकी पाँति।
जाकौ आहि ताहि लै आवौ बहुत कहा पछतात।
इतनी पचनि, सूर, तुमको है मरे जियावत जात ॥ ५९६३ ॥

राखौ यह सब जोग अटपटी ऊधौ ! पायँ परैं।
कहँ रस - रीति, कहाँ तन - साधन, सुनि सुनि लाज मरैं ॥
चंदन छाँड़ि बिभूति बतावत यह दुख कस बिसरैं।
सगुन सरूप धर्‍यौ उर अंतर निरगुन कहाँ धरैं ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निसिदिन रसना रटत स्यामघन मौनहि क्यौं पकरैं।
नासा गहि तुम ध्यान बताबत बेसरि कहाँ धरैं॥
मुद्रा न्यास अंग-अँग भूषन पतिव्रततैं न टरैं।
सूरदास, यहई व्रत मेरे हरि मिलि नहिं बिछरैं॥ ५६६४॥

कहौ कहा हमतैं बिगरी।
कौने नीति जोग लिखि पठयौ हम तौ सिवकी सेवक री॥
पाखँड-प्रीति करी नँदनंदन अवधि अधार हुती सु टरी।
मुकुति-जटित ऊधौ लै आए व्रजबासिनि पहिरौ सिगरी॥
जाति सुभाव मिटै नहिं सजनी अन्त तऊ कोरी ठिकरी।
सूरदास-प्रभु बेगि मिलावौ नतरु प्रान जइहैं निकरी॥ ५६६५॥

अब घटहीमैं स्याम बताए।
जौ समदृष्टि, आदि, निरगुन पद तौ कत चित्त चुराए॥
लये सँभारि सबै सुख अपनैं रासरंग जे पाए।
मोहन बदन बिलोकि मानि रुचि हँसि हरि कंठ लगाए॥
हम मतिहीन अजान अलपमति तुम अनुभौ-पद पाए।
सूरदास, इहि कहा वनिज-गुन, मूलहु आनि गँवाए॥ ५६६६॥

दिन दस रहि चलिए हरिदास।
बहुरि गुपाल-कथा हम सुनिहैं बैठि कान्हके पास।
एक द्यौसकौं आए ऊधौ! कृपा करी षट मास॥
पूरब प्रीति बिचारत हारी लै लै ऊँचे स्वास।
सूरदास-प्रभु कबहि मिलहिंगे मिटै नैनकी प्यास॥ ५६६७॥

ऊधौ! नँदनंदनसौं इतनी कहियौ।
जद्यपि व्रज अनाथ करि डार्‌यौ तदपि कछू चित कीने रहियौ॥
तिनुका तोरि करी हरि हमसौं एक बासकौं लाज निबहियौ।
गुन औगुनपै दृष्टि न कीजौ दासिनकी हरि! इतनी सहियौ॥
तुम बिन प्रान-त्याग हम करिहैं यह अवलंब मुए नहिं लहियौ।
सूरदास-प्रभु लिखि दै पठयौ कहाँ जोग कहँ पायँन रहियौ॥ ५६६८॥

सबै करत मनुहार जु ऊधौ! कहियो गोकुल आवैं।
दिन दस रहे सु भलि कीन्हीं पै अब जनि गहरु लगावैं॥
नाहिंन कछुक सुहात, बिना तुम, कानन बन नहिं भावैं।
धेनु बिकल सो चरत नाहिं तृन, बच्छ न पीवन धावैं॥
देखत आपनि आँखि तुमहि सब और कहा समुभावैं।
सूरदास-प्रभु कठिन हीय तन, कत व्रजनाथ कहावैं॥ ५६६९॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अहो पथिक ! तुम कहियो हरिसौं मन अटक्यौ नैननके लेखैं ।
याहीतैं निरबारत आवत निरखत बदन लागि मनु मेखैं ॥
वे सब अब इनमैं भरि माँगत बिधि जु लिखी दरसन - सुख रेखैं ।
कै तू मोहिं बताय 'बदत इमि लगी पलक जड़ जाके पेखैं ॥
राखी निसि दिन जोर - जतन करि अब न बनत करि जुगत बिसेखैं ।
सूरदास - प्रभु या उर - मनतैं नहिं चित छुटत बदन बिनु देखैं ॥ ५६७० ॥

ऊधौ ! यह पतिया लै दीजौ कमल - नैनके हाथ ।
अरु कहियौ जु दसा दासिनकी जोरि नवावैं माथ ॥
गोपी गोप गाय गो - सुत सब अति कृस तन बिनु साथ ।
छीन मलीन दीन अति डोलत बिह्वल बिकल बिहाथ ॥
अरु यह बिरह - बिथा गोकुलकी कागद लिखि यह गाथ ।
सूरदास - प्रभु ! कौन दोषतैं ब्रज बिसर्यौ ब्रजनाथ ॥ ५६७२ ॥

ऊधौ ! जब तुम ब्रजहिं गए जु ।
तब धौं कहौ गोप - गोपिन कस आगैं आनि लए जु ॥
उतर्यौ जाइ नंद - मंदिरमैं किमि सब सोध कर्यौ जु ।
मेरी सौं मोसों साँचौ कहि मइया कहा कह्यौ जु ॥
बार - बार कुसलात पूछि मोहि लै लै तुम्हरौ नाम ।
छिन छिन रटत त्रिषित चातकलौं कहाँ स्याम बलराम ॥
सुंदर परम बिचित्र मनोहर यह मुरली दै घालि ।
लै उठाय उर लाय सूर - प्रभु प्रीति - अनी उर सालि ॥ ५६७३ ॥

बूझत बातन यौं ब्यौरावतिं ।
सुनहु स्याम ! वे सखी सयानी पावस रितु राधहि न सुनावतिं ॥
घन गरजत मनु कहतिं कुसलमति गूंजत सिंह गुहा समुझावतिं ।
नहिं दामिनि, द्रुम दवा सैल चढ़ि फिरि बयार उलटी झर आवति ॥
नाहिंन मोर बदत, पिक, दादुर, ग्वाल - मंडली खगन खिझावति ।
सूरदास - प्रभु ! तुम दरसन - बिनु सो बिरहिन इतनौ दुख पावति ॥ ५६७४ ॥

माधौ ! सुनौ ब्रजकौ प्रेम । बूझि मैं षट मास देख्यौ गोपिकनिकौं नेम ॥
हृदैतैं नहिं टरत उनके स्याम राम सुहेत । अंस वारि - प्रबाह मानो अरघ नैनन देत ॥
चँवर अंचल कुच कलसपै पदुम पानि चढ़ाय । प्रगट लीला देखि उनकी रीझि उठतीं गाय ॥
देह गेह सनेह अरपित कमल लोचन ध्यान । सूर, उनकौ बदन देखे लगत फीकौ ज्ञान ॥
॥ ५६७५ ॥

यह मन उहँईकौ जु भयौ जू । पर्यौ जु उनके प्रेम - पुंजमैं तुमहूँ बिसरि गयौ जू ॥
तुमसौं सपथ करि गए माधौ बेगि कह्यौ हो आवन । उन देखे सोई ह्वै लाग्यौ उनही मिलिकै गावन ॥
समुझि परी षटमास बितीते कहाँ हुतौ मैं आयौ । सूर, अनकही दै गोपिनसौं स्रवन मूँदि उठि धायौ ॥
॥ ५६७६ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दिखियत ब्रज जु अति बलहीन। रटति इकटक चित्त चातक स्याम घन तन लीन॥
तन न पलटत बसन भूषन दृग न दीपक-जात। मलिन बक्त्र उदास अति जनु तरनि-बिनु जलजात॥
दिवस बितवति सबै सजनी गुनत गुन बलबीर। रैनि उडुपति निरखि तलफत मीन ज्यौं जल-तीर॥
॥ ५६७७ ॥

यातैं कर द्रुम टेके ठाढ़ी।
बिछुरे मदन गुपाल रसिक बर बिरह बिथा अति बाढ़ी॥
लोचन सजल बचन नहिं आवै स्वास लेत अति गाढ़ी।
नँदके लाल करी कछु ऐसी जलतैं मीन जु काढ़ी॥
तब वे लाड़ लड़ाए मोहन बेनि कुसुम गुहि गाढ़ी।
सूरदास - प्रभुके दरसन - बिनु अब न लहत सुख आढ़ी॥ ५६७६॥

सखि री! जनियत यह उनमान।
दिखियत नाहिं जतन जीबेकौ इतहि बिरह, उत ग्यान॥
इतही चंद - समीरन मिलि मिलि भूँजत अनल समान।
उत निरगुन अवलोकनकौं ये कठिन बिरोधी प्रान॥
इत भूषन भय करत अंगके, जागत निसा बिहान।
उतकौ सुन्न समाधि, सूर, कछु मूढ़ जोगकौ ग्यान॥ ५६८०॥

दुहुँ दिसिकौ अति बिरह बिरहिनी कैसेकै जु सहै। सुनहु सखी! यह बात स्यामसौं को समुझाय कहै॥
राधा निसि दिन माधौ माधौ मुखतैं रटति रहै। जब माधौ ह्वै जात सकल अँग राधा बिरह दहै॥
ऊधौ! अगिनि दहे दारुन ज्यों सीतलताहि चहै। सूरदास, इहि भाँति बियोगिनि कबहूँ सचु न लहै॥
॥ ५६८२ ॥

परदेसीकौ कह पतियारे। पीछे हू पछिताइ मिलहि जे प्रीति बढ़ाइ सिधारे॥
ज्यों मृग स्रवन नादके बीधे लागे बान बिसारे। प्रीति भरोस प्रान बस कीने हरि! यह रहे बिचारे॥
बलि अरु बालि, सुपनखा बपुरी हरिसौं कहा दुराए। सूरदास-प्रभु जानि भले हैं, ठान्यौ भरौं पराए॥
॥ ५६८३ ॥

हरि - बिनु वै सुख बहुरि कहाँइ?
जदपि नैन निरखत वह मूरति फिरि मन जात वहाँइ॥
मुख मुरली सिर मोर - पंख बनि उर घुंघुंचिनकौ हारु।
आगैं धेनु रेनु तन मंडित चितवनि तिरछी चारु॥
रात द्यौस सँग संग अनत हित हँसि मिलि खेलत खात।
सूर, देखि वा प्रभुता तबकी कही न आवै बात॥ ५६८४॥

माई! सबन यहै ही भावत।
अब यहि देस नंदनंदनकौं समयौ कोउ न जनावत॥
धरत न नव तन पत्र फूल तरु पिक बसंत नहिं गावत।
मुदित न सर सरोज नव अलि गन सुरभि न पवन उड़ावत॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पावस बिबिध बरन बादर घन उमँगि न अंबर छावत।
दादुर, मोर, कोक नहिं बोलत दामिनि रूप दुरावत॥
इत ये प्रगट निरंतर निसिदिन बल करि बिरह बढ़ावत।
सूर, यहू ब्रजनाथ न जानत क्यौं सर्बग्य कहावत॥ ५६८५॥

देखि रि! माधौकी निठुराई। आई उघरि कनक कलई-सी दै जो गए दगाई॥
हम जानी हरि हितू हमारे उन चित और बनाई। छाँड़ी सुरति सबै ब्रज-कुलकी निठुर भए री माई॥
प्रेम-निबाह कहा वे जानैं साँचेई अहिराई। सूरदास, बिरहिनी बिकल मति कर मींजत पछिताई॥
॥ ५६८६॥

उघर्‌यौ परदेसीकौ हेत।
दिना चारकी चटक कुसुमकी बहुरि होत तन सेत॥
झूठैं ही अपनी दिसि दिन दस रति करि सरबसु देत॥
चाँड़ सरे उड़ि जात मधुप लौं बहुरौ नाँवँ न लेत॥
नीरस जानि तजी हम माधव, कुबिजहिँ बाँध्यौ हेत।
होनो होइ सु होहु, सूर, अब हौं नहिं छाँड़ौं खेत॥ ५६८७॥

लागे री! ऐसे दिन जान।
सुमिरत प्रीति लालकी लागत उरमैं कुलिस समान॥
लोचन रहत बदन बिन दैखैं बचन सुने बिन कान।
हृदै रहत हरि पानि परस बिन बिंधि जनु मनिसंज-वान॥
अब हमरे नाहिँन री सजनी! वै पहले तन प्रान।
सब समेटि लै गयौ नंदसुत बिरह सिरजि ब्रज आन॥
बिधि बछ हरे बहुरिहू कीन्हें वे सिसु धेनु सखान।
सूरदास-प्रभु बहुरि करौ इहिं वाहीके उनमान॥ ५६८८॥

केते दिन हरि देखे बीते। एक न फुरत स्यामसुंदर-बिनु बिरह सबै सुख जीते॥
मदनगुपाल बैठि कंचन रथ चितै किए तन रीते। सुफलकसुत लै गयौ दगा दै प्राननहूके प्रीते॥
बहुरि कृपालु घोष कब आवैं हरि-बिनु भईं सभीते। सूरदास-प्रभु आउ कृपा करि मिलौ सुदामा मीतैं॥
॥ ५६८९॥

बहुरि न इहि डर गोकुल आए। सुमिरत सखी हमारी करनी समुझि द्वारिका छाए॥
अरध रातिकौ उठि बालक सब मोहिं जगइहैं आएँ। बिनु पदत्रान पठइहैं देखौ मोहिं चरावन गाएँ॥
सूने भवन आनि रोकहिंगी झूठे बचन लगाए। यह दुख त्रास समुझि, सूरज, मन बहुरि सहै को
जाए॥ ५६९०॥

जौ पै माधौसौंऽब कहै। तौ यह कथा सुनत नँदनंदन कत मधुपुरी रहै॥
इहई सबद सुनाय तबै हरि पुनि कर चरन गहै। यह प्रतीति मेरे चित अंतर सुनत न प्रेम रहै॥
इहि संदेस सूरके प्रभुकौ को कहि जसहि लहै। अबकी बेर दयाल दरस दै यह दुख आनि सहै॥
॥ ५६९१॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सखि री ! स्याम इते दिन लाए । आवन कहि जु गए नँदनंदन सो अजहूँ नहिं आए ॥
चलत चितै मुसकाय अधरतैं तिन मृदु वचन सुनाए । तेई ठग-मोदक भे जियके छूछे करि छिटकाए ॥
मनमोहन जदुनाथ स्यामके गुन कोउ जानि न पाए । सूरजदास, स्याम घन सुंदर बहुरि न चरन धराए
॥ ५९९२ ॥

मैं तो अब ऐसहि उर आन्यौ । परम निठुर नँदनंदनके पथ बहुरि न पीजौ पान्यौ ॥
जो ये हरिकी प्रीति निरंतर पावस आगम जान्यौ । जे जड तरु-वल्ली लपटानी प्रेम उमँगि सुख रान्यौ॥
अंबर चातक पिउ पिउ बोलत सुमिरत समै कुठान्यौ।सूरदास-प्रभु! मीन प्रान तजि जल यह प्रेम न मान्यौ
॥ ५९९३ ॥

याहीतैं बृन्दाबन पुहुप-बास हीनै । कोकिल नहिं सबद करत ललित द्रुम सु छीनै ॥
यातैं नहिं सीतल ससि, बहत पवन ताती । याहीतैं जमुना - जल आतुर नहिं जाती ॥
याहीतैं चकवा जल करत नाहिं क्रीरा । सुंदरि अति करि बिलाप अँचयौ मनि हीरा ॥
याहीतैं मुरली - धुनि बोलत नहिं मोहै । सूरदास, स्याम बिना कैसे ब्रज सोहै ॥
॥ ५९९४ ॥

जल-सुततैं जल सलिल भयौ री ।
सिंधु - सुता - पति - भवन स्रवन सुनि सिव - सुत - बाहन बिलय ठयौ री ॥
दारु - सुता - सुत बिनु जल चातक अलि मृग मीन मलान भयौ री ।
हर सुत बाहन इंद्र जोरि बिधु - बदनी रितुपति बान दयौ री ॥
भूषन बसन मनिक सुख - सज्जा, पुहुप - गंध तन बहनि जयौ री ।
हा जदुनाथ ! मिलहु इहि औसर, सूर, बिरह दुख आनि दयौ री ॥ ५९९५ ॥

माई ! चहुँ दिसितैं घन घोरे ।
मानहु मत्त मदनके हाथी बल करि बंधन तोरे ॥
स्याम सुभग तन चुवत गंड मद बरषत थोरे थोरे ।
धावत पवन महावतहूपै मुरत न अंकुस मोरे ॥
मनहु निदरि बगदंत अरिनतैं अवधि - सरोवर फोरे ।
बिना बेल जल निकसि नैनतैं कुच कंचुकि बँद तोरे ॥
तब वहि समै आनि ऐरा - पति ब्रजपतिसौं कर जोरे ।
अब कहि, सूर, स्यामतैं हरि बिन गरत गात जस ओरे ॥ ५९९६ ॥

नाहिन इहाँ नंदकुमार । इहै जानि अजान मघवा करी गोकुल आर ॥
नैन मेघ निमेष दामिनि अस्रु बरसत धार । ढुर्‍यौ धीरज रबि दरस-बिन स्वास पौन अकार ॥
उरज गिरि भुवि भरन भारी अगम काम अपार । गिरा ब्याकुल जोग-बानी हरति औधि अधार ॥
मधुप ! मथुरा जाइ कहियौ हरीसौं जु बिचार । सत्रु - सेन सु धाय घेर्‍यौ, सूर, लगहु गुहार ॥
॥ ५९९७ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पिउ पिउ बोलत पपिहा प्यारो।
सिगरी रैनि नाँवँ लै बोलत भयौ बिरह जरि कारौ॥
आप दुखित पर दुखित जानिकै चातक न्याव तिहारौ।
देखौ सकल बिचारि सखी री! जिय बिछुरनि दुख न्यारौ॥
जाहि लगै सोई पै जानै प्रेम-बान अनियारौ।
सूरदास - प्रभु स्वाति बूंदलौं तज्यौ सिंधु करि खारौ॥ ५९९८॥

जौ तू उड़ि जा रे धौं काग।
जब गुपाल हमरे गृह आवहिं तब हमरौ बड़ भाग॥
दधि-माखन दौना भरि दइहौं उर अँचराकी पाग।
बचनन ह्वै सुनाय स्रवन सुख मेटि बिरहकौ दाग॥
सोई करि जिहिं मिलहिं सूर-प्रभु वैसे ही अनुराग।
जैसे ग्रहपति बिथा न जानै होइ न रजनी जाग॥ ५९९९॥

तिनकौ कहा भरोसो कीजै।
निरमल जल जमुनाकौ तजिकै खार समुद जल पीजै॥
गुन-निधान ब्रजसुंदरि तजिकै संग कूबरी लीजै।
तजि सिमुपाल रुकमिनी आई ताहि बड़ाई दीजै॥
यह कहि कहिकै ब्रज-बनिता सब एक सँदेसो दीजै।
सूरदास-प्रभु बेगि न मिलिहौ बिनु-दरसन कत जीजै॥ ६०००॥

अब वै भए जाइ नरेस। सुनहु सजनी! स्यामसुंदर द्वारकाके देस॥
सिंधुकै तट रची रचना जहँ न रैन प्रवेस। जटित-रत्न जराय मंदिर उदित जानु दिनेस॥
जुवति-जन सत सहस सोरह अष्ट गन आवेस। नवल नागर नेह नव तन मुदित काम कलेस॥
बिबिध सेना कोटि कोटिक सुभट नाना भेस। असुर सुर नर नृपति जीते मान मर्दि सुरेस॥
अधिक बैभव राजलीला बरनि पाव न सेस। सूरदास, बिलासकी निधि कहौ कौन सँदेस॥
॥ ६००१॥

भजन संग्रहसे

राग धनाश्री

अपनैंको नहिं आदर देय।
ज्यौं बालक अपराध करैपै मात न मारै तेय॥
ते बेली कैसैं दहियत हैं जे अपने रस भेय।
सिवसंकर बहु रतन त्यागिकैं विषहिं कंठ लपटेय॥
माता अछत छीर-बिनु सिसु मरि अजा-कंठ कुच सेय।
जद्यपि सूरज महा पतित है पावन तुम हौ तेय॥ ६००२॥

राग काफी

अबकी टेक हमारी। लाज राखो गिरधारी॥
जैसी लाज रखी पारथकी भारत-जुद्ध मँझारी।
सारथि होके रथकौ हाँक्यौ, चक्र सुदरसनधारी॥
भगतकी टेक न टारी॥ अबकी०

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जैसी लाज रखी द्रौपदिकी होन न दीन्हि उघारी।
खैंचत खैंचत दोउ भुज थाके, दुस्सासन पचि हारी॥
चीर बढ़यो जु मुरारी॥ अबकी०
राधे जू श्रीधरकी प्यारी; श्रीबृषभानु - दुलारी॥
सूरदासकी लज्जा राखो अब को है रखवारी॥
सरन तकि आयो तिहारी॥ अबकी०॥ ६००३॥

राग मलार

ऐसी करत अनेक जनम गो मन संतोष न पायौ।
दिन दिन अधिक दुरासा लागी सकल लोक फिरि आयौ॥
सुनि सुनि स्वर्ग रसातल भूतल तहीं तहीं उठि धायौ।
काम क्रोध मद लोभ अगिनितैं जरत न काहु बुझायौ॥
स्रक, चंदन, बनिता बिनोद सुख यह जुर जरत बितायौ।
मैं अजान अकुलाइ अधिक लै जरत माँझ घृत नायौ॥
भ्रमि भ्रमि हौं हार्‌यौ हिय अपने देखि अनल जग छायौ।
सूरदास - प्रभु ! तुम्हरि कृपा - बिनु कैसे जात बुतायौ॥ ६००४॥

राग कान्हरौ

ऐसो कब करिहौ गोपाल।
मनसा - नाथ मनोरथ - दाता हौं प्रभु दीनदयाल।
चित्त निरंतर चरनन अनुरत रसना चरित रसाल।
लोचन सजल प्रेम - पुलकित तन कर कंजन-दल माल॥
ऐसे रहत, लिखैं छिन छिन जम अपनौ भायौ जाल।
सूर; सुजस - रागी न डरत मन सुनि जातना कराल॥ ६००५॥

राग बिहागरौ

जो पै रामनाम धन धरतौ। टरतौ नाहिं जनम-जनमंतर कहा राज जम करतौ॥
लेतौ करि ब्यौहार सबनसौं मूल गाँठमैं परतौ। भजन-प्रताप सदाई घृत-मधु, पावक परे न जरतौ॥
सुमिरन गोन बेद-बिधि बैठो बिप्र परोहन थरतौ। सूर चलत बैकुंठ पेलिकै, बीच कौन जो अरतौ॥
॥ ६००६॥

राग केदारौ

तुम्हरौ कृष्ण कहत कह जात।[१] बिछुरे, मिलन बहुरि कब ह्वैहै ज्यौं तरुवरके पात॥
सीत बायु कफ कंठ बिरोध्यौ रसना टूटी बात। प्रान लिए जम जात मूढ़मति ! देखत जननी तात॥
छिन इक मांह कोटि जुग बीतत, पाछे नरक कि बात। यह जग-प्रीति सुआ-सेमरज्यौं चाखत ही उड़ि जात॥
जमकौ त्रास नियर नहिं आवत चरनन चित्त लगात। गावत सूर, बृथा या देही इतनौ कत इतरात॥
॥ ६००७॥

---

१. इस टेकका दूसरा रूप है— रे मन जनम पदारथ जात॥ शेष सब ज्योंका त्यों है। इसका राग भीमपलासी है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुम गुपाल मोहिं बहुत करी। राग बिलावल
नर-देही दीनी सुमिरनकौं मो पापीतैं कछु न सरी॥
गरभ-बास अति त्रास अधोमुख तहूँ न मेरी सुधि बिसरी।
पावक जठर जरन नहिं दीनौ कंचनसी यह देह करी॥
जगमैं जनमि पाप बहु कीन्हें आदि अंतलौं सब बिगरी।
सूर पतित, तुम पतित-उधारन अपुन बिरदकी लाज धरी॥ ६००६॥

मेरे अवगुन चित न धरो। राग नट
समदरसी प्रभु नाम तिहारो अपने पनहिं करो॥
इक लोहा पूजामें राखत इक घर बधिक परो।
यह दुबिधा पारस नहिं जानत कंचन करत खरो॥
इक नदिया इक नार कहावत मैलौ नीर भरो।
जब मिलिकै दोउ एक बरन भे, सुरसरि नाम परो॥
एक जीव इक ब्रह्म कहावत सूरदास झगरो।
अबकि बेर मोहिं पार उतारौ नहिं प्रन जात टरो॥ ६०११॥

बिनती कासौं करौं गुसाईं। राग धनाश्री
तुम तजि दीनदयाल देवतनकी फीकी ठकुराई॥
अपनेसे कर, चरन, नैन, मुख, अपनी-सी बुधि पाई।
काल-करम-बस फिरत सकल प्रभु! ते हमरी ही नाईं॥
पराधीन, पर-बदन निहारत, मानत मोह बड़ाई।
हँसे हँसैं, बिलखैं पर दुख लखि ज्यौं जल-दरपन झाईं॥
लियौ दियौ चाहै जो कोऊ सुनि समरथ जदुराई।
देव सकल ब्यापार-निरत नित ज्यौं पसु-दूध चराई॥ ६०१२॥

भजु मन चरन संकट-हरन। राग बिहागरो
सनक संकर ध्यान लावत निगम असरन-सरन॥
सेस सारद कहैं नारद संत चिंतत चरन।
पद पराग प्रताप दुरलभ रमाकौ हित-करन॥
परसि गंगा भई पावन तिहूँ पुर उद्धरन।
चित्त चेतत, करत अन्त:करन तारन तरन॥
गए तरि लै नाम केते संत हरि-पुर घरन।
जासु पद-रज परसि गौतम-नारि गति उद्धरन॥
जासु महिमा प्रगट कहत न धोइ पग सिर धरन।
कृष्न-पद-मकरंद पावत और नहिं सिर परन॥
सूर-प्रभु-पद-कमल-रजतैं मिटै जन्मऽरु मरन॥ ६०१३॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मनु हौं ऐसैं ही मरि जइहौं । राग सोरठ

इहिं आँगन गोपाल लालकौं कबहुँक कनियाँ लइहौं ॥
कब वह मुख बहुरौ देखौंगी कब वैसौ सचु पइहौं ।
कब मोपै माखन माँगैगौ कब रोटी धरि दइहौं ॥
मिलन - आस तन प्रान रहत हैं दिन दस मारग चइहौं ।
जौ न, सुर, कान्हा अइहैं तौ जाइ जमुन धँसि लइहौं ॥ ६०१४ ॥

रे मन ! कृष्ण नाम कहि लीजै । राग भैरवी

गुरुके बचन अटल करि मानहि साधु समागम कीजै ॥
पढ़िए सुनिए भगति भागवत, और कहा कथि कीजै ।
कृष्ण नाम बिनु जनम वादि ही बिरथा काहे जीजै ॥
कृष्ण नाम रस बह्यौ जात है तृषावंत ह्वै पीजै ।
सूरदास, हरि - सरन ताकिकै जनम सफल करि लीजै ॥ ६०१५ ॥

सुनि मैं निरबलके बल राम । राग भैरवी

पाछिल साख भरौं संतनकी, अड़े सँवारे काम ॥
जब लगि गज-बल अपनौ बरत्यौ; नैंकु सर्‍यौ नहिं काम ।
निरबल ह्वै जब राम पुकार्‍यौ आये आधे नाम ॥
द्रुपद - सुता निरबल भइ जा दिन तजि आए निज धाम ।
दुस्सासनकी भुजा थकित भइ, बसन रूप भे स्याम ॥
अपबल, तपबल और बाहुबल, चौथौ है बल दाम ।
सूर, किसोर - कृपातैं सब बल हारेको हरि - नाम ॥ ६०१६ ॥

हरि ! हौं बड़ी बेरकौ ठाढ़ौ । राग आसावरी

जैसे और पतित तुम तारे तिनहीं महँ लिखि काढ़ौ ॥
जुग जुग बिरद यहै चलि आयौ, टेरि कहत हौं तातैं ।
मरियत लाज पंच पतितनमैं हौं धर ःधरौं कहाँतैं ॥
कै अब हार मानिकै बैठौ कै करु बिरुद सहीकौ ।
सूर पतित जौ भूठ कहत है, देखौ खोलि बहीकौ ॥ ६०१७ ॥

है कहुँ मोहूँतैं बढ़ि पापी !

घातक, कुटिल, चवाई, कपटी, मोह - क्रोध - संतापी ॥
लंपट, धूत, पूत दमरीकौ विषय जाप नित जापी ।
काम - बिबस कामिनिहीके रस हठ करि मनसा थापी ॥
भच्छ, अभच्छ, अपै पीवनकौं लोभ लालसा धापी ।
मन, क्रम, बचन, दुसह सबहिनसौं, मैं तिनकी गति मापी ॥
सागर सूर, बिकार भरो जल, बधिक, अजामिल बापी ॥ ६०१८ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अब इन गलियन नहिं आवना। राग हमीर
दुखित होत सरबस अँखियन - बिनु अन्तकाल यम भावना ॥
मात - पिता नारी सुत भ्राता, निरखत भवन सुहावना।
सूरदास - प्रभुके दरसन - बिनु निसिदिन अति दुख पावना ॥ ६०२० ॥

श्रीरामनाम पूंजी पल्ले बाँध रे मना। राग बरवा
ध्रुव बाँधी प्रह्लाद बाँधी बाँधी रे धना। दासी मीरा बाँधी कृष्ण रटा रे जिना ॥
पीपा औ रैदास बाँधी सबरी सदना। दास तो कबीरा बाँधा ताना रे तना ॥
देखके सुदामा भिच्छू आए बाँभना। मूठि चौर चाबि दीन्हों माल रे घना ॥
अजामील पापी तारे पतितै घना। सूर कूर सरन आवै, कौन रे गुना ॥
॥ ६०२१ ॥

[इस पदमें सूरने मीराकी भी चर्चा की है।]

नवीन प्राप्त पदोंकी अकारादि क्रम-सूची

अंग अभूषन	५५६३	अब वह भली	५६५६	आजु गुपाल हमहिंकौं	५६६०
अकेली जाउ न	५३७८	अब वै भए	६००१	आजु तौ अतिहि	५५२४
अचरज करि यह	५६५८	अब हरिसौं हौं	५३२६	आजु तौ हिंडोरै झूलै	५८३५
अजु बरसाने	५६६५	अबहि जसोदा	५५१५	आजु पट पीतकी	५८५८
अजु मोहन-छबि	५८६८	अरव्यौ री मेरौ	५८८५	आजु बन उमँगि	५८३०
अटपटि बात तिहारी	५२०३	अवधि बदी घर	५५७४	आजु रघुबीरकौ	५७२३
अति बिसाल हरि	५८८८	अहो पथिक ! तुम	५६७०	आजु सबारे धेनु	५३०५
अपने अपने टोल	५७५१	आँखिनमैं जु अबीर	५८१६	आजु हरि ब्रजगोपिन	५४६७
अपने पिय-संग	५६२१	आई तू डगमगाति	५४६३	आनँद भरि दधि	५७७१
अपनौ जन प्रहलाद	५७३८	आई हैं हम नंदके	५६००	आप तन देखि ग्वालि	५४७६
अपनैंको नहिं	६००२	आउ रघुबीरकी सरन	५७२६	आयौ आयौ पिय	५६१५
अब इन गलियन	६०२०	आए आजु लटपटात	५४६०	आयौ बालिनंदन बली	५८७७
अब कत सुरति	५२०५	आए हरी नाम	५४५१	आयौ है अवधूत	५६५६
अबकी टेक	६००३	आग्या यहै मोहिं	५६१०	आरती श्रीजगन्नाथकी	५८२८
अब तुम कहत	५६२३	आछे कमल-कोस-रस	५२८५	आली झूलत स्यामा	५८४५
अब कोउ ऐसी	५३२६	आजहिकी बानिकपै	५५६८	आवन आवन कहिगे	५३२७
अब घटहीमैं	५६६६	आजु अति राजत	५८५७	इक कमलपै धरे	५३२५
अब तौ सांचइ	५७६४	आजु कान्ह मनिखंभ	५५४३	इक कर दरपन इक कर	५४०५
अब नीकेकैं	५२१०	आजु गुपाल पाहुने	५५४६	इत कछु नाहिंन	५३२३

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इन मुरली कछु ५६४०
इनमैं अलि कोऊ ५६५०
इनमैं कौन राधिका ५४२५
इहँ कछु नाहिंन ५६४८
इहँ तुम कौनसौं ५६१८
इहिं बल कितकु ५४६५
उगिलौ प्यारे लालन ५६८१
उघर्‌यौ परदेसीकौ ५६८७
उत्तर कहिहौं कहा ५५५१
उनीदे आए हौ ५६०८
उपमा न्याय कही री ५२८४
उरझ्यौ नीलांबर ५५१८
ऊधौ ! अपनौ जतन ५६१६
ऊधौ ! अब जौ कान्ह ५२३६
ऊधौ ! अब नहिं ६००८
ऊधौ ! अब वै सुख ५२५०
ऊधौ ! अवधि आसहु ५३२२
ऊधौ ! इतइ हितू ५२३४
ऊधौ ! कमलनैन-बिनु ५२१८
ऊधौ ! करमनहीकौ ५४२१
ऊधौ ! कर्मनकी गति ५३६४
ऊधौ ! कहत कही ५२६०
ऊधौ ! कहत सँदेसौ ५६६५
ऊधौ ! कहि नहिं ५६२५
ऊधौ ! कहियो गोकुल ५२३५
ऊधौ ! कैसी ल्याए ५५०७
ऊधौ ! कौन आहि ५२१६
ऊधौ ! जनि मधुबन तन ५६४७
ऊधौ ! जब तुम ५६७३
ऊधौ ! जाय बहुरि ५२५२
ऊधौ ! जुवतिन ओर ५२२३
ऊधौजू ! मैं चरनन ५२६५
ऊधौजू ! यह कौन ५६५२
ऊधौ ! जोग सुन्यौ ५२२१
ऊधौ ! तुम अब ५२४६
ऊधौ ! तुम आए ५२४५
ऊधौ ! तुमहुँ सुनौ ५२५६
ऊधौ ! तुम्हरौ जोग ५०६०
ऊधौ ! तौ ये प्रान ५६३२
ऊधौ ! दिन बहुतै ५२३७
ऊधौ ! दीनी प्रीति ५२४१
ऊधौ ! नंदनँदनसौं इतनी ५६६८
ऊधौ ! पालागौं ५२५८
ऊधौ ! प्रीति करी ५४६१
ऊधौ ! प्रीति न ५२२०
ऊधौ ! प्रीति नई ५५०४
ऊधौ ! बूझति ५२२४
ऊधौ ! ब्रजरिपु ५२३८
ऊधौ ! भोरहि मधुपुरि ५४४८
ऊधौ ! मनमोहनकौं ५४४१
ऊधौ ! यह निस्चै ५२४३
ऊधौ ! यह पतिया लै ५६७२
ऊधौ ! यह मत ५६२६
ऊधौ ! यह मन अधिक ५२६१
ऊधौ ! यह मन बिगरि ५४५८
ऊधौ ! यह मन निस्चय ५१६८
ऊधौ ! यहै प्रकृति ५२४८
ऊधौ ! या बिधि ५४५७
ऊधौ ! राखति हौं ५२५७
ऊधौ ! सब स्वारथके ५२४०
ऊधौ ! समुझावै ५२४६
ऊधौ ! सरद समै ५२५४
ऊधौ ! सुनि सुनि ५४६२
ऊधौ ! स्यामहिं कहियो ५३६२
ऊधौ ! हम अजान ५२१७
ऊधौ ! हम जानी ५६१७
ऊधौ ! हम न जोग-पद ५२६४
ऊधौ ! हम भई ५२१६
ऊधौ ! हमहिं जोग ५२६३
ऊधौ ! हमहिं न जान्यौ ५३२०
ऊधौ ! हम ही हैं ५२३१
ऊधौ ! हरि करि ५२३६
ऊधौ ! हरि हम कहाँ ५६३७
ऊधौ ! होत कहा ५२६२
एक हि जननि ५५६४
ए री माई ! सिथिल ५५७२
ए सखि ! आजु रैनि ५२७८
ऐसी बातैं ५६५१
ऐसी करत अनेक ६००४
ऐसो श्रीपतिकौं चित्र ५८३४
ऐसी कब करिहौ ६००५
ऐसी पूत देवकी ५६६६
औसर बारबार ५४१६
कदमतर ठाढ़े नंदकिसोर ५८६३
कबहूँ सुमिरत हैं ५६३८
करत सिँगार जसोदा ५५१६
करि मन हरि भगतन ५७६५
करुनामय गति ५८७४
करुनासिंधु कृपालु ५४४०
करूँगी कपोलन लाल ५७५५
कहत जु तुम ५२४४
कहत नंदरानी गुपालसौं ५८१२
कहँलौं गनुँ गुन ५४४१
कहा कहौ हमतैं ५६६५
कहा भयौ धौं दव ५३०६
कहा मत दीन्हौ ५२५३
कहाँ लगि मानिय ५२३२
कहिए तासों ५६२४
कहि ऊधौ ! हरि ५६६२
कहियो नंद कठोर ५१६७
कहुँ जोगीकी लगी ५३३३
कहुँ रजनी बिधु ५८६५
कहौं कहा हरि-रूप ५५६१
कहौ कान्ह ये बात ५३०६
कान जगाय गुपाल ५७४६

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कान्ह उनींदे आए ५४६१
कान्ह कामरी काँध ५४०६
कान्ह तिहारी माय ५३०७
कान्हा एकौ द्वौ ५६८७
कान्हा किहिं अवलंबौं ५६१२
कामणगारी रे कनैया ५८२६
काल्हि सखी ! इहिं ठौर ५३४६
काहु जोगिया नजर ५६८६
काहू कामरि चोरि ५३४५
काहू फिरि न ५४६०
किन तुम गोबिंद ५३७२
किमि बरनौं हरि ५२०६
किहि मिस घर ५३८२
किहु जोगीकी दृष्टि ५६५७
कीजिय पान लला ५५७१
कुंज-भौनतैं निकसि ५६०४
कुंज महल पिय ५५८३
कुबिजानै अस जादू ५३७३
कृष्नचन्द्र गोपाल ५४२०
कृष्न-जन्म आनंद ५६६०
कृष्न नाम रटत ५३५७
केते दिन सुमिरन ५४३२
केते दिन हरि ५६८६
कैसी कैसी बातैं ५८८७
कैसें आऊँ भींजै ५७४०
कैसें धीर धरौं ५४४३
कोउ कहूँ देख्यौ री ५५०६
कोउ सखि नई चाह ५२७७
कोऊ कहुँ देखी हौ ५८७१
कोऊ यहऊ ५३१२
कौन कुदिन छाँड़्यौ ५२५५
कौन सुकृत इन ५६६४
क्यों आए ब्रज ५२४७
खरी जरी हरि सूलनकी ५२२५
खेलत कान्हा दूर ५५४१
खेलत जाके संग ५६२५
खेलत तहँ रंग ५६४१
खेलत फाग कहत ५६३७
खेलत मोहन रंग ५८१६
खेलत हैं हरि ५६३६
खेलि फाग घर ५६३५
खेलु अँगन छगन ५४०२
गज निरख्यौ फहरान ५७३४
गलियन बिच धूम ५०५६
गिरधारीसौं जाय ५४०८
गिरिधर डोलत ५६८६
गिरिधरलाल पालनैं ५६७६
गिरिधरसौं है कौन ५३७६
गिरि-रिपु परत ५८६७
गुपालहिं कैसैंकैं ५२१४
गुबर्धन ठाढ़े नंदकिसोर ५८६२
गोकुलके गोपाल ५२६२
गोकुलकौ कुल-देवता ५७६१
गोकुलकौ ठाकुर हो ५६५०
गोपी क्यौं खीझत ५६५५
गोपी गोपाल लाल ५३५०
ग्यान बिना कछुवै ५६६७
घरके बाढ़े ५६२०
चकोरहि त्रासत ५६०३
चलना रे प्रभुके ५४७३
चलहु न, लै आवहिं ५२८२
चलु बरसाने खेलैं ५७६०
चले गए दिलके ५३६५
चलौ सखी ! मिलि ५६२२
चिंता मत कर ५५६५
छँगन मँगन ललन ५५१४
जगमैं देखत हौं ५३८३
जबतैं गे कान्ह ५३१८
जब मुरलि अधरन ५७११
जब मैं देख्यौ ५७७४
जब वह सुरति ५६३३
जबहिं जाउ ऊधौ ! ५२६६
जबहीं मुरली अधर ५७१०
जमुन जल गिरिधर ५३१०
जमुनातट खेलत गोपी ५८२०
जमुना ! तेरौ दरसन ५३८०
जमुने ! पतित दासके ५४८०
जमुना पुलिन तिहारो ५५१०
जय नारायण ब्रह्म ५४२६
जरीके जराइबेकौं ५५२६
जल-सुततैं जल ५६६५
जसुदा ! क्यौं नहिं ५५५३
जसुदा पालने कान्ह ५७७८
जसुदा मइया लाल ५६७७
जसुमति पलना सुतहिं ५६७०
जसुमति लेति बलाई ५८८६
जा जा रे भौंरा ५२६३
जानकि!हौं रघुपतिकौ ५७२१
जानिहो गुपाल ५८१४
जाय कहौ बूझी ५२०४
जारौं गढ़ लंक आज ५७२२
जिन डारौ जिन डारौ ५७५४
जोबन मोर रोमावली ५८१५
जौ अलि ! मथुराहू ५६३१
जौ पै कोऊ ५६६१
जौ पै रामनाम ६००६
जौ मैं राम रजायसु ५७८६
जौ मैं पारथ नाम ५३८१
ज्यौं ज्यौं नाच्यौ री ५३०१
झुलावत पलनैं ५६७५
झूलत फूल हिंडोरे ५८३५ क
झूलत स्यामा स्याम ५८४४
झूलैं ब्रजराज कुँवर ५८३७
टुक नज़र मेहरदी ५३६७
ठाढ़ी रहु री गूजरी ५३५४

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

डफ धरिदै यार	५७६२	देखि आजु आली !	५४२३	नंद बबाकी धेनु	५६०१
तजि मन हरि बिमुखन	५५६७	देखिय तउ समान	५४६३	नंदसुत!कहाँ बसे	५५२३
तजि हम ऊधौ	५२५१	देखि रि देखि राधा	५५५४	नगर एक रमनीक	५५०१
तन मन धनहुँ डारौं	५५५८	देखि रि देखि रूप	५५५६	नमो नमो बृन्दाबन	५८८२
तबही माखन	५८८१	देखि रि देखि सुंदर	५५५५	नरसिंह महाप्रभु	५४०६
तांडवगति मुंडनपै	५३४६	देखि रि ! माधौकी	५६८७	नवल नागरी सब गुन	५७०२
तिनकौ कहा भरोसौ	६०००	देखि सखी जसुमति	५३०३	नवल रँगीले	५६०६
तिहारी प्रीति किधौं	५२२६	देखौ माई सुंदर गिरिधर	५८६०	नामकौ अधारा	५४३६
तुम अक्रूर बड़ेके	५३१५	देखो माई सुन्दरता	५८५६	नाम पतित पावन हरि	५३७३
तुमकौं टेरत हैं जू	५५३३	देखो री!इक बाला जोगी	५४००	नाम महिमा ऐसी	५७६८
तुम जनि मोहन गहौ	५८८४	देखौ मेरी ओर	५५२१	नाहिं दुरत नैना	५४६६
तुम गुपाल मोहिं	६००६	देखौ राजत हैं	५६६२	नाहिं इहाँ नंदकुमार	५६६७
तुम जौ कहु	५३२८	देखौ री!हरि भोजन	५७६७	नाहिन रह्यौ मनमैं	५६५६
तुम टेढ़े म्हारि	५३५६	देखौ रे!अविगत	५३३१	निज मुरलीकी तान	५३८४
तुम्हरौ कृष्ण कहत	६००७	देखौ सखी ! राजत हैं	५८५१	निठुर अति या	५४११
तुम्हरौ बचन	५४३६	देखौ स्याम-दसन	५८६४	निरतत दोउ गति	५६२७
तुव मन गिरिधर-बिनु	५७४१	देवक उदधि देवकी सीप	५८८३	निहोरो कौन	५६५३
तू बरजि जसोदे	५३८५	देवकि देखी	५४५५	नेह निर्ममसौं	५२११
तेरे साँवरेने	५७१७	दोऊ एकै मते	५६४६	नैकु कमल-नैन कान्ह	५३४१
तेरौ चिरजीवौ	५६५८	द्वारे ठाढ़े हैं द्विज	५७०८	नैंकु चलौ तिहिं लगि	५४२२
तैं निसा लाल-सँग	५३६६	धनि गोकुल जहँ	५६५६	नैननकौ सुफल	५३११
तौ गोपाल तुम्हैं	५६५७	धनि निज भागकी	५३५३	नैनन नँदनंदन	५२०६
त्यौं त्यौं गिरिधर नाचै	५५३६	धन्य जननि जौ	५७३०	नैनन नैननकी	५६४३
दंपति अति रति	५८४२	धिक जीवन नहिं	५४३३	न्यारी करिलौ	५३४४
दधिकी मथनी टेकि	५५३५	धूरि भरे अंग	५३३७	पति राखी है	५३७१
दधिके मतवार	५३३५	धौरीकौ पय पीजै	५६८८	पथिक ! सँदेसौ कहियौ	५१६६
दरसन दो नाथ	५६४८	ध्रुव छह मास	५४४२	परदेसीकौ कह	५६८३
दिखियत ब्रज जु	५६७७	नंदकुमार ! भोर भौ	५४०१	परम चतुर सुंदर	५२८६
दिन दस रहि	५६६७	नंदकुँवर भिनुसार	५५११	परम सुखद सिसुताकौ	५२८८
दीनन दुख-हरन देव	५३६८	नंदके गावौ	५६५४	पलना गढ़िकै	५४१४
दीनबन्धु दीननाथ	५४०७	नंदके द्वार मची	५६४६	पाग खसी सिरपेंच	५४८६
दीन्हीं नँदनंदन मोहिं	५६२६	नंदके मन आनंद	५६६१	पिउ पिउ बोलत	५६६८
दुर्मति यह संसार	५५६१	नंद-दुवारे जोगी	५४७२	पियजू ! लंका बनचर	५७२८
दुहुँ दिसिकौ	५६८२	नँदनंदन बृषभानु	५६३३	पिया पिय नाहिं	५४८६
देखत फिरे ग्वालिनी	५५४५	नँदनंदन मोहनसौं	५२१३	पूछति जननि	५८८६

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पैंजनियाँ पग ५४३५
पैयाँ चलन सिखत ५८८०
पौढ़े रंग रमनी ५५८४
प्यारी दधि बेचन ५४५६
प्यारे ! वाकैं सब निसि ५५२२
प्यारे सिगरी ५५७५
प्रगट भई सोभा ५७००
प्रथम परम रुचि ५९०९
प्रभु तुम अवगुन ५३६९
प्राननाथ प्रात भयौ ५४०३
प्रीति प्यारि नँदनंदन ५९०२
प्रेम-रहित जोग बदि ५२०७
फिरि बंसी बाजी ५४१५
फिरि फिरि मोपै ५२९८
फूल बिनन नहिं जाऊँ ५२९४
फूल्यौ री बन ५५३०
बंदौं चरन कमल ५५०३
बंसि बजावै साँवर ५७१२
बंसी ! कौन तप ५३४८
बंसी बाजी जमुना तीर ५४६७
बंसी-वारेसौं रति .५४१८
बजुपर कमल धरत ५९६२
बड़ो धन हरिजनकौ ५७६३
बदत बिरंचि ५८७९
बदरी काहे ब्रजपै ५७४२
बध्यौ रावन सुन्यौ ५३००
बन ठन आईं ५६०२
बनतैं आवत ५८५३
बन फूले द्रुम ५६१४
बनमैं स्याम ५५४९
बनी सहज लूट ५५१९
बन्दौ पद-पंकज ५६०८
बदौं श्रीहरिपद ५२०२
बरजौ जसुमति अपनौ ५६०६
बलि जाउँ लला ५६८५
बलि जाऊँ मैं ५६९३
बलि बलि जाऊँ ५५७८
बलि बलि जाऊँ लाल ५३३६
बल्लभ भले बुरे ५५८७
बसुधा काहूकी ५३८२
बहुरि न इहिं ५९९०
बाँसुरी बसी तौ ५३४७
बात कहति मैं ५५०२
बालापन गौ आयौ ५५३१
बावरी सो जो बाँसुरी ५७१४
बिनती कासौं करौं ६०१२
बिनै कासौं कहौं ५२९९
बिष दै अमृत ५३७६
बूझत बातन ५९७४
बृन्दाबनकी कुंज ५५००
बृन्दाबन बंसीबट ५६१६
बृन्दावनमैं दधि ५७०६
बृन्दाबन मोहन दधि ५६४७
बेगि स्याम ! तुम भले ५७५३
बैठे ब्रजराज गोद ५८१०
बैरि सहज बस ५७२४
ब्रजकुंजनमैं जाय ५४९९
ब्रज घर घर सब ५७९५
ब्रजबनिता ब्रजनाथ ५६४१
ब्रजमंगलकी मंगल ५७७३
ब्रज-मंडल आनंद ५६६५
भजि सखि ! भाव ५३९५
भजु ! मन चरन ६०१३
भयौ जयकार ५३३०
भरोसौ दृढ़ इन ५८७३
भलि लै आए ५९६३
भली कीन्हीं भोर ५५२०
भवन भयानक लागै ५९१३
भैया केवट लै ५९३९
भोजन करत गुबर्धन ५८००
भोरहि स्यामा-स्याम ५४८३
मइया ! झूठे दोष ५४३०
मइया ! मोरी कामर ५८२७
मइया ! ल्यावौ चंद ५३८६
मटुकि उतारि लई ५७०४
मधुकर ! आवत यहै ५२७१
मधुकर ! इहाँ नाहिं ५२६६
मधुकर कहत सँदेसो ५२६५
मधुकर! कहि मधुबनकी ५९४९
मधुकर कहै कौनकै ५९२८
मधुकर ! कान्ह कही नहिं ५२७०
मधुकर ! कासौं कहि ५२७६
मधुकरके पठएतैं ५८६७
मधुकर ! कौन गाँवँकी ५२३०
मधुकर ! चलु आगैंतैं ५२७२
मधुकर ! जानत नाहिंन ५२२८
मधुकर ! जोग न होत ५२७९
मधुकर ! जो हरि कही ५२७३
मधुकर ! तौ और न ५२२७
मधुकर ! प्रीति ऐसी ५९५४
मधुकर ! बहुरि न ५३२४
मधुकर !ब्रज किय चाहत ५९२९
मधुकर ! मधु-मदमातौ ५२७५
मधुकर ! महाप्रबीन ५२६९
मधुकर ! यह कारेकी ५२७४
मधुकर ! हम हैं ५४२८
मधुकर ! होहु इहाँतैं ५२६८
मधुकर ! हमहिं जु ५२२६
मनके मोहन ललना ५८१३
मन मस्त भया ५४३७
मन मोहन-सँग बिहरत ५६०१
मनमोहन हैं ठाढ़े ५५७७
मन रे ! भूल्यौ ५५८९
मन रे ! स्यामसौं ५५९२
मन हरि लियौ ५८९८

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मनहु प्रीति अति ५३१४
मनु हौं ऐसैं ही ६०१४
महरि ! न बरजै ५६०५
माई ! अरऱ्यौ बाल ५५६६
माई ! गोकुल भौ ५३८८
माई ! चहुँ दिसितैं ५९९६
माई ! झूलत है ५८३१
माई ! नई बरषा ५७३९
माई ! पलना लाल ५६७४
माई ! लोचन लुबुध ५५७३
माई ! सबन यहैई ५९८५
माखन तनक दै ५३३९
माखन दै रि ५३४०
माखन-रोटी लेहु ५५९९
माँगत मोपै चंद ५७८०
माता ! मैं न रहौं ५४५२
माधौ ! तेरी गति ५३७५
माधौ ! सुनौ ब्रजकौ ५९७५
मानो ढरे एक ही ५२९०
मिटायौ जोग पाति ५९४४
मिलि किन जाउ ५३१६
मिलैं गोपाल सोइ ५७७६
मुखपर लट लटकत ५८७२
मुरली अधरनपै ५७१३
मुरलीकी को टेर ५३७७
मुरली कौन तप ५७१५
मुरली कौने लई ५४५४
मुरली तुम हरि ५८९१
मुरली नैंकु बजाऊँ ५४५३
मुरि मुरि चितवत ५७०५
मेरि न बनि महराज ५४४५
मेरी राखौ लाज ५३७०
मेरे अवगुन ६०११
मेरे क्यौं आए ५७८५
मेरे नैनन बानि ५८९२
मेरे नैननहीं ५४८५
मेरे लोचन लालची ५८९०
मेरौ गुपुत मतौ ५४५९
मेरौ मन मथुराइ ५२८०
मैं जोगी जस गाया ५३३२
मैं तो अब ऐसहि ५९९३
मैंनू आयानी सँदेसा ५३९१
मोकौं अबकी बेर ५३७४
मोकौं माखन-मिसरी ५५४२
मोकौं माधव ५२९७
मोहन ! जागि हो ५५१२
मोहन ! जाने दे ५४३८
मोहन मुखकी ५९०१
मोहन मोहन कहि ५३०८
मोह निर्मोहीसुँ कीनौ ६०३०
मोहिं न बिसारैं ५४२७
मोहिं लगे स्यामके ५३८७
मोहिं सखी ! कान्हाके ५३४२
यद्यपि पाई है ५९१५
यह छबि देखि री ! ५५५७
यह ब्रज मेरे मन ५७८६
यह ब्रत धरैं ५८७५
यह मन उहँईकौ ५९७६
यह लीला सब करत ५७९७
यहै सुनत ही ५२०८
यातैं कर द्रुम ५९७९
या ब्रज सगुन दीप ५२९१
या ब्रजमैं हरि ५७५७
यामैं कहा घटैगो ५५८८
याहीतैं वृन्दाबन ५९९४
येइ हमारे सिरीनाथजी ५७५६
रटत मन अनुदिन ५९४५
रसिया हरि बृन्दाबन ५४६६
रहसि रहसि घर ५६१९
रहु रे मधुकर ! ५९२१
राखौ यह सब ५९६४
राधाजूकौ ललिता ५५८२
राधा प्यारी कह्यौ ५७०९
राधा-मोहन करत ५५७०
राधे ! चलु, हरि ५३८९
राधेजू देखिये ५८४०
राम भजै सो ५४१६
रावलमैं अजु ५९९८
रासहिं खेलत हैं ५४१२
री ! तुम कौन सबनि ५७४८
री ! मग निकसी ५२७६
रे मन ! कृष्ण नाम ६०१५
रे मन ! समुझ सोच ५५८६
रोवत आजु बाल ५४१७
लँगर ढीठ गारी ५३४३
लइहौं बीर बलैया ५२८३
लइहौं री माँ ५५६७
लखी सुता वृषभानुकी ५७०१
लछिमन ! सीता कौन ५७१९
ललित त्रिभंगी फेरि ५९३६
लागे री ! ऐसे-दिन ५९८८
लागे सबै अंग ५४९४
लालन ठढ़े कुंजके ५८६६
लालन ! तुम पाए ५५२७
लालन ! तुम यह ५५६८
लालन ! तेरे मुखपर ५६९१
लालन सिर सोहत ५८४९
लालन सीस टिपारो ५८५२
लावहु संग कंत ५९००
लोनी स्यामा मन हरि ५६२४
ल्याय न किन तू ५६९४
वजुपर कमल ५८९६
वह बन जात ५९०५
वाके सब निसि ५७७२
श्रीपति दुखित भगत ५५९३

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीराम आदेस अंगद ५७२५
श्रीरामनाम पूँजी ६०२१
सइयाँ ! रैनि बिदा ५४६४
सँदेसौ कैसैंकै ५२१३
सखन-सहित हरि ५५४८
सखि री ! जनियत ५६८०
सखि री ! देखि ५५३८
सखि री ! मो हरि ५७६६
सखि री ! सुमिरि ५८६६
सखि री ! स्याम इते ५६६२
सखि री ! स्याम कहा ५६४२
सखि री ! स्याम बिना ५४२६
सखि ! हौं जागौं ५४८८
सखि ! हौं स्याम ५५४०
सखी री ! कारेनकी ५६१६
सखी संग लै ५७४७
सजनो ! मैं न जाउँ ५३६०
सब कोउ कहत ५३१६
सबतैं ऊँची ५३६०
सब दिन होत न ५५६०
सब मिलि करौ ५३१७
सबै करत मनुहार ५६६६
साँची कै प्यारी ५३५२
सानूँ मुंड घर वँजन ५३५८
सावनकी तीज ५७४४
सावनकी तीज ५८३६
साँवर कान्ह न अजहूँ ५७५८
साँवरे ! जिनि करि ५४४४
सुंदर बदन देखे ५८३६
सुंदर सुख सदन ५८४३
सुनि मैं निरबलके ६०१६
सुनियत कान्ह मधुपुरी ५३१५
सुनियो एक सँदेसौ ५२००
सुनि री सखी ! आज ५४६८
सुनि सखि ! बिलमि ५४३४
सुनि री भामिनि ! ५६५५
सुनु गोपी हरिकौ ५२३३
सुनौ अक्रूर! यह बात ५६११
सोवत राधेहिं स्याम ५५०५
सोहत घूंघर बार ५४७०
सौंह दिवाय बूझि ५५२६
स्यामकौ सँदेस उधौ ! ५३६१
स्याम ! न मोसौं ५३५५
स्याम पहिरिकै जलसुत ५५५६
स्याम बस्यौ आँखिनमैं ५३५६
स्याम मनमानी ५४२४
स्याम मोहिं बावरी ५४६४
स्यामसुँदर बिनु ५४४६
स्यामाजूकी नैन-भाँति ५४६२
हम न करी हरिकी ५४६५
हमरी अँखिनके ५४१३
हमरी सुरति लियौ ५५०८
हमसौं अब कैसी ५६२७
हमसौं कहत कौनकी ५२०१
हरि आवनकौं ५२४२
हरि किय ग्वाल ५५४४
हरिकी प्रीति ५६३५
हरिके सँगमैं ५३६६
हरि-दरसनतैं गरब ५५६६
हरि-बिन को राखै ५३६४
हरि-बिनु वै सुख ५६८४
हरि-रस तवहीं ५५६४
हरि-रस लोभी ५८६३
हरिसौं कहियौ ५२८६
हरिसौं को कह ५२८१
हरे हरे कृष्न कृष्न ५३६६
हिंडोर झूलत गिरिधर ५८६६
ही परदेसिन नारि ५७१८
हे दैया ! मतवाला जोगी ५६५५
हे हरि ! हम हारी ५५३२
हो आज रीझी हौं ५८५४
हो मेरी आली री ५८२४
होरी अब हो हो ५६३८
होरी खेलन आई ५६४०
होरी माच रही ५४६६
हो हो मेरी प्रान ५८००
हो हो हो हो होरी ५६३६
हौं दुहिहौं मोहिं ५५६५
हौं वारी हरि ५६८४
हरिकौ मुख ५३३८
हरि हौं बड़ी ६०१७
हैं कहूँ मोहूँतैं बड़ ६०१८
ह्वैहै कब हरिकौ ५३२१

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परिशिष्ट ४

पंडित जवाहरलाल चतुर्वेदीकी सूर-सागर-पद-सूचीके नवीन पदोंकी टेक

[सूचीमें केवल टेक मात्र हैं, पद नहीं हैं]

अंग सब मिलि लागे दुख दैन। वर्षो० १७६, १७४

अचरज इक देखौं रे भाई।

अचानक आए री हरि मेरैं।

अति हित चंचल जानि लई।

अपने जो पतिपै गई कीर्त्ति। रा० क० खं २११, १०

अब काहु मोरे भाइ भई। नव० ७२६, १८८

अपने गुपालकौं हौं चेरौ। न० ६६१, १४२

अब तुम हरिकौं दोष लगावत। नव० ५०३, ६५

अब तौ हैं हम निपट अनाथ।

अब दल उठत बलाहक जोरा। नव० ७५३, ३८३

अब दृढ़ करी धरी यह बानि।

अब न बोलौंगी प्यारे नंदके नंदनसौं। नि० द्वि० भा० ६८, ७

अब मुरली कछु नीकैं बाजत। नव० ५११, १३१

अब ये यहाँ हैं, ते कहाँ। नव० ७३१, २२८

अबहिं गई जल भरन अकेली।

अबहुँ रहत तन, हरि जु सिधारे। नव० ७२४, १७०

अरी मैं जानि पाए चिन्ह दुरैं न दुराए।

अरी साँवरौसो ढोटा याही बगरमैं। नि० द्वि० भा० ४३, १७

अरु भक्त कीजै किहि भाई।

अरी हौं या मग निकसी आइ अचानक। नि० द्वि० भा० ४६, ४

अलि! तुम जोग बिसरि जनि जाहु।

अलि! हमहिं कान्हकौ यहै परेखौ भावै।

अलि! हौं कैसैंकैं कहौं हरिके रूपके रसहिं।

अवचटहीमैं स्याम बताए। नव० ७४१-२६८

अहो! कान्ह दान कैधौं बरिआई। वर्षो० २४६,६

अहो दधि-तनया-सुत-रिपु-गति-जननी सुनि बृषभानुदुलारी।

अहो मेरे हित कारन नंदनंदन नियरैं कीन्हौ गेह। रा० च० ६०४, २

आँधरेकौं दई चलावै। नव० ६२३, १३१

आँनदराइ बिराजत आई। वर्षो० १४, ५२

आइ रघुबीरकी सरन, अंगद कहै। वर्षो० २७८, १५

आए री! बादर उल्हरि उल्हरि। वर्षो० द्वि० भा० २६४, १७२

आए नहिं माई! कोई धौं। नव० ७४६, ३५०

आछे मेरे लाल हौं, ऐसी आरि न कीजै।

आजु अति सोभित हैं नँदलाल। नि० १३१, १६

आजु अति सोभित हैं ब्रजनाथ।

अरी मोहिं पिय भावै।

अरी यह ढीठ कान्ह।

आजुकै दिनाकौं सखि। व० द्वि० भा० २७८, ७५

आजु उझकि कित जात भजे हो। व० द्वि० भा० ५५, १

आजु बधाई नंदके मंदिर।

आजु बधाई बबा नंदकैं। वर्षो० ५४, २

आजु बधायौ ब्रजराजकैं।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आजु रावलमैं बजत बधाई । वर्षो० १६२, ११
आजु ब्रजबधू ब्रजनाथ बृन्दाबनमैं ।
आजु बरसाने बजत बधाई । वर्षो० १८२, ६
आजु बर बिपिन छाक लीला रची ।
आजु मैं देखी बाम नई-सी ।
आजु मोहन मोहि लई बाँसुरी बजाइकै ।
आजु माई!नीके बने नंदलाल । वर्षो० द्वि० भा० २७६, ७८
आजु रघुपति चढ़े लंक गढ़ लैनको । वर्षो० २८६, १७
आजु स्मामजूके नैननकी बातैं ।
आजु हम कही है नंदजूकी भाँत । नि० हि० मा० ११०, ५, रा० क० ६०४, ३
आली री नंदनँदन वृषभानुकुमारि ।
इतनी जानि परै जो ऊधौ । नव० ७७२, ६४
इल्लम्मा श्रीबल्लभ गोद खिलावत । वर्षो० ६६७, १
इह ढोटा नंदको है री ।
इहै कहनि मोकौं तुम आई ।
इहै कोऊ जानै री ।
इहाँ कपिलसौं माता कह्यौ ।
इहाँ हरिजू बहु क्रीड़ा करी ।
उठि री ग्वारिनि, करि सिंगार । रा० क० हि० २८८, १५
उनींदे कान्ह आए री मेरै ।
उरझारी लटैं छूटीं आननपै ।
उल्हरि आयौ सीतल बूंद पवन पुरवाई ।
उल्हरि आई हो घन घटा ।
ऊधौ अबहैं कान्ह भए ।
ऊधौ कहिऐ काहि सुनाइ ।
ऊधौ कहियौ ठकुरसुहाती ।
ऊधौ कैसे जीवैं कमल-नैन बिन ।
ऊधौ कौन कुदिन छांड़े उहि गोकुल । नव० ७०६, ७४
ऊधौ कहत सँदेसौ आनि । नव० ७०६, ५४
ऊधौ क्यौं आए ब्रज धावते । नव० ७०७, ५६
ऊधौ गिरिधारीसौं जाय कहौ रे ।
ऊधौ जनि मधुबनतन देखौ ।
ऊधौ जबहिं जाउ गोकुलमनि आगैं । नव० ६६४, १६३
ऊधौ जीवनधन हम पैए ।
ऊधौ जोग ठगोरी ।
ऊधौ जो तुम हमहिं बतायौ ।
ऊधौ जो करि कृपा पाउँ धरत हरि ।
ऊधौ जौ हरि आवैं तो प्रान रहैं ।
ऊधौ तनिक सुजस हरिकौ स्रवन सुनि ।
ऊधौ तिहारे मैं चरन लागौं ।
ऊधौ तुम लोगनसौं आदेस । नव० ७०६, ७६
ऊधौ देखत हौ जैसे ब्रजबासी ।
ऊधौ पूँछति बावरी ।
ऊधौ प्रेम-रहित जोग निरस काहेकौं गायौ ।
ऊधौ बलैया लैहौं बहुरि सिधारौ ।
ऊधौ कबहुं वै बात कहौ ।
ऊधौ साँच कहौ हम आगैं । नव० ७०५, ४२
ऊधौ सुनिहौ बात नई सी ।
ऊधौ हम ऐसे गुपाल-बिनु ।
ऊधौ हरि हम निपट बिसारे । नव० ७०८, ६६
ए तेरी चालकी चलन । वर्षो०
ए अँखियाँ बड़-भागनी जिन रीझे स्याम ।
ए अलि जनम करम गुन गाए ।
एक दिन आपनैं खरिककौं जात ही ।
ए जू लालन दुलहिन राधा बनी ।
ए हो बदरा बरसन आए ।
एक समै घनस्यामके मंदिर ।
ऐसी मूढ़ता या मनकी । नव० ६३२।१७८ ।
ऐसी नियति हिरदै माहिं ।
ऐसे माई चहुँ दिसितैं घन घेरैं ।
ऐसे माधव मीत हमारे ।
ऐसैं जौ हरि आवहिगे ।
ऐसैं नवललाल खेलत बसंत ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऐसौ ब्रजपतिकौ बिचत्र हिंडोरना ।
कदम-तर ठाढ़े श्रीगोपाल । (वर्षो० द्वि० भा० २७४, ४७)
कब देखौ मेरी ओर नागर नंदकिसोर । (नि० ४०, ६)
कबहुँ वै ऊधौ, बात कहौ ।
कहत स्यामसौं, जाइ मनावौ ।
कहाँतैं आए हौ लाल । वर्षो० च० १७४, ८५
कहाँ रहेउ माई, नंदकौ मोहन ।
कहा अब पहिले मिलनकौ नेह ।
कहा करौं हौं अपने हारे । (नव० ७५०, ३५८)
कहा कहतु तुमसौं मैं ग्वारि ।
कहा भयौ जो आज राजा भयौ (७७६ १२१)
कहा कहौं इन नैननकी बात ।
कहा जानि अब लालन मेरे । न० ६५१, ८४
कबहुँ वै ऊधौ बात कहाँ ।
कहत स्यामसौं जाइ मनावौ ।
कहाँलौं कहिए अलख बिन ।
कहाँलौं राखिए मन बिरमाइ ।
कहिब्रे जीय न कछु सक राखौ ।
कहिबेमैं न कछू सक राखौ ।
कहि मोहिं भली कीन्हि महरि ।
कहियो पथिक जाइ हरिसौं ।
कहूँ जात देख्यौ पिय मेरौ । नव० ६४८, ६८
कहौ कान्ह ! ए बात तिहारी ।
कहौ कैसैं मिलैं स्याम सँघाती ।
काज कहा कीन्हौं मथुरा जाइ ।
कान्ह अब नारि गही है जानि ।
कान्ह कृपा करि देखियै सुर-चापकी छबि । वर्षो० च० ४०५, २३३
कान्ह प्यारे वारनें जाऊँ, स्यामसुन्दर मुरतिपर ।
कारी कामरियापै केतौ कुसुम मेरौ मन तौ सांवल रंग पाग्यौ है । रा० क० द्वि० ११
कान्ह, माई माँगत हैं दधि रोटी ।
कान्हर रसिया वृन्दाबन-बासी रा. क. द्वि. ३३,२
कारे री बादर उल्हरि आए मनौ कामदेवके हाथी । वर्षो० बं० ७३३, १७३
काहू फिर न कही वे बातैं । रा. क. द्वि. ३४,५५
काहे कहत प्रतिपाल कियौ ।
काहेकौं पर घर छिन छिन जात ।
क्रीड़त कान्ह कनक आंगन । वर्षो० १७२, २
कुँवर तन स्याम मनौ काम है दूसरौ सपनमैं देखि ऊषा लुभाई ।
कृपा करि हरि पठयौ ब्रजपै तुमरौ । नव० ७५६,४
कृष्ण कृष्ण करत डोलौं । नव० ७६१, २३६, ७०, ६
कृष्ण नाम भावै मोहिं ।
कृष्ण नाम रसना रटति ।
कृष्ण नाम सुमिरौ मन मेरे ।
केते दिन बीते हरि देखे - बिन माई ।
कैसैंकै बिलोऊँ गहि रह्यौ हरि मथनियाँ । रा० क० ५१०, ८
कैसैंकैं बनत इहि ब्रज हरिकौ आवन ।
कोउ मधुबनतैं है आयौ । नव० ७६०,७
कोउ मोहन लाल दिखावै । नव० ७४०, २८६
कैसैं जिय राखौंगी बोलत मोर । नव० ७३७, २६७
को मेरै करतार करि । रा० क० द्वि० ५७,७६
कौन सुहागिनसौं मन मिलिहै वा मधुकरके मीत । नव० ४७५, ३२८
खेलत रंग रही इक ओर ब्रजसुन्दरि, इक ओर मोहन ।
खेलत स्याम फागु ग्वालन-सँग ।
खेलनकौं दूरि जात कत कान्ह ।
गए बितताइ ब्रज नर-नारि ।
गगन मेघ घहरात ।
गढ़दै बीर बढ़ैया तू हिंडोरना । वर्षो० बं०७५१,५
गावै जु भामिनी मिलिकै मङ्गल कहत कंकन छोर हो । रा० क० द्वि० २११, ११

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गुमानी घन काहे न बरसत पानी ।
वर्षो० ४५३, ३४६
गोकुलकौ ठाकुर हो खेलै होरियाँ । व.ध.२३७,२६
गोकुलमैं खेलैं होरी । रा० क० द्वि० २७४,८
गोकुलकौ सकुच है हमसौं ही माई ।
नव० ७३५, २५४
गोपाल बिना और मोहिं ऐसौ कौन सँभारै ।
गोपाल राइ केहि अवलंबौं प्रान ।
गौरी-पूत-रिपु ता सुत ।
ग्यान-धरमके स्रोता, बक्ता, पै बक्ता हम जाने हौ । नव० ७७६, ११६
ग्यान जोग अबलन अहीरसौं कहत न आवै लाज ।
ग्वारिनि कितहि उरहनौं देहु । नव० ५०८,१०७
ग्वालन कही ऐसी जाइ ।
ग्वालिनि चली जमुना न्हान ।
ग्वालिनि तैं मेरी गेंद चुराई ।
वर्षो० द्वि० भा० १८१, ३
ग्वालिनि प्रेम-प्रीति रँग-भीनी ।
वर्षो० द्वि० भा० ३०२, २२३
घर घरतैं सुन्दरि चलीं देखन ब्रजकुमार ।
घोष नागरी मंडल-मधि नाचत । वर्षो० ३१३,१
चढ़चौ सुरराज ब्रजराजके कुँवरपर ।
चन्दन महलमैं केसर लगाए गात । नि० १२६,४
चन्दनकौ बागौ बँधौ, चन्दनकी खौर किए ।
चपल माननिकी भौंहें बन ।
चलत तेरे ब्याहकी अब बात ।
चलति गोपालके चले ।
चलति जानि चितवत ब्रज-जुवती ।
चलि राधे बोलत नन्दकिसोर ।
चलौ सखी भूलन जैहैं हो । वर्षो० वं० ८२१, ३
चहुँ दिसि घटा उठीं मिले री । वर्षो० द्वि० भा० २६६, २०४
चितवननै मेरौ मन बस कीन्हौं ।
चेतन मान लै रे मेरी बतियाँ ।
छिप जनि जैयो हो बनवारी ।
जग-पति बादहिं चितए प्रान । नव० ७२७,१६८
जगमैं आए तो क्या हुआ ।
जनमके उपजत दुख किन काटत ।
जब गजराज अटक्यौ अजगरसौं बली बहुत दुख पायौ ।
जबतैं हरि मधुबनहिं सिधारे । नव. ६६३ १५६
जबहिं ग्वारि यह बात सुनाई ।
जमुनाजल बिहरत हैं स्याम । नि० ६२
जसोदानै कारी अँधेरीमैं जायौ, यातैं कारौ रूप हरि पायौ ।
जल बिन तरँग, भीत बिन लेखन ।
जय माधव, गोविंद मुकुंद हरि ।
जय जय धुनि तिहुँ लोक भई ।
जहाँ बैठे माधौ, तहाँ तू बुलाई राधे ।
जसुमति पलना सुतहिँ झुलावै । वर्षो० १०३,१३
जाइ कहौ बूझी कुसलात । नव० ६७७, ४३
जाउँ नहीं पिय आवहीं क्यों कहाँ ठगाने ।
जागिए ब्रजराजकुँवर नंदके दुलारे ।
जागौ हो तुम नंदकिसोर ।
जादूगर नैन बड़े बिसाल ।
जानी अलि ऊधौ चतुराई ।
जारन आयौ री, गुननकै पापी, चंद बिसासी ।
जिनि कोई बस परौ बरिआए ।
जिनि कोउ काहूके बस होहि ।
जिनि चालहि अलि बात पराई ।
जिनि जिनहीं केसव गुन गायौ ।
जिनि ब्रत धारिकैं देवी पूजी ।
जिनि हठ करहु सारँग-नैनी ।
जिय हिय हौंसै बिच जे रहीं ।
जेते गुन तेरे नाथ तेते औगुन मेरे ।
जु है मिष्ट फल सो कहि कैसैं आवै । नव० ७८०, १५१
जै जै जै जै माधव बेनी ।
जो पै कोउ बिरहिनिको दुख जानै ।
जो सखि नाहिनै ब्रज स्याम ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जौ अपनौ मन हरिसौं राँचै ।
जौ मकरंद लुब्ध तू मधुकर ।
झूलत लाड़िलौ नवल बिहारी । वर्षो० द्वि० भा० ३१४, २६
झूलैं माई गिरिधर सुरँग हिंडोर । वर्षो० द्वि० भा० ३१०,६
ठीक दुपहरीकी तपनमैं भलेइ आए मो गेह । नि० १४२, २
तबतैं नैनन नींद हिरानी । नव० ७३६, २८२
तब नागरी कहति सखियनसौं एतोपै क्यौं सौंह करैं ।
तबहीं जैहै हेत कहाँ ।
तीज सुनि फूलति राधा प्यारी ।
तौ तुम को हौ, कहाँतैं आए हो । नव० ७८६,२१२
तुम जो कहत सँदेसौ आनि । नव० ६७६, ३६
तुम देखौ माई सुंदर गिरिधर लाल ।
तुम बेगि क्यौं न आवौ ।
तुम्हरी भाँमती कहेउ । नव० ७८६, १८८
तुरति मार्‍यौ कंस देवनाथ ।
तू अलि कहत कहा समुझाइ । नव० ७२०,१४८
तू अलि बात नहीं कहि जानत ।
तू कहि धौं री, कब हरि आवहिंगे ।
तू चलि प्यारी री एतौ हठ छाँड़ि मान री ।
तू तो औघड़ बड़ौ कन्हैया । वर्षो० द्वि० भा० ६६, २
तेरे भवन भावन गोरी । नि० ६३, १५
तेरे हितकौ कहति हौं ।
तेरो कन्हैया कारो, मेरी राधा गोरी है ।
ते ही नैन सुहावने हो ।
तैं अलि, कहाँ पढ़ी यह नीति ।
तोपै वारीहौं नंदलाल ।
तोहिं कमरि लकुटिया भूलि गई ।
तौऊ तौ गोपाल आहिं गोकुलबासी ।
तौलौं हौं बैकुंठ न जैहौं ।
दंडक बन आए रघुराई ।
दच्छकैं उपजीं पुत्री सात ।
दधि बेचन चलीं ब्रजनारि ।
दधि मथति ग्वालि गति-भेदसौं ठाढ़ी ।
दहिनैं देखि मृगनकी मालहिं ।
दिखियतु दोऊ घन उनए ।
दिय देख्यौ बन-छबि निहारि ।
द्विज बेगि धावहु कहि पठावहु द्वारिकातैं जाइ ।
दूलह देखौंगी जाइ ।
देखि री आजु नैन भरि ।
देखि री देखि आनन चंद । नि० द्वि० भा० १०, ६
देखि सखी मेरौ मन न रहे स्याम बिना ।
देखि सखी तीज महातम आयौ ।
देखि सखी सायक बल जोर ।
देखौ नवल बने नवरंग ।
देखौ, माधौ-राधाकी रति ।
देखौ माई भींजत गिरिवरधारी । वर्षो० द्वि० भा० २७२,३७
देखौ माई सुंदरताकौ तरंग ।
देखौ माई सुंदरताके नैन ।
देखौ माई सुंदरताकौ नीर ।
देखौ री या मुकुटकी लटकन ।
देखौ स्याम अचानक जात ।
देख्यौ बृन्दाबन खेलहिं श्रीगोपाल ।
देबै आए ऊधो मत नीकौ ।
देवहूति ग्यानकौं पाई ।
देवहूति, सुनि पुनि यह कह्यौ ।
दै री नवल किसोरी । वर्षो० २४०, २७
दोऊ अलसाने राजत प्रात ।
दोऊ मिलि पौढ़े ऊँचे अटा हो । वर्षो० द्वि० भा० ३०१, २१५ ।
द्रौपदी धर्‍यौ ध्यान जबै मन आतुर होई ।
धन्य अक्रूर मधुपुरी लै आए ।
धरती दुलहिन, मेघ दूल्हे । वर्षो० द्वि० भा० २७५, ५१
धर्म अभिमान बहेउ जन-मनतैं । नव० ७८५, १८२

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नवल हिंडोरना हो । वर्षो० च० ६३७, ३७०
नवसत साज सिंगारनि रँगे अंग ।
नहिं छूटै मोहन डोरन हो ।
नहिं तेरौ अति ही हठ नीकौ ।
नागरि निठुर मान गह्यौ ।
नाहिँन इहौ नेह नयौ । नब० ७६७, ५६
नाहिन कछु सुधि रही हिएँ ।
नाहिन पल री चित चैन । नि० उ० ६३, २
नाहीं नाहीं आली एतौ हठ नीकौ ।
निगम कल्पतरु पक्व फल ।
निरखिबौ करै स्यामसुंदर सहस कनक प्रकास री ।
निरखि हरष ब्रज-जुवती घोष-कुमारि ।
निहारौ सब मिलि कान्ह निहारौ ।
नंद कहत बृषभानु-राइसौं । वर्षो० द्वि० भा० १०६, ५
नंद-नँदन आली, मोहिं कीन्हीं बावरी ।
नंद महरके ढोटा जिनकी सुनियतु भूरि बड़ाई ।
नंद महर घर प्रगटे स्याम । वर्षो० ३३, २४
नंदलाल निठुरि होइ बैठि रहे ।
नंदसुवन बार बार रवनी-पथ जोहैं री ।
नमो तरनि-तनया परम पुनीत ।
नवरंगी केसर हम बोई हो ।
पकरे ब्रज-जन गिरिधारी ।
पद पंकज बंदि त्रिभुवन-स्वामी ।
परम बियोगिनी गोबिंद बिन । नव० ७२५,१८३
पतियाँ दीजै स्याम सुजानहिं ।
पथिक पालागौं स्यामसौं कहियौ । नव० ७४१, २६५
पलना स्याम झुलावति जननी ।
पवित्रा पहरनकौ दिन आयौ । वर्षो० द्वि० भा० ३५, २५
पाती मधुबनतैं आई ।
पायौ री घर कुँवर कन्हाई ।
पाए हौ जू जानि लाल तुम । नि० ४७ ४
प्यारी तू है री गज-गामिनी । नि० १६२, २
प्यारा नयना लगाय छिप जाउँदा ।
प्यारी तोहिं गिरिधरलाल बुलावत । वर्षो० द्वि० भा० २६६, १६८
प्यारी पियकौं बरज । नि० ६५, १२
प्यारे अवधि बदी घर आवनकी । नि० ४५, ७
प्यारौ स्याम बियोगी मधुकर ।
प्रभु मैं बड़ौ अधम संसारी ।
प्रात भयौ कृष्ण राजीव-लोचन ।
पिचकारी मारी बनवारी रे ।
पियकौं भावति राधा नारि ।
पिय री, स्याम बियोगी मधुकर रे ।
पीछैं ललिता, आगैं स्यामा प्यारी ।
पीत पिछौरी कहाँतैं पाई ।
पोच पिसुन लस दसन सभासद ।
पौढ़िए लाल निवास अटारी ।
पौढ़ि रही पिय संग पियारी ।
पौढ़े माई ललन सेज सुखकारी ।
फिरत फिरत बलहीन भयौ ।
फिरिकैं बसौ गोकुलनाथ ।
फूल महल बैठे नँदनंदन । नि० ५७, ४
फूल महल बैठी राधा तू सखी सहेली संग । नि० ५७, ५
बजावै मुरलीकी तान ।
बजत बधाई ब्रजभानुराइ घर ।
बज्रकी छतियाँ बिरह नाहिँन जानत । नव० ७३३, २३
बन्यौ हेम हिंडोरना हो । वर्षो० बं० ८२१, ४
बरसानै बृषभानुदुलारी । वर्षो० द्वि० भा० ६५, १
बरसानैकी नार सबै मिलि । वर्षो० द्वि० भा० ३४२, २
बलि बलि चरित सुंदर स्याम । वर्षो० ७१, २
बलैया लैहौं हो बार बार । नव० ७५४, ३२५
बहुत नारि सुहाग सुंदरि ।
बहु बल कितक जानौं जदुराइ ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बाजे सु बाजे सकल नभ सुर।
बाढ़ी जु आनँद लहर बहु बिधि।
बात कहौ साँची मेरे प्यारे आजु।
बातन क्यौं ब्रजनाथ मिलनकौं। नव० ७८२,१६३
बातैं हमहूँ तौ कहि जानत। नव० ७७६, १४३
बादर भूमि रहे चहुँ ओर।
वर्षो० द्वि० भा० ३०२, २२४
बानक बनी वृषभानुकुमारी।
बालमवा तुम बिन अकेली रहि न सकत हूँ।
बाँसुरी कौन गुमान भरी।
बिंदु जो मृगमद दियौ माथे।
बिनु घर वहि उपगार गहेउ। नव० ७५४, ३६३
बिनती सुनहु हमारी। नव० ७६०, २२२
बिनै सब करत गिरिराजसौं।
बिनै सुनौ इक मेरी रे। नव० ७६०, २२१
बिरल कीजै भामिनि रसमैं रिसकी बात।
बिराजत री बनमाल गरैं।
बिराजत सघन कुंजकी ओट।
बिलँब तजि माखन दै री माई।
बिसर्‍यौ कुल व्यवहार - बिचार।
बिहरत जल जसुना रस-भीने।
बटाऊ ठाढ़े रहियौ। नव० ७५३, ३८२
बीर सहजमैं होइ तौ बल नहिं कीजै।
वर्षो० २८७, १३
बूंदन भीजत ठाढ़े दोउ।
बृन्दाबन चलो सजनी मनमोहन बुलावै।
बृन्दाबनवासी नव मिलिहौ।
बृन्दाबन लाला ललना सँग भूलैं। वर्षो० द्वि० भा० ३४२, ६
बोलत काहे न नागरी बैन। वर्षो० द्वि० भा० ८७, २
बोलत मोर मदनके माते।
बेगि निकुंज चलो नँदनंदन। नव० ७५१, ३६६
बोलि लिए सब ग्वाल कन्हाई।
बोले री सखि चातक पिक मधुकर अरु मोर। ७५०, ३५
बोले माई गोबरधनपै मुरवा। वर्षो० द्वि० भा० ६७, २
ब्रज कहि पठइ सुसील दियौ हम। नव० ४६,३५
ब्रजपै मदन कटकई आई। नव० ७७२, ६०
ब्रजमैं चलौ खेलियै होरी।
ब्रजमैं हिडोरना हो। वर्षो० च, ६३८, २७१
ब्रजमैं हिडोरना, सब मिलि।
वर्षो० च० ६६७,४११
ब्रज घर देवी पूजी। वर्षो० २७१
ब्रह्म दई जाकौं ठकुराई।
ब्रह्म स्वयंभू मनु उपजायौ।
भक्त सकामीहूँ जो होइ।
भजौ गोपाल भूलि जिन जाहु।
भयौ अलि नेह निरंतर भारी। नव० ७७६,१४७
भयौ मन माधवकी अवसेर।
भली कीनी आए हो ललना।
भली करी सोच कहा लागे करन। नव० ७८२, २३
भाव जन बिनु नहीं बनि मुख।
भैरवी उदय आए हरि।
भोर भयौ मेरे लाल होरी खेलौ।
भौंरा काहेकौं भयौ उदासी। नव० ७७३, १०३
मगन जगन अरु भगन।
मघवनि जाइ करी पुकारि।
मघवनि हारि मानि मुख फेरौ।
मथुरा ऐसी आज बनी।
मधुकर अब भयो नेह बिरानी।
मधुकर इतनी कहियो जाइ।
मधुकर कहि मधुबनकी रीति।
मधुकर कहा कान्हहि देखिये। नव० ७१३, १०४
मधुकर कहा पढ़ी यह रीति।
मधुकर केहि ह्याँ निर्गुन भावै।
मधुकर जान्यौ ग्यान तिहारौ।
मधुकर तुम अति चतुर कहात।
मधुकर मीत नहीं संसार। नव० ११५, ११४
मधुकर समुझि कहाँ यह बात। नव० ६६१,४३

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मधुकर हो आगेतैं दूरि । नव० ७१८, १३१
मधुप तुम कहा इहै गुन गावहु । ७१६, १३७
मधुप तुम इहाँ कहाँतैं आए ।
मधुबनहीतैं आई पाती ।
मन बसै तो बृन्दाबन बसै रे । व० ध० २३५, ६
मन मधुप पद कमल लुभाने ।
मन मन हँसत राधिका गोरी ।
मनमैं जो आनन्द कियौ ।
मनो हौं ऐसे ही मरि जैहौं ।
महर लियौ इक ग्वाल बुलाई ।
महोदधि तनया सुत रिपु ।
माई आज तौ बन बंसी बाजी ।
माई आज तौ हिंडोरना झूलै । वर्षो० द्वि० भा० ३४३, २
माई आजु लाल लटपटात ।
माई मोहनाकी मुरलीमें मोहिनी बसत है ।
माई री कत कौरनिको नात । नव० ७४७, ३३८
माई री गोबिन्दासौं प्रीति करत ।
माई री, मधुबनकी ,यह रीति ।
माई री रंग रंग हो लाल । नि० ४५, ४
माई नै दिना ये देह अछत ।
माधव बिलपति प्रिय पति धन । नव० ७८४,१८१
माधव वै भुज कहाँ दुराए ।
माधवसौं न बनै मुख मोरैं । नव० ७६३, २६
मानौ दोऊ एकैं मते भए ।
मानौ बात ललाजू मेरी ।
मुख छबि देखि हो नँदघरनि !
मुरलिया कैसैं बाजैं रस सानी ।
मुरली घनस्याम वजावैं ।
मुरली बाजैं राजैं हो ।
मुरली बिधिहूँतैं प्रबल प्रबीन ।
मुरली यह कछु भलौ न कीन्हौ ।
मुरली यह तौ भली न कीन्ही ।
मुहब्बत बाँसुरीवालेसों जोरी रे ।
मेरी अँखियाँ अजानी भईं । वर्षो० ६३
मेरे कमल-नयन प्रानतैं प्यारे ।
मेरे घर चन्दन अति कोमल । वर्षो० द्वि० भा० २५३, २४
मेरे नैनन इतहि करे ।
मेरे नैनन कोउ समुझावै री ।
मेरे नैना बिरहकी बेलि बई ।
मेरे माई लोभी नैन भए ।
मेरे मोहन तुमहिं बिना नहिं जैहौं ।
मेरे साँवरे मैं बलि जाऊँ भुजनकी ।
मेरे हरि अँगना ह्वै जु गए री ।
मेरौ अब कैसैं निकसन होय ।
मेरौ मन न रहै कान्ह बिन ।
मेरौ मुख चितै चितै रहे हो । नी० ऊ० ४३, १५
मेरौ मोहन, जल प्रवाह क्यौं टारौ ।
मैं अबहीं कियौ मान पै ।
मैं जान्यौ हो नहिं का भयौ । नव० ७८३,१७१
मैं तुम्हैं हँसत खेलत छाँड़ि गई ।
मैं जानी ऊधौ हरिकी चतुराई । नव० ७६६, ४७
मैं हरि मुरली बन पाई ।
महल आए लाल, तनकी तपत गई । वर्षो० द्वि० भा० २८६, १४४
म्हैंदी स्यामसुंदरके रचि रचि । वर्षो० द्वि० भा० ६४, ४
मोकौं ना हरि बार भई ।
मोतिनकी माला जु मनोहर ।
मोसौं मानि न आवै मानि ।
मोपै काहैको भुकति ब्रजनारी । नव० ७८१,१५६
मोहन फिरि किन गोकुल आवत । नव० ७४०, २८६
मोहन मदनगुपाल मनोहर । नव० ७५७, ४१२
मोहन लालके सँग आँखि ।
मोहनलाल बियारू कीजै । नी० ३२, १०
मोंहि मथन दै गोबिंद । नी० ऊ० ६५, ५
मोंहि कहत प्रतिपाल कियौ ।
मोंहि प्रभु तुमसौं होड़ परी ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह उपदेस कह्यौ है माधौ।
यह कछु भोरेहुँ भाइ भई।
यह गति करत नाहीं छाज।
यहि बिधि बहुत जनम बौरायौ। नव० ६२२, ११६
यहहि मन आनन्द अवधि सब।
या मोहना मोहिं आय ठग्यौ री।
ये गो-रैनु-रंजित, आवत हैं मोहन लाल।
येहि कहियतु वसुदेव-कुमार।
रंजित रोम राजिव रेख।
रबि हरिरिपुकौं न छिपावति।
रहौ उर लाइ ललन कछु खैहौ। वर्षो० द्वि० भा० ५५, २१
रही छबि अंग निहारत स्याम।
राखि लेहु गोकुल ब्रजनायक। वर्षो० द्वि० भा० ४६, ५२
राखौ सब ये जोग अटपटौ।
राजत निरतति पिय संग सुंदर जई। वर्षो० ३२६, ३०
राजासौं आज न सिर नाई। वर्षो० २६२, ६
राधा माधौ भेंट भई।
राधा मोहन खेलत फाग।
राधे कत निकुंज ठाढ़ी रोवति।
राधेके मंदिर आयौ। ब० ध० २३३, ६
राधे प्यारी कैसे मान रचाऊँ। वर्षो० द्वि० भा० २६६, २७
राधेजूकौ प्रान गोबरधनधारी। नि० उ० १०६, १८
री आली स्याम बजावत बीना।
रे ऊधौ को खेलै ब्रज होरी।
रे मन कृष्ण नाम कहि लीजै। नव० ६२१,११५
रोकै मेरी गैलवा मैं कैसें जाऊँ पनियाँ।
लकुट करकी हौं तब दैहौं।
ललनको बातपै बलि जैयै। वर्षो० द्वि० भा० ११५, १२
ललन तुम्हारी प्यारी आजु।
ललन हौं या छबि ऊपर वारी।
ललना प्रगट भए गुन आजु।
ललित कथा एक कहौं लड़ैते। षर्षो० बं० ६०८, ५
लागत बूंद कटारी पिया बिन। वर्षो० बं० ६६६, ३
लाल आए हौं उनींदे।
लाल उनींदे नैन भए।
लालकी बानिकपै बलि जैऐ। नि० उ० १०६, १६
लाल तुम खेलौ होरी। व० ध० ११२, १५
लाल माई आए भीजत गेह। वर्षो० द्वि० भा० २७५, १७८
लिखि लिखि कितब पठावहु नागर। नव० ७७३, १००
लीजै बीरी परम उदार। वर्षो० द्वि० भा० २४४,१
वहु दिन ऐसोई हतौ री।
वे दिखियतु मधुबनके रूख री। नव० ७५८, ४१८
वे देखौ आवत हैं ब्रजतैं।
वे माधव जिनि मधु मारेउ।
वै गोपाल गोकुलके वासी।
वै बातैं भूलि गईं।
वै सैयाँ मेरे रैन बिदा होन लागी।
वैसेई यौं मेरी रैन।
संकट काट मुरारी।
सकल निसि जागे कैसे नैन। नी० ४७, २७
सकुचत कहि न सकत गुपत ह्रिदयकी बात। नव० ७५२, ७०
सखा और सँग लिये कन्हाई।
सखि सुनि जानी हरि वै बात। नव० ७४०, २८६
सखी नंदनंदन वृषभानु-कुमारि। ब० ध० १५२, ३५
सखी री जनियत यहि अनुमानि। नव० ७६३, ३३०

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सखी री ज्यौं कुरुछेत्र कुसानी ।
सखी री नख सिखतैं हरि खोटे ।
सखी री ना जानौं तबहीतैं मोकौं ।
सखी री पुर बनिता हम जानी ।
सखी री ब्रजकौ बसिबौ नीकौ ।
वर्षो० द्वि० भा० २८४, ११३
सखी री स्याम क्यौं रूसे जाइ । नव० ७४७, ३३६
सखी हौं अपनी चाहसौं आई । वर्षो० २३, ६
सखी री रसिया नंदकुमार ।
सखी री स्याम घटा उल्हि आई । नव० ७४७, ३४०
सखी री दुसह कहौ क्यों सहियै । नव० ७४८, ३४१
सजल जलद बादर दर दिखियतु । वर्षो० च० ४६४, ३८१
सजल जलद बानेतैं बदरिया । नव० ७५०, ३६२
सतभामासौं इती बात ।
सर्बरी सर्बहि बिहानी ।
सबै करत मनुहारि ऊधौ ।
सरस बसंत सखा मिलि खेलैं ।
सरस सर्वांग अँग अंग भीजै ।
स्रम करिहौ जब मेरी सी ।
साँची कहौ हमसैं प्रिय प्यारे ।
साँझ लगे गोपाल गोधन सँग ।
साँवरेसौं कहियो मोरी ।
साँवरेकी दृष्टि मनौ प्रेमकी कटारी ।
नी० ऊ० ११२,१६
साँवलिया अब न सहौंगी ।
साँवरे रे चरित्र सुनो री ।
साँवरो जग तारन आयो ।
स्याम अंग बन्यौ चंदनकौ बागौ ।
स्याम अब न हमारे । वर्षो० बं० ६७७, ३०
स्यामकी बंसी बन पाई ।
स्यामकौ तैं ही हैं पहिचाने ।
स्याम घन देखि गगन घन डरते ।
स्याम घन कारे, कारे बादर । वर्षो० द्वि० भा० १७६, ७६
स्यामताके लिये मधुपकी । नव० ७७२, ९५
स्याम तुम मुरली कहाँतैं पाई ।
स्याम तुम्हारी ये बातैं । नव० ७७३, ९८
स्याम सब भाजन फोरि पराने ।
स्याम सलौने रूपमें अरी मन अऱ्यो ।
स्याम हो नैकु दिखाई देहु ।
स्यामाजू आपनैं रूप देखि देखि ।
स्यामा बरबस परी है बिकाय ।
स्यामा मेरी आँखन बीच बसी ।
स्यामा स्याम अंकम भरी ।
स्यामा स्याम परम कुसल जोरी ।
सिसकि सिसकि रही कोरनिकी रुक सुनि
वर्षो० वं० ७२७, १४०
स्यामाजूको स्याम मनावन आये । नी० ऊ० ११, ७
सुंदर बर संग ललना हो ।
सुंदर मन मोहन प्यारे ।
सुंदर साँवरे मुरली अधर धरी ।
सुंदर साँवरे हो तैं चित लियौ चुराइ ।
सुंदर स्याम पियाके आरत । नव० ७४७, ३११
सुन्दर हिंडोरै लाल, सुन्दर बनी मयार ।
वर्षो० च० ५८०, २०१
सुकौ जेहि नाहिंन सचु पायौ ।
सुनहु री मेघ तौ आयौ ।
सुनि री ऐसै जौ हरि आवैं । नव० ७४२, ३०२
सुन मुरली सबद ब्रज नारि ।
सुन सखि स्याम कहाँ गये मेरे आगैंतैं ।
नव० ७५०, ३६
सुनि लीजौ नाथ सँदेसवा । नव० ७८६, १९५
सुनि सुनि प्रभुपै कछु न रहेउ ।
नव० ७४९।३५२
सुनु हरि मेह आयौ । वर्षो० द्वि० भा० ७५, १

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुने नंदलाल मधुपुरी जात।
सुनौ सखी माधौ बिन या तन।
सुफल जनम प्रभु आजु भयौ। नी० ११६।३
सैरन्ध्री सोइ उठि फरिकत बाँह।
सोई मुख देखि अक्रूर भरमे।
सो प्रभु मेरे दोष निवारौ। नव० ६२२।१२७
सो सुनियतु है री द्वै माह।
सौ सौ बार तोहिं समुझायौ।
हम तौ सबहिनसौं हित छाँड़े। नव० ७८०,१४८
हम तौ भजिहैं नंद किसोर। न० ७८२, १६४
हमपै ऐसौ जोग न होई।
हमरी फेंट छोड़ो।
हमारी आँखिनके तारे।
हमारे स्याम लाल हौ।
हरि आए सो भली कीन्ही।
हरिके बचन सुनहि धाइ।
हौं ता दिन कजरा दैहौं।
हौं तो मोहनके विरह जरी री।
हौं पिय रीझि आइ गई ही।
हौं यहाँ गोकुलहीतैं आई।
हौं लालको मुख देखन आई
हौं वारी रे मेरे तात।
हौं हरि सँग होरी खेलौंगी।
होरी खेल कहाँते आए कौन तिया।
श्रीकंत सिधारौ मकसूदनपै।
श्रीगोकुलनाथ बिराजत डोल।
श्रीजमुनाजूके निकट बजाई बंसी। ब० ध० २३५; १२
श्री झूलत नंदनंदन डोल।
श्री जमुनाजू पतित पावन करन।
श्री जमुनाजू पतित पावनको।
श्रीठाकुर कलँगी आप धरी। ब०ध० २३५,११
श्रीमनमोहन खेलत चौगान।
श्रीमदनमोहनजू मत डारौ केसर पिचकारी।
श्रीराधा मोहन रंग भरे हो।
हरिकौं तिलक अगि बिनु दहति।
हरितैं बिमुख होइ नर जोइ।
हरि-दासनकी सबै बड़ाई।
हरि निरमोहियासौं प्रीति कीन्हीं।
हरि बराबर बेन कौन बजावै।
हरि-बिनु वै सुख बहुरि कहाँ। नव० ७६२,२३०
हरि बिन कैसे राखौं प्रान। नव० ७७०, ८१
हरि-सँग होरी खेलन आई।
हरि हमसौं करी री माई, मीन-जलकी प्रीति
हा हा, होरी वे खेलैं माई।
हिंडोरना हो कब झूलौंगी। वर्षो० बं० ८२०,२
हिंडोरै झूलैं लाड़िली लाल। वर्षो० द्वि० भा० ३१४, ३१
हिंडोरैं हरि संग झूलैं घोषकुमारी।
हिंडौरै माई झूलत रंग रह्यो। वर्षो० द्वि० भा० ३५७।१६
हे माई ! राधा-मोहन सहज सनेही।
है कोऊ मधुबनतैं आयो।
हो आजु नंदलालसौं खेलूंगी सखि होरी।
हो कान्ह मैं तुम्है चाहौं।
हो माई आज अनत जागे री मोहन।
होरीके खेलमें गुमान कैसों।
होरी खेल आए कहाँसे तुम।
होरी खेलत मोहन, उड़त गुलाल अबीर।
होरी खेलौ मोहन सुंदर गिरधारी।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीमद्भागवतका प्रतिपाद्य तत्त्व

डॉ० गोवर्द्धननाथ शुक्ल

श्रीमद्भागवत महापुराणकी संरचना सर्वाधिक व्यवस्थित है। इस महापुराणके स्वरूप-निर्धारणमें भक्त्याचार्यों, मनीषी विद्वानोंने बड़ी सरस, मधुर, कमनीय कल्पनाएँ की हैं। आचार्य वल्लभने इस महापुराणको अपने प्रमाण-चतुष्टयमें चरम महत्त्व दिया है।[1] इसके बारह स्कन्ध सप्रयोजन हैं। प्रथम द्वितीय स्कन्धोंमें ग्रन्थके श्रोता एवं वक्ता अधिकारियोंका निरूपण हुआ है। जिज्ञासु अथवा अधिकारी श्रोताके यह पूछनेपर कि—

यच्छ्रोतव्यमथो जप्यं यत्कर्तव्यं नृभिः प्रभो।
स्मर्तव्यं भजनीयं वा ब्रूहि यद्वा विपर्ययम्॥ १।१९।३८॥

अधिकारी वक्ता महात्मा शुकदेवजीने 'वरीयानेष ते प्रश्नः' कहकर प्रश्न और प्रश्नकर्ताकी प्रशंसा करते हुए एक ही श्लोकमें सम्पूर्ण उत्तर दे डालनेका सफल प्रयत्न किया है—

तस्माद्भारत सर्वात्मा भगवानीश्वरो हरिः।
श्रोतव्यः कीर्तितव्यश्च स्मर्तव्यश्चेच्छताभयम्॥ २।१।५॥

[सर्वात्मा हरि ही एक मात्र श्रोतव्य, कीर्तितव्य एवं स्मर्तव्य हैं।] सिद्धान्ततः यह स्वीकार करके वक्ता श्रीशुकदेवने श्रीमद्भागवतका अनुकथन प्रारम्भ कर दिया। तात्पर्य यह हुआ कि श्रीमद्भागवत महापुराण ही श्रोतव्य, कीर्तितव्य एवं स्मर्तव्य सिद्ध हुआ। अर्थात् हरि और श्रीमद्भागवतमें तत्त्वतः कोई अन्तर नहीं। मूलतः ये दोनों पदार्थ एक ही हैं। यही कारण है कि अपने भागवतार्थ-प्रकरणमें आचार्यने कहा है—

आनन्दस्य हरेर्लीला शास्त्रार्थो दशधा हि सा।
अत्र सर्गो विसर्गश्च स्थानं पोषणमूतयः॥
मन्वन्तरेशानुकथा निरोधो मुक्तिराश्रयः।
अधिकारी साधनानि द्वादशार्थास्ततोऽत्र हि॥
निरूप्य संख्या स्कन्धा हि द्वादशैव न चान्यथा।
तृतीयादि दशस्कन्धैर्लीला दशविधोदिता॥

---

१. (अ) वेदाः श्रीकृष्णवाक्यानि व्याससूत्राणि चैव हि।
समाधिभाषा व्यासस्य प्रमाणं तच्चतुष्टयम्॥ नि० श० प्र०

(आ) एषा समाधिभाषा हि व्यासस्यामिततेजसः। त० दी० भा० प्र० ११

उपर्युक्त श्लोकोंकी व्याख्या करते हुए प्रकाशकारने कहा है—

आनन्दरूपस्य लीलाप्यानन्दरूपा। हरेश्च लीला सर्वदुःखहर्त्री॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रोतुर्वक्तुश्च लक्ष्माद्ये द्वितीये त्वंगनिर्णयः ।
इतीदं द्वादशस्कंधं पुराणं हरिरेव सः ॥
—त० दी० नि० भा० प्र० ३-६

अतो दुःखाभावसुखरूपत्वात् स्वतः पुरुषार्थरूपा लीलेति भागवतार्थः ।'

[आनन्द-रूप भगवान्‌की लीला भी आनन्द-रूपा है । हरिकी लीला समस्त दुःखोंका हरण करनेवाली है । अतः दुःखकी आत्यंतिकी निवृत्तिपूर्वक सुख-रूपा लीला होनेसे वह पुरुषार्थरूपा है । यही श्रीमद्भागवतका तात्पर्य है ।]

आगे प्रकाशकारने स्पष्ट कहा है—'पुराणं हरेः स्वरूपं शब्दतोऽर्थश्च । 'शब्द और अर्थ उभय रूपसे यह पुराण श्रीहरिका ही स्वरूप है ।' आगे प्रकाशकार और भी स्पष्टता लानेकी चेष्टा करते हुए कहते हैं—'ननु हरित्वे कथं द्वादशत्वं ? पुरुषे द्वादशत्वं हीति—

भगवत्स्वरूप होनेपर द्वादशत्व क्यों ! इसके उत्तरमें श्रीमदाचार्यकी कारिकाएँ इस प्रकार हैं—

पुरुषे द्वादशत्वं हि सक्थौ बाहू शिरोन्तरम् ।
हस्तौ पादौ स्तनौ चैव पूर्वं पादौ करौ ततः ॥
सक्थौ हस्तस्ततश्चैको द्वादशश्चापरः स्मृतः ।
उत्क्षिप्तहस्तः पुरुषो भक्तमाकारयत्युत ॥
स्तनौ मध्यं शिरश्चैव द्वादशांगतनुर्हरिः ।
पादौ सक्थौ कटिर्गुह्यं उदरं हृदयं करौ ॥
मुखं ललाटो मूर्धा च केचिदेवं हरिं जगुः ॥
एतद् धारणमात्रेण कृष्णो भवति वै धृतः ।
अर्थतस्तु परिज्ञाते ज्ञातो भक्तिं प्रयच्छति ॥[1] (त०दी०नि० ७-१०)

आचार्यचरणकी उपर्युक्त कारिकाओंका तात्पर्य स्पष्ट करते हुए प्रकाशकार कहते हैं—

'द्वादशो वै पुरुष इति श्रुतेः । श्रुत्यनुसारेणैवावयवान् गणयति सक्थाविति । स्तनान्ता अवयवा द्वादश । स्कन्धानांतेषु निवेशनमाह पूर्वं पादावित्यादिना । अधिकारज्ञानयोः पादत्वम् सर्ग-विसर्गयोः करत्वम् । स्थानपोषणयोः सक्थित्वम् । करशब्देन बाहू । सप्तमस्कन्ध एको हस्तः द्वादशश्च द्वितीयः । तत्र भागवतं विकृतमिव भविष्यतीत्याशंक्य दृष्टान्तेन प्रकृतोपयोगिरूपमाह उत्क्षिप्त हस्त इति । ततः स्तनौ अष्टम-नवमौ । ततो मध्यं दशमः । शिरस्त्वेकादशः । द्वादशः पूर्वमेवोक्तः । यादृशो भगवान् भागवतरूपो जातः तादृशोऽयं वर्णितः ॥ (त० दी० नि० प्र० स्कं० पृ० ३)

तात्पर्य यह है कि श्रीमद्भागवतके स्कन्ध श्रीहरिके श्रीअंगके ही विभिन्न अवयव हैं । शब्द ब्रह्मके श्रीअंगोंके अवयवोंकी कल्पना केवल आचार्यके ही मतमें नहीं है, महाप्रभु चैतन्यके मतमें भी किंचित् परिवर्तनके साथ ऐसी ही मान्यता है । स्वयं आचार्यने इसका संकेत दिया है—

---

१. पुष्टिमार्गमें सेव्य श्रीनाथजी अथवा गोवर्धननाथजीका स्वरूप इसीके अनुसार है । यह स्वरूप श्रीगिरिराज पर्वतसे उद्भूत है इसीलिए इसे गोवर्धन-धर ही कहा जाता है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अत्र केचनोपासका: क्रमेणैवोपासना सफलेति भिन्नक्रममाहुः तमाह पादाविति। कटिः पंचमः, मलद्वारस्थानीयानि नरकाणि गुह्यं षष्ठः, उदरं सप्तमः, हृदयमष्टमः, करौ नवमः[१]।' मुखं दशमः, ललाटः एकादशः, मूर्धा द्वादशः, उपासनायामे तदपि युक्तम्।

आचार्यश्रीका कथन है कि श्रीमद्भागवतके 'धारणमात्र' अर्थात् पाठ करने भरसे श्रीमद्-भागवतके भगवद्रूप होनेसे मानो भगवान्को ही धारण कर लिया गया। निर्गुण सन्तोंके अनुसार हृदयस्थित भगवान् जो कार्य करते हैं, वे ही कार्य भक्तोंके लिए श्रीमद्भागवत महापुराण करता है।

प्रारंभके दो स्कंध अधिकारी और साधन रूपमें निश्चित हो जानेपर आश्रयान्त दस पदार्थों अथवा दशविध लीलाओंका निरूपण करते हुए श्रीसुबोधिनीमें आचार्यने लिखा है—

तत्राशरीरस्य विष्णोः पुरुष-शरीर-स्वीकारः सर्गः। पुरुषाद् ब्रह्मादीनामुत्पत्तिः विसर्गः। उत्पन्नानां तत्तन्मर्यादापालनं स्थानम्। स्थितानामपि वृद्धिः पोषणम्। पुष्टानामाचार ऊतिः। तत्रापि सदाचारो मन्वन्तरम्। तत्रापि विष्णुभक्तिरीशानुकथा। भक्तानां प्रपंचाभावो निरोधः। निष्प्रपंचानां स्वरूपलाभो मुक्तिः। मुक्तानां ब्रह्मस्वरूपेऽवस्थानमाश्रय इति।[२] अर्थात् विष्णुका पुरुष शरीर स्वीकारना सर्ग है। पुरुषसे ब्रह्मादिकी उत्पत्ति विसर्ग है। उत्पन्न हुओंका मर्यादासे पालन स्थान लीला है। स्थित हुओंकी अभिवृद्धि पोषण है। पुष्टोंका आचार ऊति है। उसमें भी सदाचार मन्वन्तर है। उसमें भी विष्णु भक्ति ईशानुकथा है। भक्तोंमें प्रपंचका अभाव ही निरोध है। प्रपंचोंसे मुक्तोंका स्वरूप-लाभ ही मुक्ति है। मुक्तोंका ब्रह्म-स्वरूपमें लय ही आश्रय है। इस प्रकार प्रगवान्की दशविध लीलाका यह चक्र सतत चलता ही रहता है। प्रत्येक पदार्थमें सर्ग ही कारण है, अतः उसमें भगवत् स्थिति है[३]। कार्यत्वेन विसर्गकी स्थिति उसमें (सर्गमें) पहले ही विद्यमान है जिस प्रकार कार्य रूप पटमें कारण रूप तन्तु अथवा सूत्र विद्यमान रहता ही है। अतः विसर्ग कार्य है। तात्पर्य यह हुआ कि कारणमें कार्यकी विद्यमानता रहती है। समस्त वस्तुओंमें वस्तुका अपना मूल स्वरूप ही उसकी मर्यादा है। कार्यकी सिद्धिके लिए सामर्थ्य अथवा क्षमताकी स्थिति ही 'पुष्टि' है। ब्रह्मज्ञानियोंकी प्रतीतिके लिए उस प्रकारकी लीलाओंका प्रदर्शन ही ऊति अथवा कर्म-वासना है। इस प्रकार अन्वय-पद्धतिसे[४] समस्त वस्तुओंमें भगवल्लीला कारण रूपसे विद्यमान है। उपर्युक्त पाँच प्रकारसे समस्त वस्तु-जात भगवल्लीला ही है—यह सिद्ध हुआ। अब शेष पाँच प्रकारसे भी व्यतिरेक पद्धतिसे भगवल्लीला सिद्ध होती है।

जिस प्रकार कभी कारणसे कार्यकी भिन्नता प्रकट होती है यह स्वरूपसे व्यतिरक्तता ही मन्वन्तर है। स्वरूपसे व्यतिरिक्तता भगवत्सेवा रूप धर्मके कारण लोक-वेद-व्यतिरिक्तताका रूप धारण कर ले तो उसे 'ईशानुकथा' कहेंगे। स्वरूप-प्राप्तिके इच्छुक लौकिक-वैदिक भक्त समस्त कामनाओंके परित्यागपूर्वक वासना-शून्यताको प्राप्त कर लेते हैं तो यही उनका 'निरोध' है।

१. श्रीसुबोधिनी २।१०।१।　　२. श्री सुबोधिनी २।१०।१।

३. प्रत्येकपदार्थे तु सर्गः कारणत्वेन तत्र भगवत् स्थितिः। सुबो० २।१०।१।

४. कारणकी सत्तासे कार्यकी सत्ताकी स्वीकृति अन्वय पद्धति कहलाती है। जनक-जन्य न्याय भी यही है। किन्तु जन्यसे जनकका ज्ञान अनिवार्य नहीं। यह व्यतिरेक पद्धति है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उनकी यह निरोध-रूपा निखिल प्रपंच-विस्मृति ही मुक्ति है ।[1] इन नौ विषयोंका आधार ही आश्रय है ।

श्रीमद्‌भागवतमें ये ही दस विषय वर्णित हैं । इनमें प्रधान 'आश्रय' तत्त्व है ।[2] आश्रयसे तात्पर्य है—व्यक्त, अव्यक्त, आभास एवं निरोधका एक मात्र अधिष्ठान पूर्ण पुरुषोत्तम विरुद्ध धर्माश्रयी ब्रह्म । अज्ञान - निवृत्तिपूर्वक इस ब्रह्मका बोध जीवको करा देना ही श्रीमद्‌भागवतका एक मात्र लक्ष्य है । श्रीमद्‌भागवतके प्रत्येक स्कंधमें इसी 'आश्रय' तत्त्वकी सिद्धि है ।

जिन नौ विषयोंसे आश्रय तत्त्वकी विशुद्धि अथवा प्रतिपादन होता है वे आश्रयके ही अंग अथवा अवयव हैं । यह ऊपर श्रीसुबोधिनीके आधारपर कहा जा चुका है । यहाँ उनके ऊपर विस्तारसे पृथक्-पृथक् विचार किया जा रहा है ।

आश्रय

श्रीमद्‌भागवतके द्वितीय स्कंधके नवम अध्यायके तीसवें श्लोकमें जिस विज्ञान समन्वित परम गुह्य ज्ञान[3]का संकेत दिया गया है और आगेके चार श्लोकोंमें उसका रहस्य वर्णन किया गया है, जिसे अन्वय-व्यतिरेक-पद्धतिसे सर्वत्र सर्वदा उपस्थित बताया गया है, वही 'आश्रय' तत्त्व है । आगे चलकर उसकी व्याख्या करते हुए भागवतकारने कहा है :—

आभासश्च निरोधश्च यतश्चाध्यवसीयते ।
स आश्रयः परं ब्रह्म परमात्मेति शब्द्यते ॥ १२।१०।७ ।

अर्थात् आभास अथवा विषय-प्रतीति एवं उसका निरोध अथवा अभाव दोनों ही जिसके द्वारा प्रकाशित होते हैं वह परब्रह्म ही 'आश्रय' अथवा सबका अधिष्ठान है । ग्यारहवें स्कंधमें मुक्ति और बन्धनसे परे जिस तत्त्वका संकेत दिया गया है, वह आश्रय ही है । उसी प्रकार गीतामें परा-अपरा प्रकृति, क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ, क्षर-अक्षर एवं प्रकृतिसे परे जिस तत्त्वका वर्णन हुआ है वही पुरुषोत्तम श्रीमद्‌भागवतका प्रतिपाद्य आश्रय तत्त्व है । वह अचिन्त्य और अनिर्वचनीय होकर भी भक्त्यैकाम्यपूर्ण ब्रह्म और भगवान है । इस आश्रय तत्त्वके तीन लक्षण हैं—

१—अधिष्ठानता, । २—साक्षिता । ३. निरपेक्षता ।

सर्जन-संहार, भाव और अभाव दोनोंसे परे होकर भी वह दोनोंमें है, उसीसे इन दोनोंकी सत्ता है । उसके बिना ये रह ही नहीं सकते, किन्तु इनके बिना उसकी सत्ता रहती है । इसी प्रकार द्रष्टा, दृश्य और दर्शन तीनोंके भाव और अभावको देखनेवाला आत्मा इन सबका (द्रष्टा, दृश्य और दर्शनका) निरपेक्ष साक्षी है । इस प्रकार ब्रह्म, जो श्रीमद्‌भागवतमें श्रीकृष्ण कहे गए हैं, गीतामें जो पुरुषोत्तम हैं और ब्रह्मसूत्र प्रतिपादित जो औपनिषदिक ब्रह्म हैं—वही श्रीमद्‌भागवतका प्रतिपाद्य आश्रय तत्त्व है ।

---

१. श्रीसुबो० २।१० ।

२. दशमस्य विशुद्ध्यर्थं नवानामिह लक्षणम् ।
वर्णयन्ति महात्मानः श्रुतेनार्थेन चांजसा ॥ २।१०।२ ।

३. ज्ञानं परमगुह्यं मे यद् विज्ञानसमन्वितम् । २।९।३० ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सर्ग

ईश्वरकी प्रेरणासे गुणोंमें क्षोभ होकर रूपान्तर होनेसे आकाशादि पंच भूत, शब्दादि तन्मात्राएँ, इन्द्रियाँ, अहंकार और महत्तत्त्वकी जो उत्पत्ति होती है, इसीको सर्ग कहते हैं।

भूतमात्रेन्द्रियधियां जन्म सर्ग उदाहृतः।
ब्रह्मणो गुण वैषम्याद्················ ॥ २।१०।३

अव्यक्तसे व्यक्त होना, एकसे अनेक होना, निराकारसे साकार होना, सूक्ष्मका स्थूल होना सृष्टि है। यह परिणाम प्रकृतिका है। श्रीमद्भागवतमें कई स्थानों पर माया और प्रकृति एकार्थक हुए हैं। कई स्थानोंपर भगवदिच्छाको ही प्रकृति कहा है। भागवतकारका मन्तव्य है कि स्वयं भगवान् ही प्रकृति, जीव और अनन्त कार्योंके रूपमें प्रकट होते हैं। वे अपने आपकी, अपने आपमें, अपने आपसे सृष्टि करते हैं। इस प्रकार वे स्रष्टा, स्रज्य और सृष्टि तीनों हैं। प्रतीत होनेवाले भेदोपभेद अथवा विभिन्नता मायिक अथवा असत् है। यह दृष्टि वेदान्तकी है। भाव दृष्टिसे अथवा भक्तकी दृष्टिसे क्रीडा करने अथवा रमणेच्छासे भगवान् सृष्टि करते हैं। श्रुति कहती है—स एकाकी नारमत, ततो द्वितीयमसृजत, स रन्तुमैच्छत्। जीव जगत्का निर्माण करके भगवान् उनके साथ क्रीडा करते हैं। यह चराचर जगत् उनका लीला-विलास है। इस प्रकार भक्तकी दृष्टिमें कर्म और तज्जन्य सुख-दुःखका अस्तित्व नहीं है। कर्म और उसके फल केवल लीला मात्र हैं।

विसर्ग

प्रकृतिके गुण-वैषम्यसे जो विराट् सृष्टि होती है उसे सर्ग कहा गया है। विराट्के एक खण्डमें ब्रह्माके द्वारा जो व्यष्टि सृष्टि अथवा विविध सृष्टि होती है. उसे विसर्ग कहते हैं। सर्ग महान् है, विसर्ग अल्प। विसर्ग भी परमात्माकी अनुभूति प्राप्त करनेके लिए ही है। एक ब्रह्माण्ड शरीरधारी रजोगुणी ब्रह्मा हंस रूपी परमात्माके आधारपर विद्या रूपी सरस्वतीके सहयोगसे चारों वेदोंके ज्ञानका आश्रय लेकर जीवोंके प्राक्तन कर्मका स्मरण करके उन कर्मोंके अनुसार नाना भोगायतनों, कर्मायतनों (शरीरों)-का निर्माण करते हैं। पहले पहल उन्हें भी सृष्टिके सम्बन्धमें कुछ स्मरण नहीं। वे सृष्टिके मूलका अन्वेषण करते हैं। फिर भगवत्प्रेरणासे सर्गके आश्रय भगवान्का उन्हें साक्षात्कार होता है, तव वे यथापूर्वमकल्पयत् सृष्टि करते हैं। यह सृष्टि मानसी है। इसी कारण ब्रह्माकी सृष्टिमें विविधता है। शरीर-संयोगसे उत्पन्न सृष्टिमें वैविध्यका अभाव है। अनन्त जीवोंके प्राक्तन कर्मोंके कारण ही सृष्टिमें वैविध्य होता है। मानसाः प्रजा असृजन्त। मनसे परोक्ष कर्मोंको देखा जा सकता है। महाभारतमें आया है—

प्रजापतिरिदं सर्वं मनसैवासृजत् प्रभुः।
तथैव देवानृष्यांस्तपसा प्रतिपेदिरे॥

श्रीमद्भागवतकार कहते हैं—

भगवद्ध्यानपूतेन मनसान्यांस्तदासृजत्।

तथा—

अथाभिध्यायतः सर्गं दश पुत्राः प्रजज्ञिरे।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीमद्भागवतमें विसर्गका लक्षण देते हुए कहा गया है—

विसर्गः पौरुषः स्मृतः । (२।१०।३)

तथा—

पुरुषानुगृहीतानामेतेषां वासनामयः ।
विसर्गोऽयं समाहारो बीजाद् बीजं चराचरम् ॥ (१२।७।१२)

वस्तुतः ब्रह्माकी सृष्टिका नाम विसर्ग है। ब्रह्माके द्वारा जीवोंके वासनानुसार एक बीजसे दूसरे बीजका जो होना है—अर्थात् चराचरकी जो सृष्टि है, वही विसर्ग है। संक्षेपमें वासना-विशिष्ट सृष्टिका ही नाम विसर्ग है। यह विसर्ग भगवान्‌के सर्वोत्कृष्ट ज्ञान, सर्वोत्कृष्ट शक्ति और सर्वोत्कृष्ट क्रियाका बोधक है। विसर्ग-द्वारा आश्रयभूत भगवान्‌को शीघ्र ही ढूंढा जा सकता हे।

स्थान

भगवान्‌की यह तीसरी लीला है। श्रीमद्भागवतोक्त लक्षण—स्थितिर्वैकुंठविजयः के अनुसार भगवान्‌की सर्वश्रेष्ठताका ख्यापन ही स्थिति है। मनुष्यकी स्थूल दृष्टिने जगत्‌के स्थूल स्थानोंको ही देखा है। सूक्ष्म जगत्‌के सम्बन्धमें उसकी जिज्ञासा तो बहुत बड़ी है परन्तु ज्ञान अत्यल्प। अपनी खोजके आधारपर उसने इस स्थूल जगत्‌का भी वहुत कम पता लगाया है। भगवान् व्यासने तीन लोक, पाँच प्रकारके स्वर्लोक एवं नीचेके सात लोकोंके नाम गिनाए हैं। श्रीमद्भागवतके पंचम स्कंधके चौवीसवें अध्यायमें इन सबका वर्णन आया है। ऊपरके सात लोक, नीचेके सात लोक, उसमें भी भूर्लोकके सात द्वीप और सात समुद्रकी चर्चा की गई है। सात द्वीपोंमें जो जम्बूद्वीप है, उसके भी नौ खण्ड हैं। उनमें भारतवर्ष एक वर्ष या खण्ड है—

"तत्रापि भारतमेववर्षकर्मक्षेत्रमन्यान्यष्टवर्षाणि स्वर्गिणां पुण्यशेषोपभोगस्थानानि भौमानि स्वर्गपदानि व्यपदिशन्ति।" (भाग० ५।१७।११)।

इसके साथ ही श्रीमद्भागवतमें तीन प्रकारकी स्थितियोंका वर्णन है, पृथ्वी-लोककी स्थिति, ऊर्ध्व-लोककी स्थिति और अधोलोककी स्थिति। पृथ्वीलोकमें भी चार प्रकारके स्थान हैं—१. मनुष्यलोक, २. नरकलोक, ३. प्रेतलोक, ४. पितृलोक। मनुष्यलोकमें हैं उद्भिज, स्वेदज, अण्डज और जरायुज। नरकलोकमें प्राणी अपने पापकर्मोंका फल भोगने जाता है। वहाँ वह यातना-शरीरसे फल भोगता है। अन्तरिक्षमें थोड़ी दूरतक प्रेतलोक है। पितृलोकमें पुण्यात्माओंका स्थान है। भगवान्‌में असंख्य ब्रह्माण्डोंके धारणकी शक्ति है। शुकदेवजीने उन्हें भगवान् धारणाश्रयः कहकर प्रणाम किया है।

प्रत्येक लोकमें कर्तव्य-अकर्तव्यादि शास्त्र-मर्यादाओं और उनकी संचालन-परिचालन व्यवस्थाओंको देख विवेकी जन भगवान्‌की महत्ता उनके और न्यायकी महिमापर मुग्ध होते हैं। साथ ही भगवान्‌की दया अथवा अनुकम्पा भी सदैव साथ लगी रहती है। यही कारण है कि स्थान-लीलाके उपरान्त श्रीमद्भागवतमें पोषण अथवा अनुग्रहकी चर्चा की गई है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पोषण अथवा अनुग्रह

'पोषणं तदनुग्रहः' कहकर पोषण अथवा अनुग्रहको भगवान्‌की लीला या नित्य धर्म बताया गया है। भगवान् अपनी विसर्ग-सृष्टिमें मनुष्य, देवता और दैत्य सभीपर समान रूपसे कृपा करते हैं। अजामिलादि नर सृष्टिके उदाहरण हैं। गुरु-अपमानी इन्द्रपर अनुग्रह करना देवसृष्टिपर अनुग्रहका उदाहरण है। अतः अनुग्रह-लीला सजातीय-विजातीय सभी प्रकारकी सृष्टिके साथ चल रही है। भगवान्‌के यहाँ किसी प्रकारका भेदभाव नहीं। वे सभीको अपनानेके लिए समान भावसे उद्यत हैं।

ऊति

'ऊतयः कर्मवासनाः' कर्मवासनाको ऊति कहते हैं। कर्म-बन्धन ही जीवको भगवान्‌से भटकाता है। वह सोचता है कि मैं अमुक कर्म करके सुखी हो जाऊँगा। इसी विश्वाससे वह प्रपञ्चोंमें फँसता है और प्रिय-अप्रिय, शुभाशुभ कर्मोंमें जकड़े जाकर नाना गतियोंको भोगता है। उसकी वासना ही उसके दुःखका कारण है। अतः भागवतकारने इन वासनाओंका वर्णन करके जीवको सजग करनेकी सफल चेष्टा की है। वासना दो प्रकारकी है—शुभ और अशुभ। संत-संग और भगवान्‌की दयासे शुभ वासना होती है और संतोंके द्वेष स्वरूप अशुभ। जय-विजयने सनकादिकसे द्वेष किया और परिणामतः तीन जन्मोंतक उन्हें दुःख भोगना पड़ा। प्रह्लादजीको संत नारदजीके उपदेशके फलस्वरूप भगवद्‌भक्ति प्राप्त हुई। श्रीमद्-भागवतके सप्तम स्कंधका तात्पर्य ही सदाचार-द्वारा कर्मवासनाका त्याग और सद्भावनाओंका ग्रहण है।

मन्वन्तर

श्रीमद्‌भागवतमें 'मन्वन्तराणि सद्धर्मः' कहकर मन्वन्तरकी व्याख्या की गई है। मन्वन्तर-लीलामें समयकी गणना देकर कल्पों और मन्वन्तरोंमें हुए और होनेवाले मनुओंका उल्लेख किया गया है। ब्रह्माके एक दिनमें चौदह मनु बदल जाते हैं। वर्तमान श्वेतवाराह कल्पमें छह मनु व्यतीत हो चुके हैं। सातवें वैवस्वत मनु चल रहे हैं। अगले सावर्णि, दक्षसावर्णि आदि सात मनुओंका नाम निर्देश कर दिया गया है। वैवस्वत मन्वन्तरमें भगवान्‌का वामनावतार मन्वन्तरावतार है। प्रत्येक मन्वन्तरके ऋषि, इन्द्र और देवता निश्चित हैं। मनुओंका कार्य सद्धर्मकी रक्षा करना है। सद्धर्मसे शीघ्र ही महापुरुषोंकी कृपा प्राप्त होकर भगवान्‌का अनुग्रह प्राप्त कर लिया जाता है अन्यथा अनेक जन्मोंतक संसारमें भटकना पड़ता है।

ईशानुकथा

ईशानुकथाकी परिभाषा देते हुए श्रीमद्‌भागवतकारने कहा है—

अवतारानुचरितं हरेश्चास्यानुवर्तिनाम्।
सतामीशकथाः प्रोक्ता नानाख्यानोपबृंहिताः॥ (२।१०।५)

मन्वन्तरोंकी दीर्घ परम्पराओंके नित्य प्रवाहमें पड़ा जीव भगवदाश्रयसे ही ऊपर उठ सकता है, अतः भगवान् और भगवान्‌के भक्तोंके अनेक आख्यानोंसे भक्तिकी सिद्धि करके अन्तःकरण-

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

की शुद्धि और ज्ञान, वैराग्य एवं भक्तिकी प्राप्ति ही इस लीलाका लक्ष्य है। भगवान्‌के अवतार स्वेच्छा और भक्तेच्छा दोनों ही आधारोंपर होते हैं। सर्वव्यापक परमात्मा भक्तोंकी आर्तिपर अव्यक्त होते हुए भी भक्तेच्छा-परवश वहीं प्रकट हो जाते हैं। यही उनका अवतरण है। उनके इस अवतरण अथवा अवतारके अनेक भेद है—अंशावतार, गुणावतार, व्यूहावतार, अर्चावतार, आवेशावतार आदि। भगवान् श्रीकृष्ण अवतारी हैं, पूर्ण परब्रह्म पुरुषोत्तम हैं। उनके सतत चरित्र-ज्ञानसे ज्ञान, वैराग्य, भक्तिकी प्राप्ति होती है। श्रीमद्‌भागवतके तृतीय स्कन्धसे बारहवें स्कन्ध-तक भगवान्‌के अवतार और लीलाओंका ही ज्ञान है। भगवद् गुणगानके साथ उनके भक्तोंका भी यत्र तत्र महिमा-गान हुआ। भक्त और भगवान्‌में अभेद है। भक्त बाह्य-दृष्ट्या उपासक सेवक होकर भी भगवान्‌में तन्मय रहनेके कारण अभेद स्थितिवाला हो जाता है। अतः श्रीमद्‌भागवतमें प्रह्लाद, ध्रुव, अंबरीष, उद्धव, गोपियों आदिकी भक्ति-भावनाकी चर्चा डटकर की गई है। प्रत्येक अवतार एवं भक्त-चरित्रसे मानवको शिक्षा मिलती है और जीवनके चरम लक्ष्यका शुभ संकेत। जल, स्थल, आकाशकी सभी योनियोंमें भगवदवतार हुआ है। अतः परमेश्वरकी सृष्टिमें कोई भी योनि हेय नहीं। सर्वत्र भगवद् बुद्धिको सजग रखनेके लिए ही अवतार-कथाएँ हैं। अतः कहीं-पर भी, कैसी भी स्थितिमें भगवान्‌की अपार दयाका स्वरूप देखा जा सकता है।

निरोध

श्रीमद्‌भागवतकारने निरोधकी व्याख्या करते हुए कहा है—

'निरोधोऽस्यानुशयनमात्मनः सहशक्तिभिः।'

अर्थात् जब भगवान् योगनिद्रा स्वीकार करके शयन करते हैं, तब इस जीवका अपनी उपाधियोंके साथ उनमें लीन हो जाना ही निरोध है। अवतार दशामें भगवान् इस दृश्यमाण जगत्‌की विपरीत गतिका निरोध करते हैं। और भी अधिक तमोगुण बढ़ जानेपर भगवान् जगत्‌का प्रलय कर देते हैं। दुष्टोंका विनाश भी निरोध ही है। भक्तोंकी प्रापञ्चिक स्थितिको हटाकर अपनेमें लय करना भी भक्तोंका निरोध है, जिसका उपाय निरन्तर भगवद्‌गुणगान है। ज्ञानियोंका निरोध जगत्‌के नाना नाम-रूपके अभावके अनुभवकी स्थितिमें होता है। उन्हें इस प्रकार भावाभावके आश्रयस्वरूप भगवान्‌की उपलब्धि होती है। पुराणोंमें योग, सांख्य, न्याय आदिके सिद्धान्तोंके आधारपर खण्ड प्रलय, महाप्रलयादि माने हैं। इस प्रकारका प्रलय-वर्णन सर्वत्र पाया जाता है। जो भी हो, श्रीमद्‌भागवतके दशम स्कंधमें वर्णित श्रीकृष्ण-लीलाको भक्त्याचार्योंने निरोध लीला माना है। इन लीलाओंके अनुशीलनके परिणाम-स्वरूप चित्तकी जो तन्मयावस्था है और प्रपञ्चकी जो आत्यन्तिक विस्मृति है वही भक्तोंका निरोध है, और श्रीमद्‌भागवतकारका वही लक्ष्य है। गोपी-भाव निरोधकी सर्वोच्च स्थिति है। इसीलिए उद्धव-जैसे उच्च कोटिके ज्ञानी भक्तने "आसामहोचरणरेणु०" आदि कहकर उनकी निश्छल वन्दना की है। उपासक भक्तोंका निरोध इसी प्रकारका होना चाहिए, यही भागवतकारका मन्तव्य है।

मुक्ति

अज्ञान-कल्पित कर्तृत्व, भोक्तृत्व आदि अनात्मभावका त्याग करके वास्तविक स्वरूप परमात्मामें स्थित होना ही मुक्ति है। भागवतकार कहते हैं—

"मुक्तिर्हित्वान्यथा रूपं स्वरूपेण व्यवस्थितिः।" (२।१०।६)

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आत्यन्तिक प्रलय ही मुक्ति है। यह प्रलय प्रकृतिमें स्वाभाविक ढंगसे होनेवाले प्रलय और महाप्रलयकी भाँति सहज नहीं है। यह अगाध भगवत्प्रेमसे अथवा अगाध तत्त्वज्ञान (महाबोध)-से ही सम्भव है। भगवान् चिद्घन, आनंदघन हैं। जीवको उनकी प्राप्ति जब हो जाती है तब जीवके पुरुषार्थकी समाप्ति हो जाती है। इस मुक्तिके लिए देश-कालका बन्धन अथवा कोई व्यवधान नहीं। मुक्ति कहीं आने-जानेका नाम नहीं है। ज्ञानियोंकी मुक्तिकी अवधारणा जन्म-मरणसे रहित होना तथा आवागमनसे छुटकारा पाना है जब कि भक्तोंकी अवधारणा मात्र इतनी ही है कि उनके संसार (अहंता-ममता)-की आत्यन्तिक निवृत्ति हो जाय। इस निवृत्तिके लिए देह-त्यागकी कोई शर्त नहीं। भक्त अथवा ज्ञानी जीते जी मुक्तिका आनन्दानुभव करता है। उस स्थितिको 'जीवन्मुक्ति' कहा जाता है। अहंता-ममताकी आत्यन्तिक निवृत्ति भक्त भगवत्-कृपा-साध्य मानता है जब कि योगी, यम नियमादि अष्टांग योगमें साधन-रत रहकर समाधि-सुखमें देहाध्यास छोड़कर व्युत्थान-रहित स्थितिमें पहुँचकर आतम स्वरूपमें स्थित हो जाता है। स्वरूप-स्थिति उसका लक्ष्य है। भगवान् ही भक्तका सर्वस्व है अतः वह भक्तिकी तन्मयतावस्थामें ही मुक्तिके दर्शन करता है। भागवतकारने सालोक्य, सार्ष्टि, सामीप्य सारूप्य और सायुज्य—पाँच प्रकारकी मुक्ति मानी है। भक्तोंका आग्रह बहुधा सामीप्य अथवा सायुज्यपर रहता है। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, वेदान्त, मीमांसादि दर्शनोंने मुक्तिके उपाय अपने अपने सिद्धान्तानुसार कहे हैं श्रीमद्भागवतकारने सबका समन्वय करके भी अन्तमें नैरपेक्ष्य सिद्धान्तको ही स्वीकार किया है।

नैरपेक्ष्यपरं प्राहुर्निश्रेयसमनल्पकम्।

अतः संसार-विस्तारसे छूटकर पुरुषोत्तम भगवान्का आश्रय ही मुक्ति है। यही सर्वमान्य सिद्धान्त है।

श्रीमद्भागवतका प्रतिपाद्य तत्त्व यही पुरुषोत्तम है। इसी कारण श्रीमद्भागवतको पुराणोंका तिलक मौलिमणि माना गया है। महात्मा अखण्डानन्दजीके शब्दोंमें—"भगवान्के साथ श्रीमद्-भागवत महापुराणका प्रतिपादक-प्रतिपाद्य भाव-संबंध है। श्रीमद्भागवतके प्रत्येक पदके प्रतिपाद्य परब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीकृष्ण ही हैं।"

शुद्धाद्वैत दर्शन

वैष्णवाचार्योंकी सरणिमें आचार्य वल्लभ सबसे अन्तिम आचार्य हैं। विष्णुस्वामी प्रवर्त्तित रुद्र सम्प्रदायको[1] ही मान्यता देकर आचार्यने उसे पल्लवित किया और वैष्णव दर्शन परम्परामें अपने दार्शनिक सिद्धान्तोंको "शुद्धाद्वैत" की संज्ञा देकर "भक्तिमार्ग" को "पुष्टिमार्ग" "अथवा "अनुग्रहमार्ग" से प्रथित किया। शुद्धाद्वैत दर्शन "ब्रह्मवाद" भी कहा जाता है। "ब्रह्मवाद" नाम शंकराचार्यके अद्वैतवाद अथवा मायावादका शास्त्रीय उत्तर है। आचार्य वल्लभने अपने

१. रामानुजं श्रीः स्वीचक्रे मध्वाचार्यं चतुर्मुखः।
श्रीविष्णुस्वामिनं रुद्रो निम्बादित्यं चतुस्सनः॥ पद्मपुराणे

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दार्शनिक सिद्धान्तोंके दिव्य प्रासादकी नींव चार स्तम्भोंपर रखते हुए भारतीय वाङ्मयके नवनीत रूप निम्नांकित प्रमाण चतुष्टयके प्रति असीम आस्था व्यक्त की है। अपने 'तत्त्वदीप निबन्ध', के शास्त्रार्थ प्रकरणमें वे लिखते हैं—

वेदाः श्रीकृष्णवाक्यानि व्याससूत्राणि चैव हि।
समाधिभाषा व्यासस्य प्रमाणं तच्चतुष्टयम्[1] ॥

इन प्रमाण-चतुष्टयकी अपनी महत्ता है। आचार्यका तात्पर्य है कि वेद समस्त विद्याओंके मूल स्रोत हैं। उनका इतना विस्तार है कि अल्पजीवी जिज्ञासु उनका पार नहीं पावेगा। अतः वेदोंका नवनीत रूप श्रीकृष्ण-वाक्य अर्थात् श्रीमद्भगवद्गीता निखिल संशयोंके निराकरणके लिए समर्थ है। गीताके उपरान्त सूत्र रूपमें समस्त तत्त्व ज्ञान यदि प्राप्त करना हो तो ब्रह्मसूत्र अलं होंगे। ब्रह्मसूत्र भी यदि दुरूह सिद्ध हो तो तीनोंका सार रूप श्रीमद्भागवत महापुराण नर-जन्मकी सम्पूर्ण संसिद्धिके लिए पर्याप्त है। इस प्रकार आचार्यके मतमें उपर्युक्त प्रमाण-चतुष्टय उत्तरोत्तर सरल, सुबोध और पूर्णतम हैं। चतुष्टयमेंसे एक ही 'प्रमाण' तत्त्व-ज्ञान-प्राप्तिके लिए पर्याप्त है। इस प्रकार आचार्यने अपने दार्शनिक सिद्धान्तोंका भवन इन प्रमाण-चतुष्टयपर आधारित किया है। इनमें भी भक्ति-प्राण आचार्यका सर्वाधिक आग्रह अन्तिम प्रमाण—श्रीमद्भागवत महापुराणपर ही केन्द्रित है। दो मन दुग्धके बूतेपर दीप-वर्त्तिका नहीं जलाई जा सकती किन्तु उसका सार रूप घृत भले ही दो तोले ही, दीप-वर्त्तिका प्रज्ज्वलित की जा सकती है। इसी कारण आचार्यने अपने सम्पूर्ण सिद्धान्तोंको श्रीमद्भागवतके आधारपर सार रूपमें जिन तीन निबन्धोंमें निबद्ध किया उनको 'तत्त्वदीप निबन्ध' की संज्ञा दी। इस नामके ग्रहण करनेके मूलमें भी आचार्यश्रीको भागवतसे ही प्रेरणा मिली है। श्रीमद्भागवतके उपक्रम एवं उपसंहारमें यह नाम स्पष्ट संकेतित है।[2]

श्रीमद्भागवतमें 'अध्यात्मदीप' (१-२-३) अथवा 'तत्त्वदीप (१२-१३-६८) अथवा 'ज्ञान प्रदीप '(१२-१३-१९) भागवतके प्रतिपाद्य तत्त्व 'सत्यं परं धीमहि' के संपुट[3]में प्रज्ज्वलित किए गए हैं। श्रीमद्भागवतका प्रतिपाद्य अथवा ध्यातव्य परं सत्य है। इसका प्रथम बार महापुराणके मंगलाचरणमें संकेत दिया जाकर ग्रन्थके अन्तमें पुनः उसी प्रतिपाद्यकी पुनरावृत्ति[4] कर

---

१. त० दी० नि० शास्त्रार्थ प्रकरण श्लोक—७

२. यः स्वानुभावमखिल श्रुतिसारमेकमध्यात्मदीपमतितितीर्षतां तमोऽन्धम् ॥ (उपक्रम १।२।३)
तथा—व्यतनुतकृपयायस्तत्त्वदीपं पुराणं।
तमखिलवृजिनघ्नं व्याससूनुं नतोऽस्मि ॥ (१२।१२।६८ उपसंहार)
एवं— कस्मै येनविभासितोऽयमतुलो ज्ञानप्रदीपः पुरा ॥ १२।१३।१९ ॥
मध्यमें भी—य एतत् समधीयीत पवित्रं परमं शुचि।
स पूयेताहरहर्मा ज्ञानदीपेन दर्शयन् ॥ ११।२९।२७।

३. श्रीमद्भागवत १।१।१ उपक्रम (संपुट दीपकका पात्र)
धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि। १।१।१।

४. तत्र ज्ञानविरागभक्तिसहितं नैष्कर्म्यमाविष्कृतम्। उपसंहार १२।१३।१९।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दी गई है। "सत्यं परं धीमहि" तीनों ही शब्द भागवत-प्रतिपादित ज्ञान, वैराग्य एवं भक्ति तीनों तत्त्वोंके सूचक हैं। ज्ञान-वैराग्यकी दोनों वर्त्तिकाएँ भक्तिके 'स्नेह' के बिना प्रज्वलित होने अथवा प्रकाश देनेमें असमर्थ हैं। वेदोपनिषद्-प्रतिपादित ज्ञान तत्त्व एवं ब्रह्मसूत्र-प्रतिपादित अद्वैत तत्त्व अथवा गीतोक्त नैष्कर्म्य यदि एक ही स्थानपर सारभूत मिलते हैं तो वह स्थान श्रीमद्भागवत महापुराण है। यही कारण है कि पुराणोंमें श्रीमद्भागवत शिरोमणि महापुराण है। श्रीमद्भागवतके प्रतिपाद्य 'सत्यं परं धीमहि' वासुदेव श्रीकृष्ण ही हैं। दशम लीला—आश्रयकी विशुद्धि (पूर्ण सिद्धि)-के लिए सर्गादि नव लीलाओंका अनुकथन करके श्रीकृष्ण तत्त्वके प्राकट्यपर ठीक ग्रन्थके मध्यमें श्रीमद्भागवतकारने पुनः अपने परं सत्यम्का स्मरण दिलाया है।

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं
सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।
सत्यस्य सत्यमृतसत्यनेत्रं
सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः॥ १०।२।२६।

प्रस्तुत श्लोकमें नौ बार 'सत्य' शब्दकी आवृत्ति इस बातका संकेत देती है कि प्रत्येक स्कंधका प्रतिपाद्य तत्त्व सत्य ही है। वही सत्य एक साथ घनीभूत होकर दशम-तक पहुँचते पहुँचते सगुण साकार हो गया। यावन्मात्र भूत समुदाय उसी परं सत्यकी शरण जाता है, क्योंकि वही सबका आश्रय है। इसी सत्यात्मक 'भगवान्में जीव मात्रका निरोध होता है। निरुद्धता सगुण साकारमें सरल होती है, निराकारमें अत्यन्त दुरूह। अतः भागवत सगुण साकार प्रतिपादक ग्रन्थ है और आचार्य वल्लभ कट्टर साकारोपासनाग्रही भक्त्याचार्य हैं। भागवतका यही गूढार्थ प्रतिपादन करनेके लिए आचार्यने साकार ब्रह्मवादकी स्थापना की है। गोस्वामी विट्ठलनाथजीने अपने पिताके इस तात्पर्यको समझा था और इसीलिए सर्वोत्तम स्तोत्रमें उन्होंने अपने पिता आचार्य वल्लभके विषयमें कहा है :—

श्रीभागवत - गूढार्थ - प्रकाशन - परायणः।
साकार - ब्रह्मवादैक - स्थापको वेदपारगः॥ (सर्वो॰ स्तो॰ श्लो॰ ८)

अर्थात् 'आचार्य श्रीवल्लभ श्रीभागवतके गूढार्थ प्रकाशनमें परायण है। वे एक मात्र साकार ब्रह्मवादकी स्थापना करनेवाले वेदोंके पारंगत विद्वान् हैं।'

आचार्य वल्लभके दार्शनिक सिद्धान्तोंकी सुदृढ नींव श्रीमद्भागवतकी आधार भूमिपर ही स्थित है। आचार्यने ब्रह्मकी साकारताके दृढ आग्रहकी प्रेरणा भागवतके दिव्य वक्ता ज्ञानी भक्तोंमें शिरोमणि श्री शुकदेवजीसे ग्रहण की। शुकदेवजीने पुण्यलोक भगवान्की दिव्य लीलाओंका आकर्षण स्वीकारते हुए स्पष्ट कहा है—

परिनिष्ठितोऽपि नैर्गुण्य उत्तम-श्लोक-लीलया।
गृहीतचेता राजर्षे आख्यानं यदधीतवान्॥ २।१।६।

प्रस्तुत श्लोकमें 'आख्यानम्'का एकवचनीय प्रयोग विचारणीय है। यह 'आख्यान' निश्चय ही दशम-स्कन्धीय आख्यान निरोध-लीला-नायक श्रीकृष्णका संकेत दे रहा है। तात्पर्य यह कि आचार्य वल्लभके ब्रह्मवादके आदि तत्त्व परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण ही हैं। वे ही

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आधार हैं, वे ही आधेयं हैं। इसीलिए आचार्यने अपने 'तत्त्वदीप'के प्रथम निबन्ध शास्त्रार्थ प्रकरणमें भगवान् श्रीकृष्णको प्रणाम करते हुए कहा है—

नमो भगवते तस्मै कृष्णायाद्भुतकर्मणे।
नाम - रूप - विभेदेन जगत् क्रीडति यो यतः॥ (त० दी० नि० १)

रूपके बिना लीला फलित नहीं, अतः आचार्य नामरूप और नामलीलामें भेद नहीं मानते। नामरूप अथवा नामलीलाके माननेसे ब्रह्मका सर्वरूपत्व फलित होता है।[1] ब्रह्मका सर्वरूपत्व ही आचार्यको अपने दार्शनिक सिद्धान्तके लिए मान्य है। नामरूप अथवा नामलीलामें भी अभेद है। इनमें भेद तभीतक भासता है जबतक पूर्ण ज्ञान नहीं होता। जिस प्रकार जगत्का नानात्व जीवको तभी-तक भासता है जबतक वह पूर्ण ज्ञानी नहीं। पूर्ण ज्ञान हो जानेपर ज्ञानीको जगत् जिस प्रकार भगवद्रूप लगता है, उसी प्रकार उसका नाम-रूपका भेद भी मिट जाता है।

शुद्धाद्वैत सिद्धान्तमें ब्रह्मका स्वरूप

शांकर सिद्धान्तमें ब्रह्म परमार्थतः निर्धर्मक, निर्विशेष, निराकार और निर्गुण रूपमें मान्य है। आचार्य वल्लभ ब्रह्मसूत्रके ही आधारपर 'सर्वधर्मोपपत्तेश्च' 'सर्वोपिता च तद्दर्शनात्' आदि सूत्रोंके आधारपर ब्रह्मको सर्वधर्मोपेत मानते हैं। ब्रह्ममें इयत्ता न आवे, अतः आचार्य ब्रह्ममें नियत धर्मवाद नहीं मानते। अत्यन्त निर्गुण ब्रह्मको अंगीकार करनेसे उसका ज्ञान होना संभव नहीं है। ऐसी दशामें मोक्ष-रूप पुरुषार्थकी सिद्धि भी संभव नहीं होगी। अतः वल्लभाचार्यकी ब्रह्मविषयक मान्यतामें वह (ब्रह्म) सर्वधर्म-विशिष्ट, सच्चिदानन्द, परब्रह्म, व्यापक, अव्यय, सर्वशक्तिमत्, स्वतन्त्र, सर्वत्र, एवं निर्गुण अर्थात् प्राकृत धर्म-रहित है। निबन्धके शास्त्रार्थ प्रकरणमें आचार्य-श्रीने लिखा है—

पंचात्मकः स भगवान् द्विषडात्मकोऽभूत् पंचद्वयी शतसहस्रपरामितश्च।
एकः समोऽप्यखिलदोष - समुज्झितोऽपि, सर्वत्र पूर्ण गुणकोऽपि बहूपमोऽभूत्॥
निर्दोष पूर्ण गुण विग्रह आत्मतन्त्रो निश्चेतनात्मक - शरीर - गुणैश्च हीनः।
आनन्दमात्र - कर - पाद - मुखोदरादि सर्वत्र च त्रिविध - भेद - विवर्जितात्मा॥
—१-२ त० दी० नि० शास्त्रार्थ प्रकरण, श्लोक ४३, ४४

"ब्रह्मेति, परमात्मेति, भगवानिति शब्द्यते[2]" श्रीमद्भागवतके इस आदेशानुसार उपनिषदोंका जो ब्रह्म है, स्मृतियोंमें वही परमात्मा व पुराणोंमें वही भगवान् पूर्ण पुरुषोत्तम सर्वत्र अभेद रूपसे प्रतिपाद्य है। इसी तथ्यकी सिद्धिके लिए आचार्यने अपने निबन्धमें उसे 'भगवान्' पुकारा है। वे ब्रह्म अथवा परमात्मा शब्दोंका प्रयोग नहीं करते। किन्तु उस भगवान्की सम्पूर्ण व्याख्या करते हुए कहते हैं कि वह भगवान् पंचात्मक अर्थात् अग्निहोत्रादिके अवयव—देश, काल, द्रव्य, कर्त्ता और मंत्रात्मक है, अथवा पंच प्राण अथवा व्यूहात्मक है, अथवा पंचमहाभूतात्मक है। देहमें भगवान् प्रपंचात्मक, ध्यानके लिए प्रादेश

१. अथवा सर्वरूपत्वान्नाम-लीला-विभेदतः। शा० प्र० श्लोक० ६।
२. श्रीमद्भागवत १।२।११।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मात्र, आश्रयके लिए अंगुष्ठ मात्र है।[1] इसी प्रकार वह द्वादशात्मक, द्वादश सूर्यात्मक, द्वादश-मासात्मक, द्वादशांग पुरुषात्मक रूप होकर दशदिग्पालात्मक, दशेन्द्रियात्मक, दशविधलीलात्मक अथवा दशावतारात्मक हैं। इससे भी आगे वे शत, सहस्र परामित हैं अर्थात् शत, सहस्रसे भी आगे अमित, असंख्यात्मक और विभूति-रूप हैं। यह सब होते हुए भी वे एक हैं, सम हैं, सब रूपोंमें एक ही हैं, प्रादेश मात्र और अंगुष्ठ मात्र दोनों प्रकारसे न्यूनाधिक होकर भी समान हैं, समस्त दोषोंसे विवर्जित ऐश्वर्यादिका तारतम्य होकर भी पूर्ण गुणवाले हैं, फिर अनन्त उपमा-वाले हैं, ज्ञानादि गुणस्वरूप होकर निर्दोष, पूर्णगुणयुक्त विग्रहवान् अर्थात् स्वरूपवाले भी हैं, गुणाधीन होकर भी आत्मतन्त्रवाले हैं अर्थात् वे प्रभु पूर्ण स्वतन्त्र हैं। देहेन्द्रियादिके कार्योंकी प्रतीति उनमें होती है, किन्तु जागतिक देहेन्द्रियादिककी भाँति वे जडात्मक नहीं, अर्थात् जाड्य-धर्मसे वे रहित हैं। आकारकी प्रतीति आनन्द मात्र कर-पाद मुखोदरादि इस प्रकार होती है।[2] इसी प्रकार जड (जगत्), जीव और अन्तर्यामीमें त्रिविध भेदके बिना पूर्णरूपेण अनुस्यूत हैं। संक्षेपतः वे सर्व कारण हैं। ब्रह्म सगुण निर्गुण दोनों ही हैं। मायाके कारण वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तियुक्त भासता हो ऐसी बात नहीं है, अपितु निर्गुण अविकृत सच्चिदानन्द ब्रह्म ही (मायाके कारण नहीं) स्वभावसे ही सर्वज्ञ सर्वशक्तिमत् और कर्त्ता है।[3] ब्रह्म व्यापक हैं। देश, काल, वस्तु, स्वरूप इन चतुर्धा परिच्छेदोंसे रहित है। इसी लिए सजातीय, विजातीय और स्वगत इन तीन भेदोंसे विवर्जित (रहित) हैं। जीव और ब्रह्म सजातीय हैं, जड और ब्रह्म विजातीय है, अन्तर्यामी स्वगत है। इन तीनोंमें ब्रह्म सम्यक् रूपसे अनुस्यूत है।[4] वह सत्य, शौच, दया आदि अनन्त स्वाभाविक गुणविशिष्ट है। माया उसके अधीन है, वह मायाके अधीन नहीं। वह केवल नहीं, अद्वैत है, सर्वरूप है, वही सेव्य और ज्ञेय है। वही सच्चिदानन्द ब्रह्म कर्त्ता है, भोक्ता हैं, अन्तर्यामी है, वैश्वानर है।[5] आधार आधेय भी वही है वही प्राणभृत्, भूमन्, अक्षर, प्रशासक, सेतु, विचरण और पर पुरुष है। वह परतः पर है, परमात्मा है, अपहतपाप्मन्, दहर, परज्योति और आकाशादि है। वही अव्यक्त, सूक्ष्म, जीवाधिष्ठाता और त्रिवृत्कर्ता है, नाम-रूप-व्याकरणकर्त्ता, सबका अभिन्न निमित्तोपादान कारण है। सूत्रकारका ब्रह्म-विषयक यही आशय है। वह लौकिक अथवा प्राकृत आकृति-रहित है। उसी प्रकार साकार आनन्दाकार है। रसाकार है। लौकिक देहमें जैसे देह और जीव भिन्न हैं उसी प्रकार ब्रह्ममें देह-आत्माका कोई पृथग् भाव नहीं है, अपितु पूर्ण आनन्दात्मक और रस रूप है। वह सर्वतः पाणिपादान्त, सर्वतोक्षि, शिरोमुख है, सबका आवरण करके वह व्याप्त है। ब्रह्मके ये सब धर्म जगदाविर्भाव होनेपर ही स्पष्ट होते हैं। फिर भी वे (धर्म) सब नित्य हैं, सहज हैं, स्वाभाविक हैं। जिन श्रुति वाक्योंमें ब्रह्मके धर्मोंका निषेध

---

१. केचित्स्वदेहान्तर्हृदयावकाशे, प्रादेशमात्रं पुरुषं वसन्तम्।
चतुर्भुजं कंज-रथांग-शंख-गदाधरं धारणया स्मरन्ति ।

२. ब्रह्मवादका सिद्धान्त है कि आनन्द ही आकारवान् होकर निस्सीम परिपूर्ण रसमय रस-प्रचुर और आनन्दघन हो गया है। शर्कराकी पुत्तलिका जिस प्रकार आद्योपान्त माधुर्यमय है, उसी प्रकार ब्रह्म भी आद्योपान्त आनन्दघन है। (ब्रह्म० १।१।१३)

३. परास्य शक्तिः विविधैव श्रूयते। स्वाभाविकी ज्ञान-बलक्रिया च ॥ शु० सि० प्र०

४. तत्तु समन्वयात्—ब्रह्मसूत्र १।१।४ ५. ब्रह्मसूत्र १।२।२५

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है उन्हीं वाक्योंमें पुनः धर्मोंका कथन भी है। अतः श्रुति प्राकृत, धर्मोंका ही निषेध करती है। ब्रह्ममें अप्राकृत सर्व धर्म हैं। इसीलिए सूत्रकारने कहा है, 'प्रकृतैतावत्वं हि प्रतिषेधति ततो ब्रवीति च भूयः[१]'। सर्वधर्मवान् ब्रह्मको स्वीकार करनेसे द्वैतकी आपत्ति होती है, यह शंका निर्मूल है। क्योंकि 'प्रकाशाश्रयवद् वा तेजस्त्वात्[२] 'सूत्रमें धर्म और धर्मीकी एकता सूत्रकारने ही प्रतिपादित कर दी है।' सर्वधर्मोपपत्तेश्च[३] तथा 'सर्वोपेता च तद्दर्शनात्'[४] आदि सूत्र, स्पष्ट रूपसे ब्रह्ममें स्वाभाविक सर्व धर्मों का प्रतिपादन करते हैं।

निर्गुणवादी भी ब्रह्मको नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त मानते हैं। अतः नित्यत्वादि धर्म ब्रह्ममें सहज मानने पड़ते हैं। परन्तु केवल इतने ही धर्म माननेसे मायावादियोंका ब्रह्म नियत धर्मवाी हो जाता है और ब्रह्ममें इयत्ता दोष आ जाता है। अतः ब्रह्ममें अनियत धर्मवाद स्वीकार करना ही पड़ता है और इस प्रकार वह सहज ही सर्वधर्मोपेत हो जाता है। इस दृष्टिसे जगत्, जीव सब ब्रह्मके कार्य हैं; ब्रह्म रूप हैं, ब्रह्मानन्य और ब्रह्माभिन्न हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी ब्रह्म प्रापंचिक पदार्थोंसे भिन्न, विलक्षण और अलिप्त हैं।[५] क्रीडा करनेकी इच्छाके कारण आनंदांश तिरोभूत हो जानेसे ऐश्वर्यादि भगवद् धर्मोंकी जडत्वादि रूपोंमें प्रतीति होती है। सम्पूर्ण जगत्में ब्रह्म ओतप्रोत है।[६] सम्पूर्ण जगत् अव्यक्त रीतिसे ब्रह्ममें लीन है। वही लीलेच्छासे उसे प्रकट करता है, क्योंकि वह स्वतन्त्र कर्ता है। यही कारण है कि ब्रह्मवाद सत्कार्यवाद ही स्वीकार करता है। फिर भी वहाँ द्वैतकी गंध भी नहीं। इसीलिए आचार्य कहते हैं—जहाँ, जिस कारण, जिससे, जिसका, जिस लिए, जिस प्रकार, जो भी जिस समय होता है वह सब प्रधान पुरुषेश्वर ब्रह्म ही है।[७] इसीलिए ब्रह्मको अनवगाह्य माहात्म्य कहा गया है। वही सर्व वेदान्त प्रतिपादित निखिल धर्म युक्त सर्व भवन समर्थ है। ऐसे ब्रह्मका उक्त महात्म्य ज्ञान होनेपर उसके प्रति सुदृढ सर्वतोधिक स्नेह हो जाना ही भक्ति है। श्रवण, मनन निदिध्यासनादि साधनोंसे बहिरंग शुद्ध होनेपर स्वयं आविर्भूत स्वप्रकाशस्वरूप भगवान्में सायुज्य लाभ रूप परमपुरुषार्थकी सिद्धि हो जाती है।

ब्रह्मका विरुद्धसर्वधर्माश्रयत्व

शांकर-मतवादियोंका कथन है कि ब्रह्म परमार्थतः केवल निधर्मक, निर्विशेण, निर्गुण, निराकार है। अनिर्वचनीय मायाके कारण वह सधर्मक भासमान होता है। अर्थात् ब्रह्ममें

---

१. ब्रह्मसूत्र ३।२।२२
२. ,, ३।२।२८
३. ,, २।१।३५
४. ,, २।१।२६
५. प्रकृतिस्थोऽपि पुरुषो नाज्यते प्राकृतैर्गुणैः ।
अविकारादकर्तृत्वान्निर्गुणत्वाज्जलार्कवत् ॥ भाग० ३।२७।१
६. मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव । भगवद् गी०
७. यत्र येन यतो यस्य यस्मै यद् यद् यथा यदा ।
स्यादिदं भगवान् साक्षात् प्रधान पुरुषेश्वरः ॥ त० दी० शा० ६६

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सर्वज्ञत्व सर्वशक्तिमत्व, कर्तृत्वादि गुण परमार्थतः नहीं, मायाके कारण उसमें इन धर्मोंका आरोप मात्र होता है। इस प्रकारके मायाशवलित ईश्वरकी उपासना करते करते अविद्या निवृत्त हो जाती है और आरोपित धर्मोंका निरसन होकर निर्विशेष, निर्धर्मक, ज्ञेय ब्रह्म शेष रह जाता है। इस प्रकार शांकर मतावलम्बियोंको श्रुतियोंसे अलग निराधार कल्पना करनी पड़ती है। उनका कथन है—ब्रह्म निर्गुण है, माया शवल (समष्टि अज्ञानयुक्त) है, ईश्वर सगुण है, ब्रह्म 'पर' है, ईश्वर 'अपर' है, निर्गुण प्रतिपादिका ब्रह्म-विद्या 'परा विद्या' है, सगुण-प्रतिपादिका ईश्वर-विद्या 'अपरा विद्या' है। किन्तु सूत्रकारने 'उभयव्यपदेशात्त्वहिकुण्डलवत्'[१] तथा प्रकाशाश्रयवद् वा तेजस्त्वात्[२] आदि सूत्रोंका अवलम्बन देकर विरुद्धसर्वधर्माश्रययुक्त ब्रह्मका प्रतिपादन किया है। विरुद्ध धर्म और विरुद्ध गुण भी ब्रह्मके आश्रयसे ही टिक सकते हैं। ब्रह्मका माहात्म्य ही कुछ इस प्रकारका अनवगाह्य है क्योंकि वह सर्वभवन समर्थ है। उपनिषदोंने 'यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह' कहकर उसी स्थानपर यह भी कह दिया—"आनंदं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन" इस प्रकार ब्रह्मके दोनों ही धर्म कह दिये गए। अतः ब्रह्म प्राकृत-धर्म-रहित अप्राकृत सकल धर्म-विशिष्ट है। इसीलिए सूत्रकारने कहा है—'प्रकृतैतावत्वं हि प्रतिषेधति ब्रवीति च भूयः।'[३] अर्थात् ब्रह्मके दो प्रकारके रूप हैं—मूर्त (पृथ्वी आदि रूपमें), अमूर्त, वायु आदि रूपमें फिर उसका प्रतिषेध (यह नहीं है; यह नहीं है) कहकर भी उसको पुनः पुनः कहा गया।

अतः ब्रह्म निर्धर्मक होकर भी सधर्मक है, निराकार भी है, साकार भी है, निर्विशेष भी है, सविशेष भी है, निर्गुण भी है, सगुण भी, अणुसे अणु और महान्‌से महान् है। वह अनन्त मूर्ति होकर भी एक ही है और व्यापक है, कूटस्थ होकर भी चल है, अकर्त्ता होकर भी कर्त्ता है, अविभक्त और विभक्त दोनों ही है, अगम्य भी है, गम्य भी। 'अपि संराधने प्रत्यक्षानुमानाभ्याम्'[४] के अनुसार अदृश्य भी है दृश्य भी, नाना विधि सृष्टि करके भी सम है, विषम नहीं, क्रूर कर्म करके भी निर्घृण नहीं, संक्षेपमें ब्रह्म और ब्रह्म-धर्म सूर्य और उसकी प्रभाकी भाँति अनन्त है। ब्रह्मके धर्म मिथ्या नहीं। ये धर्म मायाके कारण उसमें भासित होते हों ऐसी बात नहीं। ये सर्व धर्म ब्रह्ममें स्वाभाविक हैं। वह बड़ा विचित्र है। वह अनेक रूप होकर भी गाढ धनीभूत सैंधववत् बाह्याभ्यन्तर सदा सर्वदा एक रस, शुद्ध बालककी भाँति होकर भी रसिक-मूर्द्धन्य, स्ववश किन्तु भक्त-परवश, अभीत किन्तु भक्तके निकट भयभीत, निरपेक्ष किन्तु भक्तके निकट सापेक्ष, चतुर किन्तु भक्तके निकट महामुग्ध है। सर्वज्ञ होकर भी वह भक्तके निकट अज्ञ, आत्पाराम होकर भी रमणेच्छायुक्त है[५], पूर्णकाम होकर भी भक्त की कामना पूर्ण करनेके लिए कामार्त है, अदीन होकर भी भक्तके संमुख दीन है, स्वयंप्रकाश होकर भी भक्तके सम्मुख प्रकाश एवं अन्ध अप्रकाश है, बहिःस्थ होकर भी अन्तःस्थ है, समस्त कार्योंमें ब्रह्मकी स्थिति होकर भी 'नाज्यते प्राकृतैर्गुणैः[६]' वे स्पर्श वाह्य हैं, आधार भी हैं आधेय भी हैं, फिर भी अविकृत निर्लेप हैं।

---

१. ब्रह्मसूत्र ३।२।२७ २. ब्रह्मसूत्र ३।२।२८ ३. ब्रह्मसूत्र ३।२।२२
४. ब्रह्मसूत्र ३।२।२४। ५. (अ) आत्मारामोप्यरीरमत्। भाग० १०।२९।४२।
(ब) रेमे स भगवांस्ताभिरात्मारामोऽपि लीलया॥ भाग० १०।३३।२। ६. भाग० ३।२९।१

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्रीडार्थ ही कृपापूर्वक 'लोकवत्तु लीलाकैवल्यम्' के लिए लीला करते हैं। यह लीला स्वरूपाभिन्न, तद्रूप, तदनन्य, परमफल-रूपा है। ब्रह्म प्रमाण भी है, प्रमेय भी, साधन भी है, फल भी। सबका ज्ञापक भी वही ब्रह्म है फिर भी स्पर्श-बाह्य है। उसके लिए कहा गया है—'न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते।' उसके समान न तो कोई है, न होगा, फिर उससे अधिक तो कोई दीखता ही नहीं। कभी वह 'समो मशकेन समो नागेन' है, कभी मच्छरके समान है तो कभी हाथीके। ऐसे ब्रह्मको जो जानता है वह कभी भी भय नहीं पाता। वह समस्त वादोंसे ऊपर स्वतः स्वेच्छासे समस्त वादोंके अनुकूल हो जाता है। प्रत्येक वाद ब्रह्मके एक-एक धर्मका प्रतिपादन करता है और ब्रह्म तदनुकूल हो जाता है। ब्रह्म इन्द्रियातीत होकर भी स्वेच्छासे दृश्य और गम्य हो जाता है। अवतार-दशामें वह प्रापंचिक धर्मोंको अंगीकार करके भी अच्युत रहता है। ऐसा निस्सीम, अगाध माहात्म्यवाला वह अविकृत रहकर भी परिणाम (रूप)-को अंगीकार करता है।

ब्रह्मका सर्वकर्तृत्व

शांकर मतमें परमार्थतः निर्गुण ब्रह्ममें कर्तापनका आरोप मायाके कारण है। ज्ञानसे उसका अपवाद किया जाता है। शांकर मत ब्रह्मको कारणरूप स्वीकार नहीं करता। कारण-रूप स्वीकार करनेसे द्वैतापत्ति प्राप्त हो जायगी। साथ ही ब्रह्मके आप्तकामत्वपर भी दोष आता है। ब्रह्मके कारण-रूप होनेपर उसमें अपूर्णता सिद्ध हो जायेगी। परन्तु ऐसी बात नहीं है। सूत्रकारने 'लोकवत्तु लीलाकैवल्यम्' कहकर उसे सहज रूपसे 'कारण' सिद्ध कर दिया है। ब्रह्मके जगत्कारण होनेमें केवलाद्वैतवादियोंको ब्रह्ममें विकार आ जानेका भी भय होता है क्योंकि विकारके बिना परिणाम कैसे संभव है, आदि-आदि। परन्तु बात ऐसी नहीं है। ब्रह्ममें विरुद्ध-धर्माश्रयत्व स्वीकार कर लेनेपर और उसको सर्वभवन, समर्थ, अनवगाह्य मान लेनेपर उसके परिणाम रूपमें परिवर्तित हो जानेपर भी वह अच्युत अविकारी बना रहता है। अपने अगाध माहात्म्यके प्रदर्शनार्थ ही अच्युत अविकारी ब्रह्म जगद्रूपमें परिणाम-रूप होता है और फिर भी वह अविकारी है। ब्रह्मवाद (शुद्धाद्वैत दर्शन) जन्माद्यस्य यतः को स्वीकार करके निर्गुण, अद्वैत, सच्चिदानंद ब्रह्मको सहज कर्ता मानता है। उसका कर्तृत्व स्वाभाविक है, न मायिक है न आरोपित है। अकेला अद्वितीय ब्रह्म जब रमणेच्छावाला होता है तब 'एकोऽहं बहु स्याम्' की इच्छा-शक्तिसे कृपामय होकर स्वयं ही वह अनन्य रूपमें विद्यमान हो जाता है। उपनिषत्कार कहते हैं—"एकाकी न रमते स द्वितीयमैच्छत्" स्वयं भगवान् ही आविर्भूत होकर क्रीडा करते हैं। यही वैदिक सिद्धान्त है। आविर्भाव-तिरोभाव सिद्धान्तके आधारपर ही अविकृत, निर्गुण सच्चिदानन्द ब्रह्म ऊर्णनाभि, अहिकुण्डल, कामधेनु, कल्पवृक्ष, चिन्तामणि रूपमें अनन्त लीलाएँ करते हैं। अतः उनका कर्तृत्व न मायाकृत है न आरोपित है। केवल स्वकीय माहात्म्य प्रदर्शनार्थ है। वस्तुतः सगुण ब्रह्म गुणाभिमानी होनेसे परतन्त्र है। कर्तृत्व (कर्तापन)के लिए पूर्ण स्वतन्त्रता अपेक्षित होती है। अतः अविकारी निर्गुण, अद्वैत सच्चिदानन्द ब्रह्म ही जगत्कर्ता है। सगुण कर्ता (नामरूपोपाधिर्युक्त) माननेपर ब्रह्ममें स्वतन्त्रता की हानि होती है। अतः तत् सवितुः वरेण्यम्, बहुस्याम् प्रजायै एव, स ह एतावान् आस, तत् आत्मानम् स्वयं अकुरुत, आत्मैव इदं

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सर्वम्, यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते' आदि श्रुतिवाक्योंसे अद्वैत अविकारी ब्रह्मका ही कर्तृत्व सिद्ध होता है। श्रुति वाक्योंके उपरान्त 'जन्माद्यस्य यतः; शास्त्रयोनित्वात्' आदि बादरायण सूत्रोंसे, अहं सर्वस्य प्रभवः, मत्तः सर्वं प्रवर्तते, जैसे श्रीमद्भगवद्गीताके वाक्योंसे एवं 'जन्माद्यस्य यतोन्वयादितरतः' श्रीमद्भागवतके प्रथम मंगलाचरणसे निर्गुण अविकारी ब्रह्मका कर्तृत्व ही उपदिष्ट है। अतः 'तत्तु समन्वयात्' सूत्र-पर्यन्त सत् रूप एवं चित् रूप ब्रह्मका जगत्कारणत्व अपने आप ही सिद्ध हो जाता है।

ब्रह्मको सर्वकर्ता मान लेनेपर भी किसीको सुख और किसीको दुःख देनेवाला विषम व्यवहारी नहीं मानना चाहिए। न ही प्रलयादि कर्ता होनेसे उसे निर्घृण मानना चाहिए। ब्रह्म-सूत्रकारने उसे कर्म-सापेक्ष स्वीकार किया है। भाष्यकारने उसे आत्मसृष्टिके कारण विषमता, नित्यलीलाके कारण इन दोनों दोषोंसे ब्रह्मको मुक्त माना है। आचार्यका यह (लीलामयताका) समाधान सर्वोत्कृष्ट समाधान है। ब्रह्मपर कर्मका नियामकत्व आचार्यको स्वीकार नहीं क्योंकि जड होनेके कारण कर्म किसी भी फलको देनेमें असमर्थ है। यदि ऐसा मान लिया जाय कि कर्मानुसार ईश्वर फल देते हैं तो सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र परब्रह्म भी फलाधीन हो जाता है और उसकी स्वतन्त्रता समाप्त हो जाती है। अतः परब्रह्मको कारण माननेसे ही सब शंकाओंका निरसन हो जाता है। नानाविध सृष्टि करके भी वह विषम नहीं और क्रूरकर्मा होकर भी वह निर्घृण नहीं। दोनों ही बातें ब्रह्ममें विरुद्ध सर्वधर्माश्रयत्व आरोप करके आचार्य वल्लभ ब्रह्मको संपूर्ण दोष-रहित सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र स्वीकार करते हैं। सृष्टिका नानात्व वे लीला अथवा क्रीडार्थ ही स्वीकारते हैं।

ब्रह्म-जगत्-अनन्यत्व

शांकर मतमें ब्रह्म सत्य है और जगत् (परमार्थतः) मिथ्या है[१]। आचार्य वल्लभको यह स्वीकार नहीं। वे जगत् और ब्रह्मका शुद्ध अद्वैत माया-रहित अभेद अनन्यत्व अंगीकार करते हैं। जगत्को उन्होंने ब्रह्मका आधिभौतिक स्वरूप माना है। अतः जगत् और ब्रह्म अभिन्न हैं।[२]

आचार्यके सिद्धान्तमें ब्रह्मके तीन रूप हैं—१-परब्रह्म आधिदैविक स्वरूप है। २—-अक्षर ब्रह्म आध्यात्मिक स्वरूप है और जगत् आधिभौतिक स्वरूप। तीनों ही अनन्य, अभिन्न हैं। सूत्रकार भगवान् वेदव्यासने भी 'तदनन्तत्वं' अधिकरणमें जगत् ब्रह्मका अनन्यत्व ही स्वीकार किया है। किन्हीं भाष्यकारोंने 'अनन्यत्व'का अर्थ मिथ्यात्व किया है। यह भिन्नार्थ उचित नहीं। अनन्यत्वका अर्थ 'मिथ्यात्व' होता ही नहीं।

जिस प्रकार घट और मृत्तिकाके सम्बन्धमें घट अन्ततोगत्वा मृत्तिका[३] ही है, अतः घट सत्य है, क्योंकि घट मृत्तिकाका ही एक प्रकार है। वह मृत्तिका रूप ही है, मृत्तिका अनन्य है और वह सत्य है। अतः घटको सत्य माननेमें कोई हानि नहीं। वस्तुकी सत्ता होनेपर ही उसकी

१. ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या।

२. हरिरेव जगत् जगदेव हरिः हरितो जगतः न हि भिन्नतनुः।
इति यस्य मतिः परमार्थगतिः स नरः भवसागरमुद्धरति॥

३. मृत्तिका इत्येव सत्यम्।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उपलब्धि होती है, वस्तु न हो तो उसकी उपलब्धि कैसे संभव होगी। जगत्की उपलब्धि होती है अतः जगत् सत्य है। श्रुति कहती है 'सदेव सौम्य ! इदमग्र आसीत्। यदिदं किं च तत् सत्यम् असद् वा इदमग्र आसीत्।' आदि वाक्योंसे जगत्की सत्ता और उसका सत्यत्व सिद्ध होता है। संवेष्टित (लिपटा हुआ) कपड़ा एवं विस्तृत पट जिस प्रकार एक ही है, दो भिन्न पदार्थ नहीं, उसी प्रकार आविर्भाव तिरोभाव सिद्धान्तके कारण ब्रह्म-जगत्में अनन्यत्व है। वे दो नहीं। जैसे प्राण-अपान आदिके नियमन अनियमनसे प्राण भेद नहीं होता, उसी प्रकार ब्रह्म-जगत्का भेद भी नहीं होता। अविकारी ब्रह्मके जगद्रूप, जगत्-अनन्य होनेपर भी उसमें भोक्तृत्व भोग्यत्व भाव विद्यमान रहता है। जिस प्रकार लूता (मकड़ी) अपनी लारसे जाला तान लेती है और उसमें विहार करके फिर उसी जालको अपनेमें लय करके एकाकी हो जाती है उसी प्रकार जगत् और ब्रह्म भोग्य भोक्ता होकर भी एक ही हैं। इसी प्रकार स्वर्ण कटक मूलतः स्वर्ण ही हैं। स्वर्ण कटक और स्वर्ण कुण्डल भिन्न नाम रूपवाले होकर भी स्वर्ण हैं। जैसे कटकको कुण्डल नहीं कहा जाता, कुण्डलको कटक नहीं कहा जाता; उसी प्रकार भोक्ताको भोग्य और भोग्यको भोक्ता नहीं कहा जाता। वैसे ही जगत् ब्रह्म होकर भी जगत् है और ब्रह्म, ब्रह्म। यही ब्रह्मका अनवगाह्य माहात्म्य है। यही शुद्धाद्वैत सिद्धान्तमें कार्य कारणका शुद्ध मायारहित अनन्यत्व है।

अक्षर ब्रह्म

ब्रह्मके आध्यात्मिक स्वरूपको अक्षर ब्रह्म कहते हैं। ब्रह्मका आधिदैविक रूप भक्त्यैकरूप लभ्य है। परन्तु जो शुद्धाद्वैतवादी ज्ञानी हैं उन्हें अक्षर ब्रह्मकी प्राप्ति होती है। जगत् तो ब्रह्मका आधिभौतिक रूप कहा ही जा चुका है। अक्षर ब्रह्ममें, आनन्दका तिरोधान होनेपर भी जीवसे विलक्षण है। सृष्टिकी इच्छा करने और कार्यमें व्याप्त होनेसे अक्षर ब्रह्म तिरोहितानन्द कहा गया है। वस्तुतः वह है आनन्दमय ही। अक्षर ब्रह्मकी घनीभूत इच्छाका नाम ही प्रकृति है। अतः वह (अक्षर ब्रह्म) प्रकृतिसे भिन्न है। पुरुषका अवतार भी उसी (अक्षर ब्रह्म)-से हुआ है। इसीलिए अक्षर ब्रह्म प्रकृति और पुरुष दोनोंसे भिन्न एवं उत्कृष्ट है। अक्षर ब्रह्ममें सर्वावरणयुक्त कोटिशः अण्ड हैं। यह परमधाम, परमव्योम एवं आधेय है। ज्ञानियोंको यह परमफल रूपमें प्रतीत होता है। सद्योमुक्तिके समय ज्ञानी जन इसीके चरणारविंदमें प्रवेश करते हैं। इसीलिए इसको चरणस्थानीय कहा गया है। ज्ञान-मार्गमें तो अन्तमें आनन्द है जबकि भक्ति मार्गमें प्रारम्भ-से ही आनन्द है। अतः ज्ञानीके लिए अक्षर ब्रह्म ही सेव्य है। अक्षर ब्रह्मके और पुरुषोत्तमके भेद-निरूपणका उद्देश्य श्रीकृष्णका माहात्म्य ही है क्योंकि श्रीकृष्ण अक्षरसे उत्कृष्ट हैं, अधिक हैं, ज्यायान् पुरुष हैं। इसीलिए कहा गया है—'अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः।' श्रीहरि पूर्णानन्द हैं, अक्षर ब्रह्म गणितानन्द। मृत्युस्तावदेव धावति यावदक्षरम्। अक्षरपर्यन्तमेव काल-निरूपणात्। सु० १०।८७।५०। अर्थात् अक्षर-तक ही काल (मृत्यु)-की दौड़ है क्योंकि अक्षर-तक ही कालका निरूपण किया गया है।

जीव

पूर्ण ब्रह्मकी 'एकोऽहं बहु स्याम्' में एक हूँ अनेक होऊँ—ऐसी रमणेच्छा होनेपर अपना पूर्णानन्द तिरोहित करके 'जीव-स्वरूप' ग्रहण करके ब्रह्म क्रीडा करता है, यही ब्रह्मवादका सिद्धान्त है। ब्रह्मवाद यह नहीं स्वीकार करता है कि—जीव रूप भासित होनेमें अविद्या कारण है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'मैं अनेक होऊँ, उच्च होऊँ, नीच होऊँ' ऐसी भावना करनेपर ब्रह्मकी इच्छा मात्रसे ही साकार, सूक्ष्म, परिच्छिन्न, चित्प्रधान, असंख्यात अंशोंका उससे (ब्रह्मसे) निर्गमन हुआ। जिस प्रकार अग्नि पुंजसे अनन्त विस्फुलिंगोंका व्युच्चरण होता है उसी प्रकार स्वरूप-भोग एवं जीव-भोगकी सिद्धिके लिए भगवदनुग्रहसे आनन्दांशके तिरोहित होनेपर षडैश्वर्य-विहीन जीवका आविर्भाव हुआ। ऐश्वर्यके तिरोभावसे दीनता, पराधीनता, वीर्यके तिरोभावसे सर्व-दुःख-सहन, यशके तिरोभावसे सर्वहीनत्व, श्रीके तिरोभावसे जन्मादि एवं सर्वापद्-विषयत्व, ज्ञानके तिरोभावसे देहादिमें अहं बुद्धि एवं विपरीत ज्ञान एवं वैराग्यके तिरोभावसे विषयासक्तिका आविर्भाव जीवमें हुआ। ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्रीके अभावसे बन्धन एवं ज्ञान वैराग्यके अभावसे विपर्यय हुआ। यह बन्धन एवं विपर्यय जीव-स्वरूपको होता है, ब्रह्म - स्वरूपको नहीं। ब्रह्मवादमें आत्माके तीन लक्षण माने गए हैं—अनादित्व, निर्गुणत्व, प्रकृति-नियामकत्व। इसके साथ ही ब्रह्मवाद स्वयं प्रकाशत्व भी स्वीकार करता है। दूसरे शब्दोंमें हम इसे 'विनिद्रद्रष्टा' कह सकते हैं। श्रुति भी कहती है—आत्मा स्वयं ज्योतिर्भवति।' इसी आधारपर ब्रह्मवादमें जीव नित्य है। उसकी उत्पत्ति नहीं होती। शांकर मतमें जीवके नित्यत्वकी सम्भावना ही नहीं है। नाम-रूपकी उपाधिसे जिसका सम्बन्ध होता है उसीकी उत्पत्ति मानी जाती है। विस्फुलिंगवत् व्युच्चरण उत्पत्ति नहीं है। इसी प्रकार शांकर मतमें जीव विभु है, ब्रह्मवाद (शुद्धाद्वैत)-में अणु। जब तक आनंदांश तिरोहित रहेगा जीवको विभु मानना उचित नहीं। जिस प्रकार सर्व-धर्म-विशिष्ट ब्रह्म, कर्ता और भोक्ता है उसी प्रकार उसका अंश जीव भी कर्ता एवं भोक्ता है, बुद्धि कारण मात्र है। शांकर मत जीवको अकर्ता मानता है। उसके कर्तृत्वमें अविद्याको कारण मानता है। कर्ता शास्त्रार्थवत्वात् सूत्रके अनुसार जीवके कर्तृत्वके लिए ही अभ्युदय, निःश्रेयस फलपूर्वक धर्माचरणका विधान किया गया है। आचार्य वल्लभ, जीवको ब्रह्मका अंश स्वीकार करते हैं। 'ममैवांशो जीवलोके' यह स्वयं भगवानने स्वीकार किया है। शांकर मतमें प्रतिबिंबवाद स्वीकार किया गया है। किन्तु बिंब-प्रतिबिंबका ऐक्य संभव नहीं होता। विरुद्ध-धर्माश्रयत्व स्वीकार करके जीवको ब्रह्मका अंश बड़े आरामसे स्वीकार किया जा सकता है।

जगत्सत्यत्व

शांकर मतमें जगत्का ब्रह्ममें विवर्त माना जाता है। किन्तु शुद्धाद्वैत सिद्धान्तमें जगत्का अभिन्न निमित्तोपादान कारण ब्रह्म ही है। जगत् भगवद्रूप है, भगवदनन्य है, यह ब्रह्मवादका निष्कर्ष है। जगत्की उपलब्धि होती है, अतः जगत् सत् है।[1] घट है इसलिए घटकी उपलब्धि है। अभाव होगा तो उपलब्धि नहीं होगी। वस्तुतः घट भी मृत्तिकाका एक प्रकार ही है। उसी प्रकार जगत् भी ब्रह्म रूप ही है। श्रुति कहती है 'सदेव सौम्य इदमग्र आसीत्। यत् इदं किंच तत् सत्यम् इति वाचक्षते।' और इस प्रकार श्रुति भी जगत्का सत्यत्व प्रतिपादित करती है। पहले यह अव्याकृत अव्यक्त था। 'तदात्मानं स्वयमकुरुत'-के अनुसार जगत् रूपमें अपनेको व्यक्त कर दिया। संवेष्टित वस्त्र जिस प्रकार ग्राह्य नहीं होता, विस्तारमें आनेपर ही उसकी प्रतीति होती है, उसी प्रकार तिरोभावकी स्थितिमें अव्यक्त जगत्की भी प्रतीति नहीं होती। आविर्भाव

१. भावे च उपलब्धेः। ब्रह्मसूत्र

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दशामें ही उसकी प्रतीज्ञि किंवा उपलब्धि होती है। शांकर मतके अनुसार जगत्को यदि असत्य मान लें तो फिर जगत्से मोक्ष-प्राप्तिकी साधना-प्रवृत्तिका व्याघात हो जायगा। मानव-वासनाके मूलमें भी जगत्की सत्ता और उसकी प्रतीति ही है। अतः अन्वय-व्यतिरेकसे जगत्का सत्यत्व ही सिद्ध होता है। 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म तज्जलानीति'' के अनुसार जगत् ब्रह्ममेंसे ही उत्पन्न, उसीमें स्थित और उसीमें लय पाता है। अतः सब जगत् सत्य और ब्रह्म रूप ही है।

जगत् संसार भेद

जगत् और संसारमें भेदकी सूक्ष्मताका निरूपण सर्वप्रथम आचार्य वल्लभने ही प्रस्तुत किया। इसका संपूर्ण श्रेय उन्हींको है। जगत् भगवत्कार्य है, भगवद् रूप है, किन्तु संसार अहंता-ममतात्मक है और जीव-द्वारा कल्पित है। इसका नाश ज्ञान-द्वारा हो जाता है। ज्ञानी जनोंको मोक्ष सिद्धि होनेपर भी जगत्की प्रतीति बनी रहती है, उसका सर्वसुखावह लय तो भगवान् ही आत्मरमणेच्छासे कर सकते हैं। 'द्वैत' अविद्याका कार्य नहीं, किन्तु द्वैत ज्ञान अवश्य ही अविद्याका कार्य है। ब्रह्म जीव अथवा ब्रह्म जगत् यह ब्रह्म कार्य है। द्वैत-ज्ञान पार्थक्य बोधवाली बुद्धि—अविद्याका कार्य हैं। अविद्याके कार्य जीव द्वारा होते हैं, ब्रह्म द्वारा नहीं। गीतामें भगवान् कहते हैं :

'अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः।' जीवकी उत्पत्ति अविद्यासे नहीं, उसका आविर्भाव विस्फुलिंगकी भाँति ब्रह्मसे होता है। उसका आनंदाश तिरोहित होनेसे अविद्याके कारण उसका बन्धन होता है और उसकी संज्ञा संसारी हो जाती है। मूलतः वह संसारी नहीं। अहंता ममताके कारण ही सर्व दुःख सहन जीवके लिए अनिवार्य हो गया है। तत्त्व ज्ञानसे संसारका लय होता है, क्योंकि संसारकी प्रतीतिमें पंचपर्वा अविद्या हेतु भूता है। यह पंच पर्वा अविद्या-स्वरूपाज्ञान, देहाध्यास, इन्द्रियाध्यास, प्राणाध्यास एवं अन्तःकरणाध्यासके रूपमें विद्यमान रहती है। अतः जीव और ईश्वर-सम्बन्धी दो अज्ञान माननेकी आवश्यकता नहीं रहती। वस्तुतः ब्रह्मकी माया शक्तिसे ही विद्या-अविद्याका आविर्भाव होता है। आत्माको ही विद्यासे स्वरूप-लाभ और अविद्यासे देह-लाभ होता है। विद्या-अविद्या श्रीहरिकी ही शक्तियाँ हैं। उन्हींकी इच्छासे इन शक्तियोंका आविर्भाव-तिरोभाव होता है। इनसे छूटनेके लिए ही भगवान्ने कहा है—

'मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।'

'प्रपद्यन्ते' में निश्चय ही भक्तिकी ओर भगवान्ने संकेत दिया है। भक्तिसे ही नित्ययुक्तता सुलभ है, यही भगवान्का तात्पर्य सिद्ध होता है। वैराग्य सांख्य, योग, तप और प्रेम (भक्ति) इस पंचपर्वा विद्यासे पंचपर्वा अविद्याका नाशकर जीव अपना संसार (अहंता-ममताको) निवृत्त कर सकता है। जीवका देह जगन्मध्यपाती है। अध्यास उसे संसारान्तः-पाती बनाता है।

शुद्धाद्वैत-सिद्धान्तकी विलक्षणता

शांकर मतमें तथा शुद्धाद्वैत (ब्रह्मवाद) दोनोंमें ही अद्वैत ग्राह्य है। शांकर मत सर्व द्वैत, माया, अविद्या, मिथ्या मानकर जगत् एवं जीवकी व्यावहारिकताको मानकर हमारा समाधान

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रस्तुत करनेकी चेष्टा करता है जब कि शुद्धाद्वैत भगवदिच्छा, भगवत्कृपा, भगवत्-क्रीडा, भगवल्लीला, भगवद् रूप आदि शब्दोंसे हमारा समाधान प्रस्तुत करके सबका सामंजस्य प्रस्तुत करता है। इस प्रकार अद्वैत सिद्ध करनेकी दो पद्धतियाँ हमारे समक्ष हैं—पहली यह कि परमार्थतः सब मिथ्या है, जो एक मात्र अवशिष्ट रहता है, वही अद्वितीय वस्तु ब्रह्म है।

दूसरी पद्धति यह स्वीकार करती है कि जो कुछ भी है, वह मिथ्या नहीं अपितु मूल अद्वितीय वस्तुका ही रूपान्तर मात्र है, विवर्त अथवा भ्रम नहीं। शांकर मत कहता है—'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या।' आचार्य वल्लभ स्वीकारते हैं—'सर्वं खल्विदं ब्रह्म।' माया ब्रह्मकी शक्ति है, यह वल्लभीय सिद्धान्त शांकर मतावलम्बियोंको कष्टप्रद है, अतः अस्वीकार्य है। ब्रह्मको सर्वशक्तिमत्, सधर्मक माननेसे उन्हें तत्काल द्वैतापत्ति हो जाती है। शांकर मतावलम्बियोंको ब्रह्ममें सधर्मत्व, सर्वशक्तिमत्व, माया अथवा अविद्याके कारण ही आरोपित लगता है उसमें ये तत्त्व परमार्थतः नहीं है। परन्तु आचार्य वल्लभ श्रुति सिद्धान्तानुसार ब्रह्मको परमार्थतः सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमत्, सर्वव्यापक, सर्वकर्ता, सर्वभोक्ता, सर्वरक्षक, सर्वसंहर्ता, स्वीकार करते हैं। यही दोनों सिद्धान्तवादियोंमें भेद है। ब्रह्ममें सर्वविरुद्धधर्माश्रयत्वका मुख्य सिद्धान्त स्वीकार कर लेनेपर शांकर मतकी सम्पूर्ण आपत्तियाँ स्वयमेव निरस्त हो जाती हैं।

पुष्टिमार्गीय भक्ति

पुष्टिमार्ग आचार्य वल्लभसे उद्भावित एक भक्तिमार्ग है, जिसका स्रोत भी अन्य भक्तिमार्गोंकी भाँति श्रीमद्भागवत ही है। आचार्यने अपने भक्तिमार्गके लिए प्रस्थान चतुष्टय माने हैं। उनमें श्रीमद्भागवतकी गणना अन्तिम है और इसकी चर्चा 'समाधि भाषा' के रूपमें की गई है।[1] जिज्ञासु एवं भक्ति-साधनारत व्यक्तिके लिए श्रीमद्भागवत ही ऐसा ग्रन्थ है जो उसकी समस्त जिज्ञासाओंका समाधान करता हुआ भगवत् तत्त्वका साक्षात्कार करा देता है। आचार्यने मानव-जीवनका लक्ष्य भगवद्-भक्तिको ही माना है। उन्होंने स्पष्ट कहा है—'पूर्णानन्दो हरिस्तस्माज्जीवैः सेव्यः सुखार्थिभिः।'[2] अर्थात् पूर्ण आनन्द स्वरूप श्रीहरिः ही हैं इसलिए सुख चाहनेवाले जीवको सदैव उनकी (श्रीहरिकी) ही सेवा करनी चाहिए। क्योंकि ज्ञानमार्ग भ्रान्तिमूलक है अतः बुद्धिमान् सदैव कृष्णका ही भजन करे।[3] कृष्ण तत्त्व ही श्रीमद्भागवतका प्रतिपाद्य 'भगवान्' है। वही गीता उपनिषदादि वेदान्त ग्रन्थोंमें ब्रह्म एवं स्मृतियोंमें परमात्मा

१. वेदाः श्रीकृष्णवाक्यानि व्याससूत्राणि चैव हि।
समाधिभाषा व्यासस्य प्रमाणं तच्चतुष्टयम्॥ तत्वदीप नि० ७॥ शा० प्र०

२. श्रुतिगीता—७

३. ज्ञानमार्गो भ्रान्तिमूलस्ततः कृष्णं भजेद् बुधः। श्रुति ११।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहा गया है।[1] ब्रह्म अथवा परमात्माका चिंतन ही संभव है। चिंतनमें जब रसात्मक अनुभूतिका समावेश हो जाता है तब ब्रह्म अथवा परमात्माका 'भगवान्' रूप भक्त अथवा साधकके समक्ष प्रत्यक्ष होता है। यह प्रत्यक्षानुभूति ऐसी रस दशा है जो मोक्ष दशासे अनन्त गुनी आनन्द-विधायिनी है। आचार्यने कहा है—"मोक्षाधिकं रसस्तु।" अर्थात् मोक्षसे रस दशा ऊँची है। अतः ब्रह्मानंदसे ऊपर उठाकर भजनानंदमें लगानेके लिए ही श्रीमद्भागवत ग्रन्थ और उसमें प्रतिपादित दशविध लीलाओंका और उनमें भी निरोध लीलाका मुख्य प्रयोजन है। निरोध लीलाका साक्षात् अनुभव अथवा योगसाधना एक ही मत है। पातंजल योग-सूत्रमें चित्तवृत्तियोंके निरोधको ही योग कहा गया है।[2] इस निरोध तत्वकी सिद्धि भगवदनुग्रह अथवा भगवान्‌की कृपाके बलसे ही होती है। कृपा अथवा अनुग्रह भगवान्‌का परम धर्म है। इसलिए इसको श्रीमद्भागवतमें 'पोषण' लीला नाम दिया गया है।[3] 'पोषण' अर्थात् अनुग्रह। 'पुष्टि' शब्द इसी 'पोषण' का स्त्रीलिंग 'क्तिन्' प्रत्यय लगकर बना है। 'पुष्टि-मार्ग' अर्थात् अनुग्रह-मार्ग। इस मार्गमें वैदिक-लौकिक साधनोंसे भगवत्प्राप्ति नहीं मानी गई, अपितु भगवान्‌की कृपासे ही, उनके अनुग्रहसे ही उसकी प्राप्ति मानी गई है। वे जिसका कृपापूर्वक वरण करें—चाहें—वही उनको प्राप्त कर सकता है। श्रुतिने भी इस तथ्यका समर्थन किया है।[4] अतः आचार्य साधना बल स्वीकार नहीं करते, साध्य अर्थात् भगवान्‌का कृपा-बल ही साधकका बल मानते हैं। भगवान्‌की कृपा विशुद्ध भगवान्‌की मर्ज़ीपर ही है। तदर्थ भगवान्‌के प्रति निश्छल प्रेम, चरम दैन्य और तीव्र इच्छा ये ही अपेक्षित हैं। जप, तप, तीर्थाटन, ज्ञान, साधना अथवा इष्टापूर्ति आदि अन्यान्य साधन सब व्यर्थ हैं, निष्केवल प्रेम ही भगवान्‌को पानेके लिए अपेक्षित है। साधक उस प्रेमको ही घनीभूत करे। एक मात्र भाव-पुष्ट प्रेमकी प्रधानतासे आचार्य वल्लभके मतमें यह मार्ग लौकिक-वैदिक आदि भगवत्प्राप्तिके मार्गोंकी अपेक्षा पुष्टि मार्ग उत्कृष्ट है[5]—इसीलिये आचार्य अपने भक्ति-मार्ग को 'स्वतंत्र भक्ति मार्ग' मानते हैं। उत्कृष्ट प्रेममें विधि और निषेध नियामक नहीं होते। विधि और निषेधोंका संगठन वेदों अथवा शास्त्रोंका काम है, विधि-निषेध मर्य्यादाके विधायक होते हैं। अतः मर्य्यादा मार्गमें ही इनकी अपेक्षा है। अतः आचार्यने 'पुष्टि-प्रवाह-मर्य्यादा भेद' ग्रन्थमें इनका अन्तर स्पष्ट कर दिया है। वे कहते हैं—'जब मैं भक्तिमार्ग कहता हूँ तो मेरा तात्पर्य पुष्टि मार्गसे ही होता है।'[6] वेदोंके अनुसरण करनेसे मर्यादाका तात्पर्य होता है।[7] सबसे अधिक उत्कर्ष भक्ति अथवा 'पुष्टि'का ही है, यह निश्चित है।[8] वैदिक धर्म विधि-निषेधात्मक है और कृतियोंसे ही साध्य है। भगवान् अविकृत एवं

---

१. वेदान्ते च स्मृतौ ब्रह्म लिंगं भागवते तथा।
ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्द्यते॥ शा० प्र० ६।

२. योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः—पात० यो० सू० ३. पोषणं तदनुग्रहः—श्रीमद्भाग० २।१०।४

४. यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः। कठो० ५. लौकिक वैदिक मार्गापेक्षया पुष्टिमार्ग उत्कृष्टः। सुबो०

६. 'भक्तिमार्गस्य कथनात् पुष्टिरस्तीति निश्चयः।' पु० प्र० म० भेद—श्लोक-२।

७. वेदस्य विद्यमानत्वान्मर्यादापि व्यवस्थिता।—वही श्लोक-३।

८. सर्वतोत्कर्षकथनात्पुष्टिरस्तीति निश्चयः।—पु० प्र० म० भेद-४।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अव्यय हैं। वे कृतियों अर्थात् धर्म कृतियों-से साध्य नहीं, वे अप्रमेय हैं अतः ज्ञानसे भी साध्य नहीं; वे निर्गुण हैं अतः भजन, दान, जपादि देह-धर्म होनेसे वे भजनादिसे भी साध्य नहीं। वे एक मात्र स्नेहसे ही साध्य हैं। स्नेह-भाव पुष्ट होता है। भगवान् भाव-रूप हैं अतः भावसे ही साध्य हैं। सुबोधिनीमें आचार्यश्रीने स्पष्ट लिखा है—"स्नेहं एव मयि न तु कृतिं मुझमें (भगवान्में) स्नेह ही अपेक्षित है। मुझे 'कृति' (बाह्य-साधनों) की अपेक्षा नहीं। मुझसे सम्बन्धित समग्र जीव-समूह स्वयं सहज ही प्रीतिमयताको प्राप्त होता है।"[१] इसलिये पुष्टिमार्गमें विधि-निषेधात्मक कर्म-मार्गकी तथा पूर्व सिद्ध ज्ञान एवं भक्तिकी लेशमात्र भी उपयोगिता नहीं।[२] तात्पर्य इतना ही कि वैदिक धर्म और पुष्टिधर्म पृथक् हैं।

इसी प्रकार पुष्टिमार्ग अन्य भक्तिमार्गोंसे भिन्न है। ज्ञानमार्ग भ्रान्तिमूलक है।[३] धर्म-साधना विधि प्रधान है। आत्मज्ञानसे मानसिक शान्ति अवश्य प्राप्त होती है किन्तु परमानंदकी नहीं।[४] धर्म-साधनासे प्राप्त होने वाले स्वर्गादि फल नाशवान् हैं। धर्म-साधना जनित पुण्योंके क्षीण होने पर गीताके अनुसार—क्षीणे पुण्ये मृत्युलोकं विशन्ति'-मृत्युलोकमें पुनः आना पड़ता है।

इस प्रकार सभी प्रकारकी धर्म-साधनाएँ कृति-साध्य क्लेशदायक, एवं महज्जन संपादनीय हैं। वेदविद् विप्रसे लेकर स्त्री शूद्रादि पर्यन्त सभीके लिए समान रूपसे समाराधनीय, श्रेयस्कर एवं सुलभ यदि कोई भक्तिमार्ग है तो पुष्टि मार्ग ही है क्योंकि इस भक्तिमार्गमें साधन और साध्यका भेद नहीं, साथ ही किसी साधनकी अपेक्षा भी नहीं।[५] यही इस मार्गकी विलक्षणता है। इस मार्गमें भगवत्प्रेम ही साधन है और वही साध्य है। प्रेम करनेवालेको भगवान् सत्वर अंगीकार कर लेते हैं, फिर उसकी पात्रतापर विचार नहीं करते। यही अंगीकार ही उगकी अनुकम्पा है जिसका श्रीमद्भगवद्गीतामें स्पष्ट संकेत है ही, 'तेषामेवानुकम्पार्थम्' अर्थात् 'उनके ऊपर अनुकम्पा करनेके लिए ही।' इस अनुकम्पा अथवा अनुग्रहसे ही साधकको लौकिक वैदिक सभी प्रकारकी सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।[६] भगवानके इस अँगीकारमें भक्तकी योग्यताका विचार नहीं। पुष्टि-भक्तिकी यह भी एक प्रचण्ड विलक्षणता है, अन्यथा दूसरे भक्ति मार्गोंमें भक्तकी पात्रता, साधना, सभीके अनुरूप फलकी प्राप्ति कही गई है परन्तु पुष्टि पथमें ऐसी कोई बात नहीं। केवल प्रभु-निष्ठा ही वहाँ सर्वस्व है। इस प्रभु-निष्ठाके समक्ष पुष्टि मार्गने धर्मनिष्ठा-को भी हेय कर दिया गया है,[७] क्योंकि समस्त धर्मोका तात्पर्य तो भगवान् ही हैं पुष्टि-भक्त उन सबका समावेश भगवान्में ही जानकर धर्मनिष्ठाके पीछे न दौड़कर प्रभु-प्रेममें मतवाला

---

१. "मम संबंधिनः सर्व एव जन्तवः स्वयमेव प्रीताः भवन्ति।"—सुबोधिनी
२. पूर्वसिद्धज्ञानभक्त्योर्नात्रोपयोगः।—सुबो०।
३. ज्ञानमार्गो भ्रान्तिमूलः—सुबो०।
४. आत्मज्ञानेऽपि शान्तता परं न परमानन्दः।—सुबो०।
५. सर्वसाधनराहित्यं फलाप्तौ यत्र साधनम्।
फलं वा साधनं यत्र पुष्टिमार्गः स कथ्यते। पुष्टि. भा. का—१
६. अनुग्रहेणैवसिद्धिर्लौकिकी यत्र वैदिकी। ,, ,, —२
७. धर्मनिष्ठा यत्र नैव पुष्टिमार्गः स कथ्यते। ,, ,, —४

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बनकर उनके प्रेमके लिए ही प्रयत्नशील होता है। इसीको लक्ष्यमें रखकर अर्जुन-जैसे भक्तको भगवान्ने श्रीमद्भगवद्गीतामें सीख दी थी–'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।' अर्थात् "हे अर्जुन ! तू सब धर्मोंका परित्याग कर केवल मुझ एककी ही शरणमें आ।"

धर्मनिष्ठाके परित्यागकी स्थितिमें भक्तमें अपने प्रभुके सुखकी सापेक्षता जग जाती है और लोक वेदकी सापेक्षताका शमन स्वयमेव हो जाता है।[1] भक्तको कोई इच्छा नहीं रह जाती। भगवान् ही अपनी इच्छासे उसका वरण कर लेते हैं। उस भगवत्कृत भक्त वरणमें अणु मात्र भी कोई हेतु नहीं होता। केवल भगवदिच्छा ही प्रधान होती है।[2] इस प्रकार पुष्टिभक्तिमें दैन्य और निस्साधनता ही मुख्य है। भक्तमें दैन्यका आर्विर्भाव उसके हृदयमें भगवान्का ही आविभाव समझा जाता है। इस प्रकारके भगवद् आविभावसे भक्तकी आशेष लौकिक इच्छाओंका विसर्जन स्वयमेव हो जाता है। उसके लिए केवल एक ही कर्तव्य रह जाता है—भाव-पोषण। भाव-पोषण ही उसके भजनका एक मात्र लक्ष्य होता है। उसके विनिमयमें वह भगवान्से रंच मात्र भी किसी उपकारकी वासना या इच्छा नहीं रखता।[3] पुष्टिभक्तिमें भगवान्से वणिक्वृत्ति रखना ही सबसे बड़ी भूल है। भक्तके लिए सर्वाधिक हेय यही वस्तु है जबकि अन्य भक्ति-मार्गोंमें भक्तिके साथ लौकिक वासनाएँ एवं दैन्यशून्य दंभ अनजानेमें लिपटे चले आते हैं।

पुष्टि भक्तिके उपर्युक्त स्वरूप-निरूपणके पश्चात् इस भक्तिके 'आलम्बन'पर भी विचार कर लेना समीचीन होगा। जैसा कि कहा जा चुका है, पुष्टि भक्तिमें साधन एवं साध्यकी भिन्नता नहीं है। पुष्टि भक्तिमें लक्ष्य सीधे भगवान् न होकर भगवत्प्रेम ही एकमात्र लक्ष्य या उद्देश्य होता है। भक्तका रागात्मक हृदय जो भाव-भावित है वही प्रभुस्थानीय है। वहीं प्रभुका आविर्भाव माना गया है। भगवदाविर्भाव ही भक्तिमार्गमें परमफल माना गया है। अनुभवगम्य भगवान् परमानंद स्वरूप हैं। परमानंदत्व अनुभूतिकी वस्तु है। जीवको 'परमानंद'का अभाव है, यही जीवका जीवत्व है। अभावको ही पुष्टि भक्तिमें 'विरह' की संज्ञा दी गई है। और इस प्रकार परमानंद स्वरूप भगवान्से भक्तका 'भाव-संबंध' पुष्टि-पथमें स्थापित किया गया है इसे लौकिक उदाहरण द्वारा प्रभुचरण हरिरायजीने स्पष्ट किया है कि जिस प्रकार कोई कन्या साग्रह अपने पतिदेवको अपना सर्वस्व समर्पित करके उसके (पतिके) परोक्षमें उसके विरह क्लेशको स्वीकार करती है उसी प्रकार भक्त भी भगवान्का विप्रयोगात्मक भावरूप क्लेश स्वीकार करता है। विरह अथवा विप्रयोग रसराज शृंगारका एक रूप है। इसलिए पुष्टिमार्गमें भगवान्को रसात्मक कहा गया है। हरिरायजीने स्पष्ट घोषणा की है—

---

१. न लोकवेदसापेक्ष्यं सर्वथा यत्र वर्तते।
सापेक्षतास्वामिसुखे पुष्टिमार्गः स कथ्यते॥ पु० ल० –६।

२. वरणे दृश्यते यत्र हेतुर्नाणुरपि स्वतः।
वरणं च निजेच्छातः पुष्टिमार्गः स कथ्यते॥ पु० ल० –७।

३. भजने यत्र सेव्यस्य नोपकारकृतिः क्वचित्।
पोषणं भावमात्रस्य पुष्टिमार्गः स कथ्यते॥ पु० ल० –१३।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रसात्मकः श्रुतिशिरः सिद्धः स पुरुषोत्तमः ।
रसः श्रृंगार एवास्ति नाट्य-सिद्धान्त-सम्मतः ।।[१]

उपनिषदोंमें जिस पुरुषोत्तमकी चर्चा की गई है वह रस रूप है और वह रस तथा श्रृंगार एक ही तत्त्व है। यह नाट्यशास्त्रका भी सिद्धान्त है। नाट्यशास्त्रके प्रणेता भरतादि आचार्योंने श्रृंगारके अतिरिक्त किसीको रसराज माना भी नहीं है। सभी अन्य रस श्रृंगारके साथ संबंध रखते हैं। यदि उनका संबंध श्रृंगारके साथ नहीं हैं तो वे 'रस' नहीं कहे जा सकते। जिस प्रकार स्वर्ण बड़ोंके अथवा बड़े काममें आनेके कारण ही 'स्वर्ण' है उसी प्रकार अन्य रस यदि 'श्रृंगार' के उपकारी हैं तब तो 'रस' हैं अन्यथा व्यर्थ हैं अथवा कुछ और हैं—रस नहीं।[२] श्रृंगार रस संयोग एवं विप्रयोग इस प्रकार द्विदलात्मक है। संयोग श्रृंगार रस-शास्त्रीय क्रिया-प्रधान है, विप्रयोग भाव-प्रधान। अतः संयोगात्मक भगवान् लोकवेद-प्रथित चतुर्व्यूहात्मक पुरुषोत्तम हैं तथा विप्रयोगात्मक भाव गूढ केवल भक्तोंके अनुभव-गम्य है। ये अनन्त कोटि लीलानायक नित्य नूतन हैं।[३] वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्धादि व्यूहात्मक भगवानका कार्य भूभारहरण, पूतनादि दैत्योंको मुक्ति प्रदान है जबकि भावात्मक शुद्धसत्त्वात्मक भगवान् अपने निज भक्तोंके लिए वसुदेव अथवा कृष्ण-रूपमें 'व्यक्तित्व' ग्रहण कर लेते हैं।[४] वही मूल रूप पुरुषोत्तम नन्दगृहमें कृष्ण रूपसे प्रकट हुए। संक्षेपमें पुष्टि भक्तिके आराध्य और सेव्य नन्दात्मज कृष्ण हैं। यही चराचरके आश्रय और श्रीमद्भागवत महापुराण वेद प्रतिपाद्य हैं।

तस्मादेकेन मनसा भगवान् सात्वतां पतिः ।
श्रोतव्यः कीर्तितव्यश्च ध्येयः पूज्यश्च नित्यदा ।। १-२-१४

समस्त वेद उन्हींका गान करते हैं। समस्त यज्ञ उन्हींके लिये हैं। समस्त योग उन्हींका उद्देश्य रखते हैं। समस्त धर्म-क्रियाएँ उन्हींके लिये होती हैं। समस्त ज्ञान उन्हींका स्वरूप है। समस्त तप उन्हींके लिए किये जाते हैं। समस्त धर्मोंके वे ही लक्ष्य हैं। वे ही चराचरकी गति हैं।

वासुदेवपरा वेदा वासुदेवपरा मखाः ।
वासुदेवपरा योगा वासुदेवपराः क्रियाः ।।
वासुदेवपरं ज्ञानं वासुदेवपरं तपः ।
वासुदेवपरो धर्मो वासुदेवपरा गतिः ।। श्रीमद्भाग० १।२।२८-२९

इन्हीं भगवान् वासुदेवने सृष्टि रचनाकी इच्छासे षोडश कला पूर्ण होकर 'पौरुष रूप' को ग्रहण किया।[५] यही 'कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्' हैं। आचार्य वल्लभने इन्हीं 'परमतत्त्व' को एक

१. श्रीपुरुषोत्तमस्वरूपाविर्भावनिर्णयः श्लोक—२
२. यथैवोपकृतिः सर्वा महतां स्वर्णनिर्मिता ।
श्रृंगारस्य तथा कार्ये रसा एवोपयोगिनः ।। वही—४
३. अनुभूति - प्रमाणैकवेद्यो मानान्तरातिगः ।
अनन्तकोटिलीलानामाश्रयो नित्यनूतनः ।। श्रीपुरु० स्व० ११।
४. वासुदेवस्तु भक्तानामन्तःकरणमूर्तिमान् ।
तमादौ स्वाश्रयीकृत्य भावात्मा व्यक्ततां गतः ।। वही० २३।
५. जग्रहे पौरुषं रूपं भगवान् महदादिभिः । १।३।१

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मात्र भजनीय बताया। इनके अतिरिक्त किसी अन्यको यदि कोई भगवान् कहता है तो विद्वान् उसे ही असुर पुकारते हैं—

जानीत परमं तत्त्वं यशोदोत्संगलालितम्।
तदन्यदिति ये प्राहुरसुरांस्तानहो बुधाः॥

आचार्यके मतमें ब्रह्मसूत्र-प्रतिपादित 'ब्रह्म' ही यशोदोत्संग-लालित श्रीकृष्ण हैं। ये ही भगवान् श्रीकृष्ण पुष्टि मार्गमें निर्दोष-पूर्ण-गुण-विग्रह पुरुषोत्तम हैं। वे ही सबका नियमन करते हैं। अशेष गुण समुहोंके एकमात्र आश्रय होकर भी वे गुणातीत हैं। अलौकिक धर्मोंसे युक्त हैं अतः सगुण हैं। प्राकृत धर्मोंसे परे हैं अतः निर्गुण हैं। आनन्द मात्र कर पाद मुखोदरादि होनेसे विग्रहवान् अथवा साकार हैं। प्राकृत अवयवोंसे रहित होनेके कारण निराकार भी हैं। इस प्रकार वे निर्दोष-पूर्ण-गुण-विग्रह भगवान् हैं। उन्हें पूर्ण ब्रह्मत्व घटता है। वे श्रीकृष्ण सर्व रूप होकर भी सबसे बढ़कर हैं—"यतो भगवान् सर्वरूपोऽपि सर्वस्मादतिरिच्यते।" इनकी सेवा ही पुष्टिमार्गीय भक्ति सायुज्य मोक्ष-दात्री है। तं भजन् निर्गुणो भवेत् इति वाक्यात् कृष्ण सायुज्य मेव निर्गुणा मुक्तिः। अतः फलके तारतम्यसे यह निर्गुण भक्ति सगुण भक्तिसे भिन्न है। नृसिह वामनादि अन्य अवतारोंकी भक्ति सगुण भक्ति है। देवी, गणेश, शिव सूर्यादि भगवान्के विभूति रूपोंकी श्रद्धा भावसे की गई पूजा अर्चा पूजा मार्ग है तथा इन देवताओंकी प्रसन्नताके उद्देश्यसे किये गए जपादि 'उपासना' कहे गए हैं। "उपासनायां मंत्र एव प्रधानम्" अतः लौकिक कामनाओंकी पूर्तिको उत्तेजना देनेके कारण आचार्य बल्लभ इसे दोषावह बताते हैं। यह उपासनामार्ग भी पुष्टि-भक्तिसे भिन्न है। ज्ञान-मार्ग क्लेशदायक है। अतः भक्ति-समन्वित ज्ञानको ही आचार्य श्रेष्ठ बतलाते हैं। "ज्ञानी चेत् भजते कृष्णं तस्मान्नास्त्यधिकः परः" ज्ञान-संवलित भक्तिको आचार्यने मर्यादा अथवा शास्त्रीय भक्ति कहा है।

श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य एवं आत्म-निवेदनात्मक नवधा भक्ति साधन-रूपां भक्ति पुकारी गई है, क्योंकि यह भक्ति साधन-सापेक्ष है। यह साधन-रूपा भक्ति भी भागवत - प्रतिपादित है। इसे ही शास्त्रीया, मर्यादा, विहिता (वैंधी) अथवा जीव-साध्यादि नामोंसे पुकारा गया है।

आचार्य वल्लभोपदिष्ट भक्ति साधन-निरपेक्षा होनेके कारण फलरूपा कहलाती है। इसमें भक्ति अथवा प्रेमका फल भक्ति अथवा प्रेम ही है। यह साधन भक्तिसे मूलतः भिन्न है। अतः इसे 'स्वतंत्र भक्ति' की संज्ञा दी गई है। यह परम दुर्लभ महद् विमृग्य है। यही अविहिता अथवा प्रेम-लक्षणा पुष्टि भक्ति है। इसमें श्रवणादि प्रेमके परिणाम स्वरूप स्वयमेव आ घुसते हैं—श्रवणादि नवधा भक्तिसे प्रेमका उदय नहीं अपितु नवधा ही प्रेमकी परिणामी हो जाती है।[1] दूसरे शब्दों में फलरूपा भक्ति और कुछ नहीं शुद्ध प्रेम ही है। यह भक्ति नितांत निरपेक्षा और स्वतंत्र है। इसके आगे समस्त साधन निष्प्रयोजन हैं। सांग साधन-भक्तिसे सायुज्य मोक्ष मिलता है। फल-रूपा भक्तिका लक्ष्य विशुद्ध भजनानंद है। आचार्य कहते हैं—

१. प्रेमैव तस्मिन् नवधोक्तभक्तिस्तत्रोपयोगोऽखिलसाधनानाम्।"

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

"यो भजनानंदः स तु ब्रह्मानंदतः शास्त्रीयभक्त्याऽनंदतश्च कोटिगुणाधिकः, अनिर्वचनीयश्च।" यही महाऽनंद है। "अयं महाऽनंदः। एतत्फलं ज्ञानमार्गेऽपि दुर्लभम्।"[1]

इसी भक्तियोगका दूसरा नाम "सेवा" है। 'भज्' धातुका प्रकृत्यर्थ ही सेवा या सेवन है। इसलिये आचार्यने स्पष्ट कहा है कि इस मार्गमें भजन ही सेवा है।[2] इसीलिये पुष्टिमार्गको 'सेवामार्ग' भी कहा गया है। सेवा तभी संपादनीय होती है जब अन्तर प्रेम हो। इस प्रकार भक्तितत्त्वके निरूपणमें आचार्य गूढसे निगूढ होते चले गए हैं।

पुष्टिभक्तिको आचार्यने निर्गुणा भक्ति भी कहा है। वे कहते हैं—"अस्मत् प्रतिपादितश्च नैर्गुण्यः"[3]। इस निर्गुण भक्तियोगका स्रोत भी श्रीमद्भागवत है। जिस प्रकार गंगाका जलप्रवाह निर्बाध प्रतिबंध - रहित पर्वतोंका भी भेदनकर निरंतर समुद्रकी ओर ही रहता है उसी प्रकार मेरे गुणोंके श्रवणमात्रसे समस्त प्राणियोंके हृदयोंमें स्थित मुझमें लोकवेदके बंधनोंसे अनवरुद्ध मन अनवरत रूपसे लगा रहता है। इसीको 'निरंतर भक्तियोग' कहते हैं।[4] काल तथा कर्मके प्रतिबंधसे अनवरुद्ध यह भक्तियोग बिना किसी फलाशाके सहजभावसे उदय होता है और एक बार उदय हो जानेपर फिर यह कभी निवृत्त नहीं होता। संक्षेपमें श्री वल्लभाचार्य-प्रतिपादित भक्तिका तात्पर्य है—केवल पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णकी प्रेममय फलाशा-रहित ही 'अहैतुकी सेवा' कही जाती है। 'सेवा' सेवाके लिये ही हो और रसलक्ष्यान्विता हो तो वही आत्यंतिकी भक्ति है। रस ही इस भक्तिका परम फल है।[5] भगवान् कहते हैं कि इस प्रकारकी रसमयी भक्ति प्राप्त कर लेनेपर भक्त सालोक्य, सार्ष्टि (समान ऐश्वर्य), सामीप्य, सारूप्यादि मुक्ति देनेपर भी वह इन्हें नहीं चाहता क्योंकि वह मेरी परम फलरूपा सेवा या फलात्मिका निर्गुण भक्तिसे वह विमुख नहीं होना चाहता।[6] इसीको लक्ष्यकर गोस्वामी तुलसीदासने कहा है—

अस बिचारि ते तज्ञ सयाने। मुकुति निरादरि भगति लुभाने॥[7]

ब्रजभक्तोंने कहा है—एक ब्रज रज चौमुक्ति वारूँ रे। गुजराती भक्त नरसी कहते हैं—'मुक्ति छै एमनी दासी रे।' क्योंकि मोक्षके ब्रह्मानंदसे भजनका महानंद अधिक बड़ा है—"ब्रह्मानंदात् महानन्दो भजने वर्तते स्फुटम्।"[8] यह भक्तियोग स्वतंत्र कहा गया है क्योंकि यह भी भगवान्की तरह अपने प्रमेय बलसे स्वतः सिद्ध है। यही पुष्टि भक्ति है। इसे ही स्नेहात्मिका सेवा कहा गया है। यह फलरूपा है। सेवा भी भगवत्कृपा या अनुग्रहसे ही लभ्य है। आचार्य वल्लभने कहा है—"सेवा च पुष्टिमार्गे सस्नेहा कृपाफलं चैतत्" अर्थात् स्नेहात्मिका सेवा प्रभुकी

---

१. सुबोधिनी। २. अस्मिन् मार्गे भजनं सेवैव। सुबो०। ३. सुबोधिनी।

४. यद्गुणश्रुतिमात्रेण मयि सर्वगुहाशये। मनो गतिरविच्छिन्ना यथा गंगाम्भसोऽम्बुधौ।
लक्षणं भक्तियोगस्य निर्गुणस्य ह्युदाहृतम्। अहेतुक्यव्यवहिता सा भक्तिः पुरुषोत्तमे।
श्रीमद्भागवत ३।२९।११

५ "सैवाऽत्यन्तिकी या स्वतो रसभावं प्राप्ता, सैव नाऽन्यत् फलमंगीकारयति।" सुबो०

६. सालोक्य सार्ष्टि सामीप्य सारूप्यैकत्वमप्युत।
दीयमानं न गृह्णन्ति विना मत्सेवनं जनाः॥

७. उत्तरकाण्ड—मानस। ८. सुबोधिनी।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कृपासे लभ्य है। अतः इस भगवदनुग्रहका अनुष्ठान गुरु-कृपासे ही संभव है। आचार्यसे उद्भावित इस मार्गमें भगवत्सेवाका अधिकार उसीको है जिसने विधिवत् आचार्य-वंशज गोस्वामी बालकसे विधिवत् दीक्षा ले ली हो। गोस्वामी विट्ठलनाथजीने अपने सर्वोत्तम स्तोत्रमें घोषणा कर रक्खी है कि "पृथ्वीपर भक्ति प्रचारके लिये ही आपने (आचार्य वल्लभने) अपने वंशकी स्थापना की और उस वंशमें अपनी भक्तिका अशेष माहात्म्य भी स्थापित कर दिया।"[1] अतः सेवा दीक्षा वल्लभ वंशजसे ही लेनेसे सेवाधिकार प्राप्त होता है। यह दीक्षा पुष्टिमार्गमें 'ब्रह्म-संबंध' कही जाती है। इसमें तीन तत्त्व समाहित हैं—१–भगवान्से भक्तका संबंध, २–सर्वस्व समर्पण तथा ३—भगवान्की शरणमें गमन। इसीलिये इसे 'आत्मनिवेदन' भी कहा गया है। दीक्षा विधि और आचार्य द्वारा भक्तके सम्पूर्ण आत्मनिवेदनको पुष्टिमार्गमें कन्याके विवाह और उसके वरको समर्पण करनेके समान कहा गया है। जैसे विवाहके उपरांत ही कन्याको अपने पतिकी सेवाका अधिकार होता है इसी प्रकार ब्रह्म-संबंध अथवा आत्म निवेदनके उपरान्त ही भक्तको भगवत्सेवाका अधिकार होता है। अतः अधिकार-प्राप्ति आवश्यक है।

दीक्षामें भक्त अपनी रुचिके अनुकूल अपने भावजगत्में भगवान्से संबंध स्थापित करनेमें स्वतंत्र है। वह चाहे तो दास्य भावसे प्रभु आराधना करे, चाहे कान्ता भावसे, चाहे पुत्रभावसे। संबंध भावना सेवासे दृढसे दृढतर हो जाती रही है। आत्मनिवेदनका दूसरा तत्त्व सर्वस्व समर्पण है। अपने आराध्य प्रभुसे भक्त कुछ भी बचा नहीं रखता। बिना समर्पित किये कुछ भी ग्रहण नहीं करता। असमर्पित वस्तुका त्याग उसका दृढ नियम होता है। 'सायिभुक्त' अथवा अर्धभुक्त वस्तुके समर्पणको वह अपराध मानता है।

समर्पितके ग्रहण और समर्पितके त्यागके कठोर नियमके पालनके परिणाम स्वरूप उसमें 'अनन्यता' आ जाती है। न वह किसी अन्य देवताका आराधक ही होता, न स्वतः वहाँ गमन ही करता है, न वह अपने आराध्यसे किसी वस्तुकी प्रार्थना या याचना ही करता है,[2] क्योंकि ऐसा करनेसे उसके प्रभुके अन्तर्यामित्वको बाधा पहुँचती है। इस प्रकार वह अनन्यता और समर्पणके दो चक्रोंवाले पुष्टिरथपर सवार होकर जीवनके सुखदुःखके मार्गको अनायास तय करता चलता है। 'आत्मनिवेदन' के तीसरे तत्त्व शरण गमनसे भक्तको निश्चिन्तता प्राप्त हो जाती है। उसे जागतिक योगक्षेमकी तनिक भी चिन्ता नहीं रहती। उसका विश्वास होता है कि भगवान् उसके लिए सब कुछ स्वयं ही करेंगे।[3] उसके लिए उसके प्रभु या आराध्यकी प्रतिज्ञा होती है—

'अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥[4]

---

१. भुवि भक्तिप्रचारैक-कृते स्वान्वयकृत्पिता।
स्ववंशे स्थापिताशेषस्वमाहात्म्यः स्मयापहः॥ सर्वोत्तमस्तोत्र—२२

२. अन्यस्य भजनं तत्र स्वतो गमनमेव च।
प्रार्थना कार्यमात्रेऽपि ततोऽन्यत्र विवर्जयेत्॥ विवेकधैर्य—१४

३. एवं सदा स्म कर्तव्यं स्वयमेव करिष्यति।
प्रभुः सर्वसमर्थो हि ततो निश्चिन्ततां व्रजेत्॥ चतु० श्लो० २ ४. श्रीमद्भगवद्गीता—९।२२

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

योगक्षेमसे निश्चिन्त हो जानेसे भक्तमें अपने एक मात्र आश्रय (भगवान्)-के प्रति भावना दृढ होकर उसमें विवेक जग जाता है। विवेककी व्याख्या करते हुए आचार्यने कहा है—भगवान् सब कुछ मेरे (भक्तके) हितमें ही करेंगे ऐसा विश्वास ही विवेक है।[1]

इस प्रकारके विवेकको पुष्ट करते रहनेसे साधक अथवा भक्तको प्रत्येक स्थितिमें भगवान्का विश्वास रहता है और वह उत्तरोत्तर भक्ति-साधनामें अग्रसर होता जाता है। दीक्षा अथवा ब्रह्म-सम्बन्ध लेनेके उपरान्त भक्त अपना सारा समय भगवत् सेवामें ही व्यतीत करता है। सेवाका फल सेवा ही है। पुष्टि-भक्त कभी सेवासे पराङ्मुख नहीं होता। सेवासे उसके बीज भावको पोषण मिलता है। यह सेवा तीन प्रकारकी कही गई है—१. तनुजा, २. वित्तजा और ३. मानसी। इनमें भी 'मानसी सेवा' सर्वोत्तम है।[2] भगवान्में साधकके चित्तकी प्रवणता ही सेवा है।[3] भगवान्में चित्तकी प्रवणतासे संसारके दुःखोंकी निवृत्ति होती है और ब्रह्मका बोध होता है।[4] यही पुष्टि भक्तिका चरम लक्ष्य है। मानसी सेवाका यही तात्पर्य है। इस सेवाकी साधनामें तीन विघ्न है—१. उद्वेग, २. प्रतिबन्ध तथा ३. भोग। उद्वेग चित्तकी अस्थिरता अथवा घबराहट है। प्रतिबन्ध लौकिक बंधन, जीविकाका बंधन अथवा समयका अभाव है। भोग, इन्द्रियोंकी तृप्ति-लालसा है। इन तीन कारणोंसे सेवा अथवा भगवान्में चित्तकी प्रवणता नहीं हो पाती। एतदर्थ गुरुसे दीक्षा,[5] शास्त्र चिन्तन एवं सत्संग आदि अनेक उपाय हैं। इन सबके लिए धैर्य और विश्वासकी आवश्यकता होती है। कठोर सगुण साकारवादी आचार्य वल्लभने इसी दृष्टिसे भगवान्की स्वरूप सेवा पर बल दिया है। स्वरूप-सेवा भी वे व्यक्तिगत रूपसे करनेका ही आग्रह करते हैं। इसलिए अपने दीक्षित भगवत्सेवकों (शिष्यों)-को उन्होंने सेवाधिकार देते हुए किन्हीं किन्हींको भगवत्स्वरूप भी दिये। वार्ताओंमें आया है—"अमुकके माथे भगवान् पधराये" से तात्पर्य भगवान्का स्वरूप सौंपना है। पुष्टिमार्गमें भगवत्स्वरूप निजी निधिके रूप प्राणाधिक प्रिय और जीवन सर्वस्व होता है। उसे 'पुष्टिमार्ग'की पद्धति (प्रणालिका)-के अनुसार राग, भोग, शृंगार, त्रिविध रूपसे अष्टयाम सेवा करते रहनेसे मनकी चिंता, चंचलता, उद्वेग, प्रतिबन्ध आदि सभी क्रमशः नष्ट होते चले जाते हैं।

सूर आदि अष्टछायी कवियोंका संपूर्ण कीर्तन-साहित्य सूरसागर, परमानन्द-सागर, कृष्ण-सागर, कुंभनदास कीर्तन-संग्रहादि—राग सेवाके ही अन्तर्गत हैं। प्रातःकाल मंगल दर्शनसे लेकर संध्याकी आरती और शयन-तक भगवान्की अष्टयाम चर्याके आधार नित्यसेवाका पद-साहित्य उद्भूत हुआ और इस प्रकार पुष्टिमार्गीय वर्ष जन्माष्टमीसे लेकर भाद्रपद कृष्ण सप्तमी तकके समूचे वर्षके उत्सवोंपर गाये गए उत्सव-कीर्तन वर्षोत्सवके नामसे अभिहित हुए।

पुष्टि मार्गकी राग-सेवाने ही ब्रजभाषा साहित्यके भांडारको विपुल-भावमणियों एवं रत्नोंसे भर दिया। अष्टछापी कबियोंके अतिरिक्त पुष्टिमार्गके शतशः भक्त कवियोंने राग-सेवाके अन्तर्गत

---

१. विवेकस्तु हरिः सर्वं निजेच्छातः करिष्यति। विवेकधैर्य—१

२. कृष्णसेवा सदा कार्या मानसी सा परा मता—सि० मु०–१। ३. चेतस्तत्प्रवणं सेवा। सि०मु० २।

४. ततः संसारदुःखस्य निवृत्तिर्ब्रह्मबोधनम्। सि० मु—वही।

५. सेवा कृतिर्गुरोराज्ञा—नवरत्न–७।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अनन्त पदोंकी रचना की है। इन पदोंका लालित्य और माधुर्य अनुपम और अनूठा है। ये पद व्यक्तिगत अनुभूति और कल्पनाके आधारपर तो हैं ही, इनका मूल स्रोत श्रीमद्भागवत महापुराणका दशम स्कंध है। श्रीकृष्णका अनन्त लीलाक्षीराब्धि ही इस समस्त पद-साहित्यका स्रोत है।

इसी प्रकार भगवान्के स्वरूपमें साक्षात् पुरूषोत्तमकी भावनाको पुष्ट करते हुए उत्तमोत्तम भोज्य पदार्थोंको स्वयं तैयार करके प्रभुको निवेदन करना भोग सेवा है। इसमें नित्यभोग तथा ऋतु अनुसारी वर्षोत्सवोंके भोग सभी आ जाते हैं। दूध-दही आदि गोरस एवं उनसे बने पदार्थ, ऋतुफल तथा पोषण देनेवाले अन्यान्य अनेक प्रकारके पक्वान्न दिनमें छह या आठ बार भगवान्को निवेदित करना भोग-सेवा है।

इसी प्रकारसे सेव्य स्वरूपका नित्य अनेक प्रकारसे शृंगार करना, मुकुट, काछनी, टिपारा, मोरपंख, कुण्डल, चिबुक बेसरादिसे भगवद् विग्रहका शृङ्गार करना तथा वर्षके विभिन्न उत्सवों पर विशिष्ट शृङ्गार करना शृंगार-सेवा है। इस प्रकार पुष्टिमार्गीय भक्त भगवत्सेवाके ही माध्यमसे जगत्के भोगोंके सम्पर्कमें आता है और भगवान्को निवेदित अथवा सर्मपित करके ही प्रसाद रूपमें उनको ग्रहण करता है, अन्यथा नहीं। समर्पणके बिना सिद्धान्त-रहस्यमें कहे गए पाँचों प्रकारके दोषोंकी निवृत्ति नहीं होती। अतः भगवान्को असमर्पित वस्तुओंका वर्जन पुष्टि-भक्तिका प्रमुख सिद्धान्त है।[1] जागतिक भोगोंका रसास्वादन स्वदेह अथवा अपनी इन्द्रियोंकी तृप्तिके लिए न कर उसे भगवत् स्वरूप जीवमात्रको वितरित कर अपना भाग ग्रहण करना पुष्टि भक्तिका उपनिषत्-प्रतिपादित मुख्य सिद्धान्त है।[2]

पुष्टिमार्गीय राग, भोग शृंगारात्मक त्रिविध सेवा सेवककी भक्ति-साधनाको बल देती है, साथ ही उसे निश्चिन्त बनाकर क्रमशः स्वरूपानन्दनकी प्राप्ति कराती है। स्वरूपके साथ तादात्म्य ही सायुज्य मुक्ति है। इसे ही अलौकिक दान कहा गया है। इसे पाकर भक्त सदैव तुष्ट और भगवद्गुणगानमें रत रहता है। गुण चिंतन और गुण कथनसे भक्तको भौतिक दुःख अथवा क्लेश नहीं होते।

आचार्यने घोषणा की है—

गुणैर्हरेः सुखस्पर्शान्निर्दुःखं भाति कर्हिचित्। इसीलिए भगवद्गुणगान-रसिक भक्त, ज्ञान मार्गका अवलम्बन नहीं लेता। श्रीहरिका कीर्तन ही उसको वरणीय है। इस फलरूपा पुष्टि भक्तिके लिए सर्वात्म भावसे आत्म-समर्पण एवं आराध्यके लिए अनन्य भाव ही अपेक्षित है। इस लिए सर्वात्म भावसे ... भक्तिकी परम अधिष्ठात्री व्रजाङ्गनाएँ ही मानी गई हैं क्योंकि भक्तिकी परम रसानुभूति चरम विरह वेदना एवं तन्मयता उनमें ही मानी गई है। इनको ही लक्ष्यकर भगवान्ने कहा है—ताः मन्मनस्का मत्प्राणा मदर्थे त्यक्तदैहिकाः। ये गोपियाँ तीनों प्रकारकी आसक्तियों—स्वरूपासक्ति, लीलासक्ति एवं भावासक्तिकी अधिष्ठानभूता थीं।

१. अन्यथा सर्वदोषानां न निवृत्तिः कथंचन।
असमर्पितवस्तूनां तस्माद्वर्जनमाचरेत्॥ सि० रह० ४।

२. ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किं च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥ ईशा० १

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुष्टिमार्गमें सेवित प्रमुख नौ स्वरूप

पुष्टिमार्गीय हवेलियों (जिन्हें मंदिर भी कहा जाता है)-में लीलानायक पूर्ण पुरुषोत्तम परब्रह्म श्रीकृष्ण ही विविध स्वरूपों और विविध नामोंसे सेवित हैं। इन हवेलियों अथवा मंदिरोंमें बिराजनेवाले भगवान् श्रीकृष्णके दिव्य विग्रहोंको पुष्टिमार्गमें मूर्त्ति न कहकर 'स्वरूप' कहा जाता है। स्वरूपकी प्रतिष्ठा मूर्त्तिकी भाँति वैदिक पद्धतिसे न होकर पुष्टिमार्गीय आचार्यों द्वारा भावपद्धति-से होती है अतः उसे 'पुष्टि स्वरूप' कहा जाता है। यह भाव-पद्धति आचार्य वल्लभ द्वारा अपने प्रिय सेवकोंके लिए प्रवर्तित की गई थी। अकिंचन श्रौत-स्मार्त-अधिकार-शून्य, वर्णाश्रम व्यवस्था विरहित, निस्साधन भक्तों, सेवकोंको साकारोपासनामें लगाकर उन्हें प्रेमलक्षणा भक्ति मार्गका अधिकारी बनानेके लिए ही आचार्यश्रीने यह पुष्टिमार्गीय स्वरूप-प्रतिष्ठा पद्धतिका आविष्कार किया था। इस पुष्टिमार्गीय स्वरूप-प्रतिष्ठा पद्धतिमें वेद पुराणादि शास्त्र-ज्ञान-संपन्न अधिकारी द्विजोंसे लेकर नितांत शास्त्र-ज्ञान-शून्य, आचार-विरहित स्त्री शूद्रादि तकको भगवत्सेवाका अधिकार मिल जाता है। यही कारण है कि इस भक्तिमार्गमें शास्त्र नियामक नहीं अपितु भक्तका शुद्ध सरल भाव ही नियामक है। अतः पुष्टिमार्गीय भगवद् विग्रहों को 'पुष्ट' कहा जाता है, प्रतिष्ठित नहीं, इन स्वरूपोंकी पूजा न होकर सेवा की जाती है। स्वरूप सेवा 'यथा देहे तथा देवे' के सिद्धान्तका अनुसरण करती है। अतः भगवत्स्वरूपको भी षडूर्मियाँ बाधा देती होंगी ऐसी दुश्चिंता अपने सेव्य स्वरूपके लिए भक्तको अनुक्षण बनी रहती है, वह भगवान्की कर्तुमकर्तुन्यथाकर्तुं सामर्थ्यको विस्मृत किये, तत्सुखसुखित्वभावको अपनाए, देशकालानुसारी ऋतु-अनुकूल यथोपलब्ध भक्ष्य-भोज्यादि सामग्रीसे अपने भावानुकूल सेवा करता है। जगत्के यावन्मात्र उत्तम सात्त्विक पदार्थ सेवककी दृष्टिमें उसके आराध्यके लिए ही हैं। यदि उनका वश चले तो वह उन्हें समर्पित करके ही संतोषका अनुभव करे। यही कारण है कि पुष्टिमार्गीय राग, भोग, श्रृंगारकी त्रिविध सेवामें जगत्के यावन्मात्र भोग्य सात्त्विक शुद्ध पदार्थोंको समर्पणके प्रभु प्रसादके रूपमें ही ग्रहण करता है, स्वयंके लिए उपभोग-दृष्टि सेवकोंमें नहीं होती। पुष्टिमार्गीय उपासनामें सेवकके भाव जगतमें भगवान्से कोई एक व्यक्तिगत संबंध, स्थापित ही नहीं, निश्चित हो जाता है। यही कारण है कि पुष्टि भक्ति भगवत्सेवाका अधिकार प्राणिमात्रको है जबकि पूजाका अधिकार उपवीती द्विजमात्र को ही होता है, किन्तु पुष्टि-सेवित-भगवत् स्वरूपकी सेवाके लिए श्रौतस्मार्तविधि-संपन्न उपवीती ब्राह्मणकी ही आवश्यकता हो, ऐसा नहीं है। आज भी अनेक पुष्टि स्वरूप द्विजातिरिक्त सेवकोंसे सेवित हैं। ये पुष्टिस्वरूप सेवकोंके लिए प्राणाधिक प्रिय होते हैं। उससे अधिक मूल्यवान् उनकी दृष्टिमें संसारकी कोई वस्तु न होनेके कारण वे उसे 'निधि' पुकारते हैं। पुष्टिमार्गमें भगवत्स्वरूप ही निधि हैं। जगत्की अन्य कोई मूल्यवान् वस्तु उनके यहाँ निधि नहीं मानी जाती।

पुष्टिमार्ग में ९ निधियाँ हैं—

(१) श्रीनाथजी, (२) श्रीनवनीतप्रियजी, (३) श्रीमथुरेशजी, (४) श्रीविट्ठलनाथजी, (५) श्रीद्वारिकानाथजी, (६) श्रीगोकुलनाथजी, (७) श्रीगोकुल चन्द्रमाजी

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

(८) श्रीमदनमोहनजी, (९) श्रीबालकृष्णजी ।[1]

वल्लभकालीन ये नौ निधियाँ अद्यावधि ब्रज प्रदेश, राजस्थान एवं गुजरातमें विद्यमान हैं और वल्लभ कुलसे सेवित होकर अनन्य वैष्णवोंको दर्शन लाभ देकर उनकी प्रेमलक्षणा भक्तिको पुष्ट कर रही हैं। यहाँ उनका संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत है—

१ – **श्रीनाथजी**—ब्रजमें स्थित गिरिराज गोवर्धनसे इस विग्रहके मुखारविंदका प्राकट्य सं० १५३५ में हुआ। इससे पूर्व सं० १४४६ में ऊर्ध्व वाम भुजाका प्राकट्य हो चुका था। इसी वर्ष (१५३५)-में श्री वल्लभका प्राकट्य चंपारण्यमें हुआ। वल्लभको श्रीठाकुरजीके मुखारविंदका स्वरूप माना जाता है।

श्रीनाथजी श्रीवल्लभके सेव्य, श्यामस्वरूप, दो भुजावाले, वाम भुजा ऊपर उठी हुई है जिसका भाव, भक्तोंको टेरना और दूसरी (दक्षिण भुजा) मुट्ठी बंद कटिपर रक्खी हुई है, जिसका भाव है भक्तोंके मनको आकर्षित करके अपनी मुट्ठीमें छिपा रखना।[2] मुट्ठीवाला अंगुष्ठ दीखता है। जिसका भाव है—ले, अब तेरे (भक्तके) पास क्या धरा है। दोनों चरणकमल समतल दृष्टि सम्मुख किन्तु नीची, निकुंज द्वारपर खड़े हैं। ऊपर शुक तथा चौकोर पीठिकापर नाग, सिंह, मेष, मुनि, गोपी आदि हैं जिनका परिचय श्रीनाथ-भावनामें हरिरायजीने स्पष्ट किया है।

यह विग्रह वाम भुजाके प्राकट्य काल—(सं० १४४६) से संवत् १७२८ तक अर्थात् लगभग २८२ वर्ष ब्रज प्रदेशमें गोवर्धन पर्वतपर विराजे रहा। पूर्णमल खत्रीके द्वारा निर्मित मंदिरमें सं० १५७५ में पाटोत्सव हुआ। संवत् १७२८ (सन् १६७१) में औरंगजेबके शासनकालमें ब्रज प्रदेश छोड़कर श्रीनाथजी मेवाड़ पधारे। कहा जाता है मीराँकी देवरानी श्रीमती अजबकुँवरि बाईके आग्रहपर ही श्रीनाथजी मेदपाट (मेवाड़) पधारे। पहले यह सिंहाड़ ग्राम था, आज इसे श्रीनाथद्वार कहा जाता है। श्रीनाथजी देवदमन, इंद्रदमन, नागदमन, गोवर्धनधरण, गिरिराजधरण आदि नामोंसे संप्रदायमें प्रसिद्ध है।

भागवतकालीन सखा अर्जुन, वल्लभकालीन अष्टछापी कवि कुंभनदासके ये विशेष रूपसे सेव्य रहे हैं। कुलहका शृंगार विशेष प्रिय है। ये निकुंज-लीला-नायक है। श्रीनाथजी वल्लभकुलके सातों गृहोंके सेव्य हैं। तिलकायत गद्दीके सेव्य होनेसे श्रीनाथजी पीठाधीश्वर हैं।

---

१. नवों निधियाँ एक ही श्लोकमें इस प्रकार स्मरणीय हैं—
श्रीगोवर्धननाथ - पाद - युगलं श्रीहैय्यंगवीनप्रियम्।
नित्यं श्रीमधुराधिपं सुखकरं श्रीविट्ठलेशं मुदा॥
श्रीमद्द्वारवतीश गोकुलपती श्रीगोकुलेन्दुं विभुम्।
नित्यं श्रीमन्ममोहनं नटवरं श्रीबालकृष्णं भजे॥

२. उत्क्षिप्तहस्तः पुरुषो भक्तमाकारयत्युत।
दक्षिणेन करेणासौ मुष्टीकृत्य मनांसि नः॥
वामकरं समुद्धृत्य निह्नुते पश्य चातुरीम्॥
श्रीनाथजीके इस विग्रहका भाव श्रीमद्भागवतमें भी मिलता है। देखो—
तस्मान्मच्छरणं गोष्ठं··· ··· ··· ···१०।२५।१८-१९।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२—**श्रीनवनीतप्रिय**—यह स्वरूप आचार्यश्रीको महावनमें यमुनाजीमेंसे मिला था। अपने सेवक गज्जन धावनको सेवार्थ सौंपा। बादमें गज्जन धावन गोकुल जाकर पुनः आचार्यश्री को सौंप आये। तबसे आचार्यश्रीके ये निजी ठाकुर अथवा सेव्य रहे। आचार्यश्रीके उपरान्त श्रीनवनीतप्रिय श्रीगोसाइंजीके सेव्य रहे।

नवनीतप्रियका गौर स्वरूप, द्विभुजरूप दक्षिण हस्तमें नवनीत है। श्रीमद्भागवतके दशम स्कंधके अष्टम अध्यायके प्रमाण प्रकरणकी रिंगणलीलाके नायक हैं। भागवतोक्त तोक (तोष) सखा एवं अष्टछापी परमानंददासके विशेष आराध्य हैं। ग्वालपगा विशेष शृङ्गार है। वर्तमानमें श्रीनाथजीके साथ नाथद्वारे (मेदपाट)-में विराजे हैं।

३—**श्रीमथुरेशजी**—यह स्वरूप ब्रजमें महावनके निकट यमुना पार कर्णावलमें यमुनाजीके करारसे आचार्यश्रीके संमुख प्रकट हुआ। स्वरूपमें श्रीयमुना, गिरिराज, सखा, सखी, कुञ्ज, चौरासी कोस ब्रजके सभी चिह्न होनेसे आचार्यश्रीने इसका नाम 'मथुरानाथ' रक्खा। अपने शिष्य पद्मनाभदासके माथे इन्हें पधराया। वे इस स्वरूपको कन्नौज ले आये।[1] वहाँ बहुत समयतक स्वयं तथा बेटी तुलसाने इनकी सेवा की। बादमें गुसाइंजीके समयमें ये पुनः वल्लभ-वंशमें आ गए। गुसाइंजीने इन्हें अपने बड़े पुत्र गिरिधरजीको सेवार्थ सौंपा, बादमें उन्होंने अपने पुत्र गोपीनाथजीको सौंपा। मथुरानाथजीका श्यामस्वरूप, चार भुजाएँ, नीचेकी दक्षिण भुजामें शंख, एक नीचेकी ही वाम भुजामें गदा, ऊपरकी दक्षिण भुजामें पद्म एवं वाम भुजामें चक्र है।[2] पीठक गोल। प्रमेय प्रकरणके लीलानायक। गौचारण लीला इनकी (गोपाष्टमी) विशेष लीला है। देखो भाग० १०-१५।

सूरका विशेष आराध्य स्वरूप है। भागवतकालीन कृष्ण नामक सखाके प्रिय पागका शृंगार विशेष प्रिय। वर्तमानमें जतीपुरामें बिराजे हैं। आचार्य प्रथमेशके सेव्य हैं।

४—**श्री विट्ठलनाथजी**—काशीके निकट चरणाट (चरणाद्रि)-में श्री गंगाजीमेंसे किसी साधुको मिला। कुछ समयतक उसके सेव्य रहे। बादमें वह महाप्रभु वल्लभको इन्हें दे गया। जिस दिन ये महाप्रभु वल्लभके पास पहुँचे उसी दिन महाप्रभुजीके यहाँ गो० विट्ठलनाथजीका जन्म हुआ। महाप्रभुने यह जानकर कि साक्षात् पाण्डुरंग विट्ठल ही पधारे हैं—पुत्रका नाम विट्ठलनाथ रख दिया। आगे चलकर जब गुसाइंजीने पुत्रोंके लिए निधियोंका बँटवारा किया तो आप उनके द्वितीय पुत्र गो० गोविन्दजीके हिस्सेमें आये। तभीसे ये द्वितीय घरके सेव्य हैं, आज तक गोविन्दजीके वंशजोंसे सेवित होकर श्रीनाथद्वारामें विराजे हैं। कुछ दिन प्रभु चरण हरिराय-जीके साथ कोटा, बादमें खमनौर भी रहे। संवत् १८५८ से निरन्तर नाथद्वारामें हैं।

रसिकेश्वर विट्ठलनाथजीका स्वरूप रास-क्रीडाके भावसे कटिपर हस्त रक्खे हुए स्वामिनी सहित नृत्यके भावसे हैं। स्वामिनी भावसे गौर और स्वीय भाव श्याम होनेसे आपका श्री-विग्रह गौर-श्याम है। वाम भुजामें सच्छिद्रशंख, दक्षिण भुजामें लीला कमल है। दोनों चरण समतल श्रीमस्तक-

१. देखो—८४ वै० वार्ता–प्रसंग–१ भाव प्र० टिप्पण।
२. देखो सूरका प्रसिद्ध पद—चक्र धर्‍यौ जनताप निवारन०।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पर किरीट है। फल प्रकरण (भाग० १०।३०) सुबल सखाको यह स्वरूप विशेष प्रिय। अष्टछापी सखा छीतस्वामीकी विशेष आसक्ति। सेहराका श्रृंगार विशेष प्रिय।

५—श्रीद्वारकानाथजी—सारस्वत कल्पमें, ब्रह्मा, महर्षि कर्मद आदिसे सेवित यह स्वरूप गुजरातमें विन्दु सरोवरपर विराजता था। वहाँ बादमें देवशर्मा, विष्णुशर्मा, कर्मनिष्ठ ब्राह्मणोंका सेव्य रहा। अन्तमें उनके वंशकी एक वृद्धासे महाराज अम्बरीषको इनकी प्राप्ति हुई।[1] महाराज अम्बरीषके साथ यह भगवद् विग्रह ब्रज क्षेत्रमें भी आया। महाराज अम्बरीषसे रघुवंशी महाराजाओंका सेव्य बना। राजवंशके बाद वशिष्ठ, भारद्वाज, कश्यपादि ऋषीश्वरोंसे सेवित होता हुआ महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यासका सेव्य बना। व्यासजीसे महाराज युधिष्ठिरके सेव्य रहे। परीक्षितके प्रायोपवेशनानन्तर सौरशर्मा इसे पुनः अर्बुदाचल ले आया। शताब्दियों उपरान्त कन्नौजके एक नारायण दर्जीके पास यह विग्रह रहा। दर्जीसे यह स्वरूप आचार्य महाप्रभुजीने मँगवाकर दामोदरदास संभलवारेके माथे पधराया। तबसे यह पुष्टि स्वरूप हुआ। महाराज अंबरीषके पाससे नारायण दर्जीतक यह स्वरूप मर्यादामार्गीय पद्धतिसे सेवित रहा।[2] दामोदरदास संभलवारेके गोलोकवासके उपरान्त यह स्वरूप आचार्यजीके पास पुनः अड़ैल पहुँच गया। यह स्वरूप श्रीमद्भागवत दशम स्कंधके प्रमेय प्रकरणके सप्तमाध्यायकी लीलाका प्राकट्य है। इस स्वरूपमें मथुराधीश और द्वारकाधीश दोनों स्वरूपकी मिश्रित लीला है।

स्वरूप श्याम, चार भुजा, नीचेकी वाम भुजामें शंख, ऊपरकी वाम भुजामें चक्र, ऊपरकी दक्षिण भुजामें गदा, नीचेकी दक्षिण भुजामें पद्म। पीठक चौकोर। इनकी स्वामिनीजी गुआवनमेंसे प्राप्त हुई।

६—श्रीगोकुलनाथजी—यह स्वरूप अद्यावधि श्रीगोकुलमें विद्यमान है। यह श्रीविग्रह सदैव वल्लभवंशसे सेवित रहा है। बँटवारेके समय गोस्वामी विट्ठलनाथजीने इन्हें अपने चतुर्थ पुत्र गोकुलनाथजीके माथे पधराया। कहा जाता है यह स्वरूप विष्णुस्वामीका आराध्य था। उनसे श्री यज्ञनारायणको प्राप्त हुआ। यह गौर स्वरूप चार भुजाओंवाला है। दो भुजाओं-से वेणुनाद, दक्षिण भुजामें श्री गिरिराजजी एवं वाम भुजामें शंख। दो स्वामिनियाँ। श्री महाप्रभुजीको यह स्वरूप अपने श्वशुरसे प्राप्त हुआ। लीला दशम स्कंध साधन प्रकरण, अध्याय पच्चीस, गिरिराज धारणवालीसे सम्बन्धित कहा जाता है। यह सबसे पहला स्वरूप था जो श्रीआचार्यजीके पास आया।

७—श्रीगोकुलचन्द्रमाजी—इनका श्रीयमुनाजीसे प्राकट्य हुआ है। जल भरते हुए तीन अन्य स्वरूपोंके साथ एक क्षत्राणीको श्रीयमुनाजीमेंसे मिले। आचार्यजीकी आज्ञा पाकर वह इन्हें अपने घर पधरा लाई। बादमें इन्हें महाप्रभुजीको सौंप दिया। ये चार स्वरूप थे। नवनीतप्रिय; गोकुलचन्द्रमाजी; लाड्लेशजी, एवं ललितत्रिभंगीलाल। इनमें गोकुलचन्द्रमाजी, नारायणदास ब्रह्मचारीके माथे पधराये गए।[3] श्रीगोकुलचन्द्रमाजी श्रीरघुनाथजीके बाँटमें आए। नारायणदास ब्रह्मचारीके गोलोक-प्रयाणके उपरान्त ये ठाकुरजी वल्लभ-कुलमें आ गए। यह स्वरूप अत्यन्त

---

१. देखो द्वारकाधीशकी प्रा० वार्ता (स्कंदपुराणके प्रभासखण्डमें)

२. देखो—८४वै० वार्ता ३. देखो—८४वै० वा०—एक क्षत्राणी महावनकी—प्रसंग—१।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मनोहर श्याम वर्णका है। दो भुजाओंसे वेणुवादन हो रहा है। आकृति ललित त्रिभंगी, वाम चरणको स्थापितकर दक्षिण चरणको उन्नत करके वाम चरणकी उँगलीका किंचित् स्पर्श हो रहा है। दृष्टि नीची (पृथ्वीपर) मानो कृपावलोकन कर रहे हों। लीला-तामस फल प्रकरणके ३२वें अध्याय (महारास)-से संबंधित। वर्तमानमें कामवन (जि० भरतपुर)-में स्थित। अष्टछापके कवि नंददासके विशेष आराध्य। शृंगारमें फेंटा विशेष प्रिय।

८—**श्रीबालकृष्णजी**—यह स्वरूप आचार्य महाप्रभुको गो० विट्ठलेशके कर्णवेध संस्कारके समय एक कूपसे प्राप्त हुआ। अतः कर्णवेध-कूपसे इनका प्राकट्य माना जाता है। आचार्यश्रीने इस स्वरूपको सेवा अनुकरणार्थ गो० विट्ठलनाथके क्रीडा मनोविनोदके लिए उनके शैशवमें ही सौंप दिया था। बालक विट्ठलेशको आशैशवात् श्रीबालकृष्णजीकी सानुभावता सिद्ध थी। मंगला-भोगके एक ठौड़पर दोनोंकी परस्पर खींचातानी देखकर महाप्रभुजीने मुस्कराकर कहा—"ये तो बड़ौ लड़ाकू ठाकुर हैं।"[1] और तबसे भोगमें ठौड़के न्यूनातिन्यून दो नग रखे जाने लगे। दाय-भागके समय इस स्वरूपको गो० विट्ठलनाथजीने अपने तृतीय पुत्र बालकृष्णजीको श्रीद्वारकानाथ-के साथ सौंपा था। तबसे ये द्वारकाधीशके आगे—गोदमें विराजे रहे। वैसे ये यदुनाथजीके बाँटमें आए थे। अतः बादमें वे षष्ठ गृहके ठाकुरके रूपमें सेव्य हुए।

श्री बालकृष्णजीका श्याम स्वरूप, दो भुजाएँ, दक्षिण भुजामें नवनीत, जानुरिंगण, वाम भुजासे पृथ्वीको आलंबन दिये शकट-भंजनलीला (दशमस्कन्ध सप्तम अध्याय)-का स्मरण कराते हैं। वर्तमानमें यह स्वरूप म्होटा मंदिर सूरतमें विराजमान है।

९—**श्रीमदनमोहनजी**—कोई इनका प्राकट्य त्रिवेणी संगम प्रयागमें मानता है तो कोई श्रीयमुनाजीसे। निधियोंके बँटवारेमें ये गोसाइंजीके सप्तम लालजी श्रीघनश्यामजीके हिस्सेमें आये। महाप्रभुजीकी माता इल्लम्माजीके पास यह निधि थी। अतः अनुमान किया गया कि महाप्रभुजीको यह निधि उनके यहाँसे मिली होगी।[2] किन्तु तथ्य यह है कि यह निधि महाप्रभुजीके पूर्व मूल पुरुष श्री यज्ञनारायण भट्टको ३२ वें सोमयज्ञके समय अग्नि-कुंडसे प्राप्त हुई। यह स्वरूप गौरवर्ण, द्विभुज, चरणारविन्दमें पादुकाजी, मस्तकपर पंचशिखा है। यज्ञोपवीत चिह्नधारी हैं। इनकी दो स्वामिनियाँ हैं। इस स्वरूपमें वेणुनाद करके रसोत्सवके लिए ब्रज भक्तोंके आह्वानकी भावना है। (देखो फल प्रकरण अध्या० २९)। कुछ समयतक यह स्वरूप जगतानंद नामके एक विरक्त वैष्णवके पास भी रहा—ऐसा कहा जाता है। किन्तु यह भी मान्यता है कि महाप्रभुजीके वंशके ठाकुरजी होनेसे इनको किसीके माथे पधराया नहीं गया। वर्तमानमें यह स्वरूप कामवन (जि० भरतपुर)-में विद्यमान है।

उपर्युक्त प्रधान नौ स्वरूपोंके अतिरिक्त कतिपय अन्य पुष्टि स्वरूप और हैं जो भगवदीय वैष्णवोंके माथे आचार्यश्री एवं गो० विट्ठलनाथ जी एवं उनके वंशजोंने पधराये।

---

१. श्रीबालकृष्णजीके स्वरूप-सम्बन्धी प्राचीन इतिहासको देखते हुए महाप्रभुजीकी यह वाणी नितांत सत्य सिद्ध हुई।

२. माता श्री आचार्यकी इल्लम्मा तिहि नाम।
मदन सुमोहनजी तहाँ, बैठे पाट सुधाम ॥ जगतानंद—३४।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१—श्री मुकुंदरायजी—कहा जाता है ये आचार्यके गुरु गोविन्दाचार्यके सेव्य थे। जनार्दन भट्टने यह स्वरूप वल्लभाचार्यको सौंपा। श्रीवल्लभ इन्हें सदैव साथ रखते थे। यमुनाष्टकके 'मुकुन्दरतिवर्धिनी'[1] से इस स्वरूपका अन्तस्साक्ष्य मिलता है। मुकुन्दरायजीकी सेवा गिरिराजपर कुछ दिन रामदास मुखियाके द्वारा हुई। बादमें यह स्वरूप गो० विट्ठलनाथजीकी आज्ञासे श्रीनाथजीकी गोदमें विराजने लगा। बँटवारेमें ये छठे लालजी श्रीयदुनाथजीके हिस्सेमें आया। अतः यह स्वरूप कुछ दिन श्रीद्वारकाधीशकी गोदमें विराजता रहा। बादमें गो० गिरिधरजी[2] इन्हें काशी ले आये और तबसे ये यहीं विराजे हैं।

२—श्रीमदनमोहनलालजी - महाप्रभुजीके निधि - स्वरूप नगरठट्ठावाले दीवान नारायणदासके सेव्य हैं। इस स्वरूपसे रासोत्सवकी भावना आरोपित है (देखिए—भाग० दशम० ताम० प्रथम) इसके सात छोटे स्वरूप इस प्रकार हैं—

(१) श्रीत्रिभंगीरायजी—वर्तमानमें—नरसिंह बाग, बेरावल (गुज०)

(२) श्रीबालकृष्णजी—बेट द्वारकामें।

(३) श्रीमदनमोहनजी—वर्तमानमें पोरबंदरमें श्री गोपीनाथजीकी हवेलीमें।

(४) श्रीबालकृष्णजी—म्होटा मंदिर, भूलेश्वर बंबईमें।

(५) श्रीछोटे मथुरेशजी—कोटामें—छोटे मथुरेशजीके मन्दिरमें।

(६) श्रीमदनमोहनजी—पोरबन्दरमें श्रीरणछोड़जीकी हवेलीमें।

(७) श्रीनवनीतप्रियजी—कोटामें श्रीबड़े महाप्रभुजीके मन्दिरमें।

ये सातों निधियाँ काका वल्लभजीके साथ विराजती थीं।

३—श्रीनटवरलालजी—गो० विट्ठलनाथजीकी निधि थीं। ये जयपुरमें श्री जीवनलालजी महाराजके यहाँ विराजती थीं। वहाँसे सं० १६१५ में गोकुल आई। सं० १६४३ में ये पोरबन्दर पहुँच गई। यह तृणावर्तलीलाका स्वरूप कहा जाता है।

४—श्रीबालकृष्णजी—वर्तमानमें पोरबन्दरमें विराजमान। औत्थानिकी एवं शकट-भंजनकी लीलाका स्वरूप कहा जाता है।

५—श्रीमदनमोहनजी (श्याममनोहरजी)—पोरबन्दरसे गोपीनाथजीकी हवेलीमें सेवित है।

प्रत्येक निधि स्वरूप एवं नामसे भिन्न प्रतीत होती हुई भी परब्रह्म श्रीकृष्णका स्वरूप ही है। सेवकोंके विशिष्ट लीला-प्रेम एवं उस स्वरूप विशेषकी आसक्तिसे निरोध-प्राप्ति ही निधियोंकी विभिन्नताका कारण है। यह बहुदेवोपासना नहीं है। एक ही श्रीकृष्णकी विभिन्न लीलाके विशेष स्वरूप हैं। संक्षेपमें पुष्टिमार्गीय स्वरूप श्रीमद्भागवतकी कृष्णलीलाकी स्मारक निधियाँ हैं।

---

१. यमुनाष्टक—श्लोक—२।

२. ये गिरिधरजी षष्ठ पीठाधीश्वर 'शुद्धाद्वैतमार्तण्ड' के लेखक हैं।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अष्टछापी कवियोंके साधना-स्थल

भारतीय धर्म-साधनामें संगीतका बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। 'मद्-भक्ताः यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद" के अनुसार भक्त लोग भक्तिभावित होकर जहाँ गान करते हैं, वहाँ भगवान्का आविर्भाव हो जाता है। यही कारण है कि भक्ति-शास्त्रके प्रथम आचार्य देवर्षि नारदके हाथमें सदैव वीणा रहती है। सभी भक्ति सम्प्रदाय चाहे उत्तरके वल्लभ, चैतन्य हों, दक्षिणके वारकरी किंवा महानुभाव अथवा दत्त सभीमें कीर्तन अथवा लीलागान, भक्ति-साधना का अनिवार्य अंग है।

संवत् १५४९-५० में जब महाप्रभु वल्लभाचार्यने ब्रजमें स्थित गोवर्धन पर्वतपर श्रीनाथजीकी सेवा-व्यवस्था की तब कीर्तन अथवा रागसेवाका भार जमुनावतीके कुंभनदासजीको सौंपा, संवत् १५६७ में सीहीके सूरदास गौघाटपर श्रीआचार्य वल्लभके शिष्य हुए और वे भी गिरिराजकी तरहटी में परासौली चले आये और श्रीनाथजीकी कीर्तन-सेवाके भागीदार बन गए। इसी समयके लगभग गुजरात (चड़ौतरा)-के कृष्णदास भी उनके शिष्य हुए और मन्दिर-व्यवस्थाका कार्य-भार सम्हालते हुए भी कीर्तन सेवा करते रहे। संवत् १५७६ के लगभग कन्नौजके परमानन्ददास अलर्कपुर (अड़ैल)-में आचार्यजीके शिष्य हुए और ब्रज चले आए। इस प्रकार अष्टछापके प्रथम चार कवि—कुंभनदास, सूरदास, कृष्णदास एवं परमानन्ददास क्रमशः अपनी अपनी जन्मभूमियों—जमुनावती, सीही, चड़ौतरा (गुजरात) एवं कन्नौजको छोड़कर भगवान् श्रीनाथजीकी कीर्तन-सेवाके लिए ब्रजमें चले आए। अष्टछापके अन्य चार कवि जो गोस्वामी विट्ठलनाथजीके शिष्य थे और गिरिराजपर श्रीनाथजीके मन्दिरमें कीर्तनिये भी थे, उनमें गोविंद स्वामी आँतरीके निवासी थे। गो० विट्ठलनाथजीके व्यक्तित्वसे प्रभावित होकर वे ब्रजमें चले आये। नन्ददास सोरोंके निकट रामपुरके निवासी कहे जाते हैं। सं० १६०० के आस-पास वे गो० विट्ठलनाथजीके सम्पर्कमें आये। गुसाईजीके तीसरे अष्टछापी कबि छीतस्वामी मथुराके ही निवासी थे परन्तु सं० १५९२ में दीक्षाके उपरान्त गिरिराज गोवर्धनके निकट पूंछरी चले आये और श्रीनाथजीकी कीर्तन सेवामें लग गए। अष्टछापके अन्तिम कवि चतुर्भुजदास तो कुंभनदासजीके पुत्र ही थे। १५९७-में सम्प्रदायकी दीक्षाके उपरान्त ये भगवान्की कीर्तन सेवामें लग गए। इन आठों कवियोंको मिलाकर गोस्वामी विट्ठलनाथजीने संवत् १६०२ में अष्टछापकी स्थापना करके भगवान्की ध्रुपद धमारवाली ब्रज शैलीमें संगीतबद्ध अष्टयाम सेवा चालू की थी। इस प्रकार संवत् १५५० से सं० १६४० के ९० वर्षोंके अन्तरालमें ये आठों ही महानुभाव जीवित थे और श्रीनाथजीकी कीर्तन सेवा नियमित रूपसे नित्य नये लीलापद बनाकर करते थे। इन अष्टछापियोंमेंसे तीनको छोड़कर शेष पाँच ब्रज क्षेत्र, विशेषकर, मथुरा-गोवर्धनसे बाहरके थे। ये आठों भक्त प्रारम्भमें साधारण कवि और गायक रहे होंगे किन्तु पुष्टिमार्गीय भक्ति दीक्षा पाकर साम्प्रदायिक पद्धतिसे कीर्तन करनेमें निष्णात हो गए थे। किन्तु इन अष्टछापी महानुभावोंके साथ जो मुख्य बात थी वह इनका श्री गिरिराज गोवर्धनके चतुर्दिक् निवास था। अपने साधना-कालमें ये लोग श्रीगिरिराजका

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परिसर छोड़कर एक इंच भी नहीं हटे। यदि इनकी साधना-स्थलियोंपर दृष्टिपात किया जाय तो पता चलेगा कि ये आठों गोवर्धनगिरिके आठ द्वारकी भाँति गिरिराजकी चार दिशाओं और चार विदिशाओंको घेरे हुए थे। कुम्भनदासकी मुख्य साधना-स्थली आन्यौर, सूरदासकी गोविंद कुण्ड, परमानन्ददासकी सुरभि कुण्ड, कृष्णदासकी बिलछू कुण्ड है। इसी प्रकार गोविंद-स्वामीकी साधना - भूमि कदमखंडी, नंददासकी मानसी गंगा, छीतस्वामीकी अप्सरा कुण्ड एवं चतुर्भुजदासकी साधना भूमि रुद्रकुण्ड मानी जाती है। वस्तुतः श्रीनाथजीके इन अष्ट सखाओं-के ये आठ निवास-स्थान उनकी काव्य-साधना भूमियाँ तो हैं ही, सम्प्रदायके भक्तोंके भावानुसार इनके ये आठ लीला-स्थल भी हैं जो श्रीगिरिराजके आठ द्वार माने जाते हैं, जिनपर ये अहर्निश स्थित रहकर भगवल्लीलाके परिकर बने रहते थे। दिनकी लीलामें सखाभावसे तथा रात्रि लीला-में सखी भावसे इनकी उपस्थिति मानी गई है। लीला परिकरके अंग-भूत, साहित्य-संगीतके अधिष्ठान ये आठों कवि अपने-अपने मूल जन्म-स्थानोंको सदाके लिए त्यागकर श्री गिरिराजके परिसरमें आ बसे और वहीं रम गए। श्रीनाथजीके देवलको छोड़कर "ब्रज तजि अनत न जाऊँ" की अमिट प्रतिज्ञाका निर्वाह करते हुए श्री गिरिराजके कोमल बालुका कणोंमें अपना जीवन लय कर दिया इसका भला क्या रहस्य हो सकता था। निश्चय ही इनके इस दिव्य संकल्पके मूलमें उत्कृष्ट कृष्णभक्ति और ब्रजभूमिके प्रति प्रगाढ अनुराग था।

श्री गिरिराजके एकान्त शान्त परिसरसे निर्जन वन्य प्रान्तके मादक वातावरणमें उस नीरव असीम शान्तिमें, दिव्य स्वच्छ सरोवरोंके शीतल वारिमें, चन्द्र ज्योत्स्नामयी उन मधु यामिनियोंमें भगवान् कृष्णचन्द्रकी अलौकिक रासस्थलीमें श्रीकृष्णके लोक - पावन अलौकिक चरित्रोंकी जो मौलिक उद्भावनाएँ हुईं वे ही आगे चलकर ब्रज भक्तोंके लिए वैदिक ऋचाएँ बन गयीं। वे ही ब्रज-भाषाका अमर काव्यका युग-युगके लिए प्रेरणा स्रोत बन गयीं। अष्टछापी कवियोंने वस्तुतः अपनी दिव्य काव्य-सृष्टिके लिए श्रीगिरिराजका जो पावन परिसर चुना वह उनकी कालजयी रचनाओंके अनुकूल ही था। प्रकृतिके उस दिव्य वातावरणमें जिस अमर संगीतकी सृष्टि हुई वैसी न पहले हुई न फिर बाद में। चन्द्र सरोवरके रमणीय कान्तारमें गिरिराजकी तरहटीमें परासौली है। यहाँ कभी सघन पलाशावली था पलाश वन रहा होगा। यह भगवानकी रासभूमि कही जाती है। यहाँसे १ मील सीधे चलनेपर आन्यौर आ जाता है। यह श्री गिरिराजका निकुञ्ज लीलाका द्वार कहा जाता है। इसके निकट ही गोविंद कुण्ड है। शरद् वसन्तकी मधुर यामिनियोंमें जब आकाश-में पूर्ण चन्द्र शोभित होता है, तब इस स्थानकी असीम नीरवता एवं मादकता अनुभव करने योग्य होती है। उस समयके भावावेशके स्वर्णिम क्षणोंमें भावना-शून्य साधारण हृदय भी कवि हृदय बन जाता है, तब सद्गुरुसे दीक्षा प्राप्त भगवद्रसके भावुक भक्त कवि हृदयोंका तो कहना ही क्या। यही परासौली, गोविंद कुण्ड और आन्यौर अष्टछापी कवि सूरदास और कुम्भनदासकी साधना स्थली रहे हैं। सूरसागरके किशोर लीला और मानलीलाके अनन्त मादक पदोंकी सृष्टि यहीं हुई थी। हिंताल, ताल, तमाल, पलाशकी वे सघन वृक्षावलियाँ आज भी उस अतीतकी सौन्दर्यशालिनी रास-क्रीडाकी रात्रियोंका साक्षात्कार करानेमें समर्थ है जिनके लिए श्रीमद्भागवतमें लिखा है—

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भगवानपि ताः रात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिका।

ब्रजवासकी कठोर प्रतिज्ञा पालनेवाले ब्रजके अनन्य प्रेमी परमानन्ददास आन्यौरके ठीक सामने गिरिराजके पार सुरभि कुण्डपर निवास करते थे। बाललीलाके अद्भुत गायक परमानंद-सागरके प्रणेता परमानन्ददासजीका सुरभि कुण्ड भी गिरिराजका निकुंजलीलाका दूसरा द्वार माना जाता है जिसपर दिनमें तोक सखा रात्रिमें चन्द्रभागा सखीकी स्थिति मानी गई है। पूँछरीसे जतीपुरेकी ओर लगभग आधा मील चलनेपर सुरभिकुंड अपनी नीरव शान्त लहरियोंमें मुसकराता-सा मिलता है। इस एकान्त वैर-विगत भूमिने परमानन्ददासको यह कहनेको प्रेरणा दी थी—

ब्रज बसि बोल सबनके सहिए।

उन्होंने भगवान गोवर्धनधरसे हाथ जोड़कर याचना की थी—

यह माँगौं गोपीजन - वल्लभ।
मानुस जनम और हरि - सेवा, ब्रज बसिबौ दीजै मोहिं सुल्लभ ।।

\+ \+ \+

स्री जमुनाजल नित प्रति न्हाऊँ, मन बच कर्म क्रिस्न गुन गाऊँ।
श्री भागवत सुनौं नित स्रवनन, इन तजि चित कहुँ अनत न ध्याऊँ ।।

एक युग था जब श्रीयमुना श्रीगिरिराजकी तरहटीमें ही बहती थीं। जमुनावतौ (यमुनावर्त) नाम इस तथ्यका द्योतक है।

कृष्णदास अधिकारीकी साधनाभूमि बिलछू कुण्ड भी गिरिराजकी एकान्त तरहटीमें स्थित है। उनके कृष्ण सागरमें संगीत और नृत्यकी जितनी चर्चा भरी पड़ी है उतनी शायद ही कहीं हो। उसके मूलमें श्रीगिरिराजका नीरव शान्त एकान्त वातावरण ही कारण है। गिरिराजके बाम भागमें ही सुरभिकुण्डसे आगे गोविंदस्वामीकी कदमखण्डी मिलती है। यहाँ कभी कदम्ब वृक्षोंका झुरमुट रहा होगा। कदम्ब भगवानका वृक्ष है, उसके नीचे खड़े रहकर प्रिया प्रिमतमने आकाशमें घुमड़ते मेघोंका नर्तन देखा होगा, वेणुवादन करते हुए गौओंको एकत्र किया होगा। एकान्त प्रकृतिके अंचलमें स्थित इस कदमखंडीमें गोविंद स्वामीको संगीतकी जो प्रेरणा मिली होगी, वह सहज अनुमेय है। वृक्षोंके परम स्नेही गोविंद स्वामी लिखते हैं—

वे कि देखियत हमारे गोकुलके रुखजू।
प्राची दिसितैं नैकुहि दच्छिन, मेरी अँगुरीके अग्रज करो नैकु मुखजू ।।

गहरी दृष्टिसे अनुशीलन किया जाय तो अष्टछापी कवियोंने अपने समसामायिक ब्रजका पूरा भूगोल भक्तोंके मानस पटलपर उतार देनेकी सफल चेष्टा की है। इसी मार्गपर आगे बढ़ते हुए गोपालपुर (आजका जतीपुरा) है जहाँ पुष्टिमार्गके भक्तगण, श्रीनाथजीके मुखारविन्दकी भावना करके कुनबारा एवं अन्नकूट अरोगाते हैं। यहाँ सघन छोंकरके नीचे महाप्रभु वल्लभाचार्यकी बैठक है। अनतिदूर एक सघन इमलीके बृक्षके नीचे वह चबूतरा है जहाँ बैठकर छीतस्वामीने कभी गाया था—

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मोहिं भरोसौ श्रीगिरिराजकौ।
कहा जु भयौ तन, मन, धन जोरे, भक्ति बिना कह काजकौ ॥
ऊंची मेंडी कौन काजकी, ब्रज बसिबौ भल छाजकौ।
छीतस्वामि गिरिधर, श्रीविट्ठल वल्लभ - कुल - सिरताजकौ ॥

सभी अष्टछापी कवियोंने श्रीयमुनाका माहात्म्य-गान किया है। लगता है, उस कालमें यमुना श्रीगिरिराजके निकट बहती रही होंगी।

रामपुर अथवा श्यामपुर, ज़िला एटा-निवासी नन्ददास, मानसी गंगाके सुरम्य तटको छोड़कर फिर कभी कहीं गए ही नहीं। जतीपुरासे लगभग दो ही मील आगे श्रीगिरिराजके मुखारविन्दके निकट मानसी गंगाका पावन सरोवर है। परिक्रमार्थी मानसी गंगामें स्नान करके गोवर्धनकी 'दे परिकम्मा मानसी गंगा न्याऊँगी'का पाठ करता जाता है। मानसी गंगाके निसर्ग रमणीय वातावरणपर नन्ददास तन मनसे निछावर हो गए थे। वे लिखते हैं—

कान्ह कुँवरके कर पल्लवपर, मानों गोवर्धन नृत्य करै।
ज्यों ज्यों तान उठत मुरलीकी, त्यों त्यों लालन अधर धरै ॥
मेघ मृदंगि, मृदंग बजावत, दामिनि रमकत दीप जरै।
ग्वाल ताल दै नीके गावत, गैय्यनके सँग सुर जु भरै ॥

ब्रज प्रदेशकी प्रकृतिके निरंतर साहचर्यमें संगीतकी तन्मयताके दिव्य क्षणोंमें साहित्य-सर्जना करना यही अष्टछापी कवियोंका प्रिय कार्य था और इस सबके मूलमें उनके हृदयमें बहनेवाली कृष्ण भक्ति धारा उस साहित्य एवं संगीतका सतत सेचन करती रहती थी।

अष्टछापके अन्तिम और कनिष्ठ कवि जमुनावतीके चतुर्भुजदास अन्नकूट लीलाके गायक थे। भाव क्षेत्रमें ये रुद्रकुंड द्वारके सखा हैं। जमुनावतीसे चलकर ये गिरिराजकी तरहटीमें स्थित आन्यौर मार्गसे श्रीनाथजीके मन्दिरमें पहुँचते थे। श्रीनाथजीके मन्दिरमें अपने ओसरेकी कीर्तन-सेवाके उपरान्त कभी परासौलीके सघन वनमें, तो कभी चन्द्र सरोवरके एकान्त तटपर, तो कभी जमुनावतीके हरे भरे खेतकी मेड़पर इनकी काव्य साधना चलती रहती थी। यों तो समूचा ब्रज प्रदेश अपनी निसर्ग रमणीयताके लिए विश्व प्रसिद्ध है, किन्तु पाँच सौ वर्ष पूर्व जब श्री गिरिराजके निकट श्रीयमुना प्रवाहित होती थी, तब उसका प्राकृतिक सौन्दर्य अपनी चरम सीमापर रहा होगा विशेषकर वर्षा, शरद, वसन्त ऋतुओंमें। अष्टछापी-काव्यमें सौन्दर्य-तत्त्व चाहे वह मानवगत हो, अथवा प्रकृति-गत—अपने अन्तिम बिंदुपर इसी कारणसे है कि ब्रज प्रदेशका पावन भू भाग इन कवियोंकी साधन-स्थली रहा है जहाँ बैठकर इन्होंने मुक्त तन-मनसे विरह-मिलनके अनन्त गीतोंसे अपने आराध्यको रिझाया था और जगत्के लिए भी यही आदेश दिया था—

जइए वह देस जहाँ नन्दनंदन भेंटिए।
निरखि मुख-कमल-कांति बिरह - ताप मेटिए ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दशम स्कन्ध और परमानन्दसागर

भागवत	अध्याय	
१. गोकुले भगवतो जातकर्मादिमहोत्सवः	५	जन्म समयके पद, पलनाके पद
२. पूतनावधः	६	छठीके पद
३. शकटभंगः, तृणावर्तवधः, जृम्भमाणस्य भगवतो मुखे यशोदयाऽऽकाशादि दर्शनं च	७	स्वामिनीजीके जन्म पद बाललीलाके पद, उराहनौ
४. गर्गागमनं जातककथनपूर्वकं नामकरण-संस्कारः, मृद्भक्षणव्याजेन यशोदायै विश्वरूपप्रकटीकरणं च	८	परस्पर हास्य-वचन सखनसों खेल असुर-मर्दन
५. श्रीकृष्णस्योलूखले बन्धनम्	९	श्रीजमुनातीरकौ मिलन
६. वत्सासुर-बकासुरयोर्वधः	११	मिषान्तर दर्शन
७. अघासुरवधः	१२	गो-दोहन-प्रसंग
८. गो-चारणं धेनुकासुरवधः	१५	
९. कालियदमनम्	१६	
१०. वेणुगीतं भगवतो मधुरं वेणुनादं आकर्ण्य गोपीभिस्तदगुणगानं	२१	वनक्रीडा-छाकके पद
११. चीरहरणलीला	२२	गोचरण-समय दान-प्रसंग
१२. अत्र यांचामिषेण यज्ञपत्नीष्वनुग्रहः	२३	द्विज-पत्नीकौ प्रसंग
१३. इन्द्रमखभंगः	२४	बनतैं ब्रजकौ पाउँ धारिबौ
१४. कोपाद् मुसलधारावर्षे वर्षतीन्द्रे ब्रजौकसां रक्षणार्थे गोवर्धन धारणम्	२५	वेणुगान गोपिकाजूके आसक्तिके वचन स्वरूप वर्णन. जुगल-रस वर्णन, ब्रताचरण-प्रसंग
१५. वेणुनादं श्रुत्वाऽऽगतीनां गोपीनां श्रीकृष्णेन सह संवादः रासारम्भः तासां मानापनोदाय भगवतोऽन्तर्धानं च	२९	**रास समयके पद**
१६. गोपीद्वारा भगवतोऽनुसंधानं तदाचरिता-नुकरणं यमुनापुलिने तदागमप्रतीक्षणं च	३०	अन्तर्धान
१७. गोपीगीतं विरहार्तगोपीनां भगवदुप-स्थानाय प्रार्थनम्	३१	जल-क्रीडा सुरतान्त
१८. भगवतः प्रादुर्भावः गोपीनामाश्वसनं च	३२	खण्डिता········
१९. महारासवर्णनम्	३३	किशोरलीला

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२०. युग्मगीतम्, गोचारणाय वनं गतस्य भगवतो गोपीजनकृतं गुणगानम् ३५
२१. अरिष्टासुरवधः ३६
२२. केशिवधः, व्योमासुरवधः ३७
२३. श्रीकृष्णबलरामयोर्मथुरां प्रति प्रस्थानं विरहकातरगोपीनां करुणोद्गारः ३९
२४. रामकृष्णयोर्मथुरायां प्रवेशः, रजकवधः, वायक-मालाकारयोरनुग्रहणं च ४१
२५. कुब्जायामनुग्रहः, धनुषो भंगः ४२
२६. कुवलयापीडवधः, भगवतो मल्लशालायां प्रवेशः ४३
२७. चाणूरमुष्टिकादीनां मल्लानां निधनं कंसस्य वधश्च ४४
२८. स्वविरहार्तगोपगोपीनां सान्त्वनाय भगवतोद्धवस्य प्रस्थापनम्, नंदोद्धवसंवादश्च ४६
२९. उद्धवगोपी संवादः, भ्रमरगीतमउद्धवस्य मथुरागमनम् च ४७
३०. रामकृष्णयोर्जरासन्धेन सह युद्धं द्वारकादुर्गनिर्माणं च ५०
३१. रुक्मिणीहरणं च ५३
३२. बलभद्रस्य व्रजे गमनं कालिन्दीकर्षणं च ६५
३३. राजसूयोपक्रमे पाण्डवानां दिग्विजयः, भीमेन जरासंधवधश्च ७२
३४. सुदामोपाख्यानम् ८०
३५. कुरुक्षेत्रे सूर्योपरागपर्वणि यदुभिः कुरूणां नंदादिगोपानां च समागमः। ८२

फूलमडंनीके पद

दीपमालिका-गोवर्धनोद्धारण

अन्नकूटके पद

प्रबोधिनीके पद

× × ×

बसंत, धमार, डोल, स्वामिनीजी संकेत, ब्रजबासी, मंदिर, ब्रज, यमुनाजी अक्षयतृतीया, स्नानयात्रा, रथयात्रा, वर्षाॠतु, हिंडोरा, पवित्रा, रक्षाबंधन, दशहरा, अपनौ दीनत्व, प्रभुकौ माहात्म्य, वीनती, समुदाय।

मथुरागमनादिके पद

गोपिनके विरहके पद

भ्रमरगीत

जरासंधके युद्धकौ प्रसंग

द्वारिकालीला

× × × ×

रामोत्सव, नरसिंह, वामनजी, समुदाय, फुटकर

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अष्टछापियोंकी विषय-सूची

१. परमानंददासका परमानंदसागर (दशम स्कन्धपर आधारित लीला-क्रम)

१. जन्म-समय
जन्म-समय
पलना
स्वामिनीजीकौ जन्म-समय
२. छठी
३. बाल-लीला
नाम-करण
अन्न-प्राशन
कर्ण-वेध
शयनोत्थित (करवट)
कलेऊ
मङ्गल-आरती
प्रातः मुख-दर्शन
बाल-लीला
मृत्तिका-भक्षण
दधि-मंथन
ऊखल-बंधन
फल-विक्रय
विवाह
४. उराहनौ
गोपिका-वचन जसोदाजूसों
जसोदा-वचन गोपी-प्रति
जसोदा-वचन प्रभु-प्रति
गोपिका-वचन प्रभु-प्रति
प्रभु-वचन जसरा-प्रति
५. मिषान्तर-दर्शन
६. खेल
सखीन-संग
सखान-संग
७. यमुना-तीर मिलन
८. असुर-मर्दन
९. गो-चारण
१०. भोजन-समय
छाक
भोजन
अँचवन-बीरी
११. आवनी
१२. गो-दोहन
१३. ब्यारू
१४. आसक्ति
गोपिकाजूके वचन
आसक्तिकौ वर्णन
साक्षात् स्वामिनीजूके वचन
साक्षात् भक्त - प्रार्थना
प्रभु-प्रति
साक्षात् प्रभुजी - वचन
भक्त-प्रति
१५. स्वरूप-शोभा
प्रभु-स्वरूप-वर्णन
स्वामिनी स्वरूप-वर्णन
१६. व्रताचरण
कात्यायनी
गनगौर
१७. द्विज-पत्नी-प्रसंग
१८. दान-प्रसंग
गोपी-वचन
प्रभु-वचन
परस्पर-गोपी-वचन
गोपी-वचन जसोदा-प्रति
१९. दीपमालिका-अन्नकूट
धनतेरस
गो-क्रीडन
दीपमालिका
गोवर्धन-पूजा
गोवर्धन-धारण
भाई-दूज
प्रबोधिनी
२०. रास
मान
दूती-वचन स्वामिनी-प्रति
दूती-वचन प्रभु-प्रति
मानापनोदन
रास
अन्तर्धान
महारास
जल-क्रीडा
युगल-रस-वर्णन
सुरतान्त
खण्डिता
२१. युगलगीत
२२. मथुरा-पधारिबौ
२३. गोपी-विरह
२४. भ्रमर-गीत
उद्धव-गोपी-प्रसंग
जसोद नंदजूके वचन
उद्धव-वचन प्रभु-प्रति
२५. जरासंध-युद्ध
२६. द्वारका-लीला
द्वारकावास
रुक्मिणी-सत्यभामा प्रसंग
बलदेवजी-प्रसंग
सुदामा-चरित्र
कुरुक्षेत्र-मिलन
(अवशिष्ट)

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परिशिष्ट

(क) उत्सव त्यौहार

१. वामन-द्वादशी
२. दशहरा
३. श्रीगुसाइंजी
४. वसंत
५. धमार
६. डोल
७. फूल मण्डनी
८. राम-नवमी
९. महाप्रभुजी
१०. चंदन-धारण
११. नृसिंह-चतुर्दशी
१२. गङ्गा-दशमी
१३. स्नान-यात्रा
१४. रथ-यात्रा
१५. वर्षा (मल्हार)
१६. हिंडोरा
१७. पवित्रा
१८. राखी

(ख) आश्रय और विनय

१. अपनौ दीनत्व
२. नाम-माहात्म्य
३. ब्रज-महिमा
४. श्रीयमुनाजी

(ग) प्रकीर्ण

स्फुट पद

कृष्णदास पद-संग्रह विषय-सूची

(क) नित्यलीला

१. मंगलाचरण
२. स्वरूप-वर्णन
प्रभु-स्वरूप
स्वामिनी - स्वरूप
युगल - स्वरूप
३. दान
स्वामिनी - वचन
प्रभु - वचन
सखी - वचन
४. आवनी
वत्स - चारण
गो - चारण
आगमन
आरती
गो - दोहन
५. आसक्ति
आसक्ति
आसक्ति-वचन-स्वामिनीजी
आसक्तिवचन - सखी
विरहासक्ति
६. वेणुगान
वेणुनाद
युगल वेणुनाद
रबाब-वादन
वीणा - बादन
गान
राग - गान
नृत्य
७. मान
आकर्षण
भावासक्ति
प्रतीक्षा
सखी - विनय
दूती संबोधन
मानापनोदन
अभिसार
केलि (विहार)
८. रास
प्रभुरास
स्वामिनी - रास
मण्डल - रास
९. युगलरास
सहज - विलास
ऋतु - विलास
१०. सुरतान्त
स्वामिनी
प्रभु
शयन
११. खण्डिता (वंचिता)

(ख) वर्षोत्सव

१. जन्माष्टमी
बधाई
पलना
ढाढी
२. बाल - लीला
जागरण
कलेऊ
छाक
भोजन
ब्यारू
विविध क्रीडा
कर्णवेध
सगाई ब्याह
३. राधाष्टमी
बधाई
पलना
४. दशहरा
५. दीपावली

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६. गोवर्धनपूजा
७. प्रबोधिनी
८. श्रीगुसाईंजी (बधाई)
९. बसन्त
१०. होरी
११. डोल
१२. फूलमण्डनी
१३. गनगौर
१४. श्रीमहाप्रभुजीकी बधाई
१५. अक्षय तृतीया
१६. रथयात्रा
१७. हिंडोरा
१८. पवित्रा
१९. राखी

(ग) प्रकीर्ण

१. आश्रय विनय माहात्म्य
श्रीयमुनाजी
श्रीगंगाजी
श्रीमहाप्रभुजी
श्रीगुसाइंजी

कुम्भनदासके पदोंकी विषय-सूची

(क) वर्षोत्सव-पद

१. मंगलाचरण
२. जन्म-समय (बधाई)
३. पलना
४. छठी
५. राधाष्टमी
६. श्याम-सगाई
७. दान-प्रसंग
८. दानलीला
९. दशहरा
१०. रास
११. धनतेरस
१२. गो-क्रीडा
१३. दीप-मालिका
१४. गोवर्धनपूजा
१५. गोवर्द्धन-धारण (इन्द्रमान-भंगके पद)
१६. श्रीगुसाइंजीकी बधाई
१७. वसन्त धमार
१८. फाग
१९. डोल
२०. फूल-मण्डनी
२१. श्रीमहाप्रभुजीकी बधाई
२२. अक्षय तृतीया
२३. रथयात्रा
२४. वर्षाऋतु-वर्णन
२५. हिंडोरा
२६. पवित्रा
२७. राखी

(ख) लीला-पद

१. कलेऊ
२. माखन-चोरी
३. क्रीडा
४. ब्रजभक्त-प्रार्थना
५. परस्पर हासवाक्य
६. मुरलीहरण
७. प्रभु-स्वरूपवर्णन
८. श्रीस्वामिनी स्वरूपवर्णन
९. युगल-स्वरूप-वर्णन
१०. छाक (वनभोजन)
११. भोजन
१२. आवनी
१३. आसक्ति-वर्णन
१४. आसक्ति-वचन
१५. मान-सम्बन्धी
१६. परस्पर-सम्मिलन
१७. शयन
१८. सुरतान्त
१९. खण्डिता
२०. विरह

(ग) प्रकीर्ण

१. आवनी
२. छाक
३. भोजन
४. प्रभुस्वरूपवर्णन
५. युगल-स्वरूप-वर्णन
६. हिंडोरा
७. आसक्ति
८. दान
९. विरह
१०. श्रीयमुना-स्तुति
११. सीकरीको पद
१२. टोंडको छत्रको पद
१३. विनय

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गोबिन्द स्वामीके पदोंकी विषय-सूची

(क) वर्षोत्सव (त्यौहार ऋतुएँ)

१. मंगलाचरण
२. जन्माष्टमी (बधाई)
३. पलना
४. राधाष्टमी
५. दान
६. वामन-जयन्ती
७. दशहरा
८. रास
९. हटरी
१०. गोवर्धन-धारण
११. भाई दूज
१२. गोपाष्टमी
१३. प्रबोधिनी
१४. श्रीगिरिधरजी उत्सव
१५. श्रीगुसाइंजी उत्सव
१६. बसंत
१७. धमार
१८. डोल
१९. फूल-मण्डिनी
२०. रामनवमी
२१. श्रीमहाप्रभुजी उत्सव
२२. अक्षयतृतीया
२३. जल-क्रीडा
२४. स्नान-यात्रा
२५. रथ
२६. वर्षा (मल्हार)
२७. हिंडोरा
२८. पवित्रा
२९. रक्षाबंधन

(ख) नित्य-क्रमके पद

३०. जगावनौ
३१. कलेऊ
३२. मंगला
३३. शृंगार
३४. मंथन
३५. छाक
३६. भोजन
३७. राजभोग
३८. भोग
३९. सन्ध्या (ब्रज आवनी)
४०. ब्यारू
४१. शयन
४२. मान
४३. पौढ़बो
४४. बाललीला
४५. उराहनौ

(ग) प्रकीर्ण पद

४६. ब्रज-सुषमा
४७. श्रीवल्लभकुल
४८. आश्रय विनती आदि ।

नंददास-पदावली

१. मंगलाचरण
२. श्रीगुरु-विट्ठलनाथ-स्तवन
३. श्रीयमुनाजीके पद
४. श्रीगंगाजीके पद
५. हनुमानजीके पद
६. ब्रजमहिमा
७. श्रीकृष्ण-जन्म तथा बधाई
८. बाल-क्रीड़ा
राधा-जन्मके पद २९
९. पूर्वानुराग तथा राधा-
कृष्ण-विवाह
१०. प्रेमलीला
११. ब्रज-बालाओंका प्रेम
१२. खण्डिता ब्रजवाला
१३. आगतपतिका
१४. अभिसार
प्रौढ़ा अधीरा ३०
१५. प्रेमगर्विता
१६. विरहिणी
१७. चोरीलीला
१८. छाक-लीला
१९. दधिदान-लीला
२०. गोवर्धन-लीला
२१. रास-लीला
२२. मान-लीला
२३. तेहवार
२४. वर्षा
२५. फूल-मण्डनी
२६. फाग-लीला
२७. दोलोत्सव

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

छीत स्वामीके पदोंकी विषय-सूची

(क) वर्षोत्सव पद

१. मंगलाचरण
२. राधाष्टमी-बधाई
३. रास
४. गो-क्रीडा
५. श्रीगुसाइंजीकी बधाई
६. बसंत
७. धमार
८. फाग
९. फूल-मण्डनी
१०. हिंडोरा
११. पवित्रा
१२. राखी

(ख) लीलाके पद

१. जगावनो
२. कलेऊ
३. अभ्यङ्ग
४. शृंगार
५. क्रीडा
६. छाक
७. भोजन
८. व्रतचर्या
९. स्वरूप-वर्णन
(क) प्रभु-स्वरूप
स्वामिनी-स्वरूप
युगल-स्वरूप
१०. आसक्ति-वचन
११. आसक्तिकी अवस्था
१२. भक्त-प्रार्थना
१३. वेणु-नाद
१४. आवनी
१५. आरती
१६. मान तथा मानापनोदन
१७. परस्पर संमिलन
१८. शयन
१९. सुरतान्त
२०. खण्डिता

(ग) प्रकीर्ण-पद

[आश्रय, विनती माहात्म्य]

१. श्रीमहाप्रभुजी
२. श्रीगुसाइंजी
३. श्रीगिरिराजजी
४. श्रीयमुनाजी
५. श्रीबलभद्रजी
६. माहात्म्य
७. विशेष

[वर्षोत्सव-पद]
[लीला-पद]
[प्रकीर्ण-पद]

चतुर्भुजदासके पदोंकी विषय-सूची

(क) वर्षोत्सव-पद

१. मंगलाचरण
२. जन्मसमय
३. पलना
४. छठी
५. राधाष्टमी
६. दान-प्रसंग
७. दशहरा
८. रास
९. दीप मालिका, अन्नकूट
१०. कानजगाई
११. दीपदान
१२. हटरी
१३. गोवर्द्धन पूजा
१४. गोवर्द्धनोद्धारण
१५. गोपाष्टमी
१६. प्रबोधिनी
१७. श्रीवल्लभ-वंशोद्गान
१८. वसंत
१९. डोल
२०. फूल मण्डनी
२१. आचार्यजीकी बधाई
२२. अक्षयतृतीया
२३. रथप्रसंग
२४. पावस-वर्णन
२५. हिंडोरा
२६. पवित्रा
२७. राखी

(ख) लीला-पद

२८. जगावनो
२९. मंगला (कलेऊ)
३०. बाल-लीला
३१. उराहनो
३२. मिषान्तर दर्शन
३३. वनगमन
३४. बनक्रीडा
३५. छाक
३६. वेणुगान
३७. स्वरूपवर्णन (श्रीप्रभुको श्रीस्वामिनीजीको)
३८. आवनी
३९. आसक्ति
४०. गो-दोहन
४१. ब्यारू
४२. आरती
४३. मान
४४. युगल रस-वर्णन
४५. सुरतान्त
४६. खण्डिता (वंचिता)
४७. उद्धव-संदेश

(ग) प्रकीर्ण पद

४८. भक्तनकी प्रार्थना
४९. यमुनाजी

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूरसागरकी सामग्रीका संकलन और उसका सम्पादन

श्री उदयशङ्कर शास्त्री

संवत् १५६७ में रुनकुताके निकट (मथुरा और आगरेके बीच) गऊघाटपर जब महाप्रभु वल्लभाचार्यसे सूरदासको ब्रह्मसंबंध प्राप्त हुआ, तबसे उनके पद गायनमें और गति आई। आचार्य महाप्रभुने उन्हें (दशम स्कन्धकी अनुक्रमणिका सुनाकर) भागवत लीलाओंका स्वतः स्फुरण करा दिया था। वार्तामें उल्लेख है कि श्री वल्लभाचार्यके शिष्य होनेके पूर्वतक सूरदास विरह, विनय आदिके पदोंका गायन किया करते थे। किंवदन्तीके अनुसार "जब श्रीआचार्यजीने कृपा करिकै सूरदासको नाम सुनायौ। पाछे दशम स्कन्धकी अनुक्रमनिका करी हती, सो सूरदासको सुनायौ। और सगरी सुबोधिनीकौ ज्ञान श्रीआचार्यजीने सूरदासके हृदयमें स्थापन कियौ, तब भगवत लीला जस बरनन करिबैकौ सामर्थ्य भयौ।" फलतः सूरदासजी भी अपने प्रज्ञा-चक्षुओंसे नित्य-लीला और रास-विलासकी जो झाँकी देखते थे, उसे अपने शब्दोंमें बाँधकर फिर भगवानके सामने अर्पित कर देते थे। ऐसे पदोंमें उनकी भक्ति-भावना अनेक रूपोंमें दिखाई पड़ती है। उनके द्वारा कितने पदोंका निर्माण हुआ, कौन जान सकता है? संप्रदाय तो कहता है "ता दिनते हरिलीला गाई एक लक्ष पद बंद।" किन्तु यह तो निश्चित ही है कि अपनी ८५ (?) वर्षकी आयुमें उन्होंने प्रचुर पद रचना की होगी। पर उनके द्वारा गेय पदोंका संग्रह किस प्रकार किया गया यह सूर साहित्यके मर्मज्ञों और अनुसंधान कर्त्ताओंके सामने बहुत ही विचारणीय प्रश्न है।

इतना तो निर्विवाद है कि उक्त संग्रह यथामति और यथारुचिसे किये गए हैं। यही कारण है कि सूरदासके पद कई क्रमोंमें मिलते हैं और अपनी अक्रमलाकी सूचना देते हैं। इन पदोंका संकलन किस प्रकार हुआ और उनके कैसे-कैसे रूप प्राप्त हैं, किस स्थानसे कौन-कौनसे हस्तलेख मिले हैं, पाठ शोध आदिकी दृष्टिसे उनका क्या महत्त्व है और सूरदासजीके पदोंको ग्रंथ रूपमें संपादित करनेके क्या प्रयास हुए हैं इसका ही एक विहगावलोकन यहाँ किया जायगा।

अठारहवीं शतीके आरंभमें कृष्णानंद व्यास देवने भारतमें परिव्याप्त संगीत रचनाओंके संग्रहके प्रयासमें सारे भारतकी यात्रा की और १८ वर्षोंतक निरंतर घूम-घूमकर संगीत रचनाओं (गीतों और पदों)-का संग्रह करते रहे। जब संग्रह पूर्ण हो गया तो उस सारी सामग्रीको लेकर कलकत्ते गए और वहाँसे सन् १८४३ में उसे ७ खंडोंमें 'रागसागरोद्भव-रागकल्पद्रुम' के नामसे प्रकाशित किया। राग सागरोद्भवके ७ खंड इस प्रकार थे; १—राग संग्रह—पृ०—१६४, २—सूरसागर पृ० ६००, ३—हिन्दू मुसलमानोंकी रचनाएँ पृ० ३४४, ४—बसंत और होली पृ० १७६, ५—ध्रुपद और ख्याल पृ० ३६४, ६—गज़ल और रेखते पृ० ७६, ७—गोपीचंद भरथरीके गीत—पृ० २८ = कुल पृष्ठ संख्या १६५२। आगे चलकर जब राग कल्पद्रुमके और संस्करण हुए

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तो उनमेंसे सूरसागरवाला ६०० पृष्ठोंका दूसरा खंड अलग कर दिया गया। कहना न होगा कि उसके आरंभमें ४४ पृष्ठोंमें सारावली थी और उसके अनन्तर नित्य कीर्तन शीर्षक देकर–राग भैरवके अन्तर्गत मंगल माधो नाम उचारसे आरम्भ करके क्रमशः १६२ पृष्ठोंमें ३६२ पदोंमें नित्य कीर्तन समाप्त किया गया था। उसके बाद नये शीर्षकसे ३ पद 'पद पंकज बंदु त्रिभुवन स्वामी, चरण कमल बंदु हरि राई, कहो शुक श्री भागवत विचार,' देकर तब दशम स्कन्धकी कथाका आरम्भ "बाल विनोद भावती लीला अति पुनीत मुनि भाखी हो" से करके लीला क्रमसे ग्रन्थ पूरा किया गया था। इस कार्यमें व्यासदेवको देशके अनेक गुणीजनों एवं धनी-मानी सज्जनोंका सहयोग प्राप्त हुआ था। जिस समय श्री कृष्णानंद व्यासदेव अपने राग कल्पद्रुमके लिए सामग्री एकत्र: कर रहे थे उसी समय काशिराज महाराज ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंहके आश्रयमें रहकर सरदार कवि "साहित्य-लहरी"की टीका कर रहे थे (जिसके ६ हस्त-लेख काशिराजके संग्रहमें विद्यमान है)। इसी टीकाको भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजीने संपादित करके खड्ग विलास प्रेस बाँकीपुर, पटनेसे प्रकाशित कराया था। साहित्य लहरी और सारावली दो ऐसे संग्रह हैं जिन्हें सूरदासजीके स्वतंत्र ग्रन्थ रूपकी ख्याति प्राप्त है। कदाचित् यही कारण रहा होगा कि सारावलीको व्यासदेवने अपने राग कल्पद्रुमके आरम्भमें दिया है।

सारावलीको सवा लाख पदोंका सूचीपत्र कहा गया है। उसके अन्तमें एक पद है—

ता दिन ते हरिलीला गाई एक लक्ष पद बंद।
ताको सार सूर सारावलि गावत अति आनंद॥

सूरदासका नामकरण सूरदासजीके द्वारा नहीं किया गया, यह नाम बादमें प्रचलित हुआ। इसका आधार श्रीवल्लभाचार्य (सं० १५३५-८८) तथा तत्पुत्र श्री विट्ठलनाथजी (श्रीगुसाँईजी, सं० १५७२-१६४२)-के सूर-विषयक कथन हैं। श्रीवल्लभाचार्य उन्हें 'सागर' कहते थे। श्री गुसाँईजीने एक बार कहा था—"ये पुष्टिमार्गमें दोइ सागर भए। एक तो सूरदास दूसरे परमानन्ददास सो तिनकौ हृदय अगाध, रस भगवल्लीला रूप रत्न जहाँ भरे हैं।"[1]

सूरसागरके संपूर्ण पदोंकी संख्याके सम्बन्धमें हिन्दी साहित्यमें अभीतक एक भ्रम फैला हुआ है। प्रचलित वार्ताओंके आधारपर पदोंकी संख्या एक लाख और सवा लाख भी मानी जाती है। पर यह प्रामाणिक नहीं है। कुछ विद्वान् 'एक लक्ष पद बन्द'—सूरकी इस उक्तिके आधारपर उनके पदोंकी संख्या एक लाख मानते हैं।[2]

प्रचलित प्रणालीके अनुसार बत्तीस अक्षरोंके एक अनुष्टुप् छंदको 'ग्रन्थ' रूप माना जाता है। प्राचीन संग्रहालयोंमें अधिकांश ऐसी प्रतियाँ मिलेंगी जिनके अंतमें अमुक ग्रन्थकी 'ग्रन्थ संख्या' का उल्लेख है। ग्रन्थसे वह लेखन-पद्धति सूचित होती है जिसमें लेखकको प्रतिशत श्लोक (ग्रन्थ)-के पारिश्रमिक रूपमें द्रव्य दिया जाता था। प्राचीन लेखन-प्रणालीमें प्रत्येक पत्रकी पंक्तियाँ समान होती थीं और अधिकांशतः उनमें समान संख्यामें समान ही अक्षर होते थे, जिससे लेखन-कार्यकी गणना सरलतासे हो जाती थी। इस दृष्टिसे यह सोचा जा सकता है कि एक लाख

१. 'अष्ट छाप'—वार्त्ता (काँकरोली) पृ० ४४ तथा १६८।
२. पदबन्दका अर्थ दो पंक्तियोंकी एक कड़ी है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पदसे तात्पर्य एक लाख ग्रन्थ या श्लोकसे है और सूरदासजीने एक लाख अनुष्टुप् छन्दोंके परिमाणमें रचना प्रस्तुत की होगी। परन्तु यह एक विसंवाद है कि इस संख्याका प्रयोग उनकी सभी रचनाओंके लिए नहीं, प्रत्युत् केवल 'सूरसागर'के पदोंके लिए किया जाता है। सूरसागर-की उपलब्ध प्रतियोंके पदोंकी उक्त प्रणालीसे गणना करनेपर यह संख्या एक भ्रम ठहरती है। वस्तुतः सूरदासकी सब रचनाएँ मिलकर भी इस संख्याकी पूर्ति नहीं कर सकतीं। अतः केवल सूरसागरको एक लाख या सवा लाख पदोंका संग्रह मानना उचित नहीं है। यह विचारणीय है कि उक्त एक लक्ष पद-बंदका रहस्य क्या है ?

कोशमें 'लक्ष' शब्दका अर्थ 'व्याज', 'अपदेश', 'शरव्य', और 'लाख संख्या' माना गया है। 'लक्ष्' आलोचनार्थक धातुसे इस शब्दकी सिद्धि होती है। अतः एक ही व्याज या मिषसे रचित पदोंको 'एक लक्ष पद-बंद' कहनेसे सभी संगति बैठ जाती है। सूरदासजीकी वार्तासे इसपर अच्छा प्रकाश पड़ता है। वहाँ उल्लेख है[1]—

तब वा बेर श्री गुसांईजीके सेवक सब पास ठाढ़े हे। सो चत्रभुजदासजीने सूरदासजी-सों कह्यो, जो सूरदास जी ! तुमने बोहोत भगवद् जस वर्णन कियो। सहस्रावधि (यहाँ लक्षावधि पद रचनाकी बात नहीं कही गई, स्पष्ट ही सहस्रावधि कहा गया है) पद किए। परि कछू श्री आचार्यजी महाप्रभूनको हू वर्णन कियो है ? तब सूरदासजी बोले—मैं तो यह सब जस श्री-आचार्यजी महाप्रभूनको ही कियो है। कछू न्यारो देखूं, न्यारो करूँ। परि तेरे कहेते कहत हौं (सो या कीर्तनके अनुसार सगरे कीर्तन जानियौ) या भाँति कहिके सूरदासजीने एक नयो पद करिके गायौ—सो पद—

राग केदारो; भरोसो दृढ़ इन चरनन केरो।[2]

इसका रहस्य यह है कि अंतिम समय-तक सूरदासजीने अपने गुरुदेव श्रीवल्लभाचार्यके संबंधमें एक भी पदका गान नहीं किया था। वे स्वकीय शुद्ध अद्वैतकी भावनासे हरि और गुरुमें कोई भी भेद नहीं समझते थे, जैसा कि चतुर्भुजदासके प्रश्नपर उनके उपर्युक्त उत्तरसे स्पष्ट है। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि सूरदासजीने एक लाख पदोंकी नहीं, एक ही लक्षपर पदोंकी रचना की थी। यों 'सहस्र और 'लक्ष' शब्द बहु-संख्या वाची भी हैं।

इस रहस्यको न समझते हुए सूरसागरको सचमुच ही एक लाख पदोंका सागर सिद्ध करनेकी होड़ सी लग गई और यह प्रयत्न किया जाने लगा कि अधिकसे अधिक पद कहाँसे और कैसे एकत्र किए जायँ। शायद इसी प्रयासका परिणाम है कि सूरसागरमें कुछ पद हितहरिवंशजीके और कुछ पद परमानन्ददासजीके भी संगृहीत हो गये हैं जिन्हें बीछकर अलग कर पाना एक कठिन कार्य है। और अब सवा लाख पदोंको दृष्टिमें रखकर ही सूरसागरके आकारपर विचार किया जाता है जो हस्तलेखोंके आधारसे किसी प्रकार सिद्ध नहीं होता है।

हमारी सम्मतिमें, ये सब खींचतानकी बातें हैं। वस्तुतः 'सारावली'के रचयिताने अन्वेषककी दृष्टिसे छानबीन करके नहीं, 'वार्ता' आदिके उल्लेख—सो तब सूरदासजी मनमें विचारे

१. 'सूरदास' के संदिग्ध पदोंका विश्लेषण, ना० प्र० पत्रिका, वर्ष ५६, अंक २, पृ० १२८।
२. वही (सं० १६९७ की वार्ता और भावप्रकाश, काँकरोली) पृ० १०५।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जो मैं तौ अपने मनमें सवा लाख कीर्तन प्रकट करिबेकों संकल्प कियो है, सो तामेंतें लाख कीर्त्तन तो प्रकट भए हैं, सो भगवद इच्छातें पचीस हजार कीर्तन और प्रकट करने'—(अष्ट सखानकी वार्ता, काँकरोली, पृ० ६५) और जनश्रुतिकी प्रसिद्धिको स्वीकार करके सूरदास-द्वारा एक लाख 'पद' (बन्द नहीं) रचे जानेकी बात कही है और बन्दसे उसका तात्पर्य 'राग' के नियमोंके निर्वाहसे है जिससे 'पद बन्द'[1] का सीधा-सादा अर्थ हुआ—'पदबद्ध अथवा गेय पद' अस्तु ।

वार्त्तामें लिखा है, कि सूरदासजीने सवा लाख कीर्त्तन रचनेका संकल्प किया था पर वे अपने जीवनकालमें केवल एक लाख पदोंकी रचना कर सके थे । संकल्पको पूरा न कर पानेका क्षोभ रहा अतएव श्रीनाथजीने 'सूर श्याम' छापसे पच्चीस हजार पदोंका निर्माण कर दिया और कीर्त्तनके चोपड़ामें यत्र-तत्र उनका समावेश कर दिया । पर यह विवरण सभी वार्ताओंमें नहीं मिलता ।

सूरदासका समय सन् १५५० ई० के लगभग है । कहते हैं, इन्होंने सवा लाख पद लिखे हैं, संभवतः सूरदासजीके पदोंकी संख्या सवा लाख अनुष्टुप् श्लोकोंके बराबर होगी । इससे भ्रमवश लोगोंने सवा लाख पदोंकी बात प्रचलित कर दी । ग्रन्थका विस्तार बतानेके लिए प्राचीन-कालसे ही अनुष्टुप छंद प्रकारकी नाप मान लिया गया है[2], जिनका संग्रह ''सूरसागर'' नामक ग्रन्थमें है । इस पंथके गुरुओंका वर्णन चौरासी वार्ता नामक ग्रन्थमें पाया जाता है, जो व्रजभाषाके गद्यमें लिखा गया है पर इस ग्रन्थका समय निश्चित नहीं है ।

राग-कल्पद्रुममें जो सूरसागर प्रकाशित किया गया, उसके प्रारंभमें सारावली[3] और उसके बाद 'नित्यकीर्तन' के रूपमें—राग भैरव : मंगल माधो नाम उचार : पदसे सूरसागर आरंभ हुआ और क्रमशः बधाई, बाललीला (माटी भक्षण प्रसंग), माखन चोरी, दामोदर लीला, अधासुर बध, वत्सहरण, मोहलीला, प्रथम मिलन लीला (चकई भौंराको खेल), गोवर्द्धन लीला, गो० ली० दूसरी, गोचारन लीला, कालीदमन लीला, दावानलपान लीला, गोदोहन लीला, वस्त्रहरण लीला, भुवंग डसन लीला, (व्रतचर्या) चीरहरण लीला, पनघट लीला आदि । अर्थात् उक्त राग कल्पद्रुमका सूरसागर लीलाक्रमका है । राग कल्पद्रुमके सूरसागरकी लोकप्रियतासे अनुप्राणित होकर नवलकिशोर प्रेस लखनऊने सूरसागरका एक स्वतंत्र संस्करण प्रकाशित किया । पंडित जवाहरलाल चतुर्वेदीने लिखा है[1] कि नवलकिशोर प्रेसका यह संस्करण अयोध्या नरेश महाराज 'द्विजदेव'की प्रेरणासे पंडित लछिरामजीने तैयार किया था, पर उक्त मुद्रित संस्करणमें इस बातका कोई उल्लेख नहीं है कि राग कल्पद्रुमसे लेकर किसने उसका यह रूप सँजोया ।

इसके अनंतर एक संस्करण बाबू राधाकृष्ण दासजीने तैयार किया । बाबू राधाकृष्ण दासजीको भारतेन्दुजीके पुस्तकालयसे सूरसागरके केवल दशम स्कंधका पूर्वार्द्ध ही प्राप्त हुआ और खड्ग विलास प्रेसके स्वामी बाबू रामदीन सिंहके यहाँसे प्रथमसे नवम स्कन्ध तक । और

१. सूर सारावलीमें कविके आत्मकथन—डॉ०-प्रेमनारायण टंडन, सम्मेलन पत्रिका, भा० ४७ सं० १, प्रयाग । २. हिन्दी व्याकरण, कामताप्रसाद गुरु ५वाँ संस्करण ना० प्र० स० काशी पृ० १६ सं० २०१४ । ३. महाकवि सूरदास—सं० २०२५, पृ० १५ ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक अन्य प्रति सं० १६०२ की लिखी हुई, जानीमल खानचंदकी भी प्राप्त हुई थी। इन्हीं सबके सहारे उन्होंने सूरसागरका संपादन करके वेंकटेश्वर प्रेस (बंबई)-के स्वामी सेठ खेमराम श्रीकृष्णदासके पास भेज दिया। उक्त प्रेससे सूरसागरका कैसा प्रकाशन हुआ यह पंडित रामचन्द्र शुक्लके शब्दोंमें देखिए—उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि "इसपर केवल नाम भर बाबू राधाकृष्ण दासका है शेष सब करामात प्रेसके पंडितों, कर्मचारियोंकी है। यद्यपि इसके टाइटिल पेजपर बाबू राधाकृष्ण दास सम्पादित लिखा हुआ है और उनका लिखा हुआ सूरदासका जीवन वृत्तांत भी इसके साथ लगा दिया गया है पर ग्रन्थको पढ़नेसे प्रकट होता है कि बाबू राधाकृष्ण दासने इस ग्रन्थका एक प्रूफ़ भी नहीं देखा है, हस्तलिखित कॉपी वेंकटेश्वर प्रेसमें भेज दी है, वहाँके पंडितोंने जैसा जीमें आया, पाठ अंड-बंड करके छापकर इसे किनारे किया है। यह संस्करण दूसरे संस्करणोंसे और भी भ्रष्ट है। मुश्किलसे कोई पद ऐसा मिलेगा जिसका पाठ ठीक-ठीक हो और जिसे बिना थोड़ी अपनी बुद्धि खर्च किए कोई पढ़ तक सके। सूरसागर योंही कठिन ग्रन्थ है, इस संस्करणने उसे और भी लोहेका चना बना दिया है।"

सूरदासजीका एक पद है—

अति मलीन वृषभान कुमारी।
हरि श्रमजल अन्तर तन भीजे ता लालच न धुआवति सारी।
अधो मुख रहति उरध नहिं चितवति ज्यों गथ हारे थकित जुआरी।
छूटे चिहुर बदन कुम्हिलाने ज्यों नलिनी हिमकरकी मारी॥

यह पद इस संस्करणमें इस प्रकार छापा गया है :—

अलिमलीन वृषभानु कुमारी।
हरि श्रम जल अंतर तनु भीजे ता लालच न धुआवति सारी।
अधोमुख रहति उरध नहिं चितवति गथहारे थकित जूथ आरी।
छूटे चिहुर वदन कुम्हिलाने ज्यों नलिनी हिमकर की मारी।
हरि संदेश सुनि सहज मृतक भई एक विरहिनि दूजे अलिजारी।
सूर श्याम विन यों जीवति हैं ब्रज बनिता सब श्याम दुलारी॥

सूरसागर—वें० संस्करण, पद सं० ३४२५ पृ० ७१२।

बाबू राधाकृष्ण दासने जब यह देखा कि यह संस्करण ऐसा भ्रष्ट छपा है तब उन्होंने बड़े परिश्रमसे बड़ा भारी शुद्धि पत्र क्या शुद्धि पुस्तक बनाकर भेजी पर प्रेस उसे चुपचाप हजम कर गया।[1]"

बाबू राधाकृष्ण दासने सूरसागरका पाठ तो स्कंधात्मक रक्खा, पर न जाने क्यों राग सागरोद्भवके अनुसार सारावलीको आरंभमें जोड़ दिया। संभव है कि सारावलीकी इस ख्यातिने कि 'वह सवा लाख पदोंका सूचीपत्र है' उन्हें ऐसा करनेको प्रेरित किया हो? यह भी संभावना हो सकती है कि वेंकटेश्वर प्रेसके स्वामियोंने नवलकिशोर प्रेसवाले संस्करणसे उनके संस्करणमें कोई कमी न रह जाय, इसलिए सारावलीको सूरसागरके साथ सम्मिलित करा दिया हो?

१. बाबू राधाकृष्णदासकी जीवनी, पं० रामचंद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, पृ० १३८–१३९।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पंडित जवाहरलाल चतुर्वेदीजीने लिखा है—"सूरके कृतत्वरूपमें मानी जानेवाली इस सूरसारावलीकी अभीतक कोई हस्तलिखित प्रति उपलब्ध नहीं हुई है[१] पर उदयपुरके राजकीय संग्रहालय सरस्वती भंडार (अब शाखा राजस्थान पुरातत्त्व-मंदिर)-में सूरसारावलीकी संवत् १७७५ की लिखी हुई १२४ पत्रकी प्रति, जिसमें आरंभके ७ पत्र नहीं है, उपलब्ध है, जिसका अंतिम पद यह है[२]—जो सूरसागरके सभा संस्करणका ३९१६ संख्याका पद है।

ब्रजतैं पावस पै न गई।
सिसिर बसंत सरद गत सजनी बीती अवधि ठई।
उनै उनै (व) रषत धमचछु सरिता उरसि भई।
(कुं) कुम कज्जल कीच मची जनु भुज युग पारि परी।
तामै विषम प्रगट ग्रीषम रितु तिहि आताप करी।
सूरदास प्रभु कुमुद बंधु बिनु विरहनि तरुन जरी॥

सूरसागरका नवलकिशोर प्रेसवाला संस्करण एकदम राग-कल्पद्रुमका प्रतिरूप है। उसमें छापेकी अशुद्धियाँ भले ही आ गई हों अन्यथा विन्दु-विसर्गका भी परिवर्तन नहीं है। सन् १९०२ तक उसके आठ संस्करण हो चुके थे। इस समय वह अप्राप्य है।

वेंकटेश्वर प्रेसवाला संस्करण स्कंध-क्रमका है। बाबू राधाकृष्ण दासजीको स्कंध क्रमकी ही प्रतियाँ मिलीं थीं, संभवतः इसलिए उन्होंने अपने संपादित सूरसागरको स्कंधात्मकका रक्खा। स्कंधात्मक सूरसागरके प्रथम ९ स्कंधोंमें विविध वार्ताएँ और कथाएँ हैं, तथा दशम स्कंधमें श्रीकृष्णचन्द्रकी लीलाओंका वर्णन है। एकादश स्कन्धमें उद्धवका बदरिकाश्रम-गमन एवं हंसावतारकी कथा है। बारहवें स्कंधमें बौद्धावतार, भविष्य कल्कि-अवतार एवं परीक्षितके शरीर त्यागका वर्णन है। बाबू राधाकृष्ण दास द्वारा संपादित समस्त सूरसागरमें कुल ४०३२ पद हैं। इसमें सारावलीकी पद संख्या ११०७ सम्मिलित नहीं है। इस प्रकार सूरसागरके दो स्वतंत्र संस्करण प्रस्तुत हुए एक लीलाक्रमका दूसरा स्कंध-क्रमका।

सूरसागरके स्कंधात्मक रूपमें श्रीमद्भागवतकी सम्पूर्ण कथाओंके सणावेशके पीछे जो कल्पना काम कर रही थी, संभवतः उसीका प्रतिफलन 'ब्यास कह्यौ सुकदेवसों श्री भागवत बखानि' के रूपमें हुआ और सूरसागरका सारा ढाँचा स्कन्धात्मक कर दिया गया। स्कन्धात्मक सूरसागरसे इस कल्पनाकी पुष्टि होती है। सूरसागरके प्रथम स्कंधमें—

श्री मुख चारि श्लोक दिये ब्रह्माको समुझाइ।
ब्रह्मा नारदसों कहे नारद व्यास सुनाइ॥
ब्यास कहे सुकदेवसों द्वादश स्कन्ध बनाइ।
सूरदास सोई कहे पद भाषा करि गाइ॥

सूरसागर, सभा सं०, प०—२२५।

---

१. सूर अध्ययन सामग्री—ब्र० सा० मंडल, मथुरा, सं० २०१६–पृ० ८।
२. राजस्थानमें हस्तलिखित ग्रंथोंकी खोज, भाग १, पृ० १५९।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस पदसे आगेके ५ पदोंमें भागवतके अवतारकी कथाका वर्णन है। उक्त पदोंके अन्तमें क्रमशः—

"जैसैं सुककों ब्यास पढ़ायो, सूरदास तैसैं कहि गायौ।" २२६
"सुनि भागवत सबनि सुख पायौ, सूरदास सो बरनि सुनायो।" २२७
"प्रथमहि कह्यौ ब्यास अवतार, सुनौ सूर सो अब चित धार।" २२८
"या विधि भयौ ब्यास अवतार, सूर कह्यौ भागवत विचार।" २२९

और आगे—

ब्यास देव तब करि हरि ध्यान, कियौ भागवतकौ ब्याख्यान।
सुनै भागवत जो चित लाइ, सूर सो हरि भजि भव तरि जाइ॥ २३०

स्कन्धतमक सूरसागरके इन ५ पदोंकी संगति वार्ताके उस अवतरणसे पूरी तरह मेल खाती है जिसमें यह कहा गया है कि "पाछे दसम स्कन्धकी अनुक्रमणिका करी हती सो सूरदास-को सुनायो और सगरी सुबोधिनीको ज्ञान श्रीआचार्यजीने सूरदासके हृदयमें स्थापन कियो। तब भगवत लीला जस बरनन करिबेको सामर्थ्य भयौ।" परन्तु कहना न होगा कि बारह स्कंधोंकी पद रचनाका उल्लेख वार्ताकी सबसे प्राचीन संवत् १६९७ वाली प्रतिमें नहीं है। यह पाठ 'भावप्रकाश' वाली वार्ताका है जो बादका है। इससे यह सिद्ध होता है कि स्कंधात्मक पद रचना विषयक कथन मौलिक नहीं है।[1]

इस संबंधमें डॉ० (अब स्व०) धीरेन्द्र वर्माके ये विचार अत्यन्त ध्यान देने योग्य है—'भागवत तथा सूरसागरमें वर्णित अवतारोंकी सूची तथा क्रम आदिमें कोई भारी भेद नहीं है। कुछ गौण अन्तर अवश्य है। किन्तु सबसे पहला बड़ा भेद भगवानके भिन्न-भिन्न अवतारोंके महत्त्वके सम्बन्धमें है। सूरसागरमें कृष्ण अवतार ही सब कुछ है। राम अवतारके अतिरिक्त अन्य अवतारोंका उल्लेख नाम-मात्रके लिए किया गया है। यह भेद नीचे दी हुई तालिकासे स्पष्ट होवेगा।

भागवत		सूरसागर	
स्कंध	अध्याय संख्या	स्कंध	पद संख्या
१	१९	१	२१९
२	१०	२	३८
३	३३	३	१८
४	३१	४	१२
५	२६	५	४
६	१९	६	४
७	१५	७	८
८	२४	८	१४

१. सूरसागरके संदिग्ध पदोंका विश्लेषण—श्री कंठमणि शास्त्री ना० प्र० प० वर्ष ५९ अंक २, पृ० १२६।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

९		२४	९		१७२
१०	पूर्वार्द्ध	४९	१०	पूर्वार्द्ध	३४९४
	उत्तरार्द्ध	४१		उत्तरार्द्ध	१३८
११		३१	११		६
१२		१३	१२		५
		३३५			४०३२

'अर्थात् भागवतके ३३५ अध्यायोंमेंसे ९० अध्याय कृष्ण अवतारसे संबंध रखते हैं और सूरसागर (स्कंधात्मक)-में लगभग ४००० पदोंमेंसे ३६०० से अधिक पदोंमें कृष्ण-चरित्रका वर्णन है तथा शेष ४०० पदोंमें विनय आदि साधारण विषयोंके अतिरिक्त शेष २३ अवतारोंका वर्णन है।

'अब एक स्वाभाविक प्रश्न यह हो सकता है कि सूरसागरका क्रम भागवतसे इतना अधिक मिलता हुआ क्यों है तथा सूरदास अपनी कृतिको भागवतका भाषा रूप क्यों कहते हैं? सूरसागरका ध्यानपूर्वक अध्ययन करनेपर प्रत्येक व्यक्ति इस निष्कर्षपर पहुँचेगा कि वर्तमान सूरसागर एक ग्रन्थ नहीं है बल्कि सूरदासकी प्रायः समस्त कृतियोंका संग्रह है। इसका मूल ढाँचा वास्तवमें भागवतके बारहों स्कन्धोंका अत्यन्त संक्षिप्त छन्दोबद्ध अनुवाद मात्र है। इस संक्षिप्त अनुवादमें अनेक स्थलोंपर कविकी तद्विषयक मौलिक पद-रचना भी संगृहीत है। ये पद-समूह विशेषतया दशम स्कंध पूर्वार्द्धमें मिलते हैं। ये अंश ही वास्तविक सूरसागर कहे जा सकते हैं। मौलिकता, रसात्मकता तथा धार्मिक विकासकी दृष्टिसे यह पद समूह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। कविकी अन्य फुटकर रचनाएँ भी सूरसागरमें अनेक स्थलोंपर संगृहीत हैं। किन्हीं किन्हीं लीलाओंका वर्णन तीन-तीन चार-चार बार मिलता है। उदाहरणके लिए सूरसागरमें तीन भ्रमरगीत मिलते हैं—पहला भागवतका उल्था है, दूसरा तद्विषयक मौलिक पद समूह तथा तीसरा एक छोटासा छंदोबद्ध भ्रमरगीत है, जो छंद आदिकी दृष्टिसे नंददास-कृत भँवरगीतका पूर्व रूप मालूम पड़ता है। इस तरह हम इस निष्कर्षपर पहुँचते हैं कि भागवतका आंशिक अनुवाद होते हुए भी इस समय सूरसागर नामसे प्रसिद्ध ग्रंथका अधिक अंश कथानक तथा साहित्यिक और धार्मिक दृष्टिकोणसे मौलिक है।'[1]

इस अवधिमें और भी छोटे-मोटे संस्करण प्रकाशित हुए जिनमें मतबअ (प्रेस) ईजाद आगरेसे सन् १८६७ में पृष्ठ संख्या ६८४, और सन् १८६७ ई० में ही लाइट प्रेस बनारससे सूरसागरके स्कन्धात्मक संस्करण छपे थे। पर इससे पूर्व मतबअ (प्रेस) इलाही दिल्लीसे सन् १८६० ई०में और मथुरा, मुंबै उल्उलूम प्रेससे भी स्कन्धात्मक संस्करण छपे थे। मुद्रित संस्करणोंमें आगरा १८६७ ई०, काशी १८६७ ई० और दिल्ली १८६० ई०, मथुरा १८६० ई०के चार संस्करण, जिनमेंसे तीन स्कन्धात्मक हैं, प्रमुख हैं। राग-कल्पद्रुम (जिसमें लीलाक्रमसे सूरसागरका प्रकाशन हुआ था)-का पहला संस्करण सन् १८९६ ई०में प्रकाशित हुआ था और

१. सूरसागर और भागवत—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी, इलाहाबाद, अप्रैल १९३४, पृ० १२१–१२६।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उसका दूसरा संस्करण सन् १९१६ ई०में नगेन्द्रनाथ बसु द्वारा बसुमती कार्यालय कलकत्तेसे ३ खण्डोंमें प्रकाशित हुआ था, जो अब प्रायः दुष्प्राप्य है ।

कहा जाता है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलनके भरतपुर-अधिवेशन (सन् १९२६ ई०)-में महात्मा सूरदासके सूरसागरके सम्पादनकी चर्चा हुई थी और उसके सम्पादन एवं प्रकाशनका भार तत्कालीन भरतपुर-नरेश सवाई किशन सिंहजीने लिया था। परन्तु कुछ ही दिनोंके बाद भरतपुर अपनी ही राजनीतिकी कुहेलिकामें आवृत हो गया, महाराज किशन सिंहजी राज्यच्युत कर दिए गए और वहाँ एक प्रकारसे सरकारी शासन स्थापित हो गया, तब इन साहित्यिक कार्योंकी ओर ध्यान कौन देता ? साहित्य सम्मेलन भी अपनी इस योजनाको आगे न बढ़ा सका। पर इस कार्यको अपने हाथमें लिया बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर"ने, जो स्वयं भी ब्रजभाषाके एक सिद्ध कवि थे। इससे पूर्व उन्होंने बिहारी सतसईका सम्पादन जिस प्रकार किया था, रामचरितमानसके संस्करणों (जिनमें प्रायः अर्थको दृष्टिमें रखकर पाठका ऊहापोह होता था)-के अतिरिक्त हिन्दी काव्यके ग्रन्थोंका वैसा सम्पादन तबतक नहीं हुआ था। बिहारी सतसईके लिए उन्होंने कई प्रतियाँ जुटाईं, और जयपुर राज्यके पोथीखानेमें सुरक्षित बिहारी सतसईकी प्रामाणिक प्रतिको उपयोगार्थ जब नहीं प्राप्त कर सके तो पंडित रामनाथ ज्योतिषी (जो उन दिनों अयोध्या राज्यके राजकीय पुस्तकालयके पुस्तकाध्यक्ष थे)-को जयपुर भेजकर उसके पाठका मिलान कराया और तब प्रत्येक दोहेको बिधिवत् कोलेट (संपरीक्षण) (हस्तलिखित प्रतियोंसे पाठका आक्षरिक मिलान) किया, जिसके कोलेशन शीट्स (संपरीक्षणके रजिस्टर) अभी भी काशी नागरी प्रचारिणी सभामें सुरक्षित हैं। उसी पद्धतिसे उन्होंने सूरसागरके संपादनका भी उपक्रम किया।

किसी ग्रन्थका पाठ-शोधन बड़ा दुरूह कार्य है। उसके सम्पादकको उस ग्रन्थ और उसके रचयिता, वर्ण्य विषय तथा तत्कालीन परिस्थितियाँ, सबपर निगाह रखनी पड़ती है। एक जगह भी कहीं निगाह चूकी कि अर्थका अनर्थ हो गया। बड़ी सावधानीसे प्राप्त सामग्री (ग्रन्थकी प्रतियों)-का परीक्षण करना होता है। उपलब्ध प्रतियोंमें पुष्पिका है या नहीं, यदि है तो कहीं उसमें दिया हुआ संवत् नक़ली तो नहीं है या उसकी संवत्-सूचक संख्याओंमें फेर बदल तो नहीं किया गया है ? कभी-कभी पुष्पिकाके अभावमें अच्छीसे अच्छी प्रति बहिष्कृत कर दी जाती है और पीछे उसकी सूचना मिलनेपर पछतावा ही होता है। यह दुर्भाग्य ही है कि अबतक प्रसिद्ध कवियों, संतों-महात्माओंकी रचनाओंकी उनके द्वारा लिखित कोई पाण्डुलिपि नहीं प्राप्त हो सकी है। (केवल गोस्वामी तुलसीदासजीके स्वाक्षरोंके कुछ आदर्श (नमूने) उपलब्ध हैं, (मानसका हस्तलेख नहीं) तो सूरदासजीके हस्तलेखकी आशा करना ही बेकार है।

रत्नाकरजीने सूरसागरके सम्पादनके समय भी बिहारी सतसईवाली पद्धति अपनाई थी। सबसे पहिले उन्होंने विभिन्न स्थानोंके मुद्रित संस्करण और फिर हस्तलेख एकत्र किए। इसमें उन्हें पर्याप्त सफलता मिली। कुछ तो उनकी कवि-रूपसे ख्याति और कुछ अयोध्या राज्यके दीवान होनेके प्रभावने उनके कार्यको सुगम बनाया।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रत्नाकरजीके द्वारा सूरसागरके सम्पादनमें २० प्रतियोंका उपयोग हुआ था। उनमें दो प्रतियाँ मुद्रित थीं और १८ हस्तलेख। उन १८ हस्तलेखोंमें केवल १३ हस्तलेख ही पुष्पिका युक्त थे, उनके लिपिकाल क्रमशः इस प्रकार थे—१७५३, १८१३, १८५४, १८६६, १८८०, १८८२, १८८६, १९०२, १९०६, १९१२, १९१६, १९२६, १९६४। इन प्रतियोंमें सबसे प्राचीन प्रति १७५३=१६९६ ई०की और सबसे अर्वाचीन सं० १९६४=१९०७ ई० की थी। शेष प्रतियोंमेंसे नस्तालीक़ लिपिमें लिखी हुई सं० १८८१ की प्रतिको पाठकी दृष्टिसे अधिक उपयोगी कहा गया था। इनमें सं० १९०२ वाली जानीमल खानचंदकी वह प्रति भी थी जिसका उपयोग बाबू राधाकृष्ण दासने किया था। रत्नाकरजीने बहुत परिश्रम और व्यय करके अक्षर-क्रम (ग्राफ़ पद्धति)-से सब पदोंकी सूची बनवाई थी। कई आदमियोंको लगाकर उन्होंने पाठ निर्धारणके लिए अलग-अलग पाठोंका मिलान कराया था। कहते हैं कि कभी-कभी उन्हें किसी पदका सही पाठ निर्धारण करनेमें घंटों लग जाते थे। वे नियमित रूपसे अपने सहकर्मियोंके साथ प्रतिदिन कार्य करते थे। कुछ दिनोंतक निरन्तर कार्य करनेके उपरान्त सूरसागरका एक रूप स्पष्ट हुआ। पर शायद यह गुत्थी नहीं सुलझ पाई थी कि अन्तिम रूपसे पाठ किस क्रमका रक्खा जाय ? और उन्होंने स्कंध-क्रमको स्वीकार किया, जो अपेक्षाकृत अर्वाचीन पाठ है। इसके अनंतर उन्होंने संपादनमें हाथ लगाया और पाठशुद्धिके अन्तर्गत छन्दोंका संशोधन, चरणोंका क्रम निरूपण तथा पद प्रयोगोंकी निश्चित पद्धतिका अनुसरण आदि संपादन-संबंधी अधिकांश अंग पूरे हो पाए थे परन्तु अभी चतुर्थांशका संपादन बाकी ही था कि वे अचानक काल-कवलित हो गए। उनका निधन हो जानेसे सब अस्त व्यस्त हो गया। रत्नाकरजीके देहावसान-के पश्चात् उनके पुत्र बाबू राधेकृष्णदासने सूरसागर-संबंधी सारी सामग्री काशी नागरी प्रचारिणी सभाको सौंप दी। रत्नाकरजीकी भी यही इच्छा थी कि सूरसागरका प्रकाशन नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा हो। उन्होंने छपाई आदिके संबंधमें भी कुछ बातें निश्चित की थीं।

सभाने सामग्री प्राप्त होनेपर रत्नाकरजीके द्वारा निर्धारित पद्धतिके अनुसार ही सूरसागरके प्रकाशनका निश्चय करके एक समिति बनाई जिसके सदस्य श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय, पंडित रामचन्द्र शुक्ल, पंडित केशवप्रसाद मिश्र तथा सभाके तत्कालीन साहित्य मंत्री पंडित नंददुलारे बाजपेयी थे।

उक्त समितिके गठित होनेपर पंडित अयोध्यासिंह उपाध्यायकी देख-रेखमें पंडित नंददुलारे वाजपेयीने सूरसागरके संपादनका काम सँभाला और कुछ दिनोंमें उसका छपना आरंभ हुआ, जिसके पहले संस्करणमें सूचना[१] दी गई कि "सूरसागरका पहला खंड मूल पुस्तकके प्रकाशित हो जानेपर प्रकाशित होगा। उसमें भूमिका, प्रस्तावना और प्रतीकानुक्रमणिका आदि रहेगी।" अच्छे मोटे कागज तथा सुन्दर टाइपमें पाठ-भेद सहित ७ खंडोंमें १४३२ पदोंका प्रकाशन हुआ, जिसमें आरम्भमें विनयके पद, उसके बाद भागवतके प्रथम स्कन्धका क्रम रक्खा गया, किन्तु कुछ दिनमें वह काम रुक गया। नंददुलारेजी भी काशीसे बाहर चले गए, उनकी अनुपस्थितिमें मुंशी अजमेरीजीने संपादनका काम सँभाला किन्तु प्रकाशनका काम जो एक बार रुक गया सो रुका

१. सूरसागर–प्रथम राज संस्करण, सं० १९९३, ना० प्र० सभा, काशी।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ही रहा, कि तबतक तृतीय महायुद्धके नगाड़े बज उठे। सारी वस्तुओंपर सरकारी नियन्त्रण और महार्घताके कारण काम आगे बढ़ना संभव न रह गया।

नागरी प्रचारिणी सभा सूरसागरको पाठ-भेद-सहित क्यों नहीं प्रकाशित कर पाई इसका विवरण उसके दो वर्षोंके वार्षिक विवरणोंमें इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है—'सभाने इस बृहद् और अमूल्य ग्रंथके सम्पादन तथा प्रकाशन कार्यका भार बड़े उत्साहके साथ उठाया था और यह हर्षकी बात है कि इसका संपादन कार्य समाप्त हो गया। परिशिष्टको छोड़कर कुल संपादित पदोंकी संख्या ६००० के लगभग हे। अभीतक सूरसागरके केवल सात अंक निकले हैं जिनमेंसे १२०० पदोंके लगभग प्रकाशित हो चुके हैं। इसका कारण यही है कि हिन्दी जनताने इस कार्यमें सहायता करनेका उत्साह नहीं दिखलाया।

'अभीतक जिस रूपमें सूरसागर प्रकाशित होता रहा है उस रूपमें वह बहुव्यवसाध्य है और इसीसे उसमें विलंब भी बहुत हुआ है। अतः सभाको विवश होकर कुछ कालके लिए यह कार्य स्थगित कर देना पड़ रहा है और यह विचार किया जा रहा है कि सूरसागरके संपूर्ण पदोंका एक सस्ता संस्करण एक या दो जिल्दोंमें प्रकाशित करके जनताके लिए सुलभ कर दिया जाय।''[१]

''सूरसागर—इस संपूर्ण ग्रन्थका संपादन सभा करा चुकी है किन्तु अभीतक केवल सात अंक इसके प्रकाशित हुए हैं। इन सात अंकोंके प्रकाशन तथा सम्पूर्ण ग्रन्थके सम्पादनमें सभा लगभग ग्यारह हजार रुपया व्यय कर चुकी है। किन्तु खेद है कि ऐसे महत्त्वपूर्ण और संपादित ग्रंथके सात अंकोंके प्रकाशनके बाद सभाने यह अनुभव किया कि अधिक व्ययसाध्य होनेके कारण जनता इसे न अपना सकेगी और बिना हिन्दी प्रेमी उदार जनताके सहयोगके इसमें खर्च हुआ रूपया भी वापस न आ सकेगा, अतः विवश होकर सभाको निश्चय करना पड़ा कि वर्तमान रूपमें इस ग्रन्थका प्रकाशन तब तकके लिए स्थगित कर दिया जाय जब तक इसके लिए पर्याप्त धन न मिल जाय।

''जिन थोड़े सज्जनोंने स्थायी ग्राहक बनकर सभाकी सहायता की है उनकी सभा हृदयसे अनुगृहीत है। जिन ग्राहत सज्जनोंका कुछ रुपया सभाके पास बाकी है उन्हें सभा उनका रुपया लौटा देनेको तैयार है, किन्तु नकद रुपया वापस करनेके पूर्व सभा उनसे प्रार्थना करती है कि वे बाकी रुपयोंके बदले सभा द्वारा प्रकाशित अन्य पुस्तक या पुस्तकें मँगा लेनेकी कृपा करें। ग्राहकोंको उनका हिसाब भेज दिया गया है।''[२]

तब पंडित रामनारायण मिश्र (ना० प्र० सभाके संस्थापक और तत्कालीन प्रधान मंत्री), के उद्योगसे पाठ-भेद-रहित दो खण्डोंमें सूरसागर प्रकाशित हुआ। इसकी भूमिकामें कहा गया— ''हम यह स्वीकार करते हैं कि प्रस्तुत संस्करणमें संपादित प्रतिका पूरा उपयोग नहीं किया जा सका है। इसमें समस्त उपलब्ध पद तो दे दिये गए हैं परन्तु किन प्राचीन प्रतियोंमें कौनसे पद

---

१. ना० प्र० सभा० वार्षिक विवरण, ४५ सं० १९९४, पृ० ११। २. ना० प्र० सभा० वार्षिक विवरण ४६ सं० १९९५ पृ० १६,।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मिलते हैं और कौनसे नहीं मिलते, इसका विवरण नहीं दिया जा सका। निश्चय ही प्रस्तुत पदावलीमें कई सौ पद निर्भ्रांत रूपसे प्रक्षिप्त हैं और अन्य कई सौ पद अत्यधिक संदिग्ध हैं? यह सूचना हम पाद टिप्पणियोंमें देना चाहते थे, परन्तु प्राचीन प्रतियोंकी प्रतिलिपिका काल तथा उनकी सापेक्षिक प्रामाणिकता संबंधी वक्तव्य दिए बिना प्रक्षिप्त या संदिग्ध होनेका निर्देश मात्र कर देना हमें विशेष समीचीन नहीं प्रतीत हुआ। विभिन्न प्रतियोंमें पाए जानेवाले पाठ भेद तथा राग-रागिनियों-संबन्धी उल्लेख भी नहीं दिए जा सके।"[1]

अर्थात् नागरीप्रचारिणी सभाका यह संस्करण केवल पदोंका संग्रह मात्र है और स्कंधोंके अतिरिक्त सम्पूर्ण उपलब्ध पदोंको परिशिष्टमें एकत्र कर दिया गया है अतएव उसे प्रामाणिक संस्करणकी संज्ञा देना बालिशता ही कही जायगी। इस प्रसंगमें डॉ० ब्रजेश्वर वर्माके विचार ध्यान देने योग्य हैं—"श्री वेंकटेश्वर प्रेस वाला संस्करण अब अप्राप्य हो गया है। परन्तु 'सभा' वाले संस्करणमें कहीं कहीं लीलाओंके क्रममें आनावश्यक परिवर्तन कर दिया है, जो कदाचित् हस्तलिखित प्रतियोंसे समर्थित नहीं है। अतः संदर्भ-निर्देश बदलते हुए भी मैंने 'सभा' वाले संस्करणके क्रमको स्वीकार नहीं किया है।[2]

कुछ दिनोंके उपरान्त ब्रज साहित्य मंडल मथुराने सूरसागरके संपादन हेतु विश्वविद्यालयोंके हिन्दी विभागाध्यक्षों, पाठ विज्ञानके ज्ञाताओं एवं प्राचीन साहित्यसे परिचित साहित्यकारोंको बुलाकर चार दिनका एक सेमिनार आयोजित किया। उक्त अवसरपर मंडलने सूर साहित्य (हस्तलिखित प्रतियों, मुद्रित संस्करणों)-की सूचक एक पुस्तिका 'सूर साहित्य : अध्ययन सामग्री" पंडित जवाहरलालजी चतुर्वेदीसे संपादित कराकर प्रकाशित की। श्री अगरचंद नाहटा, अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेरसे सूरपदावलीके दो हस्तलेख लेकर आए और डॉ० माताप्रसाद गुप्त तथा डॉ० रामकृष्ण गणेश हर्षे तथा प्रस्तुत निबंध लेखक आदि भी उपस्थित हुए और पाठशोधकी नई प्रणालीसे परिचित कराते हुए, उसी पद्धतिसे सूरसागरका सम्पादन करानेका सुझाव दिया। एक बड़ा भारी संपादन मंडल बना। जितने भारी भरकम नाम सोचे जा सकते थे सबका उसमें समावेश किया गया। कुछ प्रस्ताव भी पास हुए।

उक्त सेमिनारमें सबसे बड़ा प्रश्न उठा कि सूरसागरसे संबद्ध हस्तलेख तथा अन्य सामग्री कैसे एकत्र की जाय। मंडलके पास तो इस प्रकारकी कोई सामग्री थी ही नहीं। मंडलने एक प्रश्नावली भी प्रचारित की थी जिसके उत्तरमें अनेक लोगोंने अनेक प्रकारके विचार रक्खे थे। बहुत लोगोंने केवल साहित्यिक चर्चा की और कई लोगोंने संपादनपर होनेवाले व्यय आदिका तकमीना भी आकलित किया। मंडल अपने आंतरिक विवादोंमें फँस गया, अतएव सूरसागर सम्पादनकी योजना भी अस्त हो गई।

सन् १९६३ ई० में जब डॉ० माताप्रसाद गुप्त क० मुं० हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठके निदेशक होकर आगरे आए तो उन्होंने कुछ दिनोंके उपरान्त सूरसागरके पाठशोधकी आवश्यकता बतलाते हुए सर्वांगपूर्ण संपादनकी एक विस्तृत योजना बनाकर भारत सरकारके

१. सूरसागर—दो खंड—संस्करण, ना० प्र० सभा काशी। २. सूरदास, डॉ०—ब्रजेश्वर वर्मा; प्रस्तावना—पृ० १०, प्रयाग, तृ० सं० १९५९।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शिक्षा मंत्रालयको प्रस्तुत की, जिसमें सूरसागरके भाषा, काव्य एव पाठ पक्षपर प्रकाश डालनेकी चर्चा थी। उक्त योजना इस प्रकार थी—

सूरसागर-सम्पादन

भाषा-पक्ष

१. एक पाठके विभिन्न छंदोंका भाषा-विश्लेषण
२. विभिन्न रूपोंका तुलनात्मक भाषा-विश्लेषण
३. पदों तथा चउपई (आदि कथा सूत्र जोड़नेवाले छन्दों)-का भाषा-विश्लेषण
४. प्राचीनतर भाषा रूपकी दृष्टिसे तुलनात्मक भाषा-विश्लेषण
५. वैयक्तिक और निर्वैयक्तिक तत्त्व-विश्लेषण
६. अन्य

काव्य-पक्ष

१. विभिन्न छन्दोंके बीच क्रम-बद्धता
२. एक-एक छन्दके विभिन्न चरणोंमें क्रम-वद्धता
३. पुनरुक्ति
४. विस्तार और संक्षिप्तता
५. काव्य-रूप-गीतबन्ध, चउपई बन्ध, अथवा गीत मुक्तक
६. पदों तथा कथासूत्र जोड़नेवाले छन्दोंकी अलग-अलग स्थिति अथवा आगे-पीछेकी स्थितिकी सम्भावना
७. विभिन्न पाठोंमें आधिक्यवाले अंशोंकी प्रसंगादिकी दृष्टिसे स्थिति
८. वर्णन-वक्रता। वैशिष्ट्य
९. उक्ति-वक्रता। वैशिष्ट्य
१०. छन्द-वक्रता। वैशिष्ट्य
११. ध्वनि-योजना वैशिष्ट्य
१२. गीत-वैशिष्ट्य
१३. अन्य

पाठ-पक्ष

१. विभिन्न रूप परस्पर सापेक्ष अथवा निरपेक्ष हैं ?
२. यदि सापेक्ष हैं तो वे एककी रचनाएँ हैं अथवा भिन्न-भिन्न कवियोंकी।
३. यदि एककी है तो उनके भिन्न-भिन्न होनेका कारण क्या है ?
४. स्वतन्त्र पाठ-परम्परा तथा मिश्र पाठ-परम्परा।
५. पाठ-सम्बन्ध-सूत्र : मुख्य और गौण।
६. अन्य।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

किंचित् हेरफेरके साथ भारत सरकारने वह योजना स्वीकार कर ली और अपने अनुदानकी एक राशि भी दी। सूरसागरके सम्पादनका कार्य शनैः शनैः आगे बढ़ने लगा। ब्रज-साहित्य मंडलने सूरसागरसे सम्बद्ध सामग्रीकी जो पुस्तिका प्रकाशित की थी, उसके आधारपर सामग्री संकलनका उपक्रम आरम्भ हुआ। अनेक व्यक्तियोंके नाम भेजे गए पत्र 'नौट नोन' (अज्ञात) की मुहर लगकर ज्योंके त्यों लौट आए। कितने पत्र लौटे ही नहीं। संस्थाओंसे पत्राचार करनेपर उनके द्वारा संकलित जो सामग्री देखनेको मिली उसमें आजाद पुस्तकालय अलीगढ़ वि० वि० की उर्दू प्रतियाँ, उदयपुरमें पदसंग्रह, कोटामें पदसंग्रह, अलवरमें स्कंधात्मक प्रति, जोधपुरके पुरातत्त्व मंदिरमें तालबनमें मिखी गई पद संग्रहकी प्रति, रींवामें स्कंधात्मक प्रति तथा सूर मंजरीकी दो प्रतियाँ, रामबन सतनामें सूरमंजरी तथा पद संग्रह, पटियालामें गुरुमुखी लिपिमें सूरसागरकी चार प्रतियोंका हवाला दिया गया था पर वहाँ केवल एक प्रति ही प्राप्त हुई—शेषका अस्तित्व ही संदिग्ध रहा। काशिराजके पुस्तकालयमें स्कंधात्मक १० प्रतियाँ, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग और म्यूनिसिपल प्रयागकी प्रतियाँ, काशी नागरी प्रचारिणी सभाकी प्रतियाँ, बाबू मुरारीलाल केडियाकी संग्रहात्मक प्रति, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटनाकी प्रतियाँ, श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, कलकत्ताकी स्कन्धात्मक प्रति एवं भारत कलाभवन वाराणसीकी सचित्र प्रति देखनेको मिली। किन्तु श्री राय कृष्णदासजीकी वह प्रति देखनेको नहीं मिली, जिसका उपयोग रत्नाकरजीने अपने सम्पादनके समय किया था।

बीकानेर स्थित अनूप संस्कृत लाइब्रेरीकी प्रतियाँ उपयोगार्थ नहीं मिलीं और बहुत प्रयत्न करनेपर भी उनकी माइक्रो फिल्म करने तककी सुविधा नहीं प्राप्त हुई इसलिए वहाँ आदमी भेजकर पाठोंका मिलान कराया गया। वैसे बीकानेरमें, छोटी मोटी कई प्रतियाँ है, परन्तु पाठ निर्धारणकी दृष्टिसे केवल ३ प्रतियाँ ही उपयोगी हैं उनमें भी क्रमशः ४६०, ४७०, ६१५ ही पद हैं, ये प्रतियाँ संवत् १६८१, (फलक सं० १-२), १६६५ और १६६८ की लिखी हुई हैं। यह आवश्यक है कि उक्त प्रतियोंके पदोंकी अनुक्रमणिका बनाकर उनमेंसे पुनरुक्त पदोंको अलग करके पद संख्या स्थिर की जाय। तब यह स्पष्ट हो सकेगा कि उनमें कितने पद नये हैं।

लिपिकालकी दृष्टिसे क्रमानुसार प्राप्त २८ प्रतियोंका पता है, जिनमेंसे कुछ प्रतियाँ तो उपयोगार्थ उपलब्ध हैं। कुछका उल्लेख तो मिला, पर उनके दर्शन दुर्लभ रहे। उक्त हस्तलेखोंकी तालिका इस प्रकार है—

सूरसागरकी प्राचीनतम प्रतियाँ

१. पोथीखाना जयपुर (पदावली)	१६३६	—पद संग्रह
२. नाथद्वारा	१६५८	—संग्रह
३. जोधपुर (पारलौ)	१६६०	—संग्रह
४. कोटा	१६७०	—संग्रह
५. मथुरा (चीर घाट)	१६७१	—संग्रह
६. कुचामन	१६७५	—संग्रह
७. झालरा पाटन	१६८०	—संग्रह

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

८. बीकानेर = पद सं० ४६३	१६८१	—संग्रह
९. बूंदी	१६८१	—संग्रह
१०. मथुरा (शेरगढ़)	१६८२	—संग्रह
११. मथुरा	१६८८	—संग्रह
१२. जोधपुर (सेवकोंकी ढाढ़ी)	१६८८	—संग्रह
१३. बीकानेर = पद सं० ४७०	१६९५	—संग्रह
१४. उदयपुर = पद सं० ८१२	१६९७	—संग्रह
१५. बीकानेर = पद सं० ६१५	१६९८	—संग्रह
१६. जोधपुर	१७००	—संग्रह
१७. मथुरा, नटवरलाल चतुर्वेदी	१७४०	—संग्रह
१८. प्रयाग, म्यू० म्यू—	१७४३	—संग्रह
१९. मथुरा, नटवरलाल चतुर्वेदी	१७४५	—संग्रह
२०. काशी, ना० प्र० स०	१७४५	—स्कन्ध
२१. काशी, केशवदास शाह	१७५३	—स्कन्ध
२२. मथुरा, गोपालशंकर नागर	१७५८	—संग्रह
२३. उदयपुर = पद सं० १७०	१७६३	—संग्रह
२४. बीकानेर	१७७१	—संग्रह
२५. काशी, ना० प्र० सभा	१७९२	—स्कन्ध
२६. हरदोई (हरिपुरा)	१७९७	—संग्रह
२७. काशी, ना० प्र० स०	१७९८	—स्कन्ध
२८. बरौली (भरतपुर)	१७९८	—संग्रह

उपर्युक्त प्रतियोंमेंसे सबसे प्राचीन कही जाने वाली, जयपुरके पोथीखानेकी प्रति केवल सूरदासके ही पदोंका संग्रह नहीं है। उसमें अन्य अनेक महात्माओंके पद भी संगृहीत हैं। इसलिए उसे सूरपदावली तो नहीं कहा जा सकता, हाँ उसमें सूरपदोंका संग्रह अवश्य है। रचनाकालकी दृष्टिसे नहीं लिपिकालकी प्राचीनताकी दृष्टिसे प्रति अवश्य महत्त्वपूर्ण है परन्तु अभी-तक उसके पाठकी जाँच नहीं हो सकी है। उसके बाद उदयपुरकी १६९७ वि० की लिखी हुई जिस प्रतिकी बहुत चर्चा की जाती है उसका पाठ बहुत ही अशुद्ध है। यों उसे सूरदासजीके जीवनकालमें लिखी हुई प्रति माना जाता है परन्तु उसमें विनयके पद 'हरि हरि हरि सुमिरन करो' आदिमें होनेसे संदेह होता है कि लीलाक्रमके हस्तलेखमें इस प्रकार विनयके पद पहले क्यों ? और कबसे सम्मिलित हुए। कहना न होगा कि उपर्युक्त २८ हस्तलेखोंमें २२ प्रतियाँ संग्रहात्मक हैं शेष ६ प्रतियाँ स्कंधात्मक हैं। संवत् १७४० से प्राप्त होनेवाले सूरसागरके स्कंधात्मक हस्तलेख निश्चय ही सूरदासजीके निधनके ठीक एक सौ वर्ष बादके लिखे हुए हस्तलेख हैं, जिससे यह अनुमान-तो स्वाभाविक ही है कि सूरसागरका स्कंधात्मक रूप परवर्ती है। बारह स्कंधोंकी पद रचनाका उल्लेख वार्ताकी सबसे प्राचीन सं० १६९७ वाली प्रतिमें नहीं है। यह पाठ भाव प्रकाश' वाली वार्ताका है जो बादका है। इससे यह सिद्ध होता है कि सूरसागरका स्कंधात्मक रूप प्राचीन

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नहीं है और उक्त पद रचना विषयक कथन मौलिक नहीं है।[1]

पंडित जवाहरलालजी चतुर्वेदीने भी लिखा है कि जहाँ श्रीमद्भागवत–अनुसार स्कंधात्मक "सूरसागर" की प्रति सं० १७४५ वि० से पूर्व की नहीं मिलती, वहाँ उसके संग्रहात्मक रूपकी प्रति सं० १६३५ वि० अर्थात् श्रीसूरके तिरोधान समयसे कहीं अधिक समीपकी मिलती है।[2]

इन सभी प्रकारकी हस्तलिखित, मुद्रित, संगृहीत और द्वादश स्कंधात्मक प्रतियोंके अवलोकनसे हम निम्नलिखित निष्कर्षपर पहुंचते हैं—

१—संग्रहात्मक प्रतियाँ द्वादश स्कंधात्मक प्रतियोंकी अपेक्षा १०० वर्ष पुरानी हैं अर्थात् उनका संग्रह १०० वर्ष पूर्व ही हो चुका था।

२—संग्रहात्मक प्रतियोंका पाठ द्वादश स्कंधात्मक प्रतियोंकी अपेक्षा अधिक शुद्ध एवं ब्रजभाषा-व्याकरण-सम्मत है।

३—संग्रहात्मक प्रतियोंमें पदक्रम प्रायः पुष्टिमार्गीय परम्परापर अवलंबित है।

४—इन प्रतियोंमें भागवतको "पद भाषा करि गाय" के चरितार्थ करनेका विषय नहीं बनाया गया है।

५—द्वादश-स्कंधात्मक प्रतियोंमें पाठ भेद और क्रम भेद दोनों मिलते हैं।

इन कारणोंसे हम इस तथ्यपर पहुंचते हैं कि संग्रहात्मक प्रति द्वादशस्कंधात्मक प्रतिकी अपेक्षा अधिक मान्य है। भागवतकी तुलनामें हम द्वादश स्कंधात्मक प्रतिको ही रख सकते हैं। संग्रहात्मकको नहीं।[3]

वार्ता साहित्य एवं साम्प्रदायिक मान्यताएँ जो कहानी कहती हैं उनका वैज्ञानिकतासे दूरका भी नाता नहीं है। वे सब तो केवल धार्मिक विश्वासोंको ही पुष्ट करती हैं। यहाँ तक कि सूर, सूरज, सूरदास, सूर श्याम, आदिको एक ही मानकर सूरसागरको सवा लाख पदोंका संकलन सिद्ध करनेकी जोड़ तोड़ बैठानेका प्रयास होता रहता है, जबकि तथ्य इसके विपरीत है।

कालक्रमके अनुसार सूर कृत पदोंकी प्रतियाँ, जिनमें पदोंका संकलन है, २८ हैं। उनमेंसे २२ प्रतियाँ संग्रहात्मक हैं और शेष ६ प्रतियाँ स्कंधात्मक। स्कंधक्रमकी प्रतियाँ जो सं० १७४० के बादकी है, अधिक मिलती हैं। स्कंधात्यक प्रतियाँ, अधिकांशमें १८वीं और १९वीं शतीकी हैं, कुछ तो २०वीं शतीकी भी हैं। स्कंधक्रमवाली प्रतियोंमें प्रायः एकरूपता है परन्तु गुरुमुखी लिपिके हस्तलेख (फलक संख्या ८)-में बहुत पाठ भेद हैं। उसमें सभा संस्करणके आरंभके पद—

चरन कमल बंदो हरि राइ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधेको सब किछु दरसाइ।
बहिरो सुनै, गूँग पुनि बोलै रंक चलै सिर छत्र धराइ।
सूरदास स्वामी करुनामय बार बार बंदौं तिहि पाइ॥

—के स्थानपर प्रथम पद ही इस प्रकार दिया गया है—

१. वार्ता—पृ० १६–२७। २. महाकवि सूरदास—पृ० ६। ३. डॉ० हरवंशलाल शर्मा, सूर और उनका साहित्य—पृ० ८१।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बंदौं चरन कमल चितु लाइ।
जाकी कृपा कटाख्य राधेको सब किछु दरसाइ॥
बहिरै सुनै मूक पुनि बोलै रंक चलै सिर छत्र ढरराइ।
सूरदास स्वामी करुनामै बार बार बदौं तिहि पाइ॥

पुस्तक भरमें १७४० पद हैं, पता नहीं उनमें कितने पाठ भेद होंगे। इस समय अनेक संग्रहालयों, साहित्य प्रेमी व्यक्तियोंके पास स्कंधक्रमकी प्रतियाँ ही अधिक पदोंकी प्राप्य हैं। संग्रहात्मक प्रतियोंमेंसे कोई भी प्रति २००० पदोंसे अधिककी उपलब्ध नहीं है जब कि स्कंधात्मक प्रतियाँ २००० से ५००० पदों-तककी प्राप्त हैं। ये प्रतियाँ सं० १७६३ से १९३० तककी लिखी हुई मिलती हैं।

स्कंधात्मक प्रतियाँ सभी एकाकार भी नहीं हैं, सभीमें थोड़ी बहुत घटा बढ़ी है। प्रत्यक्ष रूपसे उनमें भी छोटे पाठ और बड़े पाठकी प्रतियाँ हैं। अब प्रश्न यह है कि इतने पद कहाँसे आ गए? कि जिन्होंने सूरके पदोंका पूरा सागर ही उपस्थित कर दिया। इन समस्त पद-संग्रहों, स्कंधात्मक प्रतियोंके दोनों प्रकारके पाठोंमें सूरदासके नामकी छाप भी सर्वत्र एक समान नहीं है। सूरसागरके जो दो तीन कैथी लिपिके हस्तलेख मिले हैं उनमें 'सूरज या सूरजदासकी छापका बाहुल्य है। उक्त प्रतियोंमें सूर, सूरकिशोर, सूरज, सूरदास, सूर श्याम आदिकी छापें मिलती हैं। श्रीप्रभुदयाल मीतलने अपने एक लेख "सूरदास नामक अनेक भक्त कवि और उनकी रचनाएँ" में १३ सूर छापी भक्तों और उनकी कृतियोंका उल्लेख किया है।[1] अकेले भक्तमालमें ही सूर नामधारी कई भक्तोंका उल्लेख है, किन्तु यह आश्चर्य और विचारणीय है कि भक्तमालपर 'रसबोधिनी' नामकी टीका करते हुए प्रियादासजीने सूरदासजीके छप्पयपर कोई टीका नहीं की है। भक्तमालका छप्पय यह हैं—

उक्ति चोज अनुप्रास वरन स्थित अति भारी।
वचन प्रीति निर्वाह अर्थ अद्भुत तुक धारी।
प्रतिबिंबित दिवि दृष्टि हृदैं हरि लीला भासी।
जनम करम गुन रूप सबै रसना परकासी।
बिमल बुद्धि गुन औरकी जो वह गुन स्रवननि धरै।
सूर कवित सुनि कौन कवि जो नहि सिर चालन करै॥ भ० मा० छ० ७३

कुछ दिनों पहिले तक सूरदास लखनवीकी रचना 'नलदमन' (जो शुद्ध प्रेमाख्यान काव्य है जिसमें नल और दमयन्तीकी कथा सूफ़ियोंकी मसनवी शैलीमें वर्णित है) भी इन्हीं सूरदाससे संबद्ध थी।[2] सूर साहित्यके कई अधिकारी विद्वानों-तकने सूरदासके ग्रन्थोंके साथ ही इसकी भी गणना की है। पर अब उक्त भ्रमका निराकरण हो गया है। इस प्रकार सूरजदास जिनकी प्रसिद्ध रचमा 'राम जन्म' है, यदि वे भी कहीं छंट सकते तो सूर साहित्यपर जमी काई बहुत कुछ

१. सूरस्मारक मंडल आगराकी स्मारिका, सं० २०२८, पृ० २४–३०।
२. यह संयोग ही है कि अब उक्त ग्रंथकी प्रतियाँ उपलब्ध हो गई हैं और वह 'नल दमन' हिन्दी विद्यापीठ आगरा विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित हो गया है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

साफ़ हो जाती। बहुतसे लोग विल्वमंगल सूरदास और सूरदास मदनमोहनके धोखेसे अपनेको प्रयास करनेपर भी मुक्त नहीं कर पाते हैं। तब सूरदासजीके सूरसागरका एक स्वरूप कैसे स्थिर हो और उसका वास्तविक रूप जन साधारणके सामने कैसे आए? इसका प्रयत्न बरसोंसे हो रहा है पर "ज्यों-ज्यों भीजै कामर त्यों त्यों भारी होय" की उक्ति चरितार्थ हो रही है। प्रयास तो कई हुए पर समस्या उलझती ही जा रही है। इधर कुछ वर्षोंमें सूरसागरके नामसे कई प्रकाशन सामने आए हैं परन्तु वे सब अपनी-अपनी खींच-तानके अतिरिक्त कुछ नहीं सिद्ध हो सके हैं। इस समय आवश्यकता एक ऐसे संस्करणकी है जो सूर साहित्य प्रेमियों एवं पुष्टि मार्गके अनुयायियोंको भी प्रिय लगे अर्थात् संप्रदायकी दृष्टिसे उसमें कोई ऐसा पद छूट न जाय जो अब तककी प्राप्त बहुचर्चित प्रतियोंमें उपलब्ध रहा हो और किसी प्रतिसे ऐसा पद आ न जाय, जो नवीनताके उत्साहसे संकलित कर लिया जाय और वह सारे प्रसंगको दुरारोह बना दे। हो सकता है किसी प्रतिमें कोई ऐसा पद प्राप्त हो जो अब-तककी उपलब्ध प्रतियोंमें नहीं मिला, परन्तु किसी नवीन प्राप्त हस्तलेखमें मिले, तो बिना अंतरंग और बहिरंग परीक्षणके उसे ग्रहण नहीं किया जाना चाहिए जैसे सभा-संस्करण पद संख्या ६४ में—

बंदौ चरन सरोज तिहारे।

इस पदकी ७ पंक्तियोंमें 'जे पद' और आठवी' पंक्ति 'सूरदास तेई पद पंकज' में सर्वत्र श्रीकृष्णके चरणोंकी ही चर्चा है। तब इस दूसरी पंक्ति 'सुंदर स्याम कमल दल लोचन ललित त्रिभंगी प्रान पियारे।' में कृष्णके नेत्रोंके इन विशेषणोंकी क्या आवश्यकता? इस पंक्तिमें भी चरणों व उनके विशेषणोंको ही होना चाहिए। परन्तु प्रतीत होता है कि किसी हस्तलेखके पूर्वजमें यह पंक्ति किसी कारण अपने प्रसंगसे दूर जा पड़ी और उसके स्थानपर उपर्युक्त पंक्ति संयोजित हो गई, तबसे उसी आदर्शकी प्रतिलिपि होती चली आई और उसने एक पाठका रूप धारण कर लिया। कांकरोली तथा एक अन्य हस्तलेख (फलक संख्या ४-५)-में उपर्युक्त पदकी दूसरी पंक्ति इस प्रकार है—

सुन्दर अरुन कमल पल्लवसे दस षट चिन्ह चारु मनु हारे।

इस पंक्तिका गठन अन्य पंक्तियोंसे भिन्न अवश्य प्रतीत होता है जिसका परीक्षण होना चाहिए।

नागरी लिपिके हस्तलेखोंके अतिरिक्त नस्ता'लीक़ (फ़ारसी खुशखत) लिपिमें लिखे हुए हस्तलेख भी अलीगढ़, लखनऊ आदिसे उपलब्ध हुए हैं जो प्रायः सभी स्कंधात्मक हैं। उनमें भी एकरूपता नहीं है। एक हस्तलेख (फलक संख्या ६)-का आरम्भ 'चरन कमल बंदौ हरि राइ' से होता है तो दूसरे हस्तलेखका आरंभ 'हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो' से होता है और तीसरेका 'करनी करुनासिंधुकी कछु कहत न आवै' से होता है। पदोंकी संख्या भी समान नहीं है।

इसी प्रकार लीलाक्रमवाले हस्तलेखोंमें बहुतसे प्रक्षेप पाए जाते हैं। पुष्टि-मार्गीय सेवा पद्धतिके अनुसार अष्टयाम सेवा तथा उत्सवोंपर गाए जानेवाले पदोंमें भी इसी प्रकारकी अक्रमता एवं असंगतियाँ पाई जाती हैं। उत्सव क्रमके संग्रहोंका क्रम प्रायः निम्न प्रकारका रहता है पर उसमें केवल सूरदासके पद ही रहें, यह निश्चित नहीं है। उनमें प्राय, अन्य अष्टछापी महात्माओंके पद भी रहते हैं। अतएव ऐसे पद-संग्रह (फलक संख्या ३–७)-को सूरसागरकी संज्ञा देना

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उचित न होगा। लीलाक्रम और सेवाक्रमका अंतर स्पष्ट करनेके लिए वर्षोत्सवका क्रम दिया जा रहा है। वर्षोत्सवका क्रम—

जन्माष्टमीसे—बधाई, छठी, पलना, ढाढ़ी, दसौंधी, मासदिना, अन्नप्राशन, कर्णबेध, नामकरण, मृत्तिका-भक्षण, करवट, ऊखल, बाल लीला, (पूतना-वध शकटासुर, बक, तृणावर्त, दावानल, कालिय दमन, आदि), चन्द्रावलीजूकी बधाई, ललिताकी बधाई, राधिकाजीकी बधाई, राधिकाजीकी ढाढ़ी, राधिकाजीकौ पलना, राधिकाजीकी बाल लीला, बल नागरी, दान, साँझी, नव विलास, देवीपूजन, मुरली, करखा, दशहरा, रास, मान, पौढ़ना, धनतेरस, रूप चौदस, दिवारी, गाय खिलायबौ, कान जगायबौ, हठरी, अन्नकूट, गोवर्द्धन पूजा, भाई दोज, इन्द्रमान भंग, गोचारण, देव प्रबोधनी, ब्याह, मान, मकर संक्रान्ति, होरी और धमार, पाटोच्छव संवत्सर, गनगौर, जमुनाजीकी बधाई, शृंगार, ब्यारू, चन्दन, नरसिंह चतुर्दशी, नावके पद, गंगा दशमी, स्नान यात्रा, रथ यात्रा, मल्हार, कसूमी, छठ, घटा, चूनरी लहरिया, हिंडोरा, पवित्रा, कूल्हे।[1]

पुष्टि सम्प्रदायमें इस वर्षोत्सवके क्रमके साथ-साथ नित्य कीर्तनका क्रम भी चलता था। इसलिए सूर आदि आठों सखा नित्य-कीर्तनके पदोंकी रचना किया करते थे। नित्य कीर्तनका क्रम निम्नलिखित है—

बंदना (महाप्रभुजीकी, गोसाइंजीकी, यमुनाजीके पद, गंगाजीके पद), जगायबेके पद, मंगला आरती, नहवायबेके पद, खंडित ।१। बहार, व्रत-चर्या, हिलग (स्नानका प्रथम स्वरूप), दधि मंथन, शृंगार, पनघट ।२। ग्वाल, फल फलादिके पद, गोदोहनके पद, घैयाके पद, माखन-चोरी, उलाहना, पालना ।३। भोजन बोलायबौ, शीतकालके भोजन, ब्रजके भक्तनके यहाँ भोजन, भोग सरावना, बीरी राज भोग ।४। छाक, कुंज, मान कुंज, उष्णां कालके पद, नावके पद, चंदनके पद, खसखानेके पद, मानसागर उत्थापन ।५। भोग, गाय बुलायबेके पद, आवनीके, मानके पद, ।६। आरती ।७। शृंगार उतारनेके पद, साँझ समय भैय्या, मिसके पद ब्यारू, दूध, बीरी, शयन-समयके पद, मान मिलायबेके, पौढ़बेके पद ।८।

इस प्रकार सेवा क्रमसे पद रचना करनेवालोंके साथ आठ आठ झालरिया रहा करते थे। सूरदासके साथ भी जो झालरिया (झाँझ बजानेवाले) थे उनके नाम इस प्रकार हैं— तानसेन (स्वामी हरिदासके शिष्य नहीं), अलीखान, मुकुन्ददास, जय भगवान और कृष्ण जीवन, लच्छीराम। ये झालरिया 'टेक' उठानेका काम तो करते ही थे, अपने पदोंमें अपने गायककी छाप भी लगा दिया करते थे। इस व्यवस्थाके कारण सूरके वास्तविक पदोंको खोज निकालना दुस्तर कार्य है।

वर्षोत्सव और नित्य-कीर्तनके पदक्रमके आधारपर दोनों प्रकारकी (संग्रहात्मक और द्वादश स्कन्धात्मक) प्रतियोंका अध्ययन करनेपर हम इस निश्चय पर पहुँचते हैं—

१—वर्षोत्सव तथा नित्य कीर्तनके कई महत्वपूर्ण अंगोंपर सूरदासजीके पद या तो मिलते ही नहीं या एक आधकी ही संख्यामें प्राप्त होते हैं।

१. सूर और उनका साहित्य—डॉ० हरवंशलाल शर्मा, पृ० ८८

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२—नित्य कीर्तन और वर्षोत्सवके क्रम पूर्णरूपेण संग्रहात्मक अथवा द्वादश स्कन्धात्मक किसी प्रतिमें नहीं दीख पड़ते। संग्रहात्मक प्रतियोंमें यथा कथंचित वह क्रम मान लिया जाय तो द्वादश स्कन्धात्मक प्रतियोंमें तो उसकी संगति बैठती ही नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों ही प्रतियोंका संकलन सूरदासजीके बहुत दिन पश्चात् हुआ होगा।

सूर साहित्य अर्थात् सूरसागर (पदक्रम, लीलाक्रम, स्कन्धक्रम)-के जो तीन रूप प्रचलित हैं उनके अतिरिक्त सारावली अभी भी विवादास्पद बनी हुई है। इसी बीच एक और रचना 'सूर मंजरी' (फलक संख्या ६) प्रकाशमें आई है। सूरसागरकी प्रतियोंकी खोजके प्रसंगमें इसकी कई प्रतियाँ उपलब्ध हुईं। इसका रचनाकाल या संग्रहकाल संवत् १७३४ और लिपिकाल १८७१ है। ये प्रतियाँ रीवाँ और उसके आसपास प्राप्त हुईं हैं। कुछ दिनों पूर्व चित्रकूटके किन्हीं अध्यापकने इसीकी एक और प्रति मिलनेकी सूचना पत्रोंमें प्रकाशित कराई थी। इस 'सूर मंजरी'का संग्रह तिलोकचंदके द्वारा किया गया है। आरम्भमें उन्हींके बनाए हुए ६ पद हैं। उसके बाद स्कन्धात्मक सूरसागरके पदोंका लीलाक्रमसे संकलन है जिनका विवरण इस प्रकार है। वे पद सूरसागरके सभा संस्करणमें भी विभिन्न संख्याओं पर उपलब्ध हैं।

पद संख्या राग बिलावल

माधौ जू सूरमंजरी सुनियो। से आरम्भ

पद संख्या	सभा. सं. पद. सं.
२२–सुत मुख देखि यशोदा फूली।	सू० सा० ७००
५०–माखन चोर लीला—रामकली—करत हरि ग्वालन संग विचार।	सू० सा० ८८०
६१–ब्रह्मालीला—राग नट—विधि मन ही मन सोचु पर्‍यो।	सू० सा० १०५४
६५–प्रथम मिलन—राग टोडी—बूझत स्याम कौन तू गोरी।	सू० सा० १२६१
१०७–गोबरधन पूजा—राग बिरावर—नंद महरसों कहत जसोदा सुरपतिकी पूजा बिसराई।	सू० सा० १४२६
१३४–काली दमन—राग सूहो—कंस बुलाइ दूत इक लीनो।	सू० सा० ११४१
१३८–चीर हरन—राग सूहो—आपु कदम चढ़ि देखत स्याम।	सू० सा० १४०३
१७१–पनघट समौ—राग टोडी—सनघट रोके रहत कन्हाई।	सू० सा० २०२१
१८५–दान समय—राग भैरो—भोरहीते कान्ह करत झगरो।	सू० सा० २०८२
१६६–दान लीला—राग आसावरी—सुनि तमचुरको सोर घोरकी बागरी	सू० सा० २२३६
३१३–नेत्र बरनन—राग नट—नैना मेरे हाथ न रहे। [नैवा हाथ न मेरै आली]	सू० सा० २८६८
३८०–आँखिनकी सोभा—राग धनाश्री—अँखियाँ निरखि स्याम मुख भूली	सू० सा० ३०१६
३८७–मुरली प्रसंग—राग विहागरो—अँखियनकी सुधि भूलि गई।	सू० सा० ३०२७
३६४–रास लीला—राग केदारो—आजु बन बैन बजावत स्याम।	सू० सा० १६११
४०७–अंतर ध्यान समय—राग विहागरो—तब हरि भये अंतर ध्यान।	सू० सा० १६२०
४४४–मान समय—राग टोड़ी—अब जानी पिय वात तुम्हारी।	सू० सा० ३०३१

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४६६–हिंडोलना—राग मलार—हिंडोलना झूलत माई गोकुल चंद। सू० सा० ३४५२
५०२–वसंत—राग वसंत—देखत बन ब्रजनाथ आज अति उपजत है अनुराग। सू० सा० ३४७२
५०५–धमारि—डफ बाजन लगे हेली। सू० सा० ३५२३
५२१–कंस लीला—राग सोरठ—नृपति मन यहै विचार पर्यो। सू० सा० ३५४३
६६५–अथश्री ठाकुरजी द्वारका सिधारे सो गोपिनकौ विलाप, राग—विहागरौ
माई कैसे बने या ब्रजको आवन।
६८७–रुक्मिनी मंगल— राग विरावर—द्विज कहि गयौ जदुपतिसौं बातै। सू० सा० ४७६०
६६०–सुदामा चरित्र—राग विरावर—कहि न सकौ तुमसौं इक बात। सू० सा० ४८४४
६६६–अथ द्रोपतीको समय—राग मारू—इस उत देखि द्रौपती टेरी सू० सा० २५१
७०४–अथ भीषम पर्व—राग नट—भगत बछलता प्रगट करी। सू० सा० २६८
७१२–रामायन—राग सारंग— हौं अनाथ गरीबिनी बनवासी
७२५–अथ परमारथके पद—राग रामकली—रे मन सुमिर हरि हरि हरी सू० सा० ३०६
७६७—स्फुट विष्णुपद—राग सारंग—पूछति है रुक्मिनी पियाकौ इनमें कौन
बृषभानु किसोरी सू० सा० ४६०५
७७२—विष्णुपद—हिरदेकी जरनि कबहुँ न मिटी। सू० सा० ८६८

अंतमें दी हुई सूची

तिलोकचंदके पद	१-२	हिंडोला	६७—६६
जन्म बालचरित्र	२-१३	वसंत	६६—१०४
माखन चोरी	१३-२०	धर्वारि	१०४—१०८
ब्रह्मालीला	२०-२५	कंसलीला	१०८—११८
गोवर्धन पूजन	२४-२८	भ्रमरगीत	११८—१३०
काली लीला	२८-३४	श्रीकृष्ण द्वारिका गवन	१३५—१३६
चीर हरन	३४-४०	रुक्मिनीको मंगल	१३७—१३८
दान लीला	४०-६५	सुदामा चरित्र	१३८—१३६
नेत्रका वर्नन	६५-७६	बावन समय	१३६—१४०
आसिनकै सोभा	७६-७७	द्रोपदीको समय	१४०—१४१
रासके पद	७७-८८	भीष्मपर्वकै कथा	१४१—१४४
मान समयके पद	७८-६७	रामायनके पद	१४३—१४६
		परमार्थके पद	१४७—१५७
		अस्फुट पद	१४७—१५६

सूरमंजरीके हस्तलेखका आरंभिक विवरण इस प्रकार है—पत्र १५८, पद सं० ७७७ पुष्पिका। "इति श्री सूरमंजरी समाप्त चैत्र मासे कृष्णपक्षे १४ संवतु १८७१ लिख्यते प्रधान रामगोपाल मुकाम पथरहट (माधवगढ़का पुराना नाम) आरंभके ६ पद तिलोकचंदके बनाए हुए हैं—पद राग सारंग। अब यह कथा प्रेमरंग गाई। सूर संग रहि मथिकै सागर सूरमंजरी वाही।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नौतम बात अनूप बहुत है रस करि सील तई। सुनत सुनावत जो जन गावत है मानौ सुफल यही। निहचै मन यह कथा मनाई चित दै प्रेम लही। संवत सत्रह सै छत्तिस भे तब यह प्रगट भई। कथा पुत्र भौगाँवके वासी सूलकी पौर कही। मेदनी मल्लके सुवन तिलोकचंद जिन या असंका भई॥

इस प्रकार इस समय उपलब्ध सामग्रीमें सबसे पहले पदोंका मिलान करना चाहिए। जो पद सभी हस्तलेखोंमें समान रूपसे मिलते हैं उन्हें अलग करके शेषकी विषयानुसार छँटाई करके यह देखना उचित होगा कि कहीं उसी छापका किसी दूसरे संतका पद तो नहीं है, जैसे सभा संस्करणमें कई ऐसे पद हैं जो हित चौरासीमें हैं। अब या तो वे मूल पद सूरदासके हैं या हित हरिवंशजीके। एक समस्या पुनरुक्तिकी भी है। जैसे सूरसागरमें तीन भ्रमरगीत हैं। ऐसे ही नेत्रों संबंधी पद हैं जो शब्दशः पुनरुक्त नहीं तो विषयतः पुनरुक्त तो हैं ही।

इन सब समस्याओंका निवारण करनेके उपरान्त भाषापर विचार करना चाहिए। सूरसागरकी भाषाके विषयमें भी बड़ा विवाद है। कहीं तो यह कहा जाता है कि ब्रजभाषाकी कविता जैसे—अनेक बोलियोंको आत्मसात करके उन्हें अपने रूपमें ढाल लेती है—यही परम्परा सूरसागरकी भाषाकी भी है। परन्तु सूरसागरके सभी प्राप्य हस्तलेख केवल ब्रजमें ही नहीं लिखे गए हैं अपितु भारतके अन्य भागोंमें भी लिखे गए हैं, तथा उनके लिपिक भी ब्रज प्रदेशके ही नहीं बल्कि तत्तत् प्रदेशोंके थे इसलिए लिपिमें एकरूपता कैसे हो सकती थी। लिपिने भाषाके रूपको भी अपने रूपमें ढाल ही लिया होगा जो भाषा केवल प्रादेशिक नियमों, व्याकरणके शिकंजोंमें कसी रहेगी वह अपने शास्त्रीय रूपको भले सुरक्षित रक्खे रहे, पर वह न तो जन-मानसमें अपना स्थान बना सकती है और न वह सहज स्वीकार्य हो सकती है।

सूरसागरके भाषा-रूपपर सबसे अधिक चर्चा पं० जवाहरलाल चतुर्वेदीने पत्र-पत्रिकाओं एवं पुस्तिकाओंमें की है। परन्तु जब उन्होंने अपने द्वारा सम्पादित सूरसागरके प्रथम पदको मुद्रित कराकर प्रचारित किया तो उस योजनाके संरक्षकोंमेंसे एकके साहित्य सहकर्मीकी उसपर प्रतिक्रिया इस प्रकार हुई—"मित्रवर पं० श्री जवाहरलाल चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित 'सूरसागर'के दो पृष्ठ नामक पुस्तिका कुछ दिन पूर्व दृष्टिगोचर हुई। सूर कृत जन्म बधाईका एक पद पढ़कर सहसा ब्रजभाषाके सम्बन्धमें विचारमग्न हो जाना पड़ा। परामर्श समिति और विशेषकर गो० श्री ब्रजभूषणलालजी महाराजका नाम देखकर तो महान् आश्चर्य हुआ। अन्य विद्वानोंकी बात तो मैं नहीं कहता, पर उक्त महाराजजीका परामर्श 'सूरसागर'के विशाल प्रकाशनके सम्बन्धमें है; न कि इसके उदाहरण सम्पादन (शब्दोंके रूप निर्धारण सम्बन्ध)-में अपनाई गई प्रणालीके लिये।

श्रीयुत् चतुर्वेदीजीके द्वारा जन्म बधाईके पदका सम्पादित रूप इस प्रकार प्रकाशित किया गया है। कविकी उक्ति—

ब्रज भयौ मैहैरके पूत जब यै बात सुनीं।१
सुन्हैं. आँनंदे सब लोग, गोकुल 'गँनत' गुनीं।२
अत पूरब पूरे पुन्न, रोपी 'अचल' थुनीं।३
ग्रह, नखत, लगन 'सब' सोध, कीन्हीं बेद-धुनी।४

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुन्हैं 'धाए ब्रज-नर-नारि' सैहैज सिंगार किऐं।५
तैंन-पैहरें नौतैंन चीर, काजर नैंन दिऐं।६
कस कंचुकि, तिलक लिलार, 'सोहत' हार हिऐं।७
कर कंगैंन-कंचन थार, मंगल साज लिऐं।८

प्रस्तुत तथाकथित सम्पादित पद खंडमें शब्दोंका जो रूप दिया गया है—वह सर्वांशतया किसी भी प्रामाणिक प्राचीन प्रतिमें खोजनेपर भी नहीं मिल सकता। उक्तपदमें मात्राओंकी जटिलताने जहाँ मधुर उच्चारणको विकृत कर दिया है, वहाँ संगीत-लय तालकी कोमलताको भी निवापांजलि प्रदान कर दी है। इस सबको देखते हुए ब्रजभाषाके शब्दोंके रूप-सँवारनेमें महती सावधानता अपेक्षित है, वहाँ प्रान्तीयतापूर्ण दुराग्रह एवं संकुचितताका बहिष्कार भी। कहनेका तात्पर्य यह है कि—'अपनी २ ढपलीपर अपना २ राग अलापनेवाले' हम ब्रज-भाषा भाषियोंमें अभी किसी मार्मिक तत्त्वज्ञ विद्वानके वर्चस्वको स्वीकार करनेकी क्षमताका उद्भव नहीं हुआ है, और यही कारण है कि, ब्रजभाषाके सम्बन्धमें समीचीन 'सुमधुर' सरल सरस पथके पथिक हम अभीतक नहीं बन पाए हैं।[1]

सूरसागर (सभा संस्करण) के संपादक पं० नंदवुलारे बाजपेयीने भी सूरसागरकी भाषा समस्यापर विचार किया है। उनका कथन है—सूरकी भाषाके संबंधमें दो सबसे बड़ी नवीनतायें जो वर्ती जा रहीं हैं—१. 'ओ' और 'ए' के बदले 'औ' और 'ऐ' का ऐसो स्थानोंमें प्रयोग जैसे— गयो हुतौ' के स्थानपर 'गयौ हुतौ', 'तो सों' के स्थानपर 'तो सौं', 'ऐसे' के स्थानपर 'ऐसौ' आदि और 'या में' के बदले 'या मैं,' 'ह्वाँ तें' के बदले 'ह्वाँ तैं' आदि। हमें इस संबंधमें कहना यह है कि प्राचीन प्रतियों (हस्तलेखों) में 'ओ' और 'ए' की अपेक्षा 'औ' और 'ऐ' की ओर अधिक झुकाव पाया ज'ता है।

दूसरी नवीनता है अनुस्वार और चंद्रबिन्दुका पृथक् विभाजन और इनके प्रयोगका आधिक्य। अनुस्वार एक पूरी मात्रा है जबकि चंद्रबिंदु मात्रा-रहित अनुनासिक है। इसका अन्तर बहुत ही स्पष्ट है 'हिंसा' में अनुस्वार पूरा है जबकि गोसैंयाँ या आवर्तिंमें वह अनुनासिक मात्र है। प्रायः लोग इन सभी स्थानों पर एक सा चिह्न बर्तते है पर यह तो असावधानी है। अबके पहले प्रचलित मुद्रित प्रतियोंमें जानेपर, पानेपर आदिके अर्थमें 'गए', 'पाए' आदिका प्रयोग होता रहा है किन्तु 'गए' और 'पाए' रूप भूतकालिक क्रिया के हैं। उनको इनसे पृथक् करनेके लिए और 'जानेपर' के पर अंशकी सूचनाके लिए प्राचीन प्रतियोंमें अधिकांश स्थलोंपर 'गऐं' 'पाऐं' या 'गएँ', रूप मिलते हैं। भाषा शास्त्र इन्हीं रूपोंका समर्थन करता है। कुछ पुरानी प्रतियोंमें 'म' कारके पूर्व वर्णपर उच्चारण-प्रवृत्तिकी दृष्टिसे अनुस्वार या चन्द्रबिन्दु लगा हुआ मिलता है, जैसे कोंमल, कँमल आदि। किन्तु यह रूप कम स्थानोंपर मिलता है और इस उच्चारण प्रवृत्तिका भाषा शास्त्र समर्थन नहीं करता।[2]

---

१. छीतस्वामी-भूमिका, पो० कंठमणि शास्त्री, पृ०-११-१२, कांकरोली, सं० २०१२।
२. सूर संदर्भ, नंददुलारे बाजपेयी--प्रयाग १९५७ पृ० ६.७।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अतएव अब भाषा शास्त्रके नवीन परिवेशमें पाठका निर्धारण करते समय पाठका सुधार और संपादन करते समय इस समस्याओंकी ओर ध्यान देना भी अत्यंत आवश्यक है।

सूरसागरके संपादनमें सर्वोपरि विचारणीय तथा ध्यान-योग्य कार्य है उसकी भाषाका सही-सही निरूपण। यहाँ मैं मुद्रित संस्करणोंकी भाषा-जनित विसंगतियोंका आकलन नहीं करूँगा, केवल सूरसागरके भाषा एवं व्याकरणिक रूपोंकी ओर ही पाठकोंका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ साथ ही सूरसागरके हस्तलेखोंकी लिपियोंके उदाहरण उपस्थित करूँगा। सूरसागरके जितने हस्तलेख मेरे देखनेमें आए हैं उनमें भाषाके प्रायः वही रूप प्राप्त हुए हैं जो उनके लिपि-कर्त्ताओं-की भाषा या बोलीके रहे हैं। कहीं-कहीं इस प्रवाहके कारण सूरके पदोंकी काया ही पलट गई है। सूरसागरके सभा संस्करणके पद सं० ४० की अन्तिम दो पंक्तियाँ—

मायाकाल कछू नहिं व्यापै यह रसरीति जो जानै।
सूरदास यह सकल समग्री प्रभु प्रताप पहिचानै॥

एक निर्गुणी संतबानीके गुटकेमें इस प्रकार लिखी प्राप्त हुई—

माया खल व्यापै नहीं कवहूँ जो या रीतिहिं जानै।
सूरदास प्रभु नर तन यहु फल गुर प्रसादि पहिजानै॥

जो पूरे पदके भावार्थको ही नहीं तात्पर्यार्थको भी प्रभावित करती हैं। ऐसे ही कैथी लिपिमें लिखे हुए हस्तलेखोंमें सूरज या सूरजदासकी छापवाले पदोंकी स्थिति है। सूर किशोर नामके महात्मा रामानन्दी साधु थे, अतएव उनकी छापवाले पदोंकी स्थिति भी भिन्न ही होनी चाहिए। इसी प्रकार नस्ता'लीक़ लिपिमें लिखे हस्तलेखोंमें शब्दोंके तत्सम रूप तो किसी प्रकार शुद्ध लिखे और पढ़े जा सकते हैं परन्तु तद्भव शब्दोंको सही रूपमें पढ़ पाना और उन्हें पदके पूरे भावके अनुरूप स्थित कर पाना बहुत कुछ बौद्धिक आयासपर ही अवलंवित रहता है। हस्तलेखोंकी बर्तनी और शब्दोंके रूपोंका इस समयकी प्रचलित ब्रज-बोलीसे मेल मिलाकर सूरदासके पदोंको उस साँचेमें ढालना सरल कार्य नहीं है, और यह भी कि ब्रज बोलीका जो रूप आज प्रचलित है, सूरदासके समयमें भी वही प्रचलित था इसे कौन बता सकता है? जो हस्तलेख लिपिकालके आधारपर सूरदासके जीवनकालके प्रतीत होते हैं उनमें भी ऐसे रूप उपलब्ध हैं जो आजकी ब्रजकी बोलीसे मेल नहीं खाते। तब किस पद्धतिके अपनानेसे सही पाठ तक पहुँचा जा सकेगा? पाठ-विज्ञानके ज्ञाता लोग भी बुद्धिकी बैसाखी लगाये बिना सफल नहीं हो सकते? भाषाके बोलचालके रूपको प्राचीन पाठके रूपमें आँकनेका प्रयत्न मेरे बिचारसे सूरके पदोंके साथ न्याय नहीं कर पाएगा। पाठ विज्ञानकी पद्धति जिस प्रकार पाठोंका निर्धारण करती है उसमें आवश्यक है कि किसी एक पाठको आधार मानकर प्राप्त हस्तलेखोंका वर्गीकरण करके उनका संबंध स्थिर किया जाय। हो सकता है कि जितने हस्तलेख उपलब्ध हुए हों उनमें किसीका भी संबंध स्थिर न हो अथवा कुछका स्थिर हो। पर सूरसागरके हस्तलेखोंमेंसे चार प्रकारके हस्तलेख उपलब्ध हुए हैं—1. स्कन्धात्मक, संग्रहात्मक, लीलाक्रम तथा उत्सवक्रम, इन चारोंको भी प्राचीनता एवं पाठकी शुद्धता एवं प्रसंग-निर्वाहकताके आधारपर परखकर क्रम स्थिर करके, पाठका

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निर्धारण करना चाहिए। अभी-तक लोगोंने अपनी अपनी रुचिके अनुसार हस्तलेखोंको प्रामाणिक मानकर पदोंको एकत्र किया है। सूरसागरके पाठोद्धारका कार्य तो कहना चाहिए हुआ ही नहीं है, जो हुआ भी है उसे भी अभीतक लोगोंने केवल मौखिक परंपराके आधारपर प्रस्तुत पाठोंके लिखित रूपोंको ही एक पाठ मानकर विचार किया है, सूरसागरके उपलब्ध हस्तलेखोंका किसी प्रकारका संबंध खोजनेका प्रयास नहीं किया है। पाठानुसंधानकी वर्तमान पद्धति इसका मार्ग तो बताती है परन्तु उस मार्गका अनुसंधान एवं अनुसरण करना तो अनुसंधित्सुओंका ही कार्य है। इस प्रक्रियाके अभावका ही परिणाम यह हुआ कि इस समय सूरसागरके सैकड़ों हस्तलेख उपलब्ध हैं, परन्तु उनमें काम लायक या आदर्श कहलानेवाले दो चार हस्त लेख भी निकल पाना कठिन है। यदि एक मूलको आधार मानकर पाठके सहारे चला गया होता तो संभव था कि पाठ-विकृतियोंके रूपको देखकर पाठका काल-निर्धारण हो सकता परन्तु अब केवल पुष्पिका (कॉलोफन)-से काम चलाया जा रहा है। सूरदासके स्वहस्तलेखकी तो कल्पना ही वृथा है? खोज इस बातकी होनी चाहिए कि सबसे पहले पद लिपिबद्ध कब किए गए। ऊपर जो तालिका सूरसागरके हस्तलेखोंकी दी गई है उनमें बहुत कम हस्तलेख ऐसे हैं जिनका संकलन सूरदासजीके जीवन-कालमें हुआ है। तब केवल अनुश्रुतिके आधारके अतिरिक्त शुद्ध पाठ-तक पहुँचने का मार्ग केवल प्रसंगानुसार अर्थकी संगति ही तो है।

यदि यह मान लिया जाय कि सूरदासकी रचनामें ब्रजभाषाके वे ही रूप हैं जो उस समयसे लेकर आजतक अपने मूल अर्थके सहित विद्यमान हैं तो लिपिक लोगोंने अपनी स्वाभाविक शैलीके कारण जो भेद उत्पन्न कर दिये होंगे, उसे भी कहीं स्थान मिलेगा ही। और यदि एक स्थानपर भी यह स्वीकार कर लिया गया तो फिर आगे अनेक क्षेपकोंके लिए स्थान देना ही पड़ेगा। पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्रने अपने एक पत्रमें लिखा है "पाठ शोधके संबंधमें जो पद्धति चल रही है, यह यान्त्रिक या अचेतन प्रक्रिया है। मेरे विचारसे ग्रन्थ लिखनेवाला और प्रतिलिपि करनेवाला चेतन प्राणी है। इसलिए उसके लिए चेतन प्रक्रिया या साहित्यिक प्रक्रियाकी भी आवश्यकता है।"[1]

अतएव सूरसागरके पाठ-सम्पादनके लिए विभिन्न परम्पराओंसे प्राप्त हस्तलेख और केवल धार्मिक मान्यताओंसे प्रमाणित अर्थका अनुसरण ही सूरसागरका सही रूप उपस्थित कर सकनेमें पूरी तरह समर्थ नहीं होगा। उसके लिए यह भी आवश्यक होगा कि प्रसंग अथवा प्रकरणमें प्रयुक्त शब्द अपने अर्थके द्वारा (चाहे लक्षणासे अथवा व्यंजनासे) पूरा अर्थ दे रहा है या नहीं। पाठ-सम्पादनमें प्रयुक्त सभी प्रतियोंमें पाया जानेवाला शब्द यदि प्रकरणके बाहरका अर्थ द्योतित करता है तो यह विचार करना परम आवश्यक होगा कि कहीं यह सारा प्रकरण ही प्रक्षिप्त तो नहीं हैं? मुद्रित संस्करणोंमें इस प्रकारकी विसंगतियोंके उदाहरण प्रचुर मात्रामें उपलब्ध हैं। रही बात सम्प्रदायानुसार पदोंका क्रम निर्धारण, उनका प्रासंगिक स्थिरीकरण, गद्द

१. पाठ-सम्पादनके सिद्धान्त, पृ० ७ पर उद्धृत पत्रका अंश।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बातें भी जब भली भाँति पाठका निर्धारण हो जायगा, तब अपने आप स्पष्ट हो जायगा कि कौन-सा पद सम्प्रदायके आग्रहसे गृहीत है और कौनसा सम्प्रदाय-मुक्त।

इस समय स्व० डॉ० माताप्रसाद गुप्त द्वारा सम्पादित सूरसागर, विद्यापीठ-द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है, उसकी भूमिका पहले ही मुद्रित कराकर सूर-साहित्यके मर्मज्ञोंमें वितरित की जा चुकी है। प्रयाग विश्वविद्यालयके वरिष्ठ प्राध्यापक (अब अवकाश-प्राप्त) पं० उमाशंकरजी शुक्ल कई वर्षोंसे सूरसागरके पाठोद्धारमें संलग्न हैं।

इधर सूर-स्मारक-मंडल, आगरा भी सूरसागरके एक सुसंपादित संस्करणके प्रकाशनकी योजना कार्यान्वित करनेमें प्रयत्नशील है और काशीके पं० सीताराम चतुर्वेदीजीने भी सूरसागरका सटीक संस्करण पाँच जिल्दोंमें निकाल दिया है। अभी कुछ दिनों पूर्व डॉ० धीरेन्द्र वर्मा-द्वारा संपादित सूरसागर सटीक रूपमें प्रकाशित हुआ है और अब डॉ० हरदेव बाहरीका सटीक सूरसागर भी मुद्रणालयसे गुजर चुका है, पर

संत संत सब एक हैं जस पोस्ताका खेत।
कोई कुदरती लाल है बाकी सेतके सेत॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूरसागरकी प्राप्त एक नवोपलब्ध प्रति

श्री उदयशंकर दुबे

सरस पदोंके गायक सूरदासने अपने आराध्य देव श्रीकृष्णका चरित्र अपने मधुर कंठसे विभिन्न राग-रागिनियोंमें ऐसा गाया कि वह आज जन-मानस पटलपर पूर्णतः छा गया है। दृष्टिहीन होनेसे वे अपने पदोंको स्वयं लिपिबद्ध कर सकनेमें असमर्थ थे। अतः, उनके पदोंको लिपिबद्ध करनेका कार्य उस समयके काव्य-प्रेमियोंने किया। यह एक महान् कार्य था। प्रवाद है कि सूरदासने सवा लाख पदोंका गायन किया किन्तु अबतक उनके इतने पद प्राप्त नहीं हो सके हैं। सूरदासके समयमें ही उनके पदोंका संकलन कर लिया गया और उसे उनके ही नामपर 'सूरसागर' का अभिधान दिया गया। सूरसागरकी कई प्रतियाँ समय समयपर तैयार की गई जिनमेंसे कुछ आज भी प्राप्त हैं। इन्हीं प्राप्त प्रतियोंको आधार मानकर विभिन्न विद्वानों-द्वारा सूरसागरका संपादन और प्रकाशन हुआ है। इसी संदर्भमें सूरसागरकी एक नवोपलब्ध हस्तलिखित प्रति[१] की चर्चा करेंगे जो वहुत महत्त्वपूर्ण है और अबतक ज्ञात सूरसागरकी प्रतियोंसे भिन्न है।

लिपिकाल—यह प्रति रतन-हज़ारा और रस-सागर जैसे रसमय काव्य ग्रन्थोंके प्रणेता महाराजा पृथ्वीसिंहजू देव उपनाम रसनिधि[२]के राजत्वकालमें उन्हींकी राजधानी सेवढ़ामें तैयार की गई थी। इस कथनकी पुष्टिके लिये प्रस्तुत प्रतिकी पुष्पिका द्रष्टव्य है—"संवतु १७८३ व्रषे वैसाष सुदि ७ बुधवासरे सुभ स्थान सिहुडौ राज्य श्रीमहाराजधिराज श्रीमहाराजा श्री राजा प्रथीसिंघ जू देव पठनार्थे श्री लाला महिमासाहि जू लिषतं वंसीधर ग्याति काइस्थ श्रीवास्त भडैरिता जु कोऊ पोथी वाचै सुनै ताकौ ॥ सुभं ॥"

श्री वंशीधर कायस्थने संवत् १७८३ वि० में राजा पृथ्वीसिंहके राजत्वकालमें लाला महिमासाहिके पठनार्थ इस प्रतिको तैयार कराया था। आदिसे अन्त-तक लेखनीकी एकरूपता

---

१. यह प्रति लेखकके संग्रहमें सुरक्षित है।

२. 'रसनिधि', वर्तमान सेवढ़ा, जिला दतिया (म० प्र०)-में है। राजा पृथ्वीसिंह उपनाम रसनिधिके दीक्षा-गुरु विजय सखी थे। इनके दरबारमें अक्षर अनन्त जैसे संत कविको आश्रय मिला था। पृथ्वीसिंह द्वारा बनवाया हुआ सेवढ़ाका किला तथा उसके अन्दर 'नन्द-नन्दन' की मूर्ति आज भी उनका स्मरण दिलाती है। रसनिधिका जन्म संवत् १७३४ वि० में हुआ था। इनके द्वारा रचित कई ग्रन्थोंका उल्लेख नागरीप्रचारिणी सभा, काशीकी खोज विवरणिकाओंमें हुआ है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लिपिकर्ताके कठिन श्रम और प्रयासकी ओर इंगित करती हैं और ऐसा अनुमान होता है कि लाला महिमासाहिने लिपिकारको इस परिश्रमका उचित पारितोषिक प्रदान किया होगा।

आकार प्रकार—प्रतिका आकार १२′′ × ८·३′′ है। कुल पत्र संख्या ३६७ है। प्रति चमकदार काली स्याहीसे लिखी हुई है। राग अलगाव तथा विराम चिह्नके लिये लाल स्याहीका प्रयोग हुआ है। संपूर्ण प्रतिमें कही भी काट-छाँट नहीं हुई है। इससे लिपिकर्ताकी कुशलताका बोध होता है। आरंभसे अन्ततक लिखावट एक समान है। यह प्रति फूलदार रेशमी कपड़ेकी सुन्दर जिल्दमें आबद्ध है और पेटीकी भाँति खोली तथा बन्द की जा सकती है। आरम्भमें मंगलाचरणके दो पद हैं। पुनः समस्त कथा विधिवत् ढंगसे लिखी गई है। बीच-बीचमें एक दो अपूर्ण हैं।

संक्षिप्त रूप

विशेषतायें—इस प्रतिको सबसे बड़ी विशेषता उसका अत्यन्त संक्षिप्त होना है। इसमें पदोंकी कुल संख्या १७६१ है। अतः इसको संक्षिप्त सूरसागरकी श्रेणीमें रखना उचित है। अबतक ज्ञात सूरसागरकी प्रतियोंमें ऐसी कोई प्रति नहीं है जो इतनी संक्षिप्त हो और उसमें सभी स्कंधोंकी कथाका समावेश हुआ हो।[1]

स्कंधोंका विभाजन

मंगलाचरणको छोड़कर समस्त प्रति प्रारम्भसे अन्त-तक द्वादश स्कंधोंमें विभक्त है स्कंधानुसार पदोंकी संख्या निम्न प्रकार है—

स्कंध	पद संख्या
मंगलाचरण	२
प्रथम स्कंध	३०२
द्वितीय ,,	४०
तृतीय ,,	१०
चतुर्थ ,,	१२
पंचम ,,	४
षष्ठ ,,	२
सप्तम ,,	८
अष्टम ,,	११
नवम ,,	२३५
दशम ,,	१३५७
एकादश ,,	३
द्वादश ,,	५
कुल पद संख्या	३७६१

१. द्रष्टव्य, सूरसागर, प्रथम खंड सं० श्री जवाहरलाल चतुर्वेदी, हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकोंका संक्षिप्त विवरण, द्वितीय खंड, पृ० ५८३–५८६। ना० प्र० सभा, वाराणसी।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस प्रतिकी सबसे बड़ी विशेषता यह देखनेमें आती है कि अबतक दशम स्कन्धकी प्राप्त प्रतियोंमें पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध या प्रारम्भसे अन्ततक एक ही सूत्रमें समाप्त कर दिया गया है किंतु इस स्कन्धकी कथाको नब्बे (९०) विभिन्न अध्यायोंमें विभक्त किया गया है। इन अध्यायोंका विभाजन-क्रम कथाओंके आधारपर है। कथाक्रमसे अध्यायोंका वर्गीकरण या तो स्वयं लिपिकारने अपनी सूझसे किया हो या जिस प्रतिसे उसने प्रतिलिपि की हो, उसीकी देन हो। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सूरसागरको प्रबंध-काव्यका प्रारूप देनेकी ओर बहुत पहलेसे लोगोंका ध्यान था। फलतः कथाक्रमसे पदोंका संचयन किया गया। प्रबन्ध-काव्यका रूप कब दिया गया, इस विषयमें यही कहा जा सकता है कि पदोंके संकलनके बाद ही पदोंको कथा-क्रमसे अलग कर लिया गया और सूरसागरको भागवतकी तरह स्कन्धात्मक रूप प्रदान किया। 'लीलाक्रम' में पदोंका गायन सूरदासजी करते रहे किन्तु भगवानके अनुरूप ही उन्होंने लीलाका गान किया है अतः, उनके समस्त पदोंको भागवतानुसार सँजोना ही अधिक औचित्यपूर्ण है। शायद इसी कारणवश इस प्रतिमें दशम स्कन्धकी कथाको नब्बे विभिन्न अध्यायोंमें विभक्त किया गया है।

विषय-विभाजन

मंगलाचरणके प्रथम दो पदोंको छोड़कर अन्य समस्त पदोंको कथा-क्रमसे भागवतके अनुरूप रक्खा गया है—

अथ श्री भागवत वर्णनं, व्यास सुक संवाद, पुनः भागवत वर्णन, व्यास संवाद, व्यास औतार वर्णनं, नाम माहात्म्य वर्णनं, भगवान पद अनुग्रह, भोजन करन, श्री भगवान जरजोधन संवाद, द्रोपदी सहाइ कथा, पंडौ कथा वर्णनं, कथा राजा दुदिस्टिल (युधिष्ठर), जरजोधन वचन भीषम प्रति, श्री भगवान वचन, अर्जुन भीषम संवाद, भीषम देह त्याग प्रसंग, भीषम संवाद, राजा दुदिस्टिल भगवान द्वारिका गवन, राजा वैराग बरनन, राज त्याग हरि वियोग पांडव निरगुन बर्नन, श्री भगवान परीक्षत रचना, परीक्षत जनम वरनन, राजा परीक्षत कथा, मंन प्रबोध इति श्री भागवते महापुराने प्रथम असकन्धे संपूरन समापतं।

अथ दुतीय असकंद—हरि भगत महातम, अपुन भग्त महिमा, संत भगत महिमा, भग्त साधन, गर्व दोष, काम दोष, आतम ग्यान, नृपति विचार, नृपति वचन सुषदेव प्रति, सुषदेव वचन, चौवीस अवतार वरनन, ब्रह्मा वाच्य नारद प्रति, चतुर अस्लोक, श्रीमुख वाकि, इति श्री भागवते महापुराने दुतीय असकंधे संपूरन समापता ॥ २ ॥

तृतीय असकंद—मैत्रउ विदुर संवाद कथा वर्णन, विदुर जनम वरनन, मित्रे उ वचन विदुर प्रति, सनकादिक औतार, रुद्र रूप प्रति वरनन, सप्तरिषि चारि मुनि उतपति, सुर असुर, अदिति तप वर्णन, श्री वाराह औतार वरनन, कपिलदेव औतार, करदम प्रसंग, भग्ति प्रसंग, ब्रह्म माया प्रसंग, देवहूत प्रसंग, हरि विमुख निंदा, भग्त महिमा, देवहूत वचन; इति श्रीभागवते महापुराने तृतीय असकंधे समापता ॥ ३ ॥

चतुर्थ असकंद—दत्तात्रेय अवतार, जगि पुरिष अवतार, पार्वती विवाह, उत्थानपात गृह ध्रुव जनम, ध्रुव वर दैन अवतार वर्णन, प्रथु अवतार, पुरंजन कथा वर्णन इति श्री भागवते महापुराने चतुर्थ असकंदे संपूरन समाप्त ॥ ४ ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पंचम असकंद—रिषभ देव अवतार, जड़ भरतकी कथा वर्णन इति श्री भागवते महापुराने पंचम असकंद संपूरन समापता ।। ५ ।।

षष्टम असकंद—अजामेल उधारन, इति श्री भागवते महापुराने षष्टम असकंदे संपूरन समापता ।। ६ ।।

सप्तम असकंद—गुर महिमा, श्री नरसिंघ अवतार, गाइ न भगवान सुर सहाइ, नारद जनम कथा, इति श्री भागवते महापुराने स्पतम असकंदे संपूरन ।। ७ ।।

अष्टम असकंद—राजा पुरुरवा सोम वंस वैराग कथा, चिमन रिषि कथा, हलधर-विवाह, राजा अंभरीक कथा, सोभर रिषि कथा, श्री गंगा भोग कथा, श्री गंगा विष्नु पादोदकी अस्तुति, श्री परसुराम अवतार वर्णन, इति श्री भागवते महापुराने अस्टम असकंधे संपुरन समापता ।। ८ ।।

नवम असकंद—श्री राम अवतार बालकांड—श्री राम चरित्र जनम लीला, बाल लीला, सीता वचन सषी प्रति, भरथकांड, श्री राम कौ प्रति उत्तर, श्री राम वचन जानुकी प्रति, जानुकी वचन राम प्रति, श्री राम वचन लछिमन प्रति, अहिल्या उधारन, लछिमन केवट संवाद, पुरवासी वचन जानुकी प्रति, श्री राम वियोग जसरथ प्रान तजन, श्री राम भरथ प्रति उत्तर, वन कांड, किष्किधा कांड, सुंदरकांड—निस्चरी वचन जानुकी प्रति, निस्चरी वचन रावन प्रति, रावन जानुकि प्रति उत्तर, जानुकी वचत, हनुमान बचन जानुकि प्रति, श्री हनुमान इंद्रजीत युद्ध, हनुमान वचन रावन प्रति, श्री राम वचन ।

लंकाकांड—हनिवंत वचन, विभीषण वचन रावन प्रति, विभीषन श्री राम सरन आवन, मंदोदरी वचन, सेत बंध, मंदोदरि वचन, रावन वचन, रावन प्रति उत्तर, रावन वचन; श्रीरामचंद प्रति लछिमन वचन, मंदोदरि वचन, मेघनाद जुध, कुंभकरन रावन संवाद, लछिमन वचन श्रीराम प्रति, रावन लछिमन जुध, लछिमन मुर्छा, श्रीराम करुना, हनिवंत (हनुमंत) वचन राम प्रति, भरथ हनिवंत संवाद, सुमित्रा वचन, हनिवंत वचन भरथ प्रति, लछिमन मूरछावंत, रावन कुल वध, कुंभकरन, रावन उधारना, विभीषण राज, सीता मिलापु श्रीराम संग, सीता अगिन प्रवेस, परीक्षा हित, अमृत वर्षा, नौम असकंध संक्षेप कथा लंकाकांड ।

उत्तरकांड—हनिवंत वचन भरथरी प्रति, श्रीराम वचन, राजसभा वरनन, इंद्र अहिल्या कथा, राजा रघु कथा, कच देवजानी कथा, देवजानी जजाति विवाह कथा, इति श्री भागवते महा पुराने नौम असकंधे संपूरन समापता ।। ९ ।।

दशम असकंध—श्रीकृष्ण चरित्तर प्रथम अध्यायसे पंचम अध्याय तक

(उत्तरार्द्ध)

षष्ट अध्याय —बाल-विनोद, संछेप जनम लीला, ढाढी वचन जनम समय, इति श्री भागवते महापुराने दसम असकंधे श्रीकृष्ण छठी वरनन षष्टम अध्याय ।

सप्तम ,, —पूतना वचन कंससौं, कागासुर वध, सकटासुर वध ।

अष्टम ,, —त्रतावर्त वध, नामकरन, अनप्राशन, कृष्नकी वरसगांठ, श्रीकृष्णकौ कंछेदन वरनन, बाललीला ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नवम अध्याय --गोपिका वचन, बलभद्र वचन, जसुमति वचन, कलेवा, भोजन, चौगान खेल, ब्राह्मण भोजन करावन, भौंरा चकई खेलन, माटीखान समै।

दशम ,, —जमलार्जुन उधारन।

एकादश ,, — ,, ,,।

द्वादश ,, — ,, ,,।

त्रयोदश ,, —अघासुर वध।

चतुर्दश ,, —बच्छ हरन।

पंचदश ,, —ब्रह्मा स्तुति, बच्छ हरन लीला।

षोडश ,, —धेनुक वध, ब्रज प्रवेश-शोभा, दुतीय दिन, विनती सूरदास, वृंदावन प्रबेश शोभा

सप्तदश ,, —काली उद्धारन लीला।

अष्टादश ,, —काली दवन लीला।

नौमदस ,, —दावानल।

बीसम् ,, —प्रलंब वध।

इकईसम् ,, —दावानल पान, ग्वाल वचन श्रीकृष्ण प्रति, गोपिका वचन, मुरली स्तुति, गोपिका दशा, गोपिका वचन परस्पर।

बाईसम् ,, —वृंदावन विहार, गोपिका वचन।

तेईसम् ,, —चीर हरन।

चौबीसम् ,, —जग पतिनी भगतिभाउ वरनन, जगपतिनी वचन।

पचीसम् ,, —गोबर्द्धन पूजन, उद्धारन।

छीबीसम ,, —गिरिधरन लीला।

सत्ताईसम् ,, —संक्षेप लीला, गोबर्द्धन लीला।

अठाईसम् ,, —वरुनलोक गवन।

उनतीसम् ,, —रासलीला, पंच अध्याई।

तीसम्-३०,, —अंतर्ध्यान लीला।

बत्तीसम् ,, —हरि प्राकट्य।

तेतीसम् ,, —रासलीला, जल बिहार।

चौतीसम् ,, —सुदरसन, वृंदावन विहार, संखचूर वध।

पैतीसम् ,, —भोजन वर्णन, वृंदावन गवन समै गोपिका वचन, ग्वाल वचन श्रीकृष्ण प्रति, गोपिका विरह अवस्था परसपर वचन संभाषन, ग्वाल वचन श्रीकृष्ण प्रति, गोपिका वचन, बंसी वचन, श्रीकृष्ण ब्रज आवन समै गोपिका वचन।

छत्तीसमो ,, —व्रषभासुर वध।

सैतीसमो ,, —होरी खेलन, नारद ब्रज आगवन, नारद वचन श्रीकृष्ण प्रती।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अरतीस अध्याय, उन्तालीस ,, चालीस ,, —अक्रूर ब्रज गवन, जसोदा वचन, जसोदा वचन अक्रूरसौं, अक्रूर वचन, ग्वालिनी वचन जसुमति प्रति।

इकतालीस,, बयालीस ,, —रजिक वध, कृपावंत सुदामा व कुबिजा पर।

तेतालीस ,, —कुबिलयासुर पील वध।

चौवालीस ,, —मल्ल वा कंस वध।

पैंतालीस ,, —उग्रसेन राजु, जग्गि उपवीत हरि हलधर, नंदा विदा, भगवान नंद प्रति उत्तर, नंद वचन श्रीकृष्ण प्रति, नंद वचन श्रीकृष्णसौं, जसोधा वचन नंद प्रति, विरह प्रवाह, जसुमति पश्चाताप, जसुमति संदेश कृष्ण प्रति, जसोधाको संदेश देवकी प्रति, पथिक वचन, गोपिका विरह प्रवाह, गोपिका संदेश श्री भगवान प्रति।

दशम स्कन्ध उत्तरार्द्ध

छियालिस,, सैंतालिस ,, —अथ भवरगीत-श्रीकृष्न वचन ऊधौ प्रति, ऊधौ ब्रज आगमन, ऊधौ वचन, जसोधा वचन ऊधौ प्रति, ऊधौ वचन, गोप सखा वचन, श्री राधिका सगुन विचार, गोपिका वचन परसपर, गोपिका वचन ऊधौ प्रति, गोपिका वचन भवर प्रति, ऊधौ वचन, गोपिका वचन परसपर, गोपिका वचन ऊधौ प्रति, विस्तृत भवर गीत—गोपिका वचन परस्पर, ऊधौ वचन, गोपिका वचन, गोपिका वचन ऊधौ प्रति, गोपिका वचन परस्पर, ऊधौ वचन, गोपी उत्तर, ऊधौ वचन, जसुमति संदेश, ऊधौ वचन श्री भगवान प्रति, श्रीमुख वचन।

अड़तालिस ,, —श्रीकृष्ण कुबिजा गृह गवन।

उनचास ,, —श्रीकृष्ण अक्रूर गृह पग धारन।

पचास ,, —जुरासिंध युद्ध।

इक्यावन ,, —द्वारका प्रवेश।

बावन ,, —द्वारिका शोभा वर्णन।

तिरपन ,, —रुक्मिनी विवाह, सखी वचन रुक्मिनी प्रति, रुक्मिनी हरन।

चौवन ,, —रुक्मिनी हरन और विवाह वर्णन।

पचपन ,, —परदवन जनम।

छप्पन ,, —जामवंती सतभामा विवाह।

सत्तावन ,, —सत्राजित वध

अठावन ,, —पंच पटरानी विवाह, द्वारिका प्रवेश, शोभा वर्णन।

उनसठ ,, —षोडश दस सहस्त्र रानी विवाह

साठि ,, —रुक्मिनी भगति परीक्षा, परदवन विवाह, रुक्म अरु कल्यंग देस वर्णन

इकसठि ,, —कौराड़ वध

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बासठि अध्याय —ऊषा अनिरुद्ध मिलन
तिरसठ ,, —अनिरुद्ध विवाह
चौसठ ,, —राजा नृग उद्धार
पैंसठ ,, —श्री बलभद्र व्रज गमन
छयासठ ,, —पुंडरीक उधारन
सरसठ ,, —द्रुपद वध
अरसठ ,, —विवाह वर्णन
उनहत्तरि ,, —नारद भ्रम निवारन
सत्तरि ,, } —जरासंध वध, राजा वंदी मोचन
इकहत्तरि ,, }
बहत्तरि ,, —सहदेव राज प्राप्ति
तिहत्तरि ,, —राजा विनती
चौहत्तरि ,, —ससिपाल गति
पचहत्तरि ,, —भग्त महिमा

आदि। तात्पर्य यह कि कथाक्रमसे दशम स्कन्धको नब्बे विभिन्न अध्यायोंमें विभाजित किया गया। एकादश और द्वादश स्कंध बहुत छोटे हैं। एक प्रकारसे यह प्रति सुसंपादित है।

पाठभेद—प्रस्तुत प्रतिमें पाठांतर भी मिलता है। हस्तलिखित होनेके कारण प्रतियोंमें पाठांतर हो जाना स्वाभाविक है किन्तु इसमें कुछ ऐसे पाठांतर हैं जिनपर विचार करना अत्यावश्यक है। सभी पदोंमें आये पाठांतरोंकी चर्चा करना यहाँ अभीष्ट नहीं, अतः कुछ पदोंके विशेष पाठ प्रस्तुत हैं—

राग मलार

वीर वटाऊ पाती लीजौ।
जब तुम जाउ देस द्वारिका हमरी रिसाल गुपालै दीजौ॥
रंग भूमि रवनीक मधपुरी पाच चढाइ सुधि कीजौ।
खार समुद्र छांड़ि किनि आवत निरमल जल जमुनाकौ पीजौ॥
या गोकुलकी सकल ग्वालिनी देति असीस बहुत जुग जीजौ।
सूरदास प्रभु हमरे कोतै नंदनंदन के पाइ परीजौ॥

—हस्तलिखित प्रति, पद सं० १६३७।

राग मलार

बीर बटाऊ पाती लीजौ।
जब तुम जाहु द्वारिका नगरी, हमरे रसाल गुपालहिं दीजौ॥
रंग भूमि रमनीक मधुपुरी, रजधाती व्रजकी सुधि कीजौ।
या गोकुल की सकल ग्वालिनी, देतिं असीम बहुत जुग जीजौ॥
सूरदास प्रभु हमरे कोतैं, नंद-नँदनके पाइ परीजौ॥

(मुद्रित प्रति ॥ ४२६५ ॥ ४८८३ ॥)

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रेखांकित वाक्य दर्शनीय हैं। हस्तलिखित प्रतिमें पाठ "रिसाल" है जिसका अर्थ है— अन्य स्थानोंसे वसूल करके राजधानी भेजा जानेवाला कर। यह अर्थ यहाँ उपयुक्त है। 'रसाल' का अर्थ यहाँ औचित्य नहीं रखता। हस्तलिखित प्रतिमें एक पंक्ति "खार समुद्र छाँड़ि किनि आवत निरमल जल जमुना कौ पीजौ" अधिक है। मुद्रित प्रतिमें यह पंक्ति नहीं है। कुछ और पद यहाँ प्रस्तुत हैं—

मंगलाचरण (विष्णुपद)

चरन कमल बंदौं हरिराइ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे अंधेकौ सब कुछ दरसाई ॥
बहिरा सुनै गुंगु पुनि बोलै रंक चलै सिर छत्र ढुराई ॥
सूरदास स्वामी करुनामय बार बार तिनु पाई ॥

× × × ×

नैना भये अनाथ हमारे।
मदन गुपाल इहातै सजनी सुनियत अंत सिधारे ॥
मथुरा बसत आस दरसनकी देखि देखि मग हारे।
हम चालक वे जलध स्यामघन प्रीति सुधारस प्यारे ॥
वे समुद्र हम मीन वापुरी कैसे जीवै न्यारे।
सूरदास हमकौं उलटी विधि मृतकहू पै मारे ॥

× × × ×

अति मलीन वृषभान कुमारी।
हरि स्रम जल भीज्यौ उर अंचल तिहि लालच न धुवावति सारी ॥
उध मुख रहति अंत नहि चितवति गथ गऐं जैसैं थकित जुवारी।
छुटे छोर वदन कुम्हिलानै ज्यौ नलिनी हिमकरकी मारी ॥
सुनि सदेस वह सहज मृतक भई करि अदेस दूजै अलि चारी।
सूर स्याम विन कैसैं जीवै व्रज बनिता विन स्याम दुखारी ॥

राग बिलावल

आजु इक बात भली सुनि आई।
महरि जसोधा बालकु जायौ आगन बजति बधाई ॥
कहिये कहा कहत नही आवै रतन भूमि सब छाई।
नाचत विरध तरुन अरु बालक गोरस कीच मचाई ॥
द्वारै भीर गोप ग्वालनिकी वरनौं कहा बनाई।
सूरदास प्रभु अंतरजामी नंद सुवन सुखदाई ॥

अंतमें प्राप्त यह प्रति अपने आपमें संक्षिप्तता, संपादन-कला तथा पाठकी दृष्टिसे विशेष उपयोगी है। सूरदासने स्वयं न तो अपने ग्रन्थका प्रारूप तैयार किया था और नही उसे 'सूरसागर'-की संज्ञा दी थी। उनके पदोंके संग्रहकर्ताओंने समस्त पदोंके संग्रहको सूरसागरकी संज्ञा दी। कथाक्रमके आधारपर सूरसागरका द्वादश स्कन्धात्मक रूप ही जनतामें विशेष समादृत हुआ और इसी कारणवश स्कन्धात्मक शैलीकी अधिक प्रतियाँ मिलती हैं।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूर-सागरके राग तथा उनका परिचय

डॉ० चित्तरञ्जन ज्योतिषी,
रीडर, कला-संगीत महाविद्यालय, काशी हिन्दूविश्वविद्यालय,

(१) राग अहीरी (आभीरी)

इस संपूर्ण जातिकी रागिनीका ग्रह, अंश और न्यास स्वर पंचम है। इसमें सौवीरी मूर्च्छना और तीव्र मध्यमका प्रयोग होता है।

ध्यान : खिले हुए चम्पेके फूलके समान मनोहर गोरे रंगवाली, हाथ चलानेके कारण बजते हुए कंगनोंवाली आभीरी, चन्द्रमाके समान गजमुक्ताकी माला पहने श्रीकंठ पर्वतके शिखरपर बैठी है। यह नट रागकी पत्नी मानी जाती है।

स्वर-रूप— गनिके दोनों रूप ले, सप संवाद सँजोय।
काफ़ीके ही थाटमें, राग अहीरी होय॥
आरोह—स रे ग रे, ग़ म पधनिसां
अवरोह—सां नि़ ध़ प, मगरे, धपमग़रेसा
पकड़ —सा रे ग म ध, रेमपध़, म रे ग़ सा नि़ सा
समय —रात्रिका प्रथम प्रहर

उद्धृत—'संगीत' जनवरी ६८, हाथरस।

(२) राग-अड़ाना

ध्यान— रणे प्रविष्टः स्मरचारुमूर्तिः वीरे रसे व्यञ्जितरोमहर्षः।
पाणौ कृपाणः किल रक्तवर्णः रागः अड़ाना कथितो मुनीन्द्रैः॥

[कामदेवके समान सुन्दर मूर्त्तिवाला, लाल वर्णवाला अड़ाना राग वीररससे पुलकित होकर हाथमें कृपाण लेकर रण-क्षेत्रमें जा पहुँचा है। ऐसा मुनियोंने उसका वर्णन किया है।]

स्वर-रूप— तीवर रिध, कोमल निगम, धग दुर्बल दरसाहि।
प-स संवादी-वादि तें कहत अड़ाणा ताहि॥ —चन्द्रिकासार

आरोहावरोह—सा रे मप, ध़ नि़ सां। सां ध़ नि़ प मप, ग़म रे सा।

पकड़— —नी़ नी़ पमप, गमपसां, ध़ नि़ सां।

(३) अल्हैया-बिलावल

[यह मिश्र राग है इसलिये इसका कोई अपना ध्यान-रूप नहीं है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्वर-रूप— मृदु मध्यम, सब तीख सुर मध्यमसे न चढैया।
कहुँ निषाद कोमल लगत, धग संवाद अल्हैया॥

आरोह— सा रे ग प ध नि सां

अवरोह— सां निधप, धनि धप, मग मरे, ग नि, सा, धनि सा

पकड़ — गरे गप, धनि धप मग मरे—।

(४) आसावरी (आशावरी)

ध्यान—श्रीखंडशैलशिखरे शिखिपिच्छवस्त्रा मातंगमौक्तिकमनोहरहारवल्ली।
आकृष्य चंदनतरोरुरगं वहंती आसावरी वलयमुज्वलनीलकांतिः॥ (संगीतदर्पणे)

[मलय पर्वतपर मोरपंखके वस्त्र पहने हुए, गलेमें गजमुक्ताका हार डाले हुए, हाथमें चन्दनके वृक्षसे खींचकर पकड़े हुए चमकीले रंगवाले साँपका कड़ा पहने आसावरी बैठी है।] जपाकुसुमके समान लाल वस्त्र पहने नाट्यशालामें आई हुई अत्यन्त रसिक आसावरी हाथमें नीला कमल लिए हुए है।]

स्वर-रूप— कोमल गमधनि तिख रिखब चढ़त गनि न सुहाइ।
ध - ग वादी संवादितें आसावरी कहाइ॥ —चन्द्रिकासार

आरोहावरोह—सा, रेंमपध, सां। सां नि ध, प, म ग, रे, सा।

पकड़ —रे, मप सां ध – प।

(५) कान्हरा (कानड़ा)

संपूर्ण जातीय कानडाका ग्रह, अंश, न्यास स्वर विकृत निषाद है।
स्वर : नि स रे गा मा पा धा नी

ध्यान : तन्वी (दुबली पतली), आभूषणोंसे सजी हुई कानड़ा रागिनी अपने पतिके विरहसे कातर होकर मस्तकपर जटायुक्त वेणी धारण किए हुए आँखोंमें आँसू भरे हुए अशोक वृक्षके नीचे हेमलताके समान पड़ी है।—नारदसंहिता

अति सुन्दरी कानड़ा एक हाथमें कृपाण और दूसरेमें गजदन्त लिए हुए रंगपीठपर बैठी है और देवता उसकी स्तुति कर रहे हैं।

(६) केदारा (केदारिका)

ध्यान— जटा दधाना सितचन्द्रमौलिः नागोत्तरीया धृतयोगपट्टा।
गङ्गाधरध्याननिमग्नचित्ता केदारिका दीपकरागिणीयम्॥

[सिरपर जटा और उजला चन्द्रमा धारण किए हुए ऊपर नाग लपेटे और योगपट्ट पहने हुए शिवके ध्यानमें मग्न केदारिका रागिनी दीपककी पत्नी है।] नीली देह और गोल स्तनवाली केदारिका स्नान करके गीले वस्त्र पहने हुए है जिसके केशोंसे उसकी बूंदें टपकी पड़ रही हैं।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्वर-रूप— मध्यम द्वै तीवर सबहि आरोहत रिग हान।
सम संवादी वादितें केदारा पहिचान ॥ —चन्द्रिकासार

आरोहावरोह—सा म – म ग प, मं प ध प सां, सां नि ध – प, मं प ध प म—, म रे, सा।

पकड़— स म—, म प—, मं प ध प म—, म रे—सा।

(७) कल्याण

ध्यान—कृपाणपाणिस्तिलकं ललाटे सुवर्णवेशः समरे प्रविष्टः।
प्रचण्डमूर्त्तिः किल रक्तवर्णः कल्याणरागः कथितो मुनीन्द्रैः॥ (संगीतदर्पणे)

(मुनियोंने कल्याण रागका वर्णन करते हुए कहा है कि कल्याण राग माथेपर तिलक लगाए हुए, हाथमें कृपाण लिए हुए, लाल वर्णकी प्रचंड मूर्त्ति धारण किए हुए समरमें जा रहा है।) इसका ध्यान बहुत कुछ अड़ानासे मिलता-जुलता है।

स्वर-रूप—पं० विष्णुनारायण भातखण्डे द्वारा रचित ११ थाटोंमें यह थाट कल्याण नामसे प्रसिद्ध है। इसका स्वरूप स रे ग मं प ध नि सां है। भातखण्डेजीके अनुसार यमन (ईमन) रागमें जब कभी अल्प प्रमाणमें कोमल मध्यमका प्रयोग करते हैं तब उसे यमन कल्याण नाम देते हैं। यमन रागको कल्याणका आश्रय राग कहा जाए तो उपयुक्त होगा। शुद्ध मध्यमका प्रयोग इस प्रकार होगा—धपमंग, मग रेग रेसा।

(८) काफी

(काफ़ीका ध्यान कहीं प्राप्त नहीं होता)

स्वर-रूप— मृदु मध्यम गन्धार है, मृदु तीवरहु निषाद।
काफ़ी सुन्दर राग है, प–स वादी–संवाद॥

अथवा

कोमल गनी लगाय कर, गावत आधी रात।
प स वादी संवादितें काफ़ी राग सुहात॥

आरोह—स रे ग॒ म प ध नि सां,
अवरोह—सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा।
पकड़—सस, रेरे, ग॒ग॒, मम, प

(९) कुरंग (सारंग ?)

'कुरंग' नामके रागका कहीं उल्लेख नहीं मिलता।

(१०) करनाटी (कर्णाटी)

ध्यान—मयूरके कंठके समान रंग-बिरंगी, माथेपर चन्द्रकला धारण किए हुए, सजीले वस्त्र पहिने हुए, हाथी दाँतके कर्णफूल पहने हुए, मधुर स्वरसे गाती हुई कर्णाटी देवताओंका मन हरे ले

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रही है। इसका ग्रह, अंश, न्यास और स्वर विकृत निषाद है। इसमें मार्गी मूर्च्छनाका प्रयोग होता है। यह पंचम रागकी पत्नी रागिनी है।

स्वर हैं—नि स रे ग म प ध नी।

कर्णाट भी अलग राग है जिसका विवरण नारद-संहितामें दिया हुआ है।

(११) खम्भावती

ध्यान—खंबावती स्यात्सुखदा रसज्ञा सौंदर्यलावण्यविभूषितांगी।
गानप्रिया कोकिलनादतुल्या प्रियंवदा कौशिकरागिणीयम्॥ (संगीतदर्पणे)

(बहुत सुख देनेवाली, रस जाननेवाली, सुन्दरता और लावण्यसे सजे हुए अंगोंवाली खंबावती कोयलके समान स्वरमें गायन करनेवाली और प्रिय बोलनेवाली कौशिक रागिणी है।)

स्वर-रूप— खंभाजसि खंभावती उतरत रिखभ न देखि।
मध्यममें खरजहि गहे, पंचम वक्र विसेखि॥ —राग चन्द्रिकासार

उठाव—रेमपध, पधसां, नि़धपधम, गमस।

इस रागके दूसरे प्रकारमें आरोह करते समय रागेश्रीके अंगसे जाते हैं। यथा—नि़ स ग म ध नि सां। अवरोह लगभग एक सा है।

यथा—सां, नि़सां, धप, धम, पग, म सा।

(१२) गान्धार (गान्धारी)

ध्यान—आदाय वीणा घृतयोगपीठे गङ्गाधरध्याननिमग्नचित्तः।
योगासने मौलिजटादधानो गान्धाररागः कथितो मुनीन्द्रैः॥

[योगपीठपर बैठकर हाथमें वीणा लेकर शिवके ध्यानमें योगासन लगाकर जटाएँ धारण करके गान्धार राग बैठा है।] [जटा बढ़ाए हुए पवित्र भावसे आँखें मूँदे हुए, नीले वस्त्र पहिने हुए मेघकी पत्नी गांधारी गलेमें योगपट्ट डाले शान्त और संयत भावसे बैठी है।]

इसका ग्रह, अंश और न्यास स्वर षड्ज है।

स्वर : स रि ग म प ध नि स

समय : रात और दिनका आधा पहर।

(१३) गोंड़ अथवा गौड

गौड, काफ़ी थाटका अप्रसिद्ध स्वरूप है। पूर्वांगमें कानड़ा और उत्तरांगमें मल्लारके संयोगसे इस रागका स्वरूप बनता है। जाति संपूर्ण है।

साधारण चलन—सा, मरेसा, नि़ सा, ग॒, मरेप, धप, पग॒, मरेप, मपधरेंसां, धनि॒प, मपग॒, मरेसा। मप, नि॒ धसां, सां, निरेंसां, धनि॒प, मरेंसां, रेंनिसां धनि॒मप, धसां, नि॒, प, मपग॒, मरेसा।

(१४) गुंड

यह गौडका ही अपभ्रष्ट नाम है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

(१५) गुनकली (गुणकिरी)

ध्यान— शोकाभिभूतनयनारुणदीनदृष्टिः नम्राननना धरणिधूसरगात्रयष्टिः।
आमुक्तचारूकबरी प्रियदूरवृत्ता संकीर्त्तिता गुणकिरी करुणोत्कृशांगी॥
(संगीतदर्पण)

[पतिके शोकमें अभिभूत होनेसे करुण और दीन दृष्टिवाली, नीचा मुख किए बैठी हुई, धूलसे मैले शरीरवाली, खुले केशवाली दुखी और कृशांगी यह गुणकिरी रागिनी है।]

स्वर-रूप—यह एक अप्रसिद्ध राग है जिसे उत्तरके गायक गाते हैं। यह भैरवी थाटका राग है। इसमें आसावरी और भैरवीका मिश्रण है। "ध॒म" "पग॒" और "सांध॒" ये स्वर-संगतियाँ इसमें आसावरीके सूचक हैं; शेष निर्माण भैरवी जैसा है।

साधारण चलन—मग॒ मप, ध॒, पध॒म, म ध॒ म पग॒, ग॒ म रे॒ सा, सा रे॒ नि॒ सारेगम, पधनि॒सां, निध॒पम, पध॒निसां, ध॒, प। गं॒ रें॒ सां, नि॒सांध॒प, सा मग॒, मग॒; मध॒नि॒सां, रें, सां ध॒-प, प ध॒ नि॒सां ध॒प।

(१६) गान्धारी

ध्यान— हारोरःस्थलधारिणी सितपदैः कंजायताक्षी भृशं,
दिव्या भूषणभूषिताततिरुणी ताम्बूलहस्ताग्रका।
श्यामा सम्भृतकञ्चुकी मलयजैरादित्यता सुन्दरी
नृत्यन्ती भृतनूपुरा मृदुरतिर्गांधारिणी रागिणी॥ (राग-कल्पद्रुम)

[अपनी छातीपर हार पहने हुए वह कमलके समान आँखोंवाली अत्यन्त युवती सलोनी, गांधारी रागिनी दिव्य आभूपणोंसे सुशोभित होकर हाथमें पान लिए हुए अँगिया पहने, चन्दन पुते होनेके कारण अत्यन्त मनोहर लगनेवाली पायल पहनकर कोमल गतिसे नाच रही है।]

स्वर-रूप—गांधारी कर गान, उभय ऋषभ मृदु ग-म-ध-नि।
प्रात समय सब जान, औडव - संपूरन सदा॥ भावरंग लहरी, भाग२॥

आरोह— सा म रे म प नि॒-ध॒ ध॒- सां।

अवरोह— सां रे॒ नि ध॒ प, ध॒ म ग॒ रे॒ सा।

पकड़ — रे म प ध॒ म ग॒ रे॒ सा।

(१७) गूजरी (गुज्जंरी)

ध्यान—श्यामा सुकेशी मलयद्रुमाणां मृदूल्लसत्पल्लवतल्पमध्ये।
श्रुतिस्वराणां दधती विभागं तंत्रीसुखा दक्षिणगुर्ज्जरीयम्॥

[साँवली, सुन्दर बालोंवाली, चन्दनके वृक्षोंकी झुरमुटमें पत्तोंकी शय्यापर बैठी हुई, वीणाकी ओर मुख किए हुए श्रुति और स्वरोंको अलग अलग दिखाती हुई बजा रही है।]

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्वर-रूप—बिनु पंचम शुभ प्रात, रि–ग–म–ध स्वर विकृत लिए।
मधुर गुर्जरी मात, करुणा रत तोड़ी कही ॥

आरोह—सा रे ग मं ध नि सां, सां नि ध मं ग, रे ग रे सा।

पकड़— सा रे ग, मं ग रे ग रे – सा

(१८) गौरी

ध्यान—निवेशयंती श्रवणेऽवतंसम् आम्रांकुरं कोकिलनादरम्यम्।
श्यामा मधुस्यंदि सुसूक्ष्मनादा गौरीयमुक्ता किल कोहलेन ॥

[कानोंमें आमकी मंजरी खोंसती हुई, सुन्दर कोकिलकी कूक सुनती हुई, सलोनी मधुर स्वरमें गाती हुई गौरी रागिनीका वर्णन कोहलने किया है।] (संगीतदर्पणे)

स्वर-रूप— रि ध कोमल, मध्यम दोऊ, चढ़ते धग न सुहाय।
गौरी पूरवि थाटकी, रिप संवाद कहाय।

आरोह— सा रे प म प नि सां,

अवरोह— सां नि धप म प ग रे मं ग रे सा।

पकड़— सां नि़ ध नि़, रे ग, रे मं, ग रे सा रे नि़, सा।

विशेष—एक गौरी राग भैरव थाटके अन्तर्गत भी है, उसमें केवल शुद्ध मध्यम लगता है।

(१९) जैतश्री (जयतश्री)

ध्यान—स्वर्णप्रभा वीणधरा कराग्रे सौन्दर्यलावण्य-कलायताक्षी।
पीनोन्नता रागिणिका जयंतश्री कामिनीयं कथिता मुनीन्द्रैः ॥

[स्वर्णके समान चमचमाते शरीरवाली हाथमें वीणा लिए हुए सुन्दर सलोनी रसीली आँखोंवाली, ऊँचे स्तनोंवाली कामिनीको मुनीन्द्र लोग जयंतश्री रागिणी कहते हैं।] (राग-कल्पद्रुमः)

स्वर-रूप— रिध कोमल मध्यम कड़ी, गनि संवाद बनाय।
आरोही रिध वर्ज्य कर, राग जैतश्री भाय ॥

आरोहावरोह— सा ग मं प नि सां, सां नि ध पं मं ग रे सा।

पकड़— नि़ स, गप, मं धप, मंग धप मंग, म ग रे सा।

(२०) जैजैवन्ती (जयजयन्ती)

ध्यान—पीनोन्नता सुन्दरिका मृगाक्षी स्वर्णप्रभा कोकिलनादतुल्या।
वीणाविनोदी सुरपुष्पगन्धी सा जयजयन्ती सुरमेघ-भार्य्या ॥

[पीन पयोधरोंवाली. हरिणीकीसी (बड़ी-बड़ी) आँखोंवाली, सोनेकीसी दमकवाली, कोयल जैसे स्वरवाली, वीणा बजानेवाली, पारिजातके फूलकी सुगंध लेनेवाली वह सुन्दरी जयजयन्ती मेघराजकी पत्नी है।]

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

[पूर्णेन्दुमुखी, अति सौभाग्यवती, गोरी, गजमुक्ताके हार और प्रफुल्ल-कुसुम-मालासे सुशोभित, मयूरपिच्छसे बने आभूषणोंसे अलंकृत तथा अनेक प्रकारके अनुलेपन-द्रव्योंसे अनुलिप्त होकर जयजयन्ती मनोहर वेश धारण किए हुए है ।]

स्वर-रूप— द्वै गांधार निषाद द्वै संवादै प - रि सोइ ।
सोरठहीके अङ्गतें जैजैवन्ती होइ ॥ —चन्द्रिकासारे

आरोहावरोह— सा, रे रे, रेग रे सा, नि ध़ प़, रे, ग मप नि सां ।
सां नि ध प, ध म, रे ग रे सा ।

पकड़—रे ग रे सा नि़ सा ध़ नि मग रे ।

(२१) झिंझोटी

स्वर-रूप— कोमल मनि झिंझूटि है, चढ़त न लगे निषादि ।
कहुँ कोमल गन्धार है, ध–ग संवादी-वादि ॥ —राग चन्द्रिकासार

आरोहावरोह— स रे ग म प ध नि सां । सां नि ध प म ग रे सा ।

पकड़— ध़ सा, रे म, ग, प म ग रे सा नि़ ध़ प़ ।

समय—रात्रिका दूसरा प्रहर ।

(२२) टोड़ी (तोडी या तोडिका)

ध्यान—तुषारकुंदोज्ज्वलदेहयष्टिः काश्मीरकर्पूरविलिप्तदेहा ।
विनोदयंती हरिणं वनांते वीणाधरा राजति तोडिकेयम् ॥ (संगीतदर्पणे)

(हिम और कुंदके रंगके समान अपनी उजली देहपर केशर और कपूर मले हुए तोड़ी वनमें वीणा बजाती हुई मृगका मन बहला रही है ।)

स्वर-रूप— तीखे मनि कोमल रिगध, वादी धैंवत साज ।
संवादी गंधार है, टोड़ी राग बिराज ॥

आरोहावरोह— सा रे ग म॑ ध नि सां सां नि ध, प, म॑ ध म॑ ग रे ग रे सा ।
पकड़— सा रे ग म॑ ध–निध–प–, ध म॑ ग रे ग रे सा ।

(२३) देवगान्धार

स्वर-रूप— आसावरिके मेलमें चढत न रिध सुर पेखि ।
धग वादी संवादिते देव गांधार सुदेखि ॥ —राग चन्द्रिकासार

देव गांधारके दो प्रकार हैं । एकके आरोहमें ऋषभ-धैवत वर्ज्य है तथा पूर्वांगमें धनाश्री व उत्तरांगमें जौनपुरी है । दूसरे प्रकारमें दोनों गांधार लिए जाते हैं । शुद्ध गांधार आरोहमें "सा रे ग, म" इस प्रकार लिया जाता है । बाकी जौनपुरीकी तरह है । इसे संस्कृतके ग्रन्थका आधार प्राप्त नहीं है, किन्तु प्रचार इसका अधिक है । दूसरे प्रकारका स्वरूप—धम, पनि ध, प, धम पग,

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रे, प प ग–रे, गसा, निस, सा रे ग, म, पग, रे सा ।

विशेष—इसमें दो गांधार प्रयुक्त होते हैं अतः इसे द्विगांधार भी कहते है, 'द्वि' का ही 'देव' बन गया है ।

(२४) देवसार

ग्रन्थोंमें देवसार नामका उल्लेख देखनेमें नहीं आया है, किन्तु यह नाम राग 'देशाख्य'के निकटका या हो सकता है उसका अपभ्रंश हो । राग देशाख्यको कुछ लोग देवसाख, देवसाग या देशाख भी कहते है ।

राग देशाख्यका स्वरूप इस प्रकार है—

नि सा, मरे, पम, निप, सां, रेंसां, निसां, निप,मप, गम, रेसा ।

समय—दिनका द्वितीय प्रहर ।

(२५) देवगिरी

ध्यान— कादम्बिनी श्यामतनुः सुवृत्ता तुंगस्तनी सुन्दरहारवल्ली ।
चित्राम्बरा मत्तचकोरनेत्रा मदालसा देवगिरी प्रदिष्टा ।। (संगीतदर्पणे)

[बादलके समान साँवली, गोलमटोल, ऊँचे उठे हुए स्तनोंवाली, गलेमें सुन्दर हार और शरीरपर रंगबिरंगे वस्त्र पहने हुए, मतवाले चकोरके समान नेत्रोंवाली मदसे अलसाई हुई देवगिरी रागिनी बताई गई है ।]

स्वर-रूप—जबहि बिलावल मेलमें उतरत धग नहिं लाग ।
स - प वादी - संवादितें, कहत देवगिरि राग ।। —राग चन्द्रिकासार

उठाव —नि़ सा ध़नि़ध़सा, रेग मग, प मग मरे सा ।

समय —प्रातःकाल ।

(२६) देशकार

ध्यान—भर्त्रासमं केलिकलारसज्ञा सर्वांगपूर्णा कमलायताक्षी ।
पीनस्तनी रुक्मतनुः सुकेशी संपूर्णन्चद्राननदेशकारी ।। (संगीत दर्पणे)

[अपने पतिके साथ वह केलिकलाका रस जाननेवाली, सब अंगोंसे भरीपूरी, कमलके समान बड़ी-बड़ी आँखीवाली, कोमल शरीरवाली, सुन्दर बालोंवाली, पूर्ण चन्द्रके समान मुखवाली यह देशकारी रागिनी है ।]

स्वर-रूप—बिनु म नि, पंचम न्यास; धैवत बल, दुर्बल ॠषभ ।
उत्तरांग उद्भास, देशकार चंचल चलत ।।
(उधृत भावरंगलहरी भाग २)

आरोहावरोह—सा रे सा, गप, ध सां घ प, ध पग–प, ग प ध–प ग–रेसा ।

पकड़ —सां–धप, धग–प–,

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

(२७) धनाश्री

ध्यान— दूर्वादलश्यामतनुर्मनोज्ञा कांतं लिखंती विरहेण दूना।
श्वेते कपोले दधती दृगम्बुनिष्यंदनिधौंतकुचा धनाश्रीः ।। (संगीतदर्पणे)

[दूबके पत्तेके समान साँवली, लुभावनी, विरहसे दुखी होकर अपने पतिका चित्र बनाती हुई, अपने सुन्दर गालपर नेत्रोंके आँसूसे अपने स्तन भिगोती हुई, यह धनाश्री रागिनी है।]

स्वर-रूप— कोमल ग नी लगाइ कर आरोहन रिध त्याग।
प स वादी संवादितें, कहत धनाश्री राग ।।
('संगीत' काफी थाट अंक जनवरी ६८)

आरोह —सा ग् म प नि् सां
अवरोह—सां नि् ध प म ग् रे सा
दूसरा प्रकार—भीमपलासीमें ध का त्याग करके धनाश्री बनता है।
आरोहावरोह—नि् स ग् म प नि् सां, सां नि् प म ग् रे् सां।

(२८) धमार

'धमार' कोई राग-वाचक नाम नहीं है, बल्कि इस नामसे सर्वप्रथम तालका ही बोध होता है, जो ध्रुवपद गायकीके अन्तर्गत उपयोगमें आता है। यह १४ मात्राका ताल है। इसके बोल जो मृदंगपर बजाए जाते हैं, इस प्रकार हैं—क धिट धिट धाऽ, ग तिट तिट ताऽ। 'धमार' नामसे गीत शैली विशेषका भी अर्थ लिया जाता है, जिसे "होरी" कहते हैं। 'होरी' गीतमें प्रायः गोपी-कृष्णके होली खेलनेका वर्णन रहता है। धमार तालमें 'होरी' ध्रुवपदके गायक ही गाते हैं। धमारमें होलीका वर्णन रहना एक निश्चित बात है। इसीलिए ध्रुवपद गायकीके अन्तर्गत 'धमार' और 'होरी' एक दूसरेके पूरक अर्थको सार्थक करते हैं। खयाल गायक भी होरी गाते हैं किन्तु वे ताल धमारके स्थानपर प्रायः दीपचन्दी तालका प्रगोग करते हैं जिसकी मात्रा भी १४ होती हैं, किन्तु तालके बोलों (शब्दों)-में भिन्नता होती है।

(२९) नायकी (नायकी कानड़ा)

स्वर-रूप— गमनी सुर कोमल जहाँ धैवत सुर बरजोइ।
सम संवादी-वादितें कहो नायकी सोइ ।। —राग चन्द्रिकासार

आरोहावरोह—नि् स रे म प नि् सां
सां, नि् प म प ग् म रे सा।

उठाव — नि् प, मप सां, पनि् - प, म प ग् - म,
ग्मपमरेसरे-सा।

(३०) नट नारायण

ध्यान— स्त्रीवेशधारी पुरुषो नवीनः सङ्गीतशास्त्रे भ्रमिमादधानः।
गायन् सतालं सलयं मनोज्ञः स्यान्नट्टनारायणराग एषः ।। (संगीतदर्पणे)

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

[स्त्रीके वेषमें युवा नट्टनारायण संगीत शास्त्रमें उत्पन्न भ्रान्तिका निराकरण करके विशुद्ध ताल और लयसे मनोहर गायन कर रहा है ।]

राग नटनारायण राग नटका ही द्वितीय प्रकार है । इसके अवरोहमें धैवत स्पष्ट रूपसे नहीं लिया जाता और मध्यमपर 'नट' जैसा न्यास नहीं किया जाता । आरोहमें निषाद दुर्बल रहता है । बाकी सब नट-जैसा ही है । 'नट' का रूप आगे दिया गया है । उधृत—हि० सं० पं० क्रमिक पुस्तक मालिका भाग पाँचवाँ पृ० १८० ।

(३१) नट (नाट)

ध्यान— तुरङ्गमस्कन्धनिषिक्तबाहुः स्वर्णप्रभः शोणितशोणगात्रः ।
संग्रामभूमौ विचरन् प्रतापी नटोऽयमुक्तः किल रागमूर्त्तिः ।। (संगीतदर्पणे)

[घोड़ेके कंधेपर हाथ रक्खे हुए, स्वर्णके समान चमकते और रक्तसे सने शरीरवाला युद्धभूमिमें विचरण करता हुआ यह प्रतापी नटराग दिखाई दे रहा है ।]

स्वर-रूप— कोमल मध्यम तीख सब उतरत ध - ग न लखाइ ।
स - म संवादी-वादितें नट छबि देत दिखाई ।। राग चन्द्रिकासार

इसके अवरोहमें धैवत और गांधार स्वर वक्र होते हैं ।

उठाव—सा, ग, म, पगम, रे ग म प, म ग, म रे, सा ।

समय —रात्रि दूसरा पहर ।

संगीतशास्त्रके कुछ ग्रन्थोंमें नट और नट्टनारायणको एक ही राग माना गया है ।

(३२) नट नारायणी

रागके नामसे ही स्पष्ट है कि इसमें दो रागों (नट और नारायणी)-का मिश्रण है । राग नटका स्वरूप ऊपर दिया ही है । उस नटके साथ नारायणीके रूपके मिलानसे राग नट-नारायणी बनेगा ।

राग नारायणीका आरोहावरोह स्वरूप—

सा रे म प धसां । सां नि॒ ध प म रे सा ।

विशेष—राग नट-नारायणीका प्रमाणिक रूप देखने-सुननेमें नहीं आया है । किन्तु गुणिजन नट और नारायणीका पृथक् रूप जानते ही हैं, अतः वे कुशलतापूर्वक दोनों रागोंके मिलानसे नट-नारायणीके स्वरूपका निर्माण कर ही सकते हैं ।

(३३) परज

स्वर-रूप— जहँ कोमल धैवत रिषभ तीख गँधार निषाद ।
द्वै मध्यम-मंडित परज पस संवादी-वाद ।। —चन्द्रिकासार

यह उत्तरांग प्रधान राग है । गति चपलता लिए हुए है । स्वर-रूपमें राग वसंतके समान होते हुए भी चलन भिन्म होनेसे पूर्णतया अलग व्यक्तित्व रखता है ।

आरावरोह— नि़ स ग–, मं धु॒ नि सां, सां, नि धु॒ प, मंपधु॒प, गमग, मं ग रे॒ सा ।

पकड़— सां, नि धु॒ नि, धु॒ प, गमग, मं ग रे॒ सा ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

(३४) पूर्वी

ध्यान— निद्रालसा गात्र-पटेन युक्ता कान्तं स्मरन्ती विरहप्रपूर्णा ।
सौन्दर्य्यलावण्यकजायताक्षी सा पूरवी शेषदिने तुरीये ॥

[नींदमें अलसाई हुई, शरीरपर कपड़ा डाले हुए, विरहमें अपने पतिको स्मरण करती हुई, सुन्दरता और लावण्यसे भरी हुई यह कमलके समान आँखोंवाली पूर्वी रागिनी दिनके अन्तिम पहरमें गाई जाती है ।]

स्वर-रूप— रि ध कोमल कर गाइये, दोनों मध्यम मान ।
ग नि वादी संवादिसों, राग पूर्वी जान ॥

आरोहावरोह— नि़ रे ग मं ध नि सां, सां नि ध प म ग, रे ग म ग, मं ग रे सा

पकड़— पध़ म प मं ग रे ग म – ग

समय—दिनका अन्तिम प्रहर ।

(३५) पूरिया

स्वर-रूप— कोमल रिषभरु तीख सब जहाँ न पंचम होइ ।
गनि वादी-संवादि है राग पूरिया सोइ ॥ —चन्द्रिकासार

इस रागका मुख्य चलन मंद्र व मध्य स्थानोंमें है । समय सायंकालका है ।

आरोहावरोह— नि़ रे ग मं ध नि रें सा । सां नि ध मं ग रे सा ।

पकड़— ग, नि़ रे सा, नि़ ध़ नि़, मं़ ध़ रे सा ।

(३६) बिलावल

स्वर-रूप— मृदु मध्यम तीवर सबहि सुर सोहत जेहि माहिं ।
धग वादी-संवादि है, कहत बिलावल ताहि ॥

अल्हैया— मृदु मध्यम, सब तीख सुर, मध्यमसे न चढ़ैया ।
कहुँ निषाद कोमल लगत, धग संवाद अल्हैया ॥

राग बिलावलकी जाति संपूर्ण है । इसमें सभी शुद्ध स्वर लगते हैं । इसका प्रचार कम है । इसीके आरोहमें म का त्याग करके और अवरोहमें वक्र रूपसे कोमल निषादका प्रयोग करके 'अल्हैया बिलावल' नाम देते हैं । प्रचारमें अल्हैया बिलावल ही प्रायः सुनाई देता है ।

बिलावलका आरोहावरोह—सा रे ग म प ध नि सां । सां नि ध प म ग रे सा ।

अल्हैया बिलावलका आरोहावरोह—सा रे ग प ध नि सां, सां नि ध प, ध नि ध प, मग, मरे, सा ।

पकड़—ग रे ग प, ध नि सां ।

(३७) भैरव

ध्यान— गंगाधरः शशिकलातिलकस्त्रिनेत्रः सर्पैर्विभूषिततनुर्गजकृत्तिवासाः ।
भास्वत्त्रिशूलकर एष नृमुण्डधारी शुभ्राम्बरो जयति भैरव आदिरागः ॥

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

[जिनके मस्तकपर गंगा और चन्द्रकलाका तिलक है, जिनके तीन नेत्र हैं, जिनके शरीरपर सर्प लिपटे हुए हैं, जो हाथीकी खाल ओढ़े हुए हैं, उन हाथमें चमकता हुआ त्रिशूल लिए नरमुंडकी माला पहने हुए श्वेत वस्त्रधारी आदि राग भैरवकी जय हो ।]

स्वर-रूप— प्रथमो भैरवो रागो मृदुमर्षभधैवतः ।
वादी धैवत एवात्र संवादी चर्षभो मतः ॥ —चन्द्रिकायाम्

आरोहावरोह—सा रे ग म, प ध, निसां । सां नि ध, प म, ग रे सा ।

पकड़— सा ग म ध पम, गमरे–सा ।

(३८) भूपाली

ध्यान— गौरद्युतिः कुंकुमलिप्तदेहा तुंगस्तनी चंद्रमुखी मनोज्ञा ।
कांतं स्मरंती विरहेण दूना भूपालिकेयं रसशांतियुक्ता ॥ ।(संगीतदर्पण)

[गोरी देहमें कुंकुम मले हुए, मोटे स्तनोंवाली, चंद्रमुखी सुन्दरी भूपाली विरहमें दुखी होकर पतिको स्मरण कर रही है । शान्त रसमें इसका प्रयोग होता है ।]

स्वर-रूप— आरोही अवरोहिमें सुर मनि कीन्हे त्याग ।
धग संवादी वादितें कहि भूपाली राग ॥ —राग चन्द्रिकासार

आरोहावरोह—सा रे ग प, ध, सां । सां, ध प, ग, रे, सा ।

पकड़— ग, रे साध़, सरेग, धपग, रे, सा ।

(३९) भोपाल (भूपाल तोड़ी)

स्वर-रूप— म—नि वर्जित कोमल सभी प्रातर्गेय रसाल ।
उत्तर अरु कर्णाटकी, तोड़ी गत भूपाल ॥

—भावरंगलहरी भाग २

लगभग तीन दशक पूर्व अधुना प्रसिद्ध 'भूपाल तोड़ी'को केवल 'भूपाल' कहा जाता था । कर्णाटकमें 'भूपाल तोड़ी'को 'भूपाल' ही कहते हैं तथा यह ध्यान देने योग्य बात है कि उत्तर भारतीय 'भूपाल तोड़ी'को ओड़िसी संगीतमें भूपाली कहते हैं । यह कैसा विलक्षण योग है ।

राग भूपाल अथवा भूपाल तोड़ीका आरोहावरोह इस प्रकार है—

सा रे ग प, ध सां । सां ध प ग, रे ग रे सा ॥

पकड़—स रे ग प, ध प ग, रे ग रे सा ।

विशेष—भूपालमें सा रे ग, रे ग रे – सा इस तोड़ी अंगसे भूपाल तोड़ी नाम सार्थक होता है ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

(४०) मलार

ध्यान एवं स्वरूप—(मल्हार अथवा मियाँ मल्हार)

'धपनिधनिसां' घन नाद सुन मदमत्त गज डोलत रहे।
कछु चढ़त मृदु गंधार सम घन कुंज आंदोलित रहे।
कर न्यास पंचम शाखपर कल कोकिला कूजत रही :
रि प योग ध्वनि मल्हारकी मधु तानमें गुंजत रही ।।—भावरंग लहरी भाग २

आरोहावरोह— सा रे – रे प, मप नि॒ – धनिसां, ध नि॒ म प, म ग॒ म ग॒ – पमम रे – सा।

विशेष— प्रचारमें मलारको मियाँ मल्हारके रूपमें जाना जाता है। 'संगीत सागर' हाथरसके प्रकाशित पुस्तकमें पृ० ६१ पर शुद्ध मल्हारका स्वरूप दिया गया है जो प्रचारमें नहीं है। यथा—सारेम पमप धसां धपम सारेम। मेघ मलारका मेह मलार बना, उससे पंजाबमें मींह (वर्षा) मलार बना, उससे मियाँ मलार बना। कहा जाता है कि मियाँ तानसेन इसके प्रवर्त्तक हैं।

(४१) मेघ

ध्यान— नीलोत्पलाभवपुरिंदुसमानवक्रः पीतांबरस्तृषितचातकयाच्यमानः ।
पीयूष-मंदहसितो घनमध्यवर्ती वीरेषु राजति युवा किल मेघरागः ।।
(संगीतदर्पणे)

[नीले कमलकेसे रंगवाला, चन्द्रमाके समान टेढ़ा, पीतांबर ओढ़े हुए, अमृत भरी मंद हँसी हँसता हुआ, बादलोंके बीच रमता हुआ, वीरोंके बीच जवान मेघ राग शोभा दे रहा है जिससे प्यासे चातक, जल माँग रहे हैं। विहारशील, गाढ़े नीले शरीरवाला, पीली आंखोंवाला कामातुर मेघ कामिनियोंको बहुत प्रिय है। पीतांबर पहने हुए, घने मेघके समान नीली देह-वाला, अनेक आभूषणोंसे अलंकृत मेघराग अपनी प्रणयिनीसे प्रेमालाप कर रहा है।]

स्व-रूप— सुध मलारके मेलमें दोउ निषाद लगात।
सम वादी-संवादितें मेघमलार कहात ।।

राग-रूप— रेम, रेसा, नि॒ प़, नि़ सा, रे, म रे, प, रेम, म म रे म रे, नि़॒ सा।

विशेष— सामान्यतः मेघको मेघमलार कहते हैं।

(४२) मारू

हस्तालिंगितो पार्श्वे प्रिया - चुंबन - मानसः ।
उष्ट्रारोहि विवृत्तास्यो मारू रागो मुदा व्रजन् ।।४२।।

[अपने एक हाथसे अपनी प्यारीको लिपटाकर उसका चुंबन लेनेके विचारसे मुख खोले हुए यह ऊँटपर चढ़ा हुआ मारू राग प्रसन्नतासे चला जा रहा है।]

उधृत—स्पैन चयनिका १६७३ सर्वोत्तम संग्रह।

मारू उन ६ नामोंमेंसे एक है, जिन्हें मेवाड़के कलाकारोंने ४२ पर्णकोंका एक चित्राधार तैयार करनेके लिए सामान्य तौरपर प्रयुक्त ३६ नामोंमें जोड़ लिया था। इस चित्रका

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दृश्य ढोला और मारूकी लोकप्रिय कथापर आधारित है, जो कड़े विरोधोंके बावजूद एक अंधे एवं चतुर ऊँटकी सहायतासे एक दूसरेसे मिलनेमें सफल हो गए हैं।

—मारू रागिनी, मेवाड़ १६५०; ५×७ नैशनल म्यूजियम नई दिल्ली।

कुछ ग्रन्थोंके अनुसार युद्धके अवसरपर यह राग वाद्योंपर बजाया जाता था।

आरोहावरोह— सरे ग म मं प ध नि सां, सां नि ध प मं म ग रे सा।

मुख्य स्वर—षड्ज, ऋतु-हेमन्त, समय–दिनका चौथा भाग, नायक-धीरोदात्त, नायिका–प्रगल्भा वासकसज्जा, रस–शृंगार। उधृत—'संगीत सागर' हाथरससे प्रकाशित।

(४३) मालकोश

ध्यान— आरक्तवर्णो धृतरक्तयष्टिः वीरः सुवीरेषु कृतप्रवीर्य्यः।
वीरैर्धृतो वैरिकपालमालामाली मतो मालवकौशिकोऽयम् ॥

[नीचेसे ऊपरतक लाल रंगवाला, हाथमें लाल छड़ी लिए हुए यह वीर मालव कौशिक राग है जिसने वीरोंपर अपना पराक्रम दिखाया है, जिसे वीर थामे हुए हैं और जो गलेमें शत्रुओंके सिरोंकी माला पहने हुए है।]

स्वर-रूप— राग मालकौंसमें ऋषभ और पंचम वर्जित होनेसे इसकी औडव जाति है। ग ध नि कोमल लगते हैं। गायन समय रात्रिका चौथा प्रहर है।

आरोहावरोह— नि स ग म ध नि सां, सां नि ध म ग म ग सा।

पकड़— मग; मध निध, म ग सा।

(४४) मुलतानी

स्वर-रूप— तीवर मनि, कोमल रिगध, आरोहत रिध हानि।
प-स वादी-संवादितें, गुन गावत मुलतानि ॥ —चन्द्रिकासार

आरोह— नि़ स मंग मं प, नि सां।

अवरोह— सां नि ध प, म ग, मं ग रे सा।

पकड़— नि़ स मं ग, प मंग, म ग रे सा।

समय— दिनका चौथा प्रहर।

(४५) यमन

स्व-रूप— सब ही तीवर सुर जहाँ, वादि गँधार सुहाय।
अरु संवादि निषादतें ईमन राग कहाय ॥

आरोहावरोह—सा रे ग, म प, ध, निसां। सां नि ध, प, मंग, रेसा।

पकड़ —नि़ रे ग रे, सा, प म ग, रे, सा।

(४६) रामकली

ध्यान— हेमप्रभा भासुरभूषणा च नीलं निचोलं वपुषा वहन्ती।
कान्ते समीपे कमनीयकण्ठा मानोन्नता रामकली मतेयम् ॥ (संगीतदर्पणे)

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

[सोनेकीसी कान्तिवाली, चमकीले आभूषणोंवाली और शरीरपर नीली साड़ीवाली यह सुन्दर कंठवाली मनस्विनी रामकली रागिनी अपने पतिके पास बैठी है ।]

स्वर-रूप—इस रागमें रे–ध कोमल, दोनों मध्यम तथा दोनों निषादोंका प्रयोग होता है । अन्य स्वर शुद्ध हैं ।

समय— प्रभात ।

आरोह— नि़ स ग म प ध़ नि सां ।

अवरोह— सां नि ध प, मं प ध नि धप, मप, गमरे सा ।

पकड़— मं प, ध नि ध प, ग म रे – सा ।

(४७) रामकिरी

ध्यान— हेमप्रभा भास्वरभूषणा च नीलं निचोलं वपुषा वहंती ।
कांते समीपे कमनीयकंठा मानोन्नता रामकिरी मतेयम् ॥ (संगीतदर्पणे)

[सुनहरी कान्तिवाली, शरीरपर चमकीले आभूषण और नीली साड़ी पहने हुई यह सुन्दर कंठवाली रामकिरी रागिनी बड़े मानके साथ अपने पतिके पास बैठी है ।]

राग रामकिरी नामसे स्वर-रूप देखनेमें नहीं आया है, किन्तु इस नामसे मिलता-जुलता नाम 'रामक्रिया' का स्वर-रूप उर्दूकी प्राचीन पुस्तक 'मिनकार मूसीकार' से 'संगीतसागर' हाथरससे प्रकाशित ग्रन्थमें इस प्रकार मिलता है—

स्वर-रूप— सा रे ग म प म ध नि सां । सां नि ध प म ग म सा ।

विशेष—दक्षिणके व्यंकटममखी-रचित जनक मेल रागोंमें "शुद्ध रामक्रिया" नाम मिलता है ।

(४८) ललित (ललिता)

ध्यान— प्रोत्फुल्लसत्सच्छदमाल्यधारी युवा च गौरोऽब्जदलायताक्षः ॥
विनिश्वसन् दैववशात्प्रभाते यस्याः पतिः सा ललिता प्रदिष्टा ॥ (संगीतदर्पणे)

[खिले सुनहरे कमल और सप्तपर्णकी माला पहने हुए जिनका जवान, गोरा और कमलके दलकी-सी आँखोंवाला पति दैववशात् लंबी साँसें लेता हुआ सबेरे निकला चला जा रहा है वह ललिता है ।]

स्वर-रूप— मध्यम उभय, पंचम वरज, मृदु ऋषभ धैवत धारिये ।
नि़ रे ग म मं म–' 'नि ध मं ध मं म–' शुभ ललित अंग सँवारिये ॥

उपभेद ललित बखान गुनि, कछु तीव्र धैवत गायके ।
कर्नाटकी ललिता कहत, इक शुद्ध मध्यम लायके ॥

आरोहावरोह—नि़ रे ग म मं ध नि सां, सां नि ध मं म ग, रे ग म ग रे सा ।

पकड़— नि़ रे ग म मं–म ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

(४९) विहागरो (विहागड़ा)

स्वर-रूप—विहागड़ा परमान; 'पधनिध पमंगमग—' करत ।

अंग मिलाप सुजान, विहागमें खम्माजका ।।—भावरंगलहरी भाग २

आरोह— नि़ स ग म प नि सां ।

अवरोह— सां निध प, पधनिध, पमंगमग – रे – सा ।

पकड़— ग म पधनिध, पमं गमग, रे – सा ।

(५०) विहाग

स्वर-रूप— कोमल मध्यम तीख सब चढ़ते रिधको त्याग ।
गनि वादी संवादिते जानत राग विहाग ।।

आरोह— नि़ स ग म प नि सां ।

अवरोह— सां, नि ध प, म ग रे सा ।

पकड़— नि, धमंप, मं ग म ग ।

समय— रात्रि द्वितीय प्रहर ।

(५१) विभास

ध्यान— शुभ्राम्बरो गौरतनुः सुकान्तिः धीरोल्लसत् कुन्तलघृष्टगण्डः ।
सूर्य्योदये कुक्कुटपक्षिशब्दे विभाषरागः स्मरचारुमूर्त्तिः ।। (रागकल्पद्रुमः)

[श्वेत वस्त्र पहने हुए, यह गोरा कान्तिमान् धीर विभाष राग सूर्योदय होनेपर मुर्गोंकी बाँगके समय कामदेवके समान बड़ा सुन्दर लग रहा है जिसके गालसे उसकी लटें रगड़ खा रही हैं ।]

स्वर-रूप— विभास भास्कर नामद्वय, रिध कोमल, मनि त्याग ।
भूपालम् कर्णाटकी, सुप्रभातको राग ।।
—भावरंगलहरी भाग २

आरोहावरोह— सा रे ग प ध सां । सां ध प ग रे सा ।

पकड़— सा रे ग प ध – प ग प ।

(५२) बराटी अथवा बरारी

ध्यान— विनोदयन्ती दयितं सुकेशी सुकंकणा चामरचालनेन ।
कर्णे दधाना सुरवृक्षपुष्पं वारांगनेयं कथिता वराटी ।। (संगीतदर्पणे)

[सुन्दर बालोंवाली, हाथोंमें सुन्दर कंगन पहने हुई, कानमें मन्दार (कल्पवृक्ष)-का फूल खोंसे हुई यह वेश्या बराटी रागिनी चँवर डुलाकर अपने प्यारेका मन बहला रही है ।]

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्वर-रूप— जब मारूके मेलमें पंचम दीन्ह लगाइ।
धग संवादी-वादिते तबहि बराटि कहाइ॥ (राग चन्द्रिकासार)

ग्रन्थोक्त बराटीका ही आधुनिक नाम 'बरारी' है। इसकी उत्पत्ति मारवा थाटसे कही गई है। वराटीके बहुतसे प्रकार प्राचीन ग्रन्थोंमें वर्णित किए गए हैं।

उठाव— प ध ग, प, ध, मं ग, रे ग, मं ग, रे सा।

चलन— पधग, पधमंग, ग रे, रे ग, धमंग, रेसा, सरे, रे ग, रे सा, सा, सानि़ रेग,
प ग, प पध, सां, पधग।

उधृत— हि० सं० प० क्रमिक पुस्तक मालिका (भाग ६ ठा)

(५३) वसन्त

वसंततर्तौ गेयो मृदुल ऋषभस्तीव्रसकलः पहीनो मद्वंद्वः समगपुनरावृत्तिरुचिरः॥
सवादी मामात्योऽप्यहनि निशि चाव्याहतगतिः स्थितस्तारे षड्जे स जगति वसंतो विजयते॥
—कल्पद्रुमांकुरे

[यह वसन्त राग वसन्त ऋतुमें पाया जाता है। इसमें कोमल ऋषभ तथा अन्य सब स्वर तीव्र लगते हैं, पंचम नहीं लगता, दोनों मध्यम लगते हैं; षड्ज, मध्यम, गांधारकी बाराबर सुन्दर आवृत्ति होती है। षड्ज इसका वादी, म संवादी अमात्य है जिसे दिन और रात किसी भी समय जा सकते हैं: तार सप्तकके षड्जपर स्थित रहनेवाले इस वसन्तकी संसारमें जय हो।]

दो मध्यम कोमल रिषभ चढ़त न पंचम कीन्ह।
सम वादी-संवादितें यह वसंत कह दीन्ह॥ —चन्द्रिकासार

आरोहावरोह— सगमंध रें सां, रें नि ध प मंगमंग मंधं मं ग रे सा।

पकड़— मंध रें सां, रें नि ध प, मंगमंग

(५४) वसन्ती

ध्यान— शिखंडिबर्होच्चयबद्धचूडा कर्णावतंसीकृतशोभनाम्रा।
इन्दीवरश्यामतनुः सुचित्रा वसंतिका स्यादलिमंजुलाश्रीः।

[यह वसन्ती (वसन्तिका) रागिनी अपने जूड़ेमें बहुतसे मोरके पंख खोंसे हुए, आमकी मंजरी कानमें खोंसनेसे सुन्दर लगनेवाली, नीले कमलके समान साँवली, रँगीली, भौंरोंसे घिरी हुई बड़ी सुहावनी लग रही है।]

स्वर-रूप— स ग मं ध रें सां रें नि ध प मंग मंग
नि मंग मंग रेसा।

समय— रात्रि चतुर्थ प्रहर (३ से ६ बजे तक) वर्षा ऋतु।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

(५५) शंकराभरण

यह दक्षिणके व्यंकट मखीके जनक मेल रागोंमेंसे एक राग है, जिसका स्वरूप उत्तर भारतीय संगीतके "राग बिलावल" जैसा है। राग बिलावलका स्वरूप स रे ग म प ध नि सां, सां नि ध प म ग रे सा, इस प्रकार शुद्ध स्वरोंका है।

(५६) श्री हठी

इस नामसे रागका उल्लेख नहीं मिलता है। इस नाममें आए हुए प्रथम अक्षर श्री से 'राग श्री' का बोध तो होता है, किन्तु बादके 'हठी' शब्दसे किसी रागका संबंध नहीं मिलता।

(५७) श्री मलार

इस रागका उदाहरण ग्रन्थोंमें नहीं मिला है, किन्तु जैसा इस नामसे स्पष्ट है कि इसकी रचना राग 'श्री' तथा 'मलार' (मल्लार या मल्हार) इन दो रागोंके मिश्रणसे हुई होगी। राग 'श्री' तथा राग मल्हारके आरोहावरोह नीचे दिए जा रहे हैं।

राग श्री— नि सा रे मं प नि सां, रें नि ध प, ध मं ग रे, सा।

इसमें कोमल रे और प की मीड़युक्त संगति ही महत्त्वपूर्ण तथा राग-वाची है।

ध्यान : दिव्य मूर्त्तिधारी, विलासवेशी श्रीराग स्त्रियोंके साथ प्रमोद-काननमें विहारके लिये सुमन-संचय कर रहा है।

राग मलार—सा, म रे प, म प नि—ध नि सां, सां नि मप, नी नी पमप, ग—, मपमम, रे–सा।

इसमें मरेप और नी ध नि सां राग-वाची क्रियाएँ हैं।

यह भी संभव है कि यह राग श्रीमलार न होकर श्री रागकी पत्नी मालश्री हो जिसका ध्यान यह है—

क्षीणांगी मालश्री आमके वृक्षके तले बैठकर हाथमें लाल कमल लेकर घुमाती हुई मन्द मन्द हँस रही है। श्रृंगार रसमें इसका प्रयोग होता है।

स्वर हैं—सा रे गा मा पा धा नि सं।

(५८) श्रीसूहोबिलावल

इस रागका उल्लेख ग्रन्थोंमें नहीं है, किन्तु इसके नामसे स्पष्ट ही है कि इसमें राग श्री, राग सूहा और राग बिलावलका योग है। ऊपर राग श्रीका परिचय दे दिया गया है तथा राग बिलावलका भी पृथक् रूपसे परिचय दिया हुआ है, अतः यहाँ केवल राग सूहाका संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

राग-सूहा या सूहा कानड़ा—

स्वर-रूप—आरोही रिषभहि तजत, बिनु धैवत सोहत सदा।
मृदु ग-नि सुघराई निकट सुहा कहावत कान्हरा॥

आरोहावरोह— रे नि सा ग–मप–मप नि प सां, नि नि प, म प ग म रेसा।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

(५९) संकीर्ण

नामसे यह अनुमान लगाया जा सकता हैं कि अनेक रागोंके मिश्रणसे जो स्वरूप बना होगा उसे 'संकीर्ण' नाम दे दिया होगा, किन्तु इसमें रागोंके नामका संकेत न होनेसे इसके संवंधमें कुछ कहना कठिन है। इस नामसे किसी रागका वर्णन नहीं मिलता है।

दक्षिणी संगीतकी ताल पद्धतिमें प्रत्येक तालकी पाँच-पाँच जातियाँ होती हैं। उन पाँच जातियोंमें पाँचवीं जातिका नाम 'संकीर्ण जाति'' है।

(६०) सारंग

स्वर-रूप— सारंगो धगवर्जितो मृदु मनिस्तीव्रर्षभः पंचमः
संवादी किल वाद्यपीह ऋषभोऽसौ मध्यमादिर्मतः।
नारोहे यदि धो भवेदिह तदा शुद्धोऽवरोहे तु धे
वृन्दावन्यपि तीव्रनिर्भवति वै गेयस्तु मध्येऽह्नि ॥
— रागकल्पद्रुमांकुरे

[सारंगमें धैवत-गांधार नहीं लगाते, मध्यम निषाद कोमल लगते हैं, ऋषभ संवादी और मध्यम वादी है। इसमें आरोहमें यदि ध नहीं लगता तो अवरोहमें शुद्ध ध लगता है। इसके वृन्दावनी रूपमें तीव्र निषादका प्रयोग होता है और यह दोपहरमें गाया जाता है।]

आरोहावरोह—नि़ सा रे म प नि सां। सां नि् प, मरे, नि़ सा।

पकड़—नि़ स रे म रे, मप नि सां नि् प म रे,

विशेष— प्रचारमें सारंगको 'बिंद्राबनी सारंगके' नामसे जाना जाता है।

(६१) सानुत

इस नामसे किसी रागका उल्लेख ग्रन्थोंमें नहीं मिलता है और न ही सुननेमें आया है। अतः हो सकता है पहले कभी इस नामका कोई राग प्रचारमें रहा हो किन्तु बादमें चलकर उसका स्वरूप लुप्त हो गया हो।

(६२) सुधराई (सुघरई)

स्वर-रूप— सुग्राई स्यान्मृदुगमनिका रोहणे धैवतो न।
हीनेत्युक्ता पुनरभिहिता चावरोहे धयुक्ता ॥
वादीस्यात्पंचमस्तु प्रखरसु संवादिषड्जः प्रयुक्तो।
मध्यान्हात्प्राक् सरसमधुरं गीयते बुद्धिमद्भिः ॥ रागकल्पद्रुमांकुरे।

[इस सरस मधुर सुग्राई (सुधराई) रागिनीमें गांधार, मध्यम और निषाद कोमल लगते हैं, आरोहमें धैवत नहीं लगता पर अवरोहमें लगता है इसलिये यह हीन कहलाती है (संपूर्ण नहीं)। इसका वादी स्वर पंचम और संवादी षड्ज है जिसे बुद्धिमान् लोग दोपहरसे पहले गाते हैं।]

तीवर रिध कोमल गमनि चढ़त ध नहीं लगाइ।
सप संवादी-वादितें गुनि गावत सुघराइ ॥ राग चन्द्रिकासार

उठाव— धप, मरे, नि़स, रे, ग॒ म, रे सा, नी॒प, मप, गम॒, रेसा।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

(६३) सोरठ

राग 'देश' में (जिसका आरोहावरोह इस प्रकार है—सरे मप निसां, सं, रें नि_ ध प, ध म ग रे, ग – नि़ सा ।) कभी-कभी तार सप्तकमें कोमल गांधारका प्रयोग करने मात्रसे सोरठ बन जाता है। किन्तु संभवतः यह सोरठ न होकर सोरट हो तो उसका स्वरूप भिन्न होगा।

सोरठ— द्वै निषाद कोमल मधिम चढ़ते ध – ग न लगाइ।
प – रि संवादी-वादिते सोरठ गुनियन गाइ ॥ राग चन्द्रिकासार

राग सोरट—रिमौ पनी तथा सश्च निधौ मपौ धमौ चरिः ।
सोरटी कीर्तिता रात्रावृषभस्वरवादिनी ॥ —अभिनव रागमंजर्याम् ॥

विशेष—यथासंभव कम प्रमाणमें गांधारका प्रयोग कर इसे देशसे भिन्न किया जाता है।

(६४) हमीर

ध्यान— श्रुतौ दधानो नवकर्णिकारं सङ्केतशालागमनङ्गमूर्त्तिः ।
वीणा दधानः सुकरैः करस्थः हम्मीररागः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ (रागकल्पद्रुमे)

[कानोंमें नये कनैरके फूल खोंसे हुए, संकेत शालामें कामदेवकी मूर्त्तिके समान हाथमें वीणा लेकर हमीर राग बैठा है।]

स्वर-रूप—दो मध्यम तीवर सबहि धैवत वादी जान।
संवादी गंधार है राग हमीर बखान ॥ राग चन्द्रिकासार

आरोह— सारेसा, गमध—, निधसां
अवरोह— सां नि धप, म प धप गम रे सा।
पकड़— सा, रे ग म ध—।

(६५) होली अथवा होरी

होली या होरी राग - वाचक संज्ञा नहीं है। यह एक विशेष गीत-शैलीका नाम है। होरी नामके गीत ध्रुवपद गानेवाले तथा खयाल गानेवाले दोनों ही गाते हैं। ध्रुवपदवाले होरी गाते समय ताल धमारका प्रयोग करते हैं। होरीके गीतोंमें प्रायः कृष्ण और गोपियोंकी फागुन मासकी लीलाओंका वर्णन होता है। होरी धमार तालमें गाई जानेके कारण उसे धमार नामसे भी जाना जाता है।

खयाल गायक होरी गाते समय प्रायः दीपचन्दी नामक तालका प्रयोग करते हैं। वैसे कभी-कभी ताल धुमाली जत तथा कहरवाका भी उपयोग किया जाता है। होरी गीतोंमें शृंगार-रसकी प्रधानता रही है।

'सूरसागर' में आए हुए रागोंका परिचय लिखते समय जिन-जिन रागोंका ध्यान तथा स्वर-रूप सुलभ था उनका संक्षिप्त परिचय दे दिया गया है, किन्तु उपयुक्त ग्रन्थोंके अभावसे कुछ रागोंका परिचय नहीं दिया जा सका है। राग-रागिनीका ध्यान करके गानेसे उसमें रस आ जाता है।

विशेष—रागोंके दिए हुए स्वरूपसे कुछ विद्वानोंका स्वभावतः मतभेद हो सकता है, किन्तु यथासंभव उसका प्रामाणिक तथा प्रचलित स्वरूप ही दिया गया है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूर - साहित्य

डॉ० छबिनाथ पाण्डेय, एम्० ए०, डी० फिल०

भारतीय साधना और सूर साहित्य—डॉ० मुन्शीराम शर्मा १९५४
अष्टछाप परिचय : प्रभुदयाल मीतत १९५०
अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय : डॉ० दीनदयाल गुप्त १९४८
सूर सौरभ : डॉ० मुन्शीराम शर्मा, १९५७
सूर निर्णय : द्वारिकादास पारीख तप्रा प्रभुदयाल मीतल, १९५२
सूर सुषमा : नन्ददुलारे वाजपेयी, १९५०
हिन्दीमें भ्रमरगीत काव्य और उसकी परम्परा—डॉ० स्नेहलता श्रीवास्तव १९५८
सूर संचयन : डॉ० मुन्शीराम शर्मा १९६७
सूरदास : सं० डॉ० हरबंशलाल शर्मा १९६६
ब्रजभाषाके कृष्ण-भक्ति काव्यमें अभिव्यञ्जना-शिल्प : डॉ० सावित्री सिन्हा १९६१
सूरदर्शन : डॉ० कृष्णलाल हंस १९५८
हिन्दी कृष्ण-काव्यमें माधुर्योपासना : डॉ० श्यामनारायण पाण्डेय, १९६९
भ्रमरगीत सार : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, १९४३
सूर-सागर सार : डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, १९५९
सूर पंचरत्न : ला० भगवानदीन तथा मोहन बल्लभ पन्त, १९५७
अष्टछाप-चरिचय—प्रभुदयाल मीतल, १९५०
हिन्दी साहित्यका इतिहास—पं० रामचन्द्र शुक्ल, १९५८
ब्रजमाधुरीसार—वियोगीहरि, १९५७
मध्यकालीन प्रेमसाधना—परशुराम चतुर्वेदी, १९५२
हिन्दी साहित्यका आलोचनात्मक इतिहास—डॉ० रामकुमार बर्मा, १९३८
काव्यरूपोंके मूलस्रोत और उनका विकास—डॉ० शकुन्तला दुबे, १९५८
सूरकी झाँकी : डॉ० सत्येन्द्र, १९५६
सूर-सारावली—एक अप्रामाणिक रचना—डॉ० प्रेमनारायण डण्डन, १९६१
साहित्यलहरी—प्रभुदयाल मीतल, १९६१
सूरका रामकाव्य—त्रिलोकचन्द्र गुप्ता, १९६८
कूटकाव्य एक अध्ययन— डॉ० रामधन शर्मा शास्त्री, १९६३
हिन्दी कृष्ण भक्ति काव्यपर पुराणोंका प्रभाव—डॉ० शशि अग्रवाल, १९६०
सूरकी साहित्य साधना— सं० डॉ० भगवतस्वरूप मिश्र आदि, १९६५
सूरकी काव्यकका—डॉ० मनमोहन गौतम, १९६३

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूर-साहित्य—डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, १९६१
महाकवि सूरदास—आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, १९५२
सूरदास—रामचन्द्र शुक्ल, १९६१
सूर-साहित्य : नव मूल्यांकन—डॉ० चन्द्रभान रावत, १९६७
सूरदास और उनका भ्रमरगीत—प्रो० राजकुमार शर्मा, १९६८
अकबरी दरबारके हिन्दी कवि—डॉ० सरयूप्रसाद अग्रवाल।
अष्टछाप पदावली—सोमनाथ गुप्त।
अष्ट सखानकी वार्ता, सं० द्वारकादास पारीख।
अनुग्रह मार्ग—देवर्षि रामनाथ शास्त्री।
अष्टछाप (सं० १६९७) की वार्त्ता और भाव प्रकाश—सं० कंठमणि शास्त्री।
आधुनिक हिन्दी साहित्यकी भूमिका—डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय।
कांकरौली—प्रकाशक, श्री विद्याविभाग, कांकरोली।
खट् ऋतु वार्ता—चतुर्भुज दास
गोविन्द स्वामी—प्र० सं० श्री व्रजभूषण शर्मा
घन आनन्द—विश्वनाथप्रसाद मिश्र
घनानन्द सुधा—सं० श्री ब्रजभूषण शर्मा
घनानन्द कवित्त—सं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र
श्री चैतन्य चरितावली—प्रभुदत्त ब्रह्मचारी
छीत स्वामी—सं० गो० ब्रजभूषण शर्मा, पी० कण्ठमणि शास्त्री, कं० श्री गोकुलानन्द शर्मा
तृतीय स्कन्धार्थ (संस्कृत)
नन्ददास—सं० उमाशंकर शुक्ल
नन्ददास ग्रन्थावली—ब्रजरत्नदास
प्रेम दर्शन—देवर्षि नारद
४१ बृहत् शिक्षा पत्र—श्री हरिरायजी, महाप्रभुजी।
ब्रह्म संबंध—देवर्षि रमानाथ शास्त्री
ब्रज भारती— सं० प्रभुदयाल मीतल (पत्रिका)
ब्रज भाषा व्याकरण—डा० धीरेन्द्र वर्मा
ब्रह्मवाद—देवर्षि रमानाथ शास्त्री
ब्रजका इतिहास—श्री कृष्णदत्त वाजपेयी
ब्रजस्तोत्र सरित्सागर गद्य पद्यात्मक—दी न्यू प्रिंटिंग प्रेस—बम्बई
भक्ति और प्रपत्तिका स्वरूपगत भेद—देवर्षि रमानाथ शास्त्री।
भाव भावना—प्र० वसन्त राम हरिकृष्ण शास्त्री
भक्त कवि व्यासजी—बासुदेव गोस्वामी
भागवत धर्म—हरिभाऊ उपाध्याय
भारतीय साधन और सूर साहित्य—डॉ० मुन्शीराम शर्मा

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भक्तमाल—श्री प्रतापसिंह
भक्तमाल—गोस्वामी श्री नाभाजी
भक्तमाल—रमणसिंह देवजू बहादुरजीकी आज्ञानुसार
भक्त शिरोमणि सूरदास—श्री नलिनीमोहन सान्याल
भक्तमाल सटीक—श्री नाभाजी
भाव सिन्धुकी वार्त्ता—प्रस्ताव लेखक श्री द्वारकादास पारीख
मिश्रबन्धु विनोद—गणेश बिहारी मिश्र
मध्यकालीन धमं साधन—हजारीप्रसाद द्विवेदी
मध्यकालीन प्रेम साधन—परशुराम चतुर्वेदी
वार्त्ता साहित्य मीमांसा—द्वारकादास पारीख (गुजराती)
६६ वचनामृत (श्री १०८ वल्लभजीके) तथा २५ वचनामृत गोकुलाधीशके, भक्ति ग्रन्थमाला, अहमदाबाद
वल्लभ पुष्टि प्रकाश ।
वल्लभीय सुधा—द्वारकादास पारीख ।
सूरदास—व्रजेश्वर वर्मा ।
सम्प्रदाय प्रदीप—कण्ठमणि शास्त्री ।
सेवा सर्वस्व (गुजराती)
श्री आचाय महाप्रभुजीकी प्राकट्य वार्त्ता—सं० द्वारकादास पुरुषोत्तमदास पारीख ।
श्रीनाथजीकी प्राकट्य वार्त्ता—गो० हरिरायजी महाराज ।
श्रीकृष्णावतार—देवर्षि रामनाथ शास्त्री ।
श्रीमद्वल्लभाचार्य—चरितम् ।
श्री विट्ठलेश चरितामृत तथा श्री प्रभु चरित्र चिंतामणि (गुजराती)
शुद्धाद्वैत सिद्धांत प्रदीप, मगनलाल गणपतराम शास्त्री (गुजराती)
श्री गोवर्द्धन लीला—रचयिता सूरदास—सं० श्री बृजभूषणलालजी; कांकरोली ।
सूरदासकी वार्त्ता—प्रभुदयाल मीतल ।
सूर विनय पदावली— ,, ,, ।
चौरासी वैष्णव वार्त्ता—सं० पारीख ।
दो सौ बावन वैष्णवनकी वार्त्ता ।
महाप्रभु वल्लभाचार्यजीकी प्राकट्य वार्त्ता ।
प्राचीन वार्त्ता, रहस्य विद्या विभाग, कांकरोली ।
श्री वल्लभाचार्य और उनके सिद्धांत ।
श्रीमद्वल्लभाचार्य और उनका पुष्टिमार्ग—पं० सीताराम चतुर्वेदी ।
बैठक चरित्र हस्तलिखित—बजरंग पुस्तकालय ।
निज वार्त्ता हस्तलिखित ।
पुष्टिमार्ग—पारीख ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुष्टि दर्पण ।
अष्टछाप—डा० धीरेन्द्र वर्मा ।
सूर साहित्यकी भूमिका—भटनागर और त्रिपाठी ।
परमानंद सागर—परीखजीकी १७५४ वाली २ प्रतियाँ ।
परमानंद सागर—नाथद्वारा पुस्तकालय हस्तलिखित ४ प्रतियाँ ।
परमानंदसागर—सम्पादक डा० गोवर्धननाथ शुक्ल ।
कीर्तन संग्रह भाग १, २, ३ ।
अष्टछाप पदावली—डा० सोमनाथ ।
श्री बालकृष्ण लीलामृत ।
रास पंचाध्यायी भ्रमर गीत—नन्ददास ।
सूरदास अध्ययन सामग्री—सं० जवाहरलाल चतुर्वेदी ।
कीर्तन संग्रह—प्रकाशक—लल्लूभाई, छगनलाल देसाई ।
कीर्तन संग्रह—प्रकाशक—ठाकुरदास सूरदास ।
दानलीला—ले० कुंभनदास ।
पुष्टिमार्गी पद संग्रह—संग्रहकर्त्ता—ठाकुरदास सूरदास ।
पुष्टिमार्गीयोपदेशिका—ले० चिमनलाल हरिशंकर—अनुवादक—श्री माधव शर्मा, काशी ।
ब्रजकी झाँकी ।
भँवरगीत—ले० नन्दनास—सं० विश्वंभरनाथ मेहरोत्रा ।
भ्रमरगीत— ,, ,, सं० मोतीलाल मनोहरदास
भ्रमरगीत— ,, ,, प्रकाशक—नत्थीलाल शर्मा ।
रासपंचाध्यायी और भँवरगीत—ले० नन्ददास—सं० बालमुकुंद गुप्त ।
वल्लभ पुष्टिप्रकाश—प्रकाशक—मुखियाजी रघुनाथजी ।
श्री ब्रजमंडल—श्री नरसिंह दास ।
श्रीमद्वल्लभाचार्य—भट्ट रमानाथ शर्मा ।
सूरदासका जीवनचरित्र—मुंशी देवी प्रसाद ।
सूरदासका दृष्टकूट—टीकाकार सरदार कवि ।
सूर पचीसी—प्रकाशक—मनोहर पुस्तकालय, मथुरा ।
सूर पचीसी, सूरसाठी, वैराग्य शतक—प्रकाशक—मनसुखलाल शिवलाल कंठीवाले, मथुरा ।
सूर साहित्य—हजारी प्रसाद द्विवेदी ।
सूर शतक—विद्या विभाग, काँकरौली ।
सेवाफल—सूरदास ।
पुष्ट प्रवाह मर्यादा—श्रीवल्लभाचार्य—सं० रमानाथ शर्मा ।
यमुनाष्टक—ले० वल्लभाचार्य—सं० रमानाथ शर्मा ।
वल्लभ दिग्विजय—ले० गोस्वामी यदुनाथजी ।
वल्लभाष्टक—ले० वल्लभाचार्य—सं० रमानाथ शर्मा ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीमद्वल्लभाचार्य चरितम्—मुरलीधरदास ।
सूरदास—डा० जनार्दन मिश्र ।
पुष्टिमार्गनो इतिहास (गुजराती)—प्रकाशक बसंतराम हरिकृष्णशास्त्री ।
श्रीगोकुलनाथजीना हास्य प्रसंगों भाग १—प्रकाशक—दीन किंकर, अहमदाबाद ।
श्री सूरदासजीनूं जीवत-चरित—नरसिंहदास ।
जै कन्हैयालालकी—आचार्य पं० सीताराम चतुर्वेदी अ० भा० विक्रम परिषद्, काशी ।
महाकवि सूरदास— ,, ,, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।
सूर-पद-पञ्चशती— ,, ,, ,, ,, ,, ।
सूरदासपर लगभग २०० शोध प्रबन्ध लिखे जा चुके हैं ।

सूर-साहित्य-सूची

डा० किशोरीलाल गुप्त, एम्० ए०, पी-एच्० डी०, डी० लिट्०

सुधवै, वाराणसी

सूर-साहित्य-सूची संबंधी प्रस्तुत लेख तीन खंडोंमें विभक्त है—

(क) सूरका साहित्य; (ख) सूर संबंधी साहित्य, (ग) लेखकानुक्रमणिका ।

प्रस्तुत सूचीको प्रस्तुत करनेमें काशी नागरी प्रचारिणी सभाके आर्य भाषा पुस्तकालय; हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयागके संग्रहालय एवं हिन्दी-आलोचना-ग्रन्थ-सूचीसे सहायता ली गई है ।

प्रयास किया गया है कि सूची सर्वांग-पूर्ण हो, पर त्रुटियाँ असंभव नहीं । असंपूर्ण होते हुए भी सूची सूरके अध्येताओंके लिए उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी आशा है ।

(क) सूरका साहित्य

१. सूरसागर

१—सूरसागर—राग कल्पद्रुमके अंतर्गत : सं० १८६६ (१८४२ ई०)

कृष्णानन्द व्यासदेव 'राग सागर' (सं० १८५१-१६४५ वि०) ने कलकत्तेसे १८६६-१६०६ वि० में 'राग कल्पद्रुम' नामक विशालतम संगीत ग्रंथको पहले छोटे छोटे खंडोंमें प्रकाशित किया था । उन्होंने ३२ वर्षोंतक समस्त भारतमें घूम घूमकर सामग्री संकलित की थी और कलकत्तेमें बसकर अपना प्रेस स्थापित किया था तथा रागकल्पद्रुमका यह प्रकाशन लीथोमें

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

किया था। बादमें इन छोटी छोटी पोथियोंको चार बड़ी जिल्दोंमें बाँधकर उन्होंने सौ सौ रुपयेमें बेचा था। इसकी चौथी जिल्दमें सूरसागर और सूरसारावली है। इसकी तीसरी जिल्द बंगाक्षरोंमें है। चौथी जिल्दकी एक प्रति कलकत्तेके राष्ट्रीय पुस्तकालयमें एवं एक जिल्द वृन्दावनके गोस्वामी दामोदराचार्यके पास है। इसमें बड़ी साँचीके ३४४ पृष्ठ हैं। इसमें सूर सहित अनेक भक्त गायकोंके कीर्तनके पद, सूरसागर और सूर-सारावली हैं। यह भाग चैत्र १८६६ में प्रकाशित हुआ था।

राग कल्पद्रुमका संस्करण बंगीय साहित्य परिषद्, कलकत्ता-द्वारा श्री नगेन्द्रनाथ बसुके संपादनमें प्रकाशित हुआ था। इसकी केवल प्रथम तीन जिल्दें प्रकाशित हुई थीं। सूरसागर-वाली चौथी जिल्द नहीं थी। प्रथम जिल्द सं० १९७१ में, दूसरी सं० १९७३ में छपी थी। दूसरे संस्करणकी तीनों जिल्दें आचार्य पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्रके निजी पुस्तकालयमें हैं। सभामें कोई प्रति नहीं है।

राष्ट्रीय ग्रन्थालय कलकत्तामें सुरक्षित प्रतिका विवरण 'हिन्दीके आदि मुद्रित ग्रंथ' में २२१ संख्यापर दिया गया है।

२—सूरसागर—दिल्ली, मतबा इलाही, १८६० ई०, लीथो, स्कंधात्मक संस्करण। जवाहरलाल चतुर्वेदी मथुराके पास इसकी एक प्रति थी। —हिन्दीके आदि मुद्रित ग्रंथ ८४६

३—सूरसागर—मधुरा, मुंबै उल्उलूम प्रेस, १८६० ई०, लीथो, स्कंधात्मक संस्करण। जवाहरलाल चतुर्वेदी मथुराके पास इसकी एक प्रति थी। —हिन्दीके आदि मुद्रित ग्रंथ ८५०

४—सूरसागर—मुद्रक तथा प्रकाशक—मतबा कृष्णलाल, लीथो, १८६० ई०।
—'सूरके सौ कूट' की सहायक ग्रंथ सूची।

५—सूरसागर—लखनऊ संस्करण, १९२० वि० (१८६४ ई०)

सूरसागरका यह संस्करण सं० १९२० (१८६४ ई०) में अयोध्या-नरेश महाराज मानसिंह 'द्विजदेव' की प्रेरणा एवं अनुमतिसे नवल किशोर प्रेस लखनऊसे हुआ था। यह राग-कल्पद्रुमकी चौथी जिल्दसे पुनर्मुद्रण मात्र है। इसका संशोधन मुंशी जमुना प्रसाद एवं पं० काली चरणने किया था। यह संस्करण लीथोमें था। इसमें १७२, १५६, १०३, १००, १२५ कुल ६५६ पृष्ठ थे। लंबाई ३० सेंटीमीटर थी। राष्ट्रीय ग्रंथशाला कलकत्तामें एक प्रति है।

इसका पुनर्मुद्रण दूसरी बार सं० १९३१ (नवंबर १८७४ई०) में हुआ था। इस बार यह पं० प्यारेलाल एवं पं० रामरत्न बाजपेयी द्वारा शोधा गया था। इस दूसरे संस्करणकी एक प्रति मथुरा पुरातत्त्व संग्रहालयमें है। इसका आठवाँ पुनर्मुद्रण १९०२ ई० में हुआ, जिसकी एक प्रति कलकत्तेके राष्ट्रीय ग्रंथालयमें है।

काशी नागरी प्रचारिणी सभाके पुस्तकालयमें इसकी कोई प्रति नहीं। प्रथम संस्करणका विवरण 'हिंदीके आदि मुद्रित ग्रंथ' में ८५१ संख्या पर है।

६—सूरसागर—जयपुर, मतबा ईजाद, १८६५ ई०। लीथो। स्कंधात्मक। जवाहरलाल चतुर्वेदी मथुराके पास एक प्रति थी। —हिन्दीके आदि मुद्रित ग्रंथ ८५३

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

७—सूरसागर—तीसरा संस्करण, आगरा मतबा ईजाद, १८६७ ई० । लीथो ।

—हिन्दीके आदि मुद्रित ग्रंथ ८५४

८—सूरसागर—बंबई संस्करण—१९५३ वि० (१८९६ ई०) । सूरसागरके इस संस्करणका संपादन बाबू राधाकृष्णदासने किया था। इसका प्रथम संस्करण सं० १९५३ (१८९६ ई०) में हुआ था । प्रामाणिक हस्तलेखोंके अभावमें यद्यपि यह संस्करण बहुत अच्छा नहीं था, फिर भी सभाके सूरसागरके प्रकाशनके पूर्व लखनऊ संस्करणकी अपेक्षा यही सभीकी आवश्यकताकी पूर्ति करता था । राधाकृष्णदासजीने इसके अंतमें कुछ नवीन पद भी दिए हैं। प्रथम संस्करणमें अशुद्धियाँ बहुत थीं । दूसरे संस्करणमें इन्हें शुद्ध किया गया । इसमें कुल ६०० बड़े पृष्ठ हैं । कुंल पद संख्या ४०१८ है ।

बंबई संस्करणके प्रथम मुद्रणकी एक प्रति आचार्य सीताराम चतुर्वेदीके पास और एक काशी नगरी प्रचारिणी सभाके पुस्तकालयमें है (८२१ सू० १४, पूर्ण संख्या ५५८६)। बंबई संस्करणकी एक प्रति मेहता पुस्तकालय आज़मगढ़में है ।

९—सूरसागर—सभा संस्करण ।

महाकवि जगन्नाथदास रत्नाकरका २१ जून १९३२ ई० को तिरोधान हुआ । अपने निधनके पूर्व वे सूरसागर-संबंधी अपनी समस्त संकलित सामग्री सभाको दे गए थे। सभाने सूरसागरके प्रकाशनके निमित्त अग्रांकित सदस्योंकी एक सूर-समिति बना दी—

१—श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, २—श्री रामचंद्र शुक्ल, ३—श्रीकेशव-प्रसाद मिश्र ४—सभाके साहित्य मंत्री (पदेन)

प्रारंभमें कुछ दिनों मुंशी अजमेरीजीने काम किया। फिर बाबू श्यामसुंदरदासजीने अपने योग्य शिष्य नंददुलारे वाजपेयीको इसके संपादनमें लगाया। वाजपेयीजीने चार वर्षों १९३४-३७ में यह कार्य पूरा किया । कार्य समाप्त हो जानेपर भी ग्रंथ १०-१२ वर्षों तक अप्रकाशित पड़ा रहा ।

सभाका सूरसागर दो जिल्दोंमें प्रकाशित है। प्रथम भाग सं० २००५ में एवं द्वितीय भाग सं० २००७ में प्रकाशित हुआ । प्रथम भाग में कुल २३६७ पद और ८६० पृष्ठ हैं। द्वितीय भाग विवरण यों है—

(क) पृष्ठ ८६१–१७२४ = ८६४ पृष्ठ

पद संख्या २३६८–४९३६, कुल २६६९ पद

(ख) परशिष्ट ८६ पृष्ठ, २०० पद

(ग) प्रतीकानुक्रमणिका—१०४ पृष्ठ

सभाका सूरसागर यद्यपि निर्दोष नहीं है, पर यह अभीतक प्रकाशित सूरसागरके सभी संस्करणोंसे श्रेष्ठ एवं उपयोगी है । इसकी पूर्ण पृष्ठ संख्या १९१४ एवं पद संख्या ५२०६ है ।

१०—'सूर ग्रंथावलीके अन्तर्गत

आचार्य पं० सीताराम जी चतुर्वेदीने संपूर्ण सूर-साहित्यको सूर-ग्रंथावलीके रूपमें ५ खंडोंमें प्रकाशित किया है । यह ग्रंथावली सटीक है । अन्य सभी सूरसागर श्रीमद्भागवतके

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अनुसार द्वादश स्कधात्मक हैं। प्रस्तुत ग्रंथावलीमें सन्निविष्ट सूरसागर पुष्टि-संप्रदायके अनुसार लीलाक्रमसे है। ग्रंथावलीका प्रकाशन अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशीकी ओरसे हुआ है। प्रधान संपादक एवं टीकाकार पं० सीताराम चतुर्वेदी हैं।

प्रथम खंड—कृष्ण-जन्मसे - बकासुर उद्धार तक। पद संख्या ७७६। आदिमें डा० गोवर्द्धननाथ शुक्ल कृत ६२ पृष्ठोंकी विद्वत्तापूर्ण भूमिका है। पृष्ठ संख्या ८, ६४, ४३६। ग्रंथांतमें पदानुक्रमणिका है। प्रकाशन काल—गंगा दशहरा सं० २०३१ वि० (जून १९७४)। कुल पृष्ठ संख्या ५३८।

द्वितीय खंड—प्रलंब-उद्धारसे राधिका पुनरागमन तक। पृष्ठ संख्या ८, ४३७–८४८। पद संख्या ७८०–१५२१। ग्रंथांतमें पदानुक्रमणिका है। प्रकाशन काल—विजयादशमी सं० २०३१ (२५ अक्टूबर १९७४)। कुल पृष्ठ संख्या ४२०।

तृतीय खंड—लघु गान लीलासे अक्रूर प्रत्यागमन तक, गोकुल-लीला पूर्ण, पृष्ठ संख्या ८, ८४९–१६३२। पद संख्या १५२१ क–३०३०। ग्रंथांतमें तृतीय खंडकी पदानुक्रमाणिका दी गई है। प्रकाशनकाल—विजयादशमी सं० २०३३ (२ अक्टूबर १९७६ ई०)। कुल पृष्ठ संख्या ७९२।

चतुर्थ खंड—प्रकाशनकाल—वैशाख शुक्ल ५ सं० २०३५ (१२ मई १९७८)।

(क) मथुरा लीला और शेष कृष्ण लीला—पृष्ठ १६३५–२३०१ (पद ३०३१–४३०८)
(ख) विनयके पद पृष्ठ २३०३–२४९४ (पद ४३०९–४६४५)

(ग) सूरसागर परिशिष्ट
स्कंध २ से ९—केवल मूल पृष्ठ १–६३ (पद ४६४६–४७६०)
रामगीतावली सटीक पृष्ठ ६४–१५८ (पद ४७६१–४९१८)
शेष नवम स्कंध, एकादश एवं द्वादश स्कंध—१५८–१६५ (पद ४९१९–४९२७)

(घ) सूर सागर परीशिष्ट २
(१) सभा संस्करणके परिशिष्ट १, २ के पद—पृष्ठ १–५७ (पद ४९२८–५१९७)
(२) चतुर्थ खंडकी पदानुक्रमणिका—पृ० ५८–६८
(ङ) परिशिष्ट ३—नव प्राप्त पद (असमाप्त) पृ० ७९–११४ (पद ५१९७–५३९४)
कुल १९८ पद।

(च) सूर सारावली—(केवल मूल) — पृष्ठ १–६०
(छ) सेवाफल— (केवल मूल) — पृष्ठ ६१–६२
(ज) साहित्यलहरी—(सटीक) — पृष्ठ ६३–१४४

इस खंडकी कुल पृष्ठ संख्या ८६०, १६६, ११६, १४४ = १२८६

पंचम खण्ड—प्रकाशन काल वैशाख शुक्ल ५, सं० २०३५ वि, १२ मई सन् १९७८

(क) नवीन प्राप्त पद

(ख) नवीन पदोंकी अकारादि क्रम-सूची

(ग) परिशिष्ट ४—श्री जवाहरलाल चतुर्वेदीकी पद-सूचीमें नवीन पदोंकी टेक।
डा० गोवर्द्धननाथ शुक्लके लेख

(अ) श्रीमद्भागवतका प्रतिपाद्य तत्त्व

(आ) शुद्धाद्वैत दर्शन

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

(इ) पुष्टिमार्गीय भक्ति
(ई) पुष्टिमार्ग-सेवित प्रमुख नौ स्वरूप
(उ) अष्टछापी कवियोंके साधन-स्थल
(ऊ) दशमस्कन्ध और परमानन्दसागर
(ए) अष्टछापियोंकी विषय-सूची

(घ) सूर-सागरकी सामग्रीका संकलन और उसका सम्पादन : श्री उदयशंकर शास्त्री,
(ङ) सूर-सागरकी प्राप्त एक नवोपलब्ध प्रति : श्री उदयशंकर दुबे।
(च) सूर-सागरके राग, ध्यान तथा उनका परिचय—डा० चित्तरञ्जन ज्योतिषी
(छ) सूर-सम्बन्धी साहित्य—डा० छबिनाथ पाण्डेय
(ज) सूर-साहित्य-सूची—डा० किशोरीलाल गुप्त
(ज) सूर-साहित्यमें शोधके क्षेत्र

११—सूर-सागर—सं० वृन्दावनदास तथा गोपाल प्रसाद कौशिक। श्यामकाशी प्रेस मथुरा। पृष्ठ ६५६, मूल्य १२)

सूर-सागरके अपूर्ण संस्करण

१—सूर-सागर—रत्नाकर संस्करण

रत्नाकरजीने सूर-सागरकी संपादन प्रारम्भ किया था। यह सभासे खंडशः प्रकाशित हो रहा था। इसके कुल ८ खंड प्रकाशित हुए थे। इसका टाइप पर्याप्त मोटा था। पाठांतर दिया गया था। ये आठों खंड सभामें एक जिल्दमें सुरक्षित हैं (८२१-सू १३)। एक खंड मेरे पास भी है—

पृष्ठ संख्या १९३–२८८=९६, पद संख्या ३६०–४४४=कुल ८६ पद। द्वितीय स्कंध पद १७ से संपूर्ण, अष्टम स्कंध तक।

सूर-सागरके प्रकाशनमें त्वरा लानेके लिए इस संस्करणका प्रकाशन सभाने स्थगित कर दिया और दो बड़ी जिल्दोंमें समस्त सूर-सागर प्रकाशित किया।

२—सूर-सागर—जवाहरलाल चतुर्वेदी संस्करण : १९६५ ई०।

मथुरा-निवासी पं० जवाहरलाल चतुर्वेदी सूरके मर्मज्ञोंमें थे। इन्होंने सूर-सागरके संपादनकी प्रचुर सामग्री एकत्र की थी। उनकी योजनाके अनुसार सूर-सागरका प्रथम खंड बड़ी सजधजके साथ १९६५ ई० में बिन्नानी ट्रस्ट, कलकत्तासे प्रकाशित हुआ था। पृष्ठ संख्या ३१,५३६। पाठांतरका जगड्वाल इनमें बहुत है। इसकी एक प्रति सभाके पुस्तकालय एवं एक प्रति सीतारामजी चतुर्वेदीके निजी संग्रहमें है।

संक्षिप्त सूरसागर

१. सूर-मंजरी : सं० १७३६ वि०

'सूर-मंजरी' सूरसागरके ७७१ पदोंका संकलन है। इसे तिलोकचन्दने सं० १७३६ में संकलित किया था। यह कायस्थ मेदिनीमल्लके पुत्र थे, भोगाउँ निवासी थे—

१. सूरसागरहि मथिकै सूर मंजरी कही।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२. संबत सत्रससै छत्तीसा तब यह प्रकट भई ।

३. कायथ कुल भौगाउँके वासी, सूरकी पौरि कही ।

४. मेदिनीमल्लके सुवन तिलोकजन्द जात संकसा भई ।

इसका विषय-विभाजन यों है—

मंगलाचरण, जन्म समय, माखन चोरी लीला, आँख मिचौनी लीला, ब्रह्म-लीला, प्रथम मिलन लीला, गोवर्द्धन लीला, कालीदमन लीला, चीर हरण लीला, पनघट लीला, दान समय, दान लीला, नैन वर्णन, मुरली लीला, रहस्य लीला, अंतर्ध्यान लीला, जलक्रीड़ा लीला, मान लीला, हिंडोरा लीला, कंस लीला, मथुरा गमन, भ्रमरगीत, द्वारका गमन, रुक्मिणी मंगल, श्रीदामा प्रसंग, वामन अवतारके पद, द्रौपदी समयके पद, भीष्म पर्वके पद, रामायन समय, कड़खा, विनय, स्फुट पद—ब्रजभारती २२।१, ज्येष्ठ २०२५ वि०। इसका एक संक्षिप्त संस्करण सं० १९५५ में गंगा विष्णु श्रीकृष्णदासके लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, कल्याण, मुम्बईसे हुआ था। संकलयिताका नाम देवीकरण पांडे छपा है। वस्तुतः उन्हें यह संकलन अपने नाना राधाकृष्ण त्रिवेदीसे प्राप्त हुआ था और तिलोकचन्दवाले संकलनका ही संक्षिप्त रूप है। इसमें कुल १५४ पद हैं, जिनमें सूरके पद १२९ हैं। इस संक्षिप्त सूर मंजरीमें ऐसे भी पद हैं, जो सभी संस्करणोंमें नहीं हैं। इसमें शीर्षक लगे हैं, पर सर्वत्र नहीं।

२. संक्षिप्त सूरसागरका एक हस्तलेख : सं० १७८३ वि०।

इस हस्तलेखकी प्रतिलिपि सं० १७८२ में हिंदीके प्रसिद्ध कवि सेवढ़ा नरेश पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' के राज्यकालमें लाला महिमाशाहके लिए वंशीधर कायस्थने की थी। इसमें कुल १७६१ पद हैं। संग्रह स्कंधानुसारी है—मंगलाचरण २ पद, प्रथम स्कंध १०२, द्वितीय स्कंध ४०, तृतीय स्कंध १०, चतुर्थ स्कंध १२, पंचम स्कंध ४, षष्ठ स्कंध २, सप्तम स्कंध ८, अष्टम स्कंध ११, नवम स्कंध २३५, दशम स्कंध १३५७, एकादश स्कंध ३, द्वादश स्कंध ५।

प्रस्तुत संग्रहमें दशम स्कन्ध पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्धमें नहीं विभक्त है। यह ९० अध्यायोंमें विभक्त है। इसी प्रकार नवम स्कन्धमें रामकथा सात कांडोंमें विभाजित है।

ब्रजभारती २२/३, मार्गशीर्ष २०३५ वि०।

३. सूरसागर रतन अर्थात् सूरसागरका सार १९२१ वि०।

संपादक रघुनाथदास गोसाईं, बनारस लाइट प्रेस, १८६४ ई०। ४८४ पद। ३०४ पृष्ठ, लीथो। ब्रिटिश म्यूजियममें एक प्रति है।

द्वितीय संस्करण १८६७ (सं० १९२४ चैत सुदी ९ शनौ)। सम्मेलन संग्रहालयमें एक प्रति है।

—हिन्दीके आदि मुद्रित ग्रन्थ ८५३।

४. सूरसागर—लीथो संस्करण—मिती अषाढ़ सुदी १५, संमत १९३४, थाना भेलूपुर बनारस। ४११ पद

५. सूर संगीत सार : १९६९ वि० से पूर्व।

महात्मा सूरदास कविके सवा लक्ष पदोंकी सारावली। १९२६ पद

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

द्वितीय संस्करण १९१२ ई० में। कलकत्ता १८/२ नं० भवानी चरणदत्त स्ट्रीट, बंगवासी इलेक्ट्रिक मशीन प्रेसमें श्री नटवर चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित। अत्यन्त बारीक टाइप। मूल्य २)। सम्मेलन संग्रहालयमें दो प्रतियाँ हैं।

६. संक्षिप्त सूरसागर : १९७९ वि० (१९२२ ई०)।

संपादक—डा० बेनीप्रसाद। प्रकाशक—इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद। १९२२ ई०। मूल्य २।।)। स्कन्धानुसार संक्षिप्त संग्रह। प्रारम्भमें जीवनचरित और काव्य—३२ पृष्ठ।

७. संक्षिप्त सूरसागर : १९७९ वि०।

संपादक—वियोगीहरि। हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग। १९२२ ई०। मूल्य २)।

८. बृहद् सूरसागर : २०२६ वि० संपादक—प्रो० राय एम० ए०। प्रभात प्रकाशन, दिल्ली : मथुरा। १९६९ ई०, २५ रु० स्कंधानुसारी। १८०० पद

९. संक्षिप्त सूरसागर—सं० डा० प्रेमनारायण टंडन। हिन्दी साहित्थ भंडार, लखनऊ।६ रु०

१०. सूरसागर सार—सं० डा० धीरेन्द्र वर्मा। प्रकाशक–साहित्य भवन लिमिटेड प्रयाग। संकलनका आधार सभा–संस्करण है। कुल पद ८२८। विनय तथा भक्ति–५१, गोकुल-लीला–७१, वृन्दावन-लीला–१६७, राधाकृष्ण–१६४, मथुरागमन–११६, उद्धव-संदेश–१८८, द्वारिका-चरित–५३ पद। परिशिष्ट–रामचरित १८ पद।

द्वितीय संस्करण (१९७० ई०) में निम्नांकित सामग्री घटा दी गई है----

क–महाकवि सूरदास और उनकी रचनाएँ (ग्रंथारम्भमें); परिशिष्ट ख–अन्तःकथाएँ; परिशिष्ट ग–शब्दार्थ। अंतमें पदानुक्रमणी है। चतुर्थ संस्करण १९७४। १९७२ में इस सूरसागर-सारका एक सटीक संस्करण भी निकला था।

११. सूरसागर—सप्ततरंगात्मक। १९७० ई०।

सं०—बालमुकुंद चतुर्वेदी। प्रकाशक—गोपाल पुस्तकालय, मथुरा।

१ सिद्धांतके पद, २ भागवतके पद (बारहों स्कंधोंसे), ३ नित्य कीर्तनके पद—मंगला, श्रृंगार, ग्वाल, राजभोग, उत्थापन, संध्या आरती, सैनके पद, ४ वर्षोत्सवके पद, ५ लीलाके पद, ६ अलौकिक भावके पद, ७२ कथन पद। अंतमें अनुक्रमणिका। कुल पद १२४१।

१२. सूर पंच-शतक—जनवरी १९७९ ई०

प्रधान संपादक—डा० नगेन्द्र। संपादक एवं व्याख्याकार—डा० मनमोहन गौतम। सूर्य प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-६। १ विनय १–८६ पद, २ अवतार लीला ८७–९६ पद, ३ रामावतार ९७–१०८ पद, ४ कृष्णावतार ११०–४८५, ५ द्वारिका लीला ४८६–५०१। कुल पद ५०१, मूल्य ५०)। प्रारंभमें डा० गौतमका दो पृष्ठीय वक्तव्य एवं डा० नगेन्द्रकी अष्टपृष्ठीय भूमिका। अंतमें पदानुक्रमणिका।

१३. सूर-पद-पंचशती—आचार्य सीताराम चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, सन् १९७८ ई० [५०१ पदोंका संग्रह] मूल्य १०)। प्रारंभमें भूमिका, अन्तमें टिप्पणी, शब्दार्थ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूरसागरसे संकलन

[क] विषयानुसारी संकलन

१. विनयके पद

१. विनय-पत्रिका (सूर)—बनारस १८६६ ई०, ६६ पृष्ठ, लीथो। ब्रिटिश म्यूज़ियममें एक प्रति है।
—हिंदीके आदि मुद्रित ग्रंथ ८६१

२. विनय-पत्रिका (सूर)—बंबई ज्ञान सागर प्रेस, १८६७ ई०। जवाहर लाल चतुर्वेदी मथुराके पास एक प्रति थी।
—हिंदीके आदि मुद्रित ग्रंथ ८६३

३. विनय-पत्रिका (सूर)—बनारस १८६९ ई०, ८९ पृष्ठ। ब्रिटिश म्यूज़ियममें एक प्रति है।

४. सूर विनय—बनारस लाइट प्रेस, १८७० ई०। जवाहरलाल चतुर्वेदी मथुराके पास एक प्रति थी।
--हिन्दीके आदि मुद्रित ग्रंथ ३००

५. सूरदासकी विनय-पत्रिका—संपादक—पं० रामनरेश त्रिपाठी। प्रकाशक—प्रयाग परीक्षा समिति। १०५ पद। पृष्ठ ४७। १९१६ ई०।

६. भजन सूरदास—विनय पत्रिका—महादेव महाराज, कबीरचौरा, बनारस सिटी, सं० १९७६ वैशाख सुदी ५। ४० पद।

७. सूरदासकी विनय-पत्रिका-संपादक—वियोगी हरि। १०१ पद। प्रकाशक-हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग। सं० १९८१ (१९२४ ई०), पृष्ठ ७२। सुलभ साहित्यमाला १७।

८. सूर विनय पदावली—संपादक प्रभुदयाल मीतल। अग्रवाल प्रेस, मथुरा। ब्रज साहित्य माला ६। कुल २८० पद। अंतमें सूर-विनयका शास्त्रीय एवं सैद्धांतिक विवेचन। प्रथम प्रकाशन सं० २००९ से पूर्व।

९. सूर विनय पत्रिका—(सटीक), टीकाकार सुदर्शन सिंह। गीता प्रेस, गोरखपुर। सं० २०१२ (१९५५ ई०)। पृष्ठ संख्या ३२४। कुल पद ३०९। प्रारंभमें पदानुक्रमणिका। अंतमें मुख्य कथा-प्रसंग।

१०. सूर विनय पदावली—सं० प्रेमनारायण टंडन (१९५९ ई०)। हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ। पृष्ठ ५, ९३।

२. रामचरित-संबंधी पद

१. रामायन पद—सूरदास। बनारस लाइट प्रेस। १८६९ ई०। ७४ पृष्ठ। सभामें एक प्रति है (९९५, ८२१ सू ११)। इंडिया आफिसमें भी एक प्रति।—हिंदीके आदि मुद्रित ग्रंथ ८६९।

२. सूर रामायण—आर्य भास्कर प्रेस, मुरादाबाद। सं० पं० रामस्वरूप शर्मा। १४४ पद। १९५५ वि० (१८९८ ई०)। सम्मेलन संग्रहालयमें एक प्रति।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३. सूर रामायण—प्रयागसे प्रकाशित। सं० १९५५ ई०। सम्मेलन-संग्रहालयमें एक प्रति है।

४. सूर-रामायण—सं० सत्यजीवन वर्मा। लहरी बुक डिपो, काशी, १९२५ ई०। पृष्ठ ८४, २, २३, ७। सभा एवं सम्मेलनमें एक एक प्रति है।

५—सूर राम-चरित्र—संपादक प्रभुदयाल मीतल। खोजपूर्ण प्राक्कथन एवं विद्वत्तापूर्ण परिशिष्ट। ब्रज साहित्य माला ७। अग्रवाल प्रेस, मथुरा। पृष्ठ ७६। १९५२ ई०।

६. सूर रामचरितावली—सरल भावार्थ-सहित। टीकाकार—सुदर्शन सिंह। गीता प्रेस, गोरखपुर। प्रथम संस्करण–सं० २०१२। पृष्ठ २५१। कुल पद २१२। ग्रंथारंभमें पदानुक्रमणिका, ग्रंथान्तमें अंतःकथाएँ।

३. बाल-कृष्णके पद

१. बाल-लीला—जीवनदास रघुनाथदासके बंबई सिटी प्रेस, बंबईसे १८६७ ई० में प्रकाशित। जवाहरलाल चतुर्वेदी मथुराके पास एक प्रति थी।—हिंदीके आदि मुद्रित ग्रंथ ८६२

२. सूरके बाल कृष्ण—सं० लाला भगवानदीन। 'सूर-पंचरत्न'का दूसरा रत्न। हाई स्कूलके पाठ्यक्रममें रहनेसे स्वतंत्र पुस्तक रूपमें भी प्रकाशित। १४५ पद।

३. सूर बालकृष्ण पदावली—सं० प्रभुदयाल मीतल। अग्रवाल प्रेस, मथुरा। ब्रज साहित्यमाला ८। १९५२ ई०।

४. श्री बालकृष्ण पदावली—सरल भावार्थ-सहित। टीकाकार–सुदर्शन सिंह। गीता प्रेस, गोरखपुर। पृष्ठ संख्या २८२। पद संख्या ३३५। आदिमें पदानुक्रमणिका। अंतमें कथा प्रसंग। सं० २०१२ वि०।

५. सूरदास : बालकृष्ण—१९५९ ई०। सम्मेलन संग्रहालयमें है।

४. कृष्ण-माधुर्यके पद

१. श्रीकृष्ण-माधुरी—सरल भावार्थ-सहित। टीकाकार–सुदर्शन सिंह। गीता प्रेस, गोरखपुर। पृष्ठ-संख्या २८८। पद संख्या ३४३। ग्रंथारंभमें पदानुक्रमणी। प्रकाशनकाल—सं० २०१४।

५. अनुरागके पद

१. अनुराग पदावली—सरल भावार्थ-सहित। टीकाकार–सुदर्शन सिंह। गीता प्रेस, गोरखपुर। पृष्ठ ३००। पद ३४०। ग्रंथारंभमें पदानुक्रमणिका। सं० २०१५।

६. विरहके पद

१. विरह पदावली—सरल भावार्थ-सहित। टीकाकार—सुदर्शन सिंह। गीता प्रेस, गोरखपुर। पृष्ठ २४८। पद ३३३। प्रारम्भमें पदानुक्रमणिका। २०२६ वि०। मूल्य अजिल्द १।)।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

७. दान लीला

१. दान-लीला—नवल किशोर प्रेस, लखनऊ। १८६६ ई०। दूसरा संस्करण १८६९ ई०। जवाहरलाल चतुर्वेदी मथुराके पास। —हिंदीके आदि मुद्रित ग्रन्थ ८६०

८. चीरहरण

१. चीरहरण—नवल किशोर प्रेस, लखनऊ। १८६८ ई०।—हिंदीके आदि मुद्रित ग्रंथ ८६४

९. बिसाहिन लीला

१. बिसाहिन लीला—नवल किशोर प्रेस, लखनऊ। १२६९ ई०। जवाहरलाल चतुर्वेदी मथुराके पास। —हिन्दीके आदि मुद्रित ग्रन्थ ८६६

१०. मुरलीके पद

१. बाँसुरी लीला—नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, १८६८ ई०। जवाहरलाल चतुर्वेदी मथुराके पास। —हिन्दीके आदि मुद्रित ग्रन्थ ८६५

२. मुरली माधुरी—सं० सत्यजीवन वर्मा। सरस्वती प्रेस, काशी। लाला भगवान-दीनकी प्रेरणासे सन् १९२५ में संकलन हुआ था। प्रथम संस्करण १९८४ वि० (१९२७ ई०)। पृष्ठ संख्या ७७। ग्रंथारम्भमें १० पृष्ठोंकी भूमिका। १५६ पद। अन्तमें शब्दकोश।

११. भ्रमरगीत

१. भ्रमरगीत-सार—सं० आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल। १९२० ई०में संकलित। पद-संख्या ३९२। ग्रन्थारम्भमें शुक्लजीकी सूरपर लिखित सुप्रसिद्ध आलोचना भूमिका रूपमें। प्रथम संस्करण काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा (नागरी प्रचारिणी ग्रन्थमाला ८३) सं० १९७३ (१९२५ ई०) में प्रकाशित।

२. गोपी विरह और भँवरगीत—सं० प्रेमनारायण टंडन। प्रथम संस्करण ग्रन्थमाला कार्यालय पटनासे १९४४ ई०। पृष्ठ १०८। १५१ पद। समीक्षा ८४ पृष्ठ, संग्रह पृष्ठ ८५-१३०, टिप्पणी १३१-१८०।

१२. गोपाल गारी

१. सूरदास-कृत गोपालगारी—दिल्ली, कुतुब मतबअ प्रेस, १८७० ई०। लीथो। जवाहर लाल चतुर्वेदी मथुराके पास। —हिंदीके आदि मुद्रित ग्रन्थ ८७।

२. बड़ा गोपालगारी और श्री रामललानहछू—पहली पोथी सूरकी और दूसरी गो० तुलसीदासकी है। दोनों एक ही जिल्दमें छपी हैं। प्रकाशक—मन्नालाल खत्री, काशी। १९०३ ई०। सभामें एक प्रति है। (८२१ सू० .०३)।

३. गोपालगारी—संपादक—विदेशीलाल। प्रकाशक—श्रीनाथ, ३१९ चीतपुर रोड, कलकत्ता। १२९३ बंगाब्द। सभा (८३१ सू० .०४) में एक प्रति है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१३. बारहमासा

१. वृन्दावन बिरहिनी बारहमासी—आगरा, १८६६ ई० । ८ पृष्ठ । दूसरा संस्करण १८७० ई० । इण्डिया आफ़िसमें एक प्रति । —हिंदीके आदि मुद्रित ग्रन्थ ८६८

१४. अन्य

१. सूरशतक प्रथम भाग । १६१२ ई० । १०० पद । ऐंग्लो ओरियंटल प्रेस बुकडिपो, लाटूश रोड, लखनऊ । सम्मेलन संग्रहालयमें है ।

२. सूर-सुधा : १६२३ ई० । संपादक—मिश्रबंधु । प्रकाशक—काशी नागरी प्रचारिणी सभा । प्रथम आवृत्ति १६२३ ई० । पृष्ठ १८, २७४, ६ । मनोरंजन पुस्तकमाला ४० । मूल्य १।) । मिश्रवंधुओंकी योजना सूर-सुधाको दो जिल्दोंमें प्रकाशित करनेकी थी जिसमें हजार-बारह सौ पद होते । इसे चार खण्डोंमें विभक्त होना था । प्रथम तीन खण्ड पहिली जिल्दमें हैं—क—स्फुट लीला १६३ पद, ख—कृष्ण चरित्र-बाललीला २४४ पद, ग—कृष्ण चरित्र—प्रेमलीला ३०६ पद । चौथे खंडमें कृष्ण-चरित्र—प्रवास लीलाकी योजना थी जो कार्यान्वित नहीं हो सकी । कुल ७१३ पद । द्वि० संस्करण १६६५ वि० ।

३. सूर पंचरत्न—संपादक लाला भगवानदीन । सूरसागरसे निम्नांकित पाँच विषयोंके पद-संग्रह—१. विनय—१०८ पद; २. बालकृष्ण—१४५ पद; ३. रूप माधुरी—२८ पद ४. मुरली माधुरी—३२ पद; ५. भ्रमरगीत—१०५ पद । आरम्भमें लाला भगवानदीन एवं मोहन वल्लभ पंतकी १५६ पृष्ठोंकी विशद भूमिका । पृष्ठ संख्या १५६ + १८६ । द्वितीय संस्करण सं० १६८४ वि० । दसवाँ संस्करण १६६२ ई० । प्रकाशक—लाला रामनारायण लाल बेनीमाधव, कटरा, इलाहाबाद । मूल्य ३) ।

४. सूर संदर्भ—१६३३ ई० । संपादक—नंददुलारे वाजपेयी । इण्डियन प्रेस, इलाहाबादकी सरस्वती सीरीज़ ६ में प्रकाशित १६३३ ई० । ॥), पृष्ठ १६४, ४ ।

५. सूर मुक्तावली—संपादक हरदयालु सिंह । इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद ।

६. सूरका वसन्त वर्णन—चुन्नीलाल शेष । देशबंधु पुस्तकालय, मथुरा । भूमिका ८६ पृष्ठ । १२५ पद—वसंत १६, होली ७६, वन-विहार २, परिशिष्ट २८ पद । जनवरी १६६० । ४)

७. सूर संगीत प्रथम भाग—संगीत कार्यालय, हाथरस यू० पी० । सूरदासके ६० पद स्वरलिपियों तथा भावार्थ-सहित । १६५२ ई० । संपादक टीकाकार—महाडकर ।

८. सूर संगीत द्वितीय भाग—पूर्ववत् ६० पद । फ़रवरी १६५४ । संपादक टीकाकार—लक्ष्मीनारायण गर्ग ।

(ख) छात्रोपयोगी संकलन

१. सूर पदावली—संपादक पं० गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' । प्रकाशक—हिंदी सहित्य सम्मेलन, प्रयाग । प्रथमाके लिए पाठ्य पुस्तक । पृष्ठ संख्या ६६ । पद-संख्या १०० । मूल्य ।) तृतीय संस्करण १६२१ ई०, चतुर्थ संस्करण १६३२ ई० ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२. सूर संग्रह—संपादक—लाला भगवानदीन। प्रकाशक–गांधी हिंदी पुस्तक भंडार, इलाहाबाद, हिंदी गौरव ग्रंथमाला ३४ (पृष्ठ १४४) प्रथम आवृत्ति १६२६ ई०। मूल्य १ रु०। (प्रयाग महिला विद्यापीठके लिए प्रस्तुत)

३. सूर सुषमा—संपादक–नंददुलारे वाजपेयी। प्रकाशक, काशी नागरी प्राचारिणी सभा, पाठोपयोगी पुस्तकमाला ७, पृष्ठ १६, ४१, ५६, ६। मूल्य १), प्रथम संस्करण १६३३ ई०। दशम संस्करण १६७६ ई०।

४. सूर साहित्य-सुधा—सं० नरोत्तम स्वामी एम० ए०

५. सूरदास—संपादक नरोत्तमदास स्वामी। प्रकाशक—हिंदी भवन, लाहौर, १६४० ई० पृष्ठ ६६, ४८। मूल्य १ रु०।

६. सूर समीक्षा—सं० नरोत्तमदास स्वामी। प्रकाशक—नवयुग कुटीर, बीकानेर। ८५ पृष्ठकी भूमिका। पद संग्रह—भक्ति २२, वात्सल्य संयोग २०, वात्सल्य वियोग ८, सख्य १३, शृंगार संयोग १४, शृंगार विप्रलंभ १२, भ्रमरगीत १३, पुर्नमिलन ५। कुल पद १०७। २ रु०।

७. सूर सरोवर—संपादक—अच्युतानंद दत्त। पुस्तक भंडार, लहेरिया सराय। सं० १६६८ वि०। सात लहरोंमें विभक्त। भक्ति लहरी २१, राग लहरी २१, रूप लहरि २१, केलि लहरी २१, वेणु लहरी २१, रास लहरी २१, विरह लहरी २१। कुल १४७ पद।

८. नवीन सूर संग्रह—संपादक—बलभद्र प्रसाद मिश्र। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग। ५८ पृष्ठ, १३७ पद। १६५० ई०।

९. सूर प्रभा—संपादक डा० दीनदयालु गुप्त। विद्यामंदिर रानी कटरा, लखनऊ। ४० पृष्ठ भूमिका, ६० पृष्ठ संग्रह, ४६ पृष्ठ टिप्पणी। कुल १५१ पद। १६५३ ई०। बहुत दिनों तक आगरा विश्वविद्यालयमें बी० ए० का० पाठ्य ग्रंथ।

१०. सूरदास पदावली—पं० गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'। हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग। पृष्ठ ६०। १६५७ ई०।

११. सूरके पद—संपादक मुकुल। १६५६ ई०। सम्मेलन संग्रहालयमें प्रति है।

१२. सूर सरोवर—संपादक—डा० हरवंशलाल शर्मा। वसंत ऐण्ड कंपनी, के १६, नवीन शाहदरा, दिल्ली १२ (१६६० ई०)। १२५ पद। समीक्षा पृष्ठ १-१२०, संग्रह १२१-१६२।

१३. सूर सागरके सौ रत्न—संपादक एवं टीकाकार–प्रभुदयाल मीतल १६६२ ई०। साहित्य-संस्थान मथुरा। १०० पद और उनकी टीका।

१४. सूर संचयन—संपादक एवं टीकाकार—जितेन्द्रनाथ पाठक। प्रकाशक—विश्व-विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी (१६६७ ई०)। गोरखपुर विश्वविद्यालयके बी० ए० का पाठ्य ग्रंथ। बाललीला, गो चारण, सौंदर्य-दर्शन, वंशीवादन, भ्रमरगीत संबंधी २२२ पद। ८० पृष्ठोंकी भूमिका, २०८ पृष्ठ मूल और टीका।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१५. सूर सुषमा—पं० मुंशीराम शर्मा 'सोम'। हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग। पृष्ठ ८५०। १९७२ ई०।

१६. सूर संचयन—सटीक। टीकाकार—उर्मिला मोदी। विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी १६१ पृष्ठ। १९३७ ई०। गोरखपुर विश्वविद्यालयकी पाठ्य पुस्तक।

१७. सूर संदर्भ-संपादक और टीकाकार—डा० श्रीमती शांता सिंह एवं डा० जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव। विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी। गोरखपुर विश्वविद्यालयकी पाठ्य पुस्तक १२८ पृष्ठ। १९७३ ई०।

१८. सूर सौरभ—संपादक—जगन्नाथ तिवारी। विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा। पृष्ठ १८,६६। १९७२ ई०।

१९. सूर पदावली—पं० बरसाने लाल चतुर्वेदी, साहित्य संगम, मथुरा।

२०. महाकवि सूरदास और उनकी प्रतिभा—आचार्य सीताराम चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग। पृष्ठ २२। मूल्य १ रु०। सन् १९७८।

२. साहित्य-लहरी

१. दृष्टिकूट १८६९ ई०। संपादक और टीकाकार—सरदार कवि बनारसी। बनारस गोपीनाथ पाठकके लाइट प्रेसमें १८६९ ई० में छपा। १९० पृष्ठ। २१ सेंटीमीटर। लीथो। लिखित रामन्ना। इसकी एक प्रति मथुरा संग्रहालयके पंड्या संग्रहमें एवं एक प्रति इंडिया आफ़िस पुस्तकालयमें है।

—हिन्दीके आदि मुद्रित ग्रन्थ ८५९

इसमें सूर-कृत साहित्य-लहरी तो है ही, सूरदासके अन्य दृष्टिकूट जो सूरसागरमें मिलते हैं वे तथा अन्य जो अन्यत्रसे सरदार कविको मिल सके, संकलित हैं।

बादमें यह नवलकिशोर प्रेस लखनऊसे प्रकाशित हुआ। द्वितीय संस्करण—१८९७ ई०। पंचम संस्करण—१९२९ ई०। पंचम संस्करणकी एक प्रति लेखकके निजी संग्रहमें है। सभामें भी इसकी प्रति है (८२१ सू० ·०५, पूर्ण संख्या २५२११)। टीकाका रचनाकाल है—सं० १९०४ कार्तिक सुदी ११—

संवत वेद सु शून्य ग्रह, औ आतमा विचार।
कातिक सुदि एकादसी, समुझि सुद्ध वर वार॥

२. साहित्य-लहरी—(सटीक)। टीकाकार—भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र। खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर, पटना, १८९२ ई० (मूल्य २)। इसमें टीकाके साथ सरदार कविके अर्थोंकी विवेचना भी है। सरदार कवि-द्वारा संकलित सभी कूट पद यहाँ भी यथावत् हैं। सभामें एक प्रति है—(८२१ सू० ·०९)।

३. साहित्य-लहरी—टीकाकार—महादेव प्रसाद। प्रकाशक—पुस्तक भंडार, लहेरिया सराय। १९९६ वि० (१९३९ ई०) मूल्य १॥)। पृष्ठ २०६। सुबोध काव्य माला ७। सभामें एक प्रति है—८२१ सू० १०, पूर्ण संख्या १५५४८।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४. साहित्य-लहरी--व्याख्याकार प्रभुदयाल मीतल। साहित्य संस्थान, मथुरा। १७ मार्च १९६१ ई०। ब्रज साहित्य माला ११। पृष्ठ १२, ८०, २४८=३४०। मेरे निजी संग्रहमें एक प्रति है। सभामें भी है—पूर्ण संख्या २७४१२।

५. साहित्य-लहरी—संजीवनी व्याख्या सहित—संपादक एवं टीकाकार—डा० मनमोहन गौतम। रीगल बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली। १९७०। पृष्ठ ३१, १८०।

६. साहित्य-लहरी—(सूर ग्रंथावली भाग ४ के अन्तर्गत)—सटीक। टीकाकार—पं० सीताराम चतुर्वेदी। १२ मई १९७८; वैशाख शुक्ल ५ सं० २०३५ वि०। कुल ११८ पद।

कूट-संग्रह

१. दृष्टिकूट पद—आगरा हाजी प्रेस। १८६२ ई०। लीथो—जवाहरलाल चतुर्वेदी मथुराके पास एक प्रति थी।
—हिन्दीके आदि मुद्रित ग्रन्थ ८५५

२. सूर शतक—टीकाकार बालकृष्णदास काशी। बनारस लाइट प्रेस। १८६३ ई०। सौ कूटोंकी टीका। इसमें सूरके ऐसे कूट पद संकलित हैं जो साहित्य-लहरीमें नहीं हैं। जवाहरलाल चतुर्वेदी मथुराके पास एक प्रति थी।
—हिन्दीके आदि मुद्रित ग्रन्थ ८५६

३. दृष्टिकूट पद—मथुरा मुंबैउलउलूम प्रेस, १८६४ ई०, लीथो। जवाहरलाल चतुर्वेदी मथुराके पास एक प्रति थी।
—हिंदीके आदि मुद्रित ग्रन्थ ८५७

४. सूर शतक पूर्वार्ध अर्थात् श्री सूरदासजी कृत कूट। टीकाकार गिरिवर गोस्वामी। बनारस गोपीनाथ पाठकके लाइट प्रेसमें १८६६ ई० में मुद्रित। ६६ पृष्ठ, २३ सेंटीमीटर। लीथो। केवल ५० पद। इसकी एक एक प्रति राधाचरण गोस्वामी वृन्दावन, इंडिया आफिस, ब्रिटिश म्यूजियमके पुस्तकालयोंमें है।
—हिंदीके आदि मुद्रित ग्रन्थ ८५८

५. सूरके सौ कूट—(सटीक)। संपादक एवं टीकाकार—चुन्नीलाल शेष, मथुरा। प्रकाशक–हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी। सं० २०१३ वि० (१९५६ ई०)। तृतीय संस्करण सं० २०२३ वि०। कुल पृष्ठ-संख्या २९२। प्रारम्भमें ४८ पृष्ठोंकी भूमिका। सूरकी साहित्य-लहरीसे इसका कुछ संबंध नहीं। इसमें निम्नांकित सूत्रोंसे सामग्रीका संकलन हुआ है—

क. सभा-द्वारा प्रकाशित सूरसागरके कूट पद।

ख. 'सूर-शतक' के वे पद जो सभाके सूरसागरमें नहीं हैं।

ग. सरदार-द्वारा संपादित साहित्यलहरी (दृष्टिकूट सटीक)-के वे कूट पद जो सभाके सूरसागरमें नहीं हैं।

६. सूरका कूट काव्य—संपादक और टीकाकार–देशराज सिंह भाटी। अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली ६। सूरदासके कूट पदोंकी प्रामाणिक एवं काव्यशास्त्रीय व्याख्या। सूरसागरके कूट ८३, साहित्य-लहरीके कूट ११०, सूर-सारावलीके कूट ३२, सूरके शेष कूट (संदिग्ध) ६१। १९७० ई०। २६४ पृष्ठ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३. सूर-सारावली

(क) गुजराती अनुवाद : सं० १८८०

गुजरातके प्रसिद्ध भक्त कवि दयाराम (सं० १८३३–१९०९ वि०) ने पुष्टि संप्रदायके गोस्वामी विठ्ठलेशके आदेशानुसार सं० १८८०, श्रावण द्वादशी रविवारको सूर-सारावलीका गुजराती पद्यानुवाद ४७ वर्षके बादमें किया था—

शक अष्टादश ऐंशी, श्रावणी द्वादसी; रविवार।
वर वसंत पक्षोत्सव वासर, सारावलि सरस विचार ॥

दयारामजीके १७२ वें जन्मोत्सवपर 'भक्त कवि श्री दयाराम भाई स्मारक समिति डभोई' द्वारा यह ग्रन्थ सं० २००५ में प्रकाशित हुआ था। यह प्रकाशित हिन्दी संस्करणोंके मेलमें है। इसमें भी ११०७ द्वैतुकिया पंक्तियाँ हैं।

(ख) हिंदी संस्करण

१. राग कल्पद्रुमके अन्तर्गत : सं० १८९८।

कृष्णानंद व्यासदेव कृत राग-कल्पद्रुम चतुर्थ जिल्दके अन्तर्गत सूरसागरके साथ सूर-सारावली भी संकलित है। इसमें बड़ी साँचीके ४१ पृष्ठ हैं। इसका प्रकाशन-काल है—कार्तिक सुदी ८, रविवार, सं० १८९८ वि०। लीथोमें छपा है। इसकी एक प्रति वृन्दावनके गोस्वामी दामोदराचार्यके पास एवं एक प्रति राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्तामें है।

२. सूरसागर लखनऊ संस्करणके अन्तर्गत : सं० १९२० (१८६३ ई०) में नवलकिशोर प्रेस, लखनऊने रागकल्पद्रुम चौथी जिल्दको 'सूरसागर' नामसे किंचित् संशोधनोंके साथ लीथोमें प्रकाशित किया। इसमें सर्वप्रथम सूर-सारावली है। क्रम वही है जो रागकल्पद्रुममें है। इस सूरसागरके पुनर्मुद्रण (सं० १९३१, नवम्बर १८७४) की एक प्रति मथुरा पुरातत्त्व संग्रहालयमें है। इसके आठवें पुनर्मुद्रण (१९०२ ई०) की एक प्रति राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्तामें है।

३. सूरसागर बम्बई संस्करणके अन्तर्गत : १९५३ वि०।

बाबू राधाकृष्णदास द्वारा संपादित एवं वेंकटेश्वर प्रेस बम्बईसे सं० १९४३ में प्रकाशित सूरसागरमें भी सूर-सारावली है। रागकल्पद्रुम एवं लखनऊ पाठसे इसका पाठ किञ्चित् भिन्न है। ब्रजभाषाके शब्दोंका प्रायः संस्कृतीकरण कर दिया गया है।

४. सूरसारावली : सं० २०१४ वि०

उपलब्ध प्रतियोंके आधारपर संपादित, पाठान्तर और विस्तृत भूमिका-सहित। संपादक—प्रभुदयाल मीतल। अग्रवाल प्रेस, मथुरा। ब्रजसाहित्य माला १०। प्रथम संस्करण फाल्गुन सुदी २, सं० २०१४ (१९५७ ई०)। पृष्ठ ६४, ९०। यह स्वतन्त्र पुस्तक रूप सूर-सारावलीका प्रथम प्रकाशन है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५. सूर-सारावली : सं० २०१८ वि०

संपादक डा० प्रेमनारायण टंडन। प्रकाशक—हिंदी साहित्य भंडार, अमीनाबाद, लखनऊ। प्रकाशन तिथि—२३ अगस्त १९६१। डा० टंडन इसे सूरकी रचना नहीं मानते।

६. सूर सारावली—संजीवनी व्याख्या-सहित। संपादक एवं टीकाकार—डा० मनमोहन गौतम। रीगल बुकडिपो, नई सड़क, दिल्ली ६। १९७०। यह सूर-सारावली भी प्रथम टीका है। ५६ पृ० समीक्षा। १८२ पृष्ठ मूल और व्याख्या।

७. सूर ग्रंथावली भाग ४ के अन्तर्गत—

पं० सीताराम चतुर्वेदी-द्वारा संपादित सूर ग्रन्थावली चतुर्थ भाग में 'सूर-सारावली' प्रकाशित है। इसकी टीका नहीं की गई है। प्रकाशनकाल—१२ मई १९७८; वैशाख शुक्ल ५, सं० २०३५।

४. सेवाफल

१—राग कल्पद्रुम चतुर्थ खंडके अंतर्गत : १८९८ वि०।

रागकल्पद्रुम चतुर्थ खंडके प्रारम्भमें सूर-सारावली है। जो ४१ वें पृष्ठपर समाप्त हो जाती है। वहाँ सारावलीकी पुष्पिका भी दे दी गई है। पुष्पिकाके अनन्तर इसमें पृष्ठ ४१–४४ पर निम्नांकित सामग्री है, जिसमें 'सेवाफल' भी हैं—

क. हरि हरि हरि सुमिरन करो—मंगलाचरण

ख. राजा परीक्षितका वर्णन। उनको उपदेश देनेके लिए मुनियों एवं शुकदेवजीका आगमन

ग. भगवत नाम महिमा

घ. व्यास संवाद

ङ. व्यास अवतार वर्णन

च. सूरदासके कतिपय पद

छ. सेवाफल

ज. भरोसो दृढ़ इन चरनन केरो—सूरदासका अन्तिम पद।

२—प्रभुदयाल मीतल द्वारा संपादित 'सूर-सारावली' के अंतर्गत पृष्ठ ८९–९०। सं० २०१४ वि०।

३—पं० सीताराम चतुर्वेदी द्वारा संपादित सूर-ग्रन्थावली चतुर्थ खंडके अंतर्गत : १२ मई १९७८ (सं० २०३५ वि०)।

(ख) सूर-सम्बन्धी साहित्य

समीक्षा ग्रन्थ-सूची

(क) साहित्यिक शोध समीक्षा

अष्टछाप और वल्लभ संप्रदाय—डा० दीनदयाल गुप्त, (शोध प्रबन्ध), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग। १९४७ ई०

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अष्टछाप परिचय—प्रभुदयाल मीतल । अग्रवाल प्रेस, मथुरा । द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण सं० २००६ (१९५० ई०) । पृष्ठ ४०० । ५)

आधुनिक मनोविज्ञान और सूर-काव्य—डा० कमला आत्रेय । वि० भू० प्रकाशन, साहिबाबाद । अगस्त ७६ । ५०) । २७६ पृष्ठ । शोध प्रबन्ध ।

कूट काव्य : एक अध्ययन—सूरके कूटोंके विशेष संदर्भमें । डा० रामधन शर्मा । नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली । १९६३ । ३२, ३४२ पृष्ठ । १२।) । शोध प्रबन्ध ।

भक्त शिरोमणि महाकवि सूरदास—नलिनीमोहन सान्याल । रामनारायण लाल बेनीमाधव, कटरा, इलाहाबाद । १४) । १९३८ ई० । आठ अध्यायोंमें विभक्त ।

भारतीय साधना और सूर साहित्य—डा० मुन्शीराम शर्मा 'सोम', आचार्य शुक्ल साधना सदन, कानपुर । १९५३ ई० । ४६१ पृष्ठ । ८) ।

महाकवि सूरदास—डा० जयकिशन प्रसाद खंडेलवाल । रवीन्द्र प्रकाशन, पाटकर बाजार, ग्वालियर १, ३६ दिल्ली गेट, आगरा २ । १९७० ई० । १५) । पृष्ठ ४, ७, २३८ ।

महाकवि सूरदास—नंददुलारे वाजपेयी—आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली ६ । १९५२ ई० । ४) ।

महाकवि सूरदास : कृतियाँ और कला—परमेश्वरीदीन वर्मा तथा बद्री विशाल विद्यार्थी । नवयुग पुस्तक भंडार, अमीनुद्दौला पार्क, लखनऊ, १९६४ । २०४ पृष्ठ । ६) ।

विद्यापति और सूर काव्यमें राधा : डा० कृष्णा शर्मा । सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली । १९७२ । ११६ पृष्ठ । १०) । शोध प्रबन्ध ।

श्रीमद्भागवत और सूरसागरके धर्म विजयका तुलनात्मक अध्ययन : डा० वेद प्रकाश शास्त्री । सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा । एक एक स्कंधपर एक एक अध्याय । कुल १२ अध्याय । सं० २०२६ वि० ।

सूर : एक अध्ययन—शिखरचंद जैन । नरेन्द्र साहित्य कुटीर, इंदौर । १९३८ ई० ।

सूर : एक सरल अध्ययन—डा० मनमोहन गौतम । हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली । १९५१ । १०४ पृष्ठ ।

सूर और उनका साहित्य—सतयेन्द्र शुक्ल । एशिया प्रकाशन इलाहाबाद । १९७० ई० । १०३ पृष्ठ ।

सूर और उनका साहित्य—डा० हरवंश लाल शर्मा । भारत प्रकाशन मंदिर अलीगढ़ । १९५५ ई० । शोध प्रबंध । पृष्ठ ३७९, ३७ ।

सूरका काव्य—बालमुकुन्द गुप्त । इंडियन यूनिवर्सिटी प्रेसके लिये हिमालय पाकेट बुक्स । १९७३ ई० । २०० पृष्ठ ।

सूरका राम काव्य—त्रिलोक चन्द्र गुप्त । राज्यश्री प्रकाशन, मथुरा । शोध प्रबंध । १९६८ ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूर काव्यकी आलोचना—डा० हरवंशलाल शर्मा। भारत प्रकाशन मंदिर अलीगढ़। १२८ पृष्ठ। २६ अध्याय। १६५० ई०।

सूर काव्य : नया परिदृश्य—डा० हरगूलाल। एस० ई० एस० कंपनी, फव्वारा, दिल्ली, १६७१ ई०। २३२ पृष्ठ।

सूर काव्यमें भ्रमर प्रतीक—मंजु भटनागर। अर्चना प्रकाशन, अजमेर। १६७२ ई०। पृष्ठ ६८।

सूर काव्य वैभव—कणवरकर शरद। एम्० बी० फड़के ऐण्ड कंपनी, कोल्हापुर। १६७६ ई०। ११० पृष्ठ।

सूरका शृंगार वर्णन—डा० रमाशंकर तिवारी। अनुसंधान प्रकाशन, आचार्य नगर, कानपुर। जुलाई १६६६ ई०। ३८३ पृष्ठ।

सूरका सौन्दर्य बोध—डा० कुमुद प्रभा श्रीवास्तव। हिन्दी प्रकाशक संस्थान, वाराणसी। जनवरी १६७८ ई०।

सूरकी काव्य कला—डा० मनमोहन गौतम। भारती साहित्य मन्दिर, फव्वारा, दिल्ली। १६५८ ई०। पृष्ठ ४०२। शोध प्रबंध।

सूरकी काव्य कला—(संपादन) शंभूनाथ पांडेय। सरस्वती संगम, मोती कटरा, आगरा, १६६२ ई०। पृष्ठ २०८। ३४ लेखकोंके ३४ लेख।

सूरकी काव्य चेतना—(संपादन) डा० रत्नाकर पाँडेय। हिंदी प्रचारक संस्थान वाराणसी। १६७७ ई०। ५४३ पृष्ठ। ३४ लेखकोंके ३४ लेख।

सूरकी काव्य साधना—गोविंद राम शर्मा। नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली। १६७० ई०।

सूरकी गोपिकाएँ : एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन—प्रभारानी भाटिया। स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद। दिसंबर १६७० ई०। पृष्ठ ६, १३६।

सूरकी झाँकी—डा० गौरीशंकर सत्येन्द्र। शिवलाल अग्रवाल ऐण्ड कंपनी, आगरा। १६६५ ई०। २५४ पृष्ठ।

सूरकी भाषा—डा० प्रेमनारायण टंडन। हिंदी साहित्य भंडार; गंगा प्रसाद रोड, लखनऊ। नवम्बर १६५७ ई०। ६२४ पृष्ठ। शोध प्रबंध।

सूरकी साहित्य साधना (संपादन), डा० भगवत्स्वरूप मिश्र और विश्वंभर 'अरुण'। शिवलाल अग्रवाल ऐण्ड कंपनी आगरा १६६५ ई० ४१० पृष्ठ। १०

सूरके कृष्ण : एक अनुशीसन। शशि तिवारी। मिलिंद प्रकाशन, ५८२ खोकरबाड़ी, हैदराबाद २। १६६६ ई०। पृष्ठ १८६।

सूरके दार्शनिक विचार—नारायण प्रसाद वाजपेयी। ज्ञान भारती, दिल्ली। १६६६ ई०। पृष्ठ ८३।

सूरके सौ कूट—चुन्नीलाल 'शेष' मथुरा। हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी। १६५६ ई०।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूर : जीवनी और ग्रंथ—डा० प्रेमनारायण टंडन। साहित्य निकेतन कानपुर, १९४३ ई०। १०२ पृष्ठ।

सूर दर्शन—डा० कृष्णलाल हंस। रामनारायण लाल बेनीमाधव, कटरा, इलाहाबाद। १९५८ ई०। १०, १४० पृष्ठ।

सूरदास (अंग्रेजीमें)—जनार्दन मिश्र।

सूरदास—दामोदरदास गुप्त। हिन्दी साहित्य संसार दिल्ली। १९६० ई०। २४७ पृष्ठ।

सूरदास—रामचंद्र शुक्ल। सं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र। सरस्वती मंदिर जतनबर, वाराणसी। वसंत पंचमी सं० २००० वि० (१९४३ ई०)।

सूरदास—डा० रामरतन भटनागर। किताब महल इलाहाबाद। १९५० ई०। २५२ पृष्ठ।

सूरदास—वासुदेव शर्मा। विनोद पुस्तक मंदिर आगरा। १९५२ ई०। १५१ पृष्ठ।

सूरदास—ब्रजेश्वर वर्मा। हिन्दी साहित्य परिषद्, प्रयाग विश्वविद्यालय। शोध प्रबंध। १९४३ ई०।

सूरदास—ब्रजेश्वर वर्मा। नेशनल बुक ट्रस्ट औफ़ इंडिया, नई दिल्ली, १९६९। पृष्ठ १२८।

सूरदास—सुदर्शन चोपड़ा। हिंद पाकेट बुक्स दिल्ली। १९७६ ई०।

सूरदास—संपादक डा० हरवंशलाल शर्मा। राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली १९६६ ई०। २६५ पृष्ठ।

सूरदास—आलोक—मल्लिनाथ। नावेल्टी एण्ड कंपनी, पटना।

सूरदास : अध्ययन सामग्री—जवाहरलाल चतुर्वेदी। ब्रज साहित्य मंडल मथुरा। सं० २०१६

सूरदास : एक अध्ययन—भारत भूषण 'सरोज', रीगल बुक डिपो, दिल्ली १९६४ ई०। २४० पृष्ठ।

सूरदास : एक अध्ययन—डा० रामरतन भटनागर। किताब महल, इलाहाबाद, १९४६ ई०

सूरदास और उनका काव्य—हजारी प्रसाद द्विवेदी। बंगाल हिन्दी मंडलमें दिया गया भाषण। पृष्ठ ३०। १५ सितम्बर १९४४।

सूरदास और उनका साहित्य—देशराज सिंह माली। विनोद पुस्तक मंदिर आगरा। १९७२ ई०। ५०३ पृष्ठ।

सूरदास और नरसिंह मेहता : तुलनातमक अध्ययन। डा० ललित कुमार पारिख। बोरा ऐण्ड कंपनी पब्लिशर्स बंबई। १९६८ ई०। २९८ पृष्ठ। शोध प्रबंध।

सूरदास और नरसिंह मेहता : तुलनात्मक अध्ययन—डा० भ्रमर लाल जोशी। गुर्जर भारती अहमदाबाद। १९६८ ई०। पृष्ठ २०, ३२२। शोध प्रबंध।

सूरदास और पोतन्ना—वात्सल्यकी अभिव्यक्ति—लीला ज्योति। शोध प्रबंध। हिन्दी साहित्य भंडार लखनऊ। १९७६ ई०। २५६ पृष्ठ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूरदास और भगवद्भक्ति—डा० मुंशीराम शर्मा 'सोम'। साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड इलाहाबाद। १९५८। १६६ पृष्ठ। २॥)।

सूरदासका काव्य-वैभव—डा० मुंशीराम शर्मा 'सोम'। ग्रंथम्, रामबाग, कानपुर। नवंबर १९६५। २२८ पृष्ठ। १२)।

सूरदासकी लालित्य चेतना—परेश। भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी। दिसम्बर १९७२। २२४ पृष्ठ। १५)। शोधप्रबन्ध।

सूरदासके दार्शनिक विचार—नारायण प्रसाद वाजपेयी। ज्ञानभारती प्रा० लिमिटेड, १५४३ नई सड़क दिल्ली ६। १९६९ ई०।

सूरदास : जीवन सामग्री—डा० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल। अवध पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ १९५० ई०। ६४ पृष्ठ। १)।

सूरदास : नव मूल्यांकन—डा० रामरतन भटनागर। सागर बुक स्टोर, सागर। १९७० ई०। २०८ पृष्ठ। ८)।

सूरदासनी कविता (गुजरातीमें)—भोलाभाई पटेल। परिथम ट्रस्ट बम्बई। १९७२। ३२ पृष्ठ।

सूरदास-समीक्षा—शिवशंकर सारस्वत। अशोक प्रकाशन दिल्ली। तृतीय संस्करण १९७३ ई०।

सूर-निर्णय—प्रभुदयाल मीतल तथा द्वारकादास पारीख। अग्रवाल प्रेस मथुरा। द्वितीय संस्करण सं० २००८। पृष्ठ ३५४। ५)।

सूर पंचरत्न—सं० लाला भगवानदीन और उनके शिष्य मोहन वल्लभ पंतकी लिखी १५९ पृष्ठोंकी विस्तृत भूमिका। द्वि० सं० १९८४ वि०। प्रकाशक—लाला रामनारायण लाल बेनीमाधव, कटरा, इलाहाबाद।

सूर मीमांसा—गणेशदत्त गौड़ एम० ए०। भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़। पृष्ठ २१०। मूल्य २॥)।

सूर मीमांसा—डा० ब्रजेश्वर वर्मा। ओरियंटल बुक डिपो, १००४ नई सड़क दिल्ली। १९५२ ई०।

सूर वंश निर्णय—कृष्णदेव शर्मा। सम्मेलन संग्रहालयमें है (९२·८ क ७२७ स)। १९९८ वि० (१९४१ ई०)

सूर संदर्भ—संपादक लक्ष्मीकांत वर्मा। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।

सूर समीक्षा—डा० रामरतन भटनागर। मेहरचन्द मुंशीराम १० वी फैज बाजार दिल्ली। १९५२ ई०। २१३ पृष्ठ। ३)।

सूरसागरमें प्रतीक योजना—लक्ष्मैया बी सेट्टी। रिसर्च पब्लिकेशन्स इन सोशल साइंसेज, दिल्ली। १९७२ ई०। पृष्ठ १६, २१२। २५)। शोध प्रबन्ध।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूरसागरमें लोक जीवन—डा० हरगूलाल। हिन्दी साहित्य संसार दिल्ली। १९६७। पृष्ठ १५, १८८। २॥)।

सूरसागर शब्दावली : एक सांस्कृतिक अध्ययन—डा० निर्मला सक्सेना। हिंदुस्तानी अकेडमी इलाहाबाद। १९६२ ई०। शोधप्रबंध। ३९६ पृष्ठ। १२)।

सूर साधना और साहित्य—त्रिलोकीनाथ 'प्रेमी'। आदर्श पुस्तक भण्डार कलकत्ता। २॥)

सूर सारावली : एक अप्रामाणिक रचना—डा० प्रेमनारायण टंडन, हिंदी साहित्य भंडार लखनऊ। १९६१। ४५१ पृष्ठ। १२॥)।

सूर साहित्य—हजारी प्रसाद द्विवेदी। मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति इन्दौर। सं० १९९१ (१९३४ ई०)। १।)

सूर साहित्य और सिद्धान्त—यज्ञदत्त शर्मा। आतमाराम ऐण्ड सन्स दिल्ली। १९५५। १५९ पृष्ठ। ३)।

सूर साहित्यका छंद:शास्त्रीय अध्ययन—डा० गौरीशंकर मिश्र 'द्विजेंद्र'। परिमल प्रकाशन, १९४ सोहबतिया बाग इलाहाबाद। १९६९ ई०। पृष्ठ ६४४। ४०)। शोध प्रबन्ध।

सूर साहित्यका मनोवैज्ञानिक विवेचन—डा० शैलबाला अग्निहोत्री। अभिलाषा प्रकाशन १०७।२९५ ब्रह्मनगर कानपुर। १९७७ ई०। ३७८ पृष्ठ। ४८)। शोध प्रबन्ध।

सूर साहित्यका सांस्कृतिक अध्ययन—डा० प्रेमनारायण टंडन। हिन्दी साहित्य भंडार, गंगा प्रसाद रोड लखनऊ। २३ जून १९५८। ६)। १५२ पृष्ठ।

सूर साहित्यकी भूमिका—डा० रामरतन भटनागर। रामनारायण लाल बेनीमाधव, कटरा, इलाहाबाद। १९४५। ३९२ पृष्ठ। ५)।

सूर साहित्य दर्पण—जगन्नाथ राय शर्मा। विद्याधाम; १३७८; बल्लीमारान दिल्ली। १९५४ ई०।

सूर साहित्य : नव मूल्यांकन—डा० चन्द्रभान रावत। जवाहर पुस्तकालय मथुरा। १९६७। २०)। पृष्ठ ५०६।

सूर साहित्यमें पुष्टिमार्गीय सेवा भावना—डा० धर्मनारायण ओझा। शोध साहित्य प्रकाशन ५७७ शाहगंज इलाहाबाद। १९७३ ई०। ५०३ पृष्ठ। ४०) शोध प्रबन्ध।

सूर साहित्यमें लोक संस्कृति—आद्या प्रसाद त्रिपाठी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग। १९६७ ई०।

सूर साहित्य विमर्श—दशरथराज। प्रभात प्रकाशन २०५ चावड़ी बाजार दिल्ली, नवंबर १९६४ ई०। २१६ पृष्ठ। ५)।

सूर साहित्य सन्दर्भ—डा० रामस्वरूप शर्मा तथा गिरिराज अग्रवाल। सूर पंचशती समारोह समिति बिजनौर। १९७६। पृष्ठ १०, ६८७। ६०)।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूर सौरभ—मुंशीराम शर्मा 'सोम' कानपुर शारदा भवन। ३६८, ८ पृष्ठ। १०)। पंचम संस्करण—१६७० ई०। ग्रन्थम् रामबाग, कानपुर।

हिन्दी नवरत्न—मिश्रबंधु। प्रथम संस्करण १६६७, द्वि० संस्करण १६८१, तृतीय संस्करण १६८५, चतुर्थ संस्करण १६६१। पंचम संस्करण—गंगा पुस्तक माला लखनऊ १६६५ वि०।

सूर—जीवनचरित और समीक्षा। पृष्ठ २१६–२४६। अंतमें २७ पद उदाहृत, पृष्ठ २४६-२५।

(ख) सूर संबंधी छात्रोपयोगी समीक्षा, टीका, प्रश्नोत्तर आदि

भ्रमरगीत सार-संबंधी

भ्रमरगीतका काव्य वैभव—डा० मनमोहन गौतम, रीगल बुकडिपो दिल्ली। १६६७ २१६ पृष्ठ।

भ्रमरगीतका काव्य सौंदर्य—सत्येन्द्र पारीक। सुशील प्रकाशन, पुरानी मंडी अजमेर। १६६६ ई०। १२४ पृष्ठ। ८)। समीक्षा।

भ्रमरगीतका विश्लेषण और मूल्यांकन—जय बहादुर लाल। नंदिनी प्रकाशन, लालकुआँ लखनऊ १६६२ ई०। ४)। पृष्ठ १६०।

भ्रमरगीत भाष्य—डा० मुंशीराम शर्मा 'सोम'। प्रत्यूष प्रकाशन कानपुर। १६७२ ई०। ५३, ३४१ पृष्ठ। १०)। ४०० पद और उनकी टीका।

भ्रमरगीतसार—पं० राजनाथ शर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, १६६६ ई०। पृष्ठ ५१४। १०)।

प्रमुख पदोंका संकलन और टीका

भ्रमरगीतसार—व्याख्या और विवेचन, नरेन्द्र सिंह शास्त्री तथा राजेन्द्र शर्मा। विनोद पुस्तक मंदिर हास्पिटल रोड, आगरा। ५)। विवेचन ५२ पृष्ठ, केवल टीका २३५ पृष्ठ। मूल नहीं है।

भ्रमरगीत और सूर—देवेन्द्रकुमार। ग्रन्थम्, रामबाग कानपुर। १६६७ ई०। १८२ पृष्ठ।

भ्रमरगीतसारकी टीका—लक्ष्मी नारायण टंडन तथा अन्य। विद्यामंदिर रानी कटरा लखनऊ। २६६ पृष्ठ।

भ्रमरगीतसार दर्शन—(टीका, प्रश्नोत्तर) दुर्गाशंकर मिश्र, हिंदी साहित्य भंडार अमीनाबाद लखनऊ। जनवरी १६६१।

भ्रमरगीतसार प्रश्नोत्तर—राम गोपाल दिनेश। विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

भ्रमरगीतसारमें काव्य कला और जीवन दर्शन—प्रेमकृष्ण अनामिक, सरस्वती पुस्तक सदन, मोती कटरा आगरा। फरवरी १६५८। पृष्ठ १६०।

भ्रमरगीतसार समीक्षा एवं काव्य—पुष्पपाल सिंह। अशोक प्रकाशन नई सड़क, दिल्ली ६। १६६१ ई०। समीक्षा पृष्ठ १-६६। व्याख्या पृष्ठ ६७-३३८।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाकवि सूर, और भ्रमरगीत—शंकरदेव अवतरे। ओरियंटल बुक डिपो १७०४ नई सड़क दिल्ली ६। १९६६ ई०। २९३ पृष्ठ। १०)। कुल ७ अध्याय। अंतमें १०४ पद और उनकी टीका।

महाकवि सूरदासका भ्रमरगीतसार—राजनाथ शर्मा। विस्तृत व्याख्या और आलोचना। रतन प्रकाशन मंदिर आगरा, जयपुर। आलोचना ९० पृष्ठ, व्याख्या १-२३४ पृष्ठ। ४)।

सूरका भ्रमरगीत : एक अध्ययन—विश्वंभरनाथ उपाध्याय। विनोद पुस्तक मंदिर आगरा। १९५८ ई०। २३५ पृष्ठ।

सूरका भ्रमरगीत साहित्य—सुरेशचन्द्र। सरस्वती पुस्तक भवन, मोती कटरा आगरा, १९५३ ई०। १४४ पृष्ठ।

सूरदास और उनका भ्रमरगीत—दामोदर दास गुप्त। हिन्दी साहित्य संसार दिल्ली ६। १९६३ ई०। पृष्ठ ३४१।

सूरदास और उनका भ्रमरगीत—राजकुमार शर्मा। पदम बुक कंपनी, जयपुर १९६० ई०।

सूरदास और उनका भ्रमरगीत—श्रीनिवास शर्मा। अशोक प्रकाशन दिल्ली। १९६६ ई०। ५४४ पृष्ठ। समीक्षा पृष्ठ १-९० और टीका पृष्ठ ९३-५४४। कुल ४०१ पद।

सूरदास : भ्रमरगीतसार समीक्षा—पुरुषोत्तम वाजपेयी।

अन्य पाठ्यग्रन्थ

रास पंचाध्यायी और भँवरगीत—विश्वंभर 'अरुण'। अशोक प्रकाशन, नई सड़क दिल्ली।

सूर पंचरत्न—केवल दो रत्नों—विनय और मुरली-माधुरी—की टीका, मूल पद नहीं। टीकाकार—गुलाबराय। साहित्य रत्न भंडार, आगरा।

सूर पंचरत्न टीका—तेजनारायण टंडन तथा योगेन्द्रनाथ—हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ।

सूर प्रभा—(टीका) योगेन्द्र नाथ शर्मा। हिंदी साहित्य भंडार, अमीनाबाद लखनऊ।

'सूर प्रभा' और सूरदास—दुर्गाशंकर मिश्र, मालवीय प्रकाशन लखनऊ, १९५८ ई०।

सूर संग्रहकी टीका—केदारनाथ द्विवेदी। रीगल बुकडिपो दिल्ली।

'सूर संचयन' विवेचन—राकेश। साहित्य प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर १९६८; पृष्ठ ५२, २७२।

सूर संचयनकी टीका—लक्ष्मण दत्त गौतम। अशोक प्रकाशन दिल्ली, १९६८ ई०। १८७ पृष्ठ।

सूर सागरके सौ रत्न—संपादक टीकाकार—प्रभुदयाल मीतल। १९६२ ई०। साहित्य-संस्थान मथुरा। १०० पद और उनकी टीका।

सूर सागर सार—१९७२ ई० में टीका हुई।

सूर सुषमा : व्याख्या और आलोचना—हरिमोहन राही एम० ए०। १९६५ ई०। श्री शारदा पुस्तक भवन, ११ यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद। पृष्ठ १-९६, १५१ पदोंका अर्थ। परीक्षोपयोगी ५० प्रश्नोंके उत्तर पृष्ठ ९७-२९८।

CC-0. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूरदास : प्रश्नोत्तरी—दुर्गाशंकर मिश्र, सरस्वती पुस्तकसदन आगरा।

सूरदास : प्रश्नोत्तर—लक्ष्मीकांत गुप्त। ओरियन्टल बुकडिपो दिल्ली।

सूरदासकी वार्ता

१. चौरासी वैष्णवनकी वार्ताके अन्तर्गत वार्ता संख्या ८१। विभिन्न स्थनोंसे अनेक संस्करण प्रकाशित हैं। नवीनतम एवं श्रेष्ठतम संस्करण अष्टछाप समिति मथुरा द्वारा प्रकाशित है। संपादक–द्वारकादास पारीख। द्वि० सं० सं० २०१० वि० (१९५३ ई०)।

२. अष्टछाप—सं० डा० धीरेन्द्र वर्मा। प्र० सं० १९२९ ई०। द्वि० सं० १९३९ ई० लाला रामनारायण लाल पब्लिशर और बुकसेलर इलाहाबाद। 'चौरासी वैष्णवनकी वार्ता' वार्ता ८१-८४ एवं 'दो सौ बावन वैष्णवनकी वार्ता' वार्ता १९ का संकलन।

३. अष्टछाप—(प्राचीन वार्ता रहस्य द्वितीय भाग)—संपादक पो० कंठमणि शास्त्री काँकरोली। प्रकाशक–विद्या विभाग काँकरोली। प्रथम संस्करण–सं० १९९८ (१९४१ ई०), द्वि० सं० सं० २००९ (१९५२ ई०)।

४. सूरदासकी वार्ता—संपादक–प्रभुदयाल मीतल, १९५१ ई० अग्रवाल प्रेस मथुरा।

५. सूरदासकी वार्ता—संपादक–डा० प्रेमनारायण टंडन, नन्दन प्रकाशन लखनऊ, १९६८. पृष्ठ १०२।

सूर-समीक्षा-सम्बन्धी प्रारम्भिक प्रयास

(क) चार लेख

१. सूरदासजी : १८७८ ई०। यह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कृत सूरदासका लेख रूपमें जीवन-चरित है। यह कविवचन-सुधा जिल्द २ प्राचीन पुस्तकावलीमें और श्री हरिश्चन्द्र चंद्रिका खण्ड ६, संख्या ५, नवम्बर सन् १८७८ ई० में छपा। फिर 'चरितावली' नामक ग्रन्थमें संकलित हुआ। अब भारतेंदु ग्रन्थावली तृतीय भागमें 'चरितावली'के अन्तर्गत पृष्ठ ७१-७७ पर सुलभ। सात पृष्ठोंमें समाप्त यह लेख अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमें निम्नांकित ५ उल्लेख हुए हैं—

क. जन्म १५४० के कुछ न्यूनाधिकमें हुआ।

ख. इनने महाराज नल और दमयन्तीके प्रेमकी कथामें एक पुस्तक बनाई। (सूरके नलदमनकी चर्चा यहींसे प्रारम्भ हुई। उक्त पोथी सूरदास लखनवीकी है)।

ग. संवत् १६२० के लगभग श्री गोकुलमें इन्होंने इस शरीरका त्याग किया।

घ. साहित्य-लहरीसे सूरकी जाति आदिके संबंधवाले पदका उद्धरण।

ङ. दृष्टिकूटकी टीका भी संभव होता है, उन्हीं (सूर) ने की, क्योंकि टीकामें जहाँ अलंकारोंके लक्षण दिए हैं; वे दोहे और चौपाई भी सूर नामसे अंकित है।

२. सूरदास : १९०० ई०। यह राधाकृष्णदासजी द्वारा लिखित सूरदासके जीवनचरित्र एवं उनके काव्यकी आलोचना है। राधाकृष्णदास द्वारा संपादित सूरसागर १९५३ वि० में बंबईसे प्रकाशित हुआ था। इसकी भूमिकाके रूपमें उन्होंने सूरदासजीका एक जीवनचरित लिखा था।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चार वर्ष बाद उन्होंने सूरका यह सुविचारित जीवनचरित पुनः लिखा, जो नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग ४ सं० १९५७ में प्रकाशित हुआ। कालान्तरमें यह राधाकृष्णदास ग्रन्थावलीमें पृष्ठ ४३०-४८७ पर संकलित हुआ। यह बड़े आकारके ५८ पृष्ठोंका एक बड़ा लेख भी एक लघु पुस्तिका ही है। भूमिकाके उपरान्त लेख निम्नांकित शीर्षकोंसे युक्त है—

क. जाति और पूर्व पुरुष।

ख. सूरदासजीका समय।

ग. जन्म स्थान तथा वास स्थान

घ. प्रथमावस्था

ङ. ग्रंथ और कविता

च. मृत्यु

छ. स्फुट

राधाकृष्णदासने सूरको भारतेंदुके अनुसार चंदका वंशज ब्रह्मभट्ट स्वीकार किया है। इनका जन्मकाल १५४० और १५५० के बीच एवं निधनकाल १६४०–४२ के बीच स्थिर किया है। सूरकी कवितापर इस लेखमें पहली बार लिखित रूपसे किंचित् विचार किया गया है।

३. महात्मा सूरदास। १९१० ई० में मिश्रबन्धुओंके हिंदी नवरत्नका प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ। १४ वर्ष बाद इसका द्वितीय संशोधित संस्करण १९२४ ई० में हुआ। इसमें मिश्रबंधुओंने सूरको तुलसीके बाद स्थान दिया और कुछ विस्तृत आलोचना की। यह लेख चार खंडोंमें विभक्त किया जा सकता है—

क. जीवन चरित—पृष्ठ २१९-२२७

ख. कविता (ग्रंथ)–पृष्ठ २२७-२२९

ग. कविताकी समालोचना—पृष्ठ २२९-२४९। इसमें १० विशेषताओंका उद्घाटन किया गया है।

घ. उद्धरण ३७ पद—पृष्ठ २४९—२५६

४. महाकवि सूरदासजी—आचार्य पं० रामचंद्र शुक्लका यह लेख पहले नागरी प्रचारिणी पत्रिकामें छपा था। तदनंतर यह भ्रमरगीतसारकी भूमिकाके रूपमें (१९२४ ई०) प्रकाशित हुआ। फिर 'सूरदास' (१९४३ ई०) में संकलित हुआ। यह सूर-काव्यकी प्रतिम आलोचना है, जिसमें कविकी अंतर्वृत्तिका प्रथम बार निरूपण किया गया।

(ख) प्रारंभिक ४ ग्रन्थ

१९४३ में शुक्लजीके 'सूरदास' ग्रंथके प्रकाशनके पूर्व सूर-संबंधी निम्नांकित तीन ग्रंथ प्रकाशित हो चुके थे—

क. सूर साहित्य—हजारी प्रसाद द्विवेदी। प्रकाशक—मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति इंदौर—१९३६ ई०। सभामें प्रथम संस्करण है।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ख. भक्त-शिरोमणि महाकवि सूरदास—नलिनीमोहन सान्याल। प्रकाशक—लाला राम नारायण लाल १९३८ ई०। सभामें एक प्रति है।

ग. सूर एक अध्ययन—शिखरचंद जैन। नरेन्द्र साहित्य कुटीर इंदौर १९३८ ई०।

घ. सूरदास—आचार्य रामचंद्र शुक्ल—१९४३ ई०। शुक्लजीके ग्रंथके प्रकाशनोपरान्त सूर-समीक्षा-संबंधी विपुल साहित्य प्रकाशित हुआ है।

टीकाएँ

१ सूर-ग्रन्थावली—सटीक–भाग १, २, ३, ४, ५। टीकाकार एवं संपादक पं० सीताराम चतुर्वेदी।

२ सूरसागर—सटीक प्रथम भाग–टीकाकार डा० हरदेव बाहरी एवं राजेन्द्र कुमार।

३ सूर विनय पत्रिका
४ सूर राम चरितावली
५ श्री बालकृष्ण पदावली
६ श्रीकृष्ण माधुरी
७ अनुराग पदावली
८ विरह पदावली
} टीकाकार—सुदर्शन सिंह गीता प्रेस, गोरखपुर

९ सूरका कूट काव्य—देशराज सिंह भाटी, अशोक प्रकाशन दिल्ली, १९७० ई० पृष्ठ १६, २६४।

शोध-प्रबन्ध

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

१. सूरदास—व्रजेश्वर वर्मा—हिंदी परिषद् प्रयाग विश्वविद्यालय, १९४६ ई०।

२. अष्टछाप और वल्लभ संप्रदाय—दीनदयाल गुप्त, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, १९४७ ई०। द्वि० सं० १९७० ई०।

३. सूर सागर शब्दावली: एक सांस्कृतिक अध्ययन—निर्मला सक्सेना, हिन्दुस्तानी अकेडमी इलाहाबाद, १९६२ ई०।

आगरा विश्वविद्यालय

४. भारतीय साधना और सूर साहित्य—मुंशीराम शर्मा, आचार्य शुक्ल साधना सदन कानपुर—१९५३ ई०।

५. आधुनिक मनोविज्ञान और सूर काव्य—कमला आत्रेय, वि० भू० प्रकाशन साहिबाबाद—१९७६ ई०।

आंध्र विश्वविद्यालय

६. सूर सागरमें प्रतीक योजना—लक्ष्मैया वी शेट्टी, रिसर्च पब्लिकेशन्स इन सोशल साइंसेज दिल्ली। १९७३ ई०।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मगध विश्वविद्यालय

७. सूर साहित्यमें पुष्टिमार्गीय सेवा भावना—धर्मनारायण ओझा, शोध साहित्य प्रकाशन इलाहाबाद—१९७३ ई० ।

भागलपुर विश्वविद्यालय

८. सूर साहित्यका छंद-शास्त्रीय अध्ययन—गौरीशंकर मिश्र द्विजेन्द्र—परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद १९३० ई० ।

लखनऊ विश्वविद्यालय

९. सूरकी भाषा—प्रेमनारायण टंडन—हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ–१९५७ ई० ।

पंजाब विश्वविद्यालय

१०. सूरदासकी लालित्य चेतना–परेश–भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन काशी–१९७२ ई० ।

११. कूट काव्य : एक अध्ययन—सूरके कूट पदोंके विशेष संदर्भमें—रामधन शर्मा। नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली—१९६३ ई० ।

पंजाबी विश्वविद्यालय

१२. विद्यापति और सूर काव्यमें राधा—कृष्णा शर्मा–सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली–१९७२ ई०

दिल्ली विश्वविद्यालय

१३. सूरकी काव्य कला—मनमोहन गौतम–भारती साहित्य मंदिर दिल्ली–१९६३ ई० ।

विक्रम विश्वविद्यालय; उज्जैन

१४. सूरका राम काव्य–त्रिलोकचंद्र गुप्त–राज्यश्री प्रकाशन मथुरा–१९६८ ई० ।

नागपुर विश्वविद्यालय

१५. सूर और उनका साहित्य—हरवंशलाल शर्मा—भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़—१९७१ ई० ।

महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा ।

१६. सूरदास और नरसिंह मेहता : तुलनात्यक अध्ययन—भ्रमरलाल जोशी–१९६८ ई० । गुर्जर भारती, अहमदाबाद ।

उस्मानिया विश्वविद्यालय

१७. सूरदास और नरसिंह मेहता : तुलनात्मक अध्ययन—ललित कुमार पारिख—बोस ऐण्ड कंपनी पब्लिशर्स बंबई । १९६८ ई० ।

१८. सूरदास और पोतन्ना : वात्सल्यकी अभिव्यक्ति—लीला ज्योती—हिंदी साहित्य भंडार लखनऊ । १९७३ ई० ।

१९. सूर साहित्यका मनोवैज्ञानिक विवेचन—डा० शैलबाला अग्निहोत्री—अभिलाषा प्रकाशन, १०७।२९५ ब्रह्मनगर, कानपुर—१९७७ ई० ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लेख-संग्रह

१. सूरकी काव्यकला—संपादक-शंभुनाथ पांडेय–१९६२ ई०

२. सूरकी साहित्य-साधना-संपादक भगवत्स्वरूप मिश्र और विश्वंभर 'अरुण'–१९६५ ई०। शिवलाल अग्रवाल ऐण्ड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड आगरा ३।

३. सूरदास–सं० डा० हरवंशलाल शर्मा–राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली। तृतीय आवृत्ति १९७३ ई०।

४. सूरदास–सुदर्शन चोपड़ा।

५. सूर संदर्भ–सं० लक्ष्मीकांत वर्मा–हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।

६. सूर साहित्य संदर्भ–सं०–डा० रामस्वरूप आर्य तथा गिरिराज शरण अग्रवाल–सूर पंचशती समारोह समिति बिजनौर–१९७६ ई०।

७. सूरकी काव्य चेतना–सं० डा० रत्नाकर पांडेय–हिंदी प्रचारक संस्थान वाराणसी, १९७७ ई०।

८. वल्लभ सूर पंचशती स्मारिका–सं० लक्ष्मीशंकर व्यास–शुद्धाद्वैत जय यज्ञ समिति वाराणसी, १९६८ ई०।

९. सूरदास और उनकी कृतियोंपर आचार्य सीताराम चतुर्वेदी, डा० गोवर्धननाथ शुक्ल तथा अन्य विद्वानोंके लेख : सूरग्रन्थावली प्रथम खंडके प्रारंभमें तथा पंचम खंडमें।

सूर-शब्द-कोष

१. ब्रजभाषा-सूर-कोश : संपादक–डा० प्रेमनारायण टंडन–हिंदी साहित्य भंडार अमीनाबाद, लखनऊ–१९६२ ई०में दस खंडोंमें संपूर्ण। दो जिल्द, २०५० पृष्ठ। मूल्य ४०)

२. सूर सागर शब्दावली : एक सांस्कृतिक अध्ययन–डा० निर्मला सक्सेना। हिंदुस्तानी अकेडमी इलाहाबाद–१९६२ ई०।

३. सूर-शब्द-सागर–सं० डा० हरदेव बाहरी। स्मृति प्रकाशन, बाग शहरारा इलाहाबादसे प्रकाश्य।

विविध

१. बाल-सूरसागर—श्रीचन्द। रामनारायण लाल बेनीमाधव, कटरा, इलाहाबाद। १९३१ ई०। प्रारंभमें सूरसागरकी स्कंधानुसारी कथा। बीच-बीचमें सूरसागरके पद भी उद्धृत। पृष्ठ २६३।

२. सूरदास : अध्ययन—सामग्री। जवाहरलाल चतुर्वेदी मथुरा। ब्रज-साहित्य मंडल मथुरा। सं० २०१६।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

(ग) लेखकानुक्रमणिका

अच्युतानन्द दत्त
सूर सरोवर (संग्रह)
आद्या प्रसाद त्रिपाठी
सूरसाहित्यमें लोक-संस्कृति
उर्मिला मोदी
सूर 'संचयन' सटीक
कणवरकर शरद
सूर काव्य वैभव
कमला आत्रेय डा०
आधुनिक मनोविज्ञान और सूरकाव्य (शोध प्रबंध)
कुमुद प्रभा श्रीवास्तव डा०
सूरका सौंदर्य बोध
कृष्णदेव शर्मा
सूर वंश निर्णय
कृष्णलाल हंस डा०
सूर-दर्शन
कृष्णानन्द व्यासदेव
राग कल्पद्रुम चतुर्थ खण्ड
कृष्णा शर्मा
विद्यापति और सूर काव्यमें राधा (शोध प्रबन्ध)
केदारनाथ द्विवेदी
सूर संग्रहकी टीका
गणेशदत्त गौड़
सूर-मीमांसा
गिरिजादत्त शुक्ल बी० ए०, 'गिरीश'
१ सूर पदावली
२ सूरदास पदावली
गिरिराज शरण अग्रवाल
सूर-संदर्भ—(डा० रामस्वरूप आर्यके सहयोगी)
गिरिवर गोस्वामी (टीकाकार)
'सूर-शतक' पूर्वार्ध अर्थात् श्री सूरदासजी कृत कूट, १८६६ ई०
गुलाब राय
सूर पंचरत्न—(विनय और मुरलीकी टीका)
गोपाल प्रसाद कौशिक
सूरसागर (वृन्दावनदासके साथ, मूल ग्रन्थ)
गोविन्द राय शर्मा
सूरकी काव्य-साधना
गौरीशंकर मिश्र द्विजेन्द्र डा०
सूर-साहित्यका छंदःशास्त्रीय अध्ययन
चन्द्रभान रावत डा०
सूर साहित्य : नवमूल्यांकन
चुन्नीलाल 'शेष'
१ सूरके सौ कूट (संग्रह, टीका)
२ सूरका वसन्त वर्णन
जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव डा०
सूर-संदर्भ—१९७३ । संकलयित्री एवं टीकाकर्त्री डा० शांता सिंहके साथ
जगन्नाथ तिवारी
सूर सौरभ (संग्रह)
जगन्नाथदास 'रत्नाकर'
सूरसागर आठ खंड, अपूर्ण—संपादन
जगन्नाथ राय शर्मा
सूर साहित्य दर्पण
जनार्दन मिश्र
सूरदास (अंग्रेजीमें)
जयकिशन प्रसाद खंडेलवाल डा०
महाकवि सूरदास
जय बहादुर लाल
भ्रमरगीतका विश्लेषण और मूल्यांकन
जवाहर लाल चतुर्वेदी
१ सूरदास : अध्ययन सामग्री
२ सूरसागर—प्रथम खण्ड (संपादन)
तिलोकदास
१ सूर मंजरी (संग्रह)
तेजनारायण टंडन
सूर पंचरत्न टीका
त्रिलोक चन्द्र गुप्त
सूरका रामकाव्य
त्रिलोकी नाथ 'प्रेमी'
सूर साधना और साहित्य
दयाराम भाई
सूर-सारावलीका गुजराती अनुवाद—सं० १८८० वि०
दशरथ राज
सूर साहित्य विमर्श
दामोदरदास गुप्त
सूरदास और उनका भ्रमरगीत

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दीनदयालु गुप्त डा०
१ अष्टछाप और वल्लभ संप्रदाय
२ सूर प्रभा (संग्रह)

दुर्गा शंकर मिश्र
१ सूर प्रभा और सूरदास
२ भ्रमरगीतसार दर्शन— (टीका, प्रश्नोत्तर)
३ सूरदास प्रश्नोत्तरी

देवेन्द्रकुमार
भ्रमरगीत और सूर

देशराज सिंह भाटी
सूरका कूट काव्य (संकलन और टीका)
सूरदास और उनका साहित्य

द्वारकादास पारीख
१ चौरासी वैष्णवनकी वार्ता (संपादन)
२ सूर निर्णय (सह-लेखन)

धर्मनारायण ओझा
सूर साहित्यमें पुष्टिमार्गीय सेवाभावना (शोधप्रबंध)

डा० धीरेन्द्र वर्मा
१ अष्टछाप (संपादन, संकलन)
२ सूर - सागर - सार— (संकलन)

नन्ददुलारे वाजपेयी
१ सूर सागर (संपादन, सभा संस्करण)
२ सूर-सुषमा (संग्रह)
३ सूर-संदर्भ (संग्रह)
४ महाकवि सूरदास (समीक्षा)

डा० नगेन्द्र
सूर पंच शतक (संग्रह)

डा० नरेन्द्रदेव सिंह शास्त्री
भ्रमरगीतसार (राजेन्द्र शर्मके सह-समीक्षक)

नरोत्तमदास स्वामी एम० ए०
१ सूर समीक्षा (समीक्षा और संग्रह)
२ सूर साहित्य-सुधा (संग्रह)

नलिनी मोहन सान्याल
भक्तशिरोमणि महाकवि सूरदास

नारायण प्रसाद वाजपेयी
सूरके दार्शनिक विचार

डा० निर्मला सक्सेना
सूरसागर शब्दावली : एक सांस्कृतिक अध्ययन (शोध-प्रबन्ध)

परमेश्वरीदीन वर्मा
महाकवि सूरदास (कृतियाँ और कला)

परेश
सूरदासकी लालित्य चेतना

पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल डा०
सूरदास : जीवन सामग्री

पुरुषोत्तम वाजपेयी
सूरदास : भ्रमरगीतसार समीक्षा

पुष्पपाल सिंह
भ्रमरगीतसार : समीक्षा एवं व्याख्या

कंठमणि शास्त्री पं०
अष्टछाप (संपादन)

प्रभारानी भाटिया
सूरकी गोपिकाएँ : एक मनोवैज्ञानिक विवेचन

प्रभुदयाल मीतल
१ अष्टछाप परिचय (शोध संग्रह)
२ सूर निर्णय (शोध, समीक्षा)
३ सूरदासकी वार्ता (संपादन)
४ सूर विनय पदावली (संग्रह)
५ सूर रामचरित्र (संग्रह)
६ सूरसागरके सौ रत्न (संग्रह, टीका)
७ सूर-सारावली (संपादन)
८ साहित्य-लहरी (संपादन, टीका)

प्रेमकृष्ण 'अनामिक'
भ्रमरगीतसारमें काव्य-कला और जीवन-दर्शन

प्रेमनारायण टंडन
१ सूरदासकी वार्ता (संपादन)
२ सूर सारावली (संपादन)
३ सूर सारावली : एक अप्रामाणिक रचना, शोध
४ सूरकी भाषा (शोध-प्रबन्ध)
५ ब्रजभाषा सूर कोश (कोश)
६ सूर साहित्यका सांस्कृतिक अध्ययन (समीक्षा)
७ गोपी-विरह भँवरगीत (संग्रह)

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

८ सूर रामायण (संग्रह)
९ सूर विनय पदावली (संग्रह)
६ सूर विनय पदावली (संग्रह)
१० संक्षिप्त सूरसागर (संग्रह)
११ सूर : जीवनी और ग्रन्थ (समीक्षा)

बद्री विशाल विद्यार्थी
महाकवि सूरदास : कृतियाँ और काव्य (परमेश्वरीदीन वर्माके सह लेखक)

बरसानेलाल चतुर्वेदी डा०
सूर पदावली (संग्रह)

बलभद्र मिश्र
नवीन सूर संग्रह (संग्रह)

बालकिशनदास वैष्णव
सूर शतक (दृष्टिकूट संग्रह, टीका)

बालमुकुंद गुप्त
सूरका काव्य

बालमुकुंद चतुर्वेदी
सूरसागर-सप्ततरंगात्मक (संकलन)

डा० बेनीप्रसाद
संक्षिप्त सूरसागर

डा० भगवत्स्वरूप मिश्र
सूरकी साहित्य साधना (समीक्षा, संपादन)

भारतभूषण सरोज
सूरदास : एक अध्ययन

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र
१ सूरदास (जीवन चरित्र, लेख)
२ साहित्य-लहरी (टीका)

भोलाभाई पटेल
सूरदासकी कविता (गुजरातीमें)

डा० भ्रमरलाल जोशी
सूरदास और नरसिंह मेहता : तुलनात्मक अध्ययन (शोध प्रबन्ध)

मंजु भटनागर
सूर काव्यमें भ्रमर प्रतीक

मनमोहन गौतम डा०
१ सूरकी काव्यकला (शोध प्रबन्ध)
२ साहित्य लहरी : संजीवनी व्याख्या-सहित (टीका)
३ सूर सारावली-संजीवनी व्याख्या सहित (टीका)
४ भ्रमरगीतका काव्य-वैभव
५ सूर : एक सरल अध्ययन
६ सूर पंचशतक

मल्लिनाथ
सूरदास-आलोक

महाडकर
सूर संगीत १ (संग्रह)

महादेव प्रसाद
साहित्य-लहरी (टीका)

महादेव महाराज
भजन सूरदास-विनयपत्रिका (संकलन)

मिश्रबंधु
१ हिन्दी नवरत्न
२ सूर सुधा (संग्रह)

मुंशीराम शर्मा 'सोम'
१ सूर सौरभ—दो भाग (समीक्षा)
२ भारतीय साधना और सूर साहित्य (शोधप्रबंध)

३ सूरदास और भगवद्भक्ति
४ सूरदासका काव्य-वैभव
५ भ्रमरगीत भाष्य
६ सूर प्रभा (संग्रह)
७ सूर सुषमा (संग्रह)

मुकुल
सूरके पद

मोहनवल्लभ पंत
'सूर-पंचरत्न' की भूमिका लिखनेमें सहयोगी

यज्ञदत्त शर्मा
सूर साहित्य और सिद्धांत

योगेन्द्रनाथ शर्मा
सूर पंचरत्न—टीका
सूर प्रभा—टीका

रघुनाथदास
सूर सागर रतन (संग्रह)

रत्नाकर पांडेय डा०
सूरकी काव्य चेतना (संपादन, समीक्षा)

रमाशंकर तिवारी डा०
सूरका श्रृंगार वर्णन

राकेश
'सूर संचयन' विवेचन

राजकुमार शर्मा
सूरदास और उनका भ्रमरगीत

राजनाथ शर्मा
महाकवि सूरदासका भ्रमर-गीतसार (विस्तृत व्याख्या और आलोचना)

राजेन्द्र कुमार
'सूरसागर' प्रथम खंडकी टीका करनेमें डा० हरदेव बाहरीके सहयोगी

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राजेन्द्र शर्मा

भ्रमरगीतसार (डा० नरेंद्र सिंह शास्त्रीके सह समीक्षक)

राधाकृष्ण दास

१. सूरसारावली,सूरसागर (बंबई संस्करणके संपादक)

२. सूरदासका जीवनचरित (लेख)

राम प्रो० एम० ए

वृहद् सूर सागर (संकलन)

राम गोपाल 'दिनेश'

भ्रमरगीतसार प्रश्नोत्तर

रामचंद्र शुल्क (आचार्य)

१. भ्रमरगीतसार (समीक्षा, संकलन)

२. सूरदास (समीक्षा)

रामस्वरूप आर्य डा०

सूर संदर्भ (समीक्षा, संपादन)

रामधन शर्मा डा०

कूट काव्य-एक अध्ययन– सूरके कूट पदोंके विशेष संदर्भमें (शोधप्रवंध)

रामनरेश त्रिपाठी

सूररासकी विनयपत्रिका (संपादन)

रामरतन भटनागर डा०

१. सूर साहित्यकी भूमिका

२. सूरदास : एक अध्ययन

३. सूरदास

४. सूरदास नवमूल्यांकन

५. सूर समीक्षा

लक्ष्मणदत्त गौतम

सूर संचयनकी टीका।

लक्ष्मीकांत गुप्त

सूरदास-प्रश्नोत्तर

लक्ष्मीकांत वर्मा

सूर-संदर्भ (समीक्षा, संपादन)

लक्ष्मीनारायण शर्मा

सूर संगीत (संकलन)

लक्ष्मीनारायण टंडन

भ्रमरगीतसारकी टीका

लक्ष्मैया बी सेट्टी

सूरसागरमें प्रतीक योजना

ललितकुमार पारिख

सूरदास और नरसिंह मेहता, तुलनात्मक अध्ययन (शोध प्रवंध)

लाला भगवान दीन

१. सूर संग्रह (संग्रह)

२. सूर पंचरत्न (समीक्षा, संग्रह)

लीला ज्योती

सूरदास और पोतन्ना वात्सल्यकी अभिव्यक्ति (शोध प्रवंध)

वाचस्पति पाठक

सूर साहित्यकी भूमिका (सह लेखन)

वासुदेव शर्मा

सूरदास

वियोगी हरि

१. संक्षिप्त सूरसागर

२. विनयपत्रिका : सूरदास

विश्वंभर अरुण

सूरकी साहित्य - साधना (सह-संपादक)

रास पञ्चाध्यायी और भँवरगीत

विश्वंभर नाथ उपाध्याय

सूरका भ्रमरगीत : एक अध्ययन

विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

'सूरदास—आचार्य पं० रामचंद्र शुक्लकी सुप्रसिद्ध कृतिका संकलन, संपादन

वृन्दावनदास

सूरसागर (मूल ग्रंथ) गोपालप्रसाद कौशिकके साथ

वेदप्रकाश शास्त्री डा०

श्रीमद्भागवत और सूर सागरके वर्ण्य विषयका तुलनात्मक अध्ययन

व्रजेश्वर वर्मा

१. सूरदास (शोध प्रबंध)

२. सूर मीमांसा

३. सूरदास

शंकर देव अवतरे

महाकवि सूर और भ्रमर-गीत (समीक्षा और १०४ पद तथा उनकी टीका।

शंभुनाथ पांडेय

सूरकी काव्य - कला (समीक्षा, संपादन)

शशि तिवारी

सूरके कृष्ण : एक अनुशीलन

शांता सिंह डा०

सूर संदर्भकी संकलयित्री एवं टीकाकर्त्री, डा० जगदीश श्रीवास्तवके साथ

शिखरचंद जैन

सूर : एक अध्ययन

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शिवशंकर सारस्वत
सूरदास समीक्षा
शैलबाला अग्निहोत्री
सूर साहित्यका मनोवैज्ञानिक विवेचन
श्री नंदलाल
सूरसागर (गद्यमें सूर सागरकी स्कंधानुसार कथा)
श्रीनिवास शर्मा
सूरदास और उनका भ्रमरगीत
सत्यजीवन वर्मा
१. सूररामायण
२. मुरली माधुरी
सत्येन्द्र (गौरीशंकर) डा०
सूरकी झाँकी
सत्येन्द्र पारीक
भ्रमरगीतका काव्य सौंदर्य
सत्येन्द्र शुक्ल
सूर और उनका साहित्य
सरदार बनारसी
दृष्टिकूट (साहित्य-लहरी और उसकी टीका)

सीताराम चतुर्वेदी
सूरग्रंथावली ५ खण्ड (संपादन, टीका)
सूरदास और उनकी प्रतिभा (जीवनी, समीक्षा)
सूर-पद-पञ्चशती (संपादन, भूमिका)
सुदर्शन चोपड़ा
१. सूरदास (संपादन, समीक्षा)
सुदर्शन सिंह
१. सूर-विनय पत्रिका
२. सूर-रामचरितावली
३. श्रीबालकृष्ण पदावली
४. श्रीकृष्णमाधुरी
५. अनुराग पदावली
६. विरह पदावली
} संकलन एवं टीका
सुरेशचंद्र गुप्त
सूरका भ्रमरगीत साहित्य
हजारीप्रसाद द्विवेदी
१. सूर-साहित्य
२. सूरदास और उनका काव्य (भाषण)
हरगूलाल डा०
१. सूर-सागरमें लोक जीवन
२. सूर काव्य : नया परिदृश्य
हरदयालु सिंह
सूर मुक्तावली (समीक्षा, संकलन)
हरदेव बाहरी डा०
१. सूर-सागर प्रथम भाग (टीका)
हरवंशलाल शर्मा डा०
१. सूर-काव्यकी आलोचना
२. सूर और उनका साहित्य (शोध प्रबंध)
३. सूरदास (समीक्षा, संपादन)
४. सूर सरोवर (संग्रह)
हरिमोहन 'राही'
सूर-सुषमा : व्याख्या और आलोचना

सूर-साहित्यमें शोधके क्षेत्र

सीताराम चतुर्वेदी

अबतक सूर-साहित्यके विभिन्न पदोंपर अनेक शोध-प्रबन्ध लिखे जा चुके हैं जिनमें सूर-साहित्यके दार्शनिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, लोक-जीवन सम्बन्धी, काव्य-सम्बन्धी, रस-अलंकार-सम्बन्धी प्रबन्ध व्याप्त हैं। यह आश्चर्यकी बात है कि यद्यपि सूरदासने अपने हाथसे कुछ भी नहीं लिखा और जो प्रतियाँ मिलती हैं उनके सब पाठ भी अशुद्ध, अव्यवस्थित और अक्रम है, फिर भी खोजी लोगोंने उनकी भाषापर भी शोध प्रबन्ध लिख डाले। किन्तु निम्नांकित कुछ पक्ष ऐसे भी हैं जिनपर अभीतक कोई काम नहीं हुआ—

१—श्रीनाथजीके लिये सूरदासकी राग-सेवाका स्वरूप।

२—काव्य-शास्त्र या साहित्य-शास्त्रके रूपमें साहित्य-लहरीकी समीक्षा।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३—सूरदासके सम्पूर्ण साहित्यका संग्रह और सम्पादन।

४—सूर-साहित्यमें अन्य सूरदासों तथा अन्य कवियोंके पदोंका पृथक्करण।

५—प्रबन्धकी दृष्टिसे सूर-सागरकी प्रबन्धात्मक कथाओंका परीक्षण।

६—समय, ऋतु और भावके अनुसार रागोंके औचित्यका समीक्षण।

७—तर्कशास्त्रके अनुसार उद्धव और गोपियोंके तर्कोंका विश्लेषण।

८—गोपियोंके विरहमें काव्यशास्त्रमें वर्णित विरहकी दशाओंकी प्रतीति।

९—गोपियोंकी भक्तिमें स्वकीयात्म और परकीयात्म भाव।

१०—सूरदास-द्वारा कल्पित नई कथाओं और पात्रोका स्रोत जैसे—श्रीधर ब्राह्मण, कागासुर, महरानेके पाँड़े, शालग्राम-प्रसंग, गोवर्धन द्वारा बदरौलाके हाथसे भोग लेना, राधासे संयोग, राधासे विवाह, राधा-कृष्णकी रति-क्रीडा, मानलीला, दानलीला, पनघटलीला, कुरुक्षेत्रमें रुक्मिणी और राधाका मिलाप आदि।

११–कूट पदोंमें आई हुई कूटाभिव्यक्तियोंके रूपोंका वर्गीकरण—

(क) पुराण कथाओंपर आश्रित (ख) अंकोंपर आश्रित (ग) वार, ग्रह, राशि, नक्षत्र, तिथि आदिपर आश्रित, (घ) अक्षर-विपर्ययपर आश्रित आदि।

१२–साहित्य-लहरीमें आई हुई नायिकाओं, अलंकारों रसों, रसके अवयवोंका परीक्षण।

१३–सेवाफलका महत्त्व।

१४–स्कन्धात्मक सूर-सागरके प्रारम्भिक आठ स्कन्धोंके रचनाकार, रचयिता और प्रामाणिकताका परीक्षण।

१५–सूर-सागर और श्रीमद्भागवतकी दशम-स्कन्धी अनुक्रमणिकासे स्कन्धात्मक सूर-सागरके दशम स्कन्धके प्रसंगोंमें अन्तरका कारण।

१६–अष्टछापके अन्य कवियों-द्वारा सूरदास-गृहीत लीलागान-पद्धति ग्रहण न करनेका कारण तथा अन्योंसे उनकी लीला-गान-पद्धतिमें तात्त्विक अन्तर।

इन विषयोंके अतिरिक्त अनुसन्धानके लिये और भी अनेक विषय हो सकते है जिनकी ओर अभीतक अनुसंधान करनेवालोंकी दृष्टि नहीं गई। इधर बहुतसे विद्वानोंने सूरदासको मानवतावादी, स्वच्छन्दतावादी आदि सिद्ध करनेका प्रयत्न किया है किन्तु सम्भवतः वे नहीं जानते कि सूरदासने अपने आपको केवल श्रीनाथजीके हाथ समर्पित कर दिया था। वे अपने गुरु (श्रीमद् वल्लभाचार्यजी तथा गोसाईं बिट्ठलनाथजी) और श्रीनाथमें कोई अन्तर नहीं मानते थे। जैसे श्रीकृष्ण उनके स्वामी थे वैसे ही श्रीराधिका उनकी स्वामिनी थी। इनके अतिरिक्त उनका न किसीसे सम्बन्ध था न वे किसीसे सम्बन्ध रखते थे, न रखना चाहते थे। जबतक इस तत्त्वको ठीक प्रकार नहीं समझ लिया जाता तबतक सूरदास और उनके साहित्यको नहीं समझा जा सकता। वे दिनमें कृष्णके सखा कृष्णके भावमें और रातके राधाकी सखी चम्पक-लताके भावमें रहते थे। ये सब तत्त्व जबतक हृदयंगम नहीं किए जाते और उन्हें पुष्ट जीव अर्थात् भगवद्-अनुग्रह–प्राप्त नहीं मान लिया जाता तबतक एक मात्र श्रीनाथजी (कृष्ण), श्रीराधा, महाप्रभु वल्लभाचार्य तथा उनके पुत्र गोसाईं विट्ठलदासजीसे उनकी एकात्मताको और सूरदासके वास्तविक स्वरूपको ठीक ठीक ठीक समझा नहीं जा सकता।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हमारी कुछ प्रमुख भूलें, जिन्हें सुधार लीजिए

१—जहाँ जहाँ संज्ञाके वहुवचनमें 'नि' आया है उसे 'न' कर लेना चाहिए, जैसे कुमुदनि, दुहुँनि, फूलनि, स्रवननि, भक्तनि, लोगनि, दिननिको कुमुदन, दुहुँन, फूलन, स्रवनन, भक्तन, लोगन, दिनन कर लीजिए।

२—'समय' को 'समै', 'पर' को 'पै', 'हृदय', को 'हिरदै' या 'हृदै' 'नहीं' को 'नाहिं', 'गए' को 'गे', 'भए' को 'भे' और 'भयौ' को 'भौ' कर लीजिए।

३—जहाँ दो या दोसे अधिक संख्याका संकेत है वहाँ तुकान्त शब्दका ही शुद्ध रूप दिया गया है।

४—प्रथम और द्वितीय खण्डमें ही प्रमादवश बहुत सी भूलें रह गई थीं। तृतीय और चतुर्थ खण्डमें ऐसी भूलें प्रायः नहीं है। विश्वास है सुविज्ञ पाठक यथास्थान पद-संख्या, पाठ और अर्थमें समुचित सुधार कर लेंगे।

पद	पंक्ति	शुद्ध रूप
१	१	(पाठान्तर) बन्दौं श्री हरिपद सुखदाई
२	२	अन्तरगत ही चाखत भावै
२	३	अमित तोष मनही उपजावै
२	४	सो जानै जो तिहि रस पावै
२	५	निरालंब कित चक्रित धावै
२	६	सूर सगुन लीला पद गावै
३	५	सुकृत अमृत रस पीय
३	६	इहाँ कहा रहि कीय
२६	शीर्षक	**लीलाक्रम प्रारम्भ**
३४	१	'माई' शब्द निकाल दो
३७	१	'माई' शब्द निकाल दो
३८	१	नंदहि मन आनंद भयौ
३८	१४	सूरदास है नाऊँ
४०	१	दुःख गयौ सुख भयो सबनकौं
५५	१	छल करि ब्रजहि पूतना आई
५६	३	रुचि करि कंठ लगाये री
५६	४	स्याम रहे लपटाये री
६२	९	एकहि कर मम गर्व हर्‍यौ
६३	३	मैं जानी ये बातैं
६३	४	मोकौं करिहै घातैं
६३	७-८	प्रकासी, उदासी
६३	९-१०	आई, जाई
६४	४	कहौ जीवतहि ल्याऊँ
६५	५	आपु तहँ जाइ जहँ
६५	७	नैकु फटक्यौ जु लात
६७	५-६	बिषादा, सवादा
६७	७-८	अकुलाई, जब पाई
६७	९-१०	उतपाता, आघाता
६७	११-१२	संसै, गंसै
६९	३	निरखि हरखि तिहिं चूमिकै
७०	६	हँसत नँद-मुख
७१	७-८(अर्थ)	सूरदासके प्रभु कृष्ण कभी शय्या पर हाथ टेकते हैं तो कभी डंडेपर हाथ टेकते हुए गिर गिर पड़ते हैं।
७१	५	बोलीं ब्रजनारी
७१	५ (अर्थ)	प्रसन्नतासे भरी यशोदाने ब्रजकी सब नारियोंको बुलवा भेजा।
७७	१	नंद-घरनि आनँद भरि

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पद	पंक्ति	शुद्ध रूप
७७	३-४	नैनन, बैनन
७८	३	यहै लालसा है मेरे जिय
७८	५-६	पाउँ, बुलाउँ
७९	३	कब तोतर मुख बचन झरै
७९	४	कब भइया कहि मोहि ररै
८०	१	त्रिणाव्रत
८०	९	दौरे नंद, यशोदा दौरी
८४	३से८	पछितातो, घाती, सहाई, आई, दिखाई, बिसराई
८६	३-४	बुधवारै, उदारै
९२	३से१६	पाँती, भाँती, मिष्टाना, माना, जाती, ग्याँती, नँदराई, पहिराई, पाँई; बलाई, गोदैं, बिनौदैं, नाई, गाई
९३	१	लालन वारी तेरे मुखपै
९९	२	घुटुरुन चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए।
१०१	१	बिहरत गोपाल राइ; अति मनि-मय अंगनाइ।
१०१	२	घुटुरुन सो डोलै
१०१	३	निरखि निरखि प्रतिबिंबहिं किलकत औ बिहँसै
१०१	४	पाछि चितै फेरि फेरि मइया कहि बोलै
१०१	५	जलज जलहिं धावै
१०३	१ छूट	बलि बलि स्याम मनोहर नैन
१०३	५	कबहुँक रोवत हँसत जाउँ बलि।
१०७	५	नंदनारि आनन छ्वै मंदहिं
१०९	९	पुन्यफल अनुभवति सुतहीं देखिकै नँद-घरनि
१०९	१०	सूरप्रभुकी ललित किलकनि उर बसी लरखरनि
१११	१	खेलत नंदधाम हरि डोलत

पद	पंक्ति	शुद्ध रूप
१११	३से६	धाई, पाँई, देही, खेही
११३	१	पाँड़े भोग लगाइ न पावै
११३	२	करि करि पाक जबै अरपत है
११३	६	नैन मूँदि
११५	१	अहो नाथ! जेई जइ चरन सरन तेई तइ भे अति पतितहु पावन
११६	१	करिये कृपाल मया, प्रतिपालहु करौ दया, जग जंजालहिं करौं पार
११६	२	काहूकैं ब्रह्माजू काहूकैं महेस प्रभु
११६	३	दीनके दयाल हरि, कृपा अब मोकौं करि, कहि कहि लोटत बार बार
११६	४	सूर, हरि अँतरजामि, जगतके एक स्वामि, कहा कहौं करौ निरधार
११७	३से६	दीन्ही, कीन्ही, भाँती, न्याती
११८	३से६	बनाई, खाई, बातैं, गातैं
१३७	१से१४	अन्तके सब (हो) निकाल दो
१३९	२	कबहुँक हिलकि किलकि जननी-मन, सुषमा सिंधु बढ़ावै
१४०	१	हरुअ हँसत मेरौ माधइया
१४८	१	कहा कहौं गृह चैनू री
१४८	२	कोटिक दुहियत धैनू री
१४८	१५से२०	ओरा री, चोरा री, रासी री, हाँसी री, बनाई री, जाई री
१४९	१	(मैं) निकाल दो
१४९	७	सुन्दर मदन गुपाल री
१५७	१से६	अन्तके सब (री) निकाल दो
१५९	१	तनक - सौ बदन अरु तनकसे चरन-भुज, तनकसे करपै है तनकसौ माखन
१६१	१	तनक चरन अरु तनक तनक भुज तनक बदन बोलै तनक-सौ मधु बोल।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पद	पंक्ति	शुद्ध रूप
१६१	३	देखत तनक जाकैं सकल जन भुवन
१६१	४	तनक सुने सुजस पावत सो परम गति, तनक कहत कछु तासौं नँदके सुवन
१६१	५	तनक रिझेपै देत जनहिं सकल फल, तनक चितेपै जन चित बितके हरन
१६१	६	तनकहिं तनक तनकहिं करि आवै सूर, तनक कृपा कै मोहिं दीजै तनक सरन।
१६३	१	(माई) निकाल दो
१६४	१	मोहन कहन लगे अब मइया
१६८	१	लाल आइ खेलौ हे तात
१६९	६ अर्थ	सूरने तो वही कहा है जो सब वह स्वयं देख रहा है।
१७२	१	माँगत हरिजू दधि अरु रोटी
१७९	१	मेरे लालनकी अरी !
१७९	५	आनँदहि बढ़ावौ
१७९	६	बिलँब काह तुम लावौ
१७९	७	न्हाय याहि तौ बनावौ।
१८४	१	(माई) निकाल दो
१८८	५	घिसटि बहावौं बैरी
१९२	८	अति आनँद बाला ब्रज-पुरकी
१९९	७-८ (अर्थ)	उनके सुन्दर कानोंमें चमकती बालियोंमें दो मोती ऐसे झलकते हैं मानो इन्द्रपर चढ़ाईको भेजनेके लिये बलिके कानमें शुक्राचार्य कुछ कह रहे हों। भागवत—११।४६-४८
२०१	३	सुनी कहूँ ये बातैं
२०१	४	खान कहत किहिं नातैं
२०१	९	लालन ! ऐसी आरि न कीजै

पद	पंक्ति	शुद्ध रूप
२०४	१	ऐसौ हठिला बालगुबिंदा
२०५	१	मइया चंद खिलौना लइहौं
२१३	६	लछिमन ! धनुष देहु, चौंके हरि
२२२	५	जौ न पत्याहु मोहिं सूरज प्रभु
२२७	१	हरिजू ! आवौ करौ कलेवा
२२७	३से६	बदामा, नामा, मिष्टाना, सुजाना
२३१	३से६	बापा, पापा, पठाई, धाई
२३२	१	मइया दाऊ बहुत खिझाय
२३२	२	तोहिं जसुमति कब जाय
२३२	७-८	खीझि, रीझि
२३५	१	खेलन चलौ बाल गुबिंद
२३६	२	कहि, धौं बेर भयौ री
२३६	३-४	तोहिं बाता, है माता
२३७	१-२	कान्ह, नान्ह
२३८	१	दूरि न खेलन जाहु लला रे
२४१	१	कोउ री ! बोलि लेहु गोपालहिँ
२४४	१-२	मुँदाइ, भगाइ
२४७	१	खेलत काकौ कौन गुसइयाँ
२६०	१	भावै माँगि लेहु जो प्यारे
२६४	२	दवानलकौ पान कीन्हौ
२६७	५से८	बनाई, बाई; माँही, चाही
२७३	१	गे हरि तब तिहि ग्वालिनिकैं घर
२७३	३से६	छपाई, अरगाई, खानै, सयानै, संगा, रंगा ?
२७८	१	गे लै ग्वालन माखन-चोरी
२७८	३-४	उतरातै, घातै
२७८	७-८	ग्वाला, नँदलाला
२७८	११-१२	खोरी, अँजोरी
२७९	१	चक्रित भइ ग्वालिनि तन हेरि
२७९	२	अबेरि
२८१	१	चलि ब्रज घर घरन यह बात
२८२	१	कान्हहिं माखन खान दै
२८३	५ (अर्थ)	डार्यौ तन फेरी अपना शरीर (रूप) बदल लिया

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पद	पंक्ति	शुद्ध रूप
२८५	१	लखिकै फिरि हरि ग्वारि दुवार
२८५	२से८	पिछवार, राज, काज, हाथ, साथ, नंदकुमार, बारंबार
२८६	१	अँधियर घरमैं स्याम रहे दुरि
२८६	३से६	बातैं, घातैं, उपाई, आई
२८७	१	कान्हा ! कह चाहतसे डोलत
२९१	१	कान्हा ! दुरे जु माखन खात
३१०	१	मेरे भागकी सुभ घरी
३१४	१-२	तोहिं, मोहिं ।
३१४	५-६	घात, जात
३२१	३से६	हाथै, साथै, आई, अरगाई
३२३	१०	सूर; स्याम तौ आँगन खेलत ।
३२३	१०(अर्थ)	श्याम तो यहाँ मेरे आँगनमें बैठे खेल रहे हैं ।
३२६	३-४	टूकै, कूकै ।
३३७	३-४	आइ, नन्हाइ
३३८	३-४	खिझाय, डराय
३४३	२	आवत उबट पर्‍यौ
३४६	१	देखौ या बालककी बात
३४९	१-२	पाउँ, दिखाउँ
३४९	५से६	ल्याइ, बताइ
३५६	१	नैंकहुँ दरद न करति
३८३	५से८	निपाता, माता, तोहीं, ओहीं
३८५	१-२	खिझाइ, कन्हाइ
३८६	१	जसुदा ! कान्हहुँतैं दधि प्यारौ ?
३९०	१	चितए हरि जमलार्जुनके तन
३९५	१	तरु दोउ धरनि परि भहराइ
३९५	२	जर सहित अररराइकै अति घोर सब्द सुनाइ
३९५	३	रहे संक डराइ
३९७	२	काँधे कुँवर कन्हाइ
४१६	१	देखत धेनु दुहत हरि ग्वालन
४१६	२	सिखवहु, कहत गुपालन

पद	पंक्ति	शुद्ध रूप
४१९	१	अजु मैं गाइ चरावन जाउँ
४१९	२	अपने कर मैं खाउँ
४२१	१-२	ग्वाला, नँदलाला
४२२	३	प्रातहितैं लागी याही ढक । ढक = रट
४२४	३-४	देवै, लेवै
४३०	१	जुवती आवति देखी स्यामा स्यामा जुवती = सलोनी नवेली
४३०	२	जमुना-तट गइ बामा
४३२	३-४	नीरा, चीरा
४४०	३-४	ये बातैं, कैसी ठगकी घातैं
४४३	२	भगिनी-माई
४५८	३से६	ध्याना, आना, हेतैं, देतैं
४६५	३	मटकि मुख मोरै
४७०	१से३	सब (री) निकाल दो
४७३	१	जुवती इक जमुनाकौं आई
४७८	१	सखि री ! सुनहू, वा जमुना-तट
४८१	१	(मेरौ) निकाल दो
४९२	५(छूट)	कोकिल, कीर कपोत, किसलता हाटक, हंस, फनिगनकौ ।
	(अर्थ)	कोयल (वाणी), कीर (नाक) कपोत (कंठ), किसलता हाटक (कृशलता = लता-जैसी पतली सुनहरी देह), हंस (ठुमकती चाल), फनिगन (नागिन-जैसी लटों)-की चुंगी लूँगा ।
४९५	३-४	सतरावति, जावति
५०१	४(अर्थ)	(छूट) भुजाओंपर 'बँधे हुए भुजबन्दका, साथके कड़ेका तथा बँधी हुई'......
५०७	५-६	नाखि, राखि
५०९	१	हे री ! भरुहाए हौं लागत ?
५१३	१	तोर्‍यौ कत जु हार नौसरिकौ ।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पद	पंक्ति	शुद्ध रूप
५१८	५से१०	जातीं, भाँतीं, लुकाई, जाई, पाई, जनाई
५२०	५-६	हजारा, कुमारा
५२४	३ से ८	जराऊ, सुभाऊ, पारा, कुमारा, जाई, आई,
५३४	१३	तन तनसुखकी सारी
५२८	७-८	लाला, बाला
५३१	४	बाँधन चहत अकास
५३३	३से६	रारी, खँभारी, छापी, बापौ
५३७	१-२	कन्हाइ, कसाइ
५४३	१-२	कही हौ, दही हौ
५५२	१	तुमही कहौ हमहिं कह बूझति
५५६	१-२	ठानि, जानि
५५७	३से८	फेंटी, भेंटी, अँकवारी, किलकारी, ग्वाला, बाला
५६७	१-२	तिहार, हमार
५६७	५-६	दून, सून
५७१	१-२	दैहुँ, लैहुँ
५९६	३से६	दाना, आना, ये बातैं, मुसुकातैं
६२१	३-४	खाहू, उगाहू
६२४	३-४	सुभाई, आई
६३१	१	आयसु ब्रह्म जिनहिं यह दीन्हौं
६३६	३-४	लेहू, देहू
६३६	७-८	परतीती, प्रीती
६३७	१-२	कीन्ह, लीन्ह
६४०	३-८	आई, जाई, देही, नेही, जाई, बनाई
६४२	१-२	हमार, तुम्हार
६४६	१-८	बिचारैं, धारैं, नारी, बिचारी, अबारी, निरवारी, मनाई, चुराई
६६५	१	(माई) निकाल दो
७०२	३-४	साँझै, माँझै
७०२	७-८	बेहाला, गोपाला
७०८	१	कहिए कह सुंदर-घन तोसौं
७१०	१	कान्हा ! तुमसौं क्यौं न कहौं जू
७१०	२	सहौं जू
७११	१	बोले हँसि गिरिधर रस-बानी
७३१	१	चतुरी सखि मन जानि लई री
७३१	२	त्रास भई री
७४६	१-२	पऱ्यौ है, कऱ्यौ है
७६६	२	बातैं, मुसुकातैं
७६६	३	चीन्ही, छीन्ही
७७६	१५	पाय, गाय
७८२	१	पन्नग-रूप गिले
७८३	३-६	डरातौ, घातौ, खीझी, रीझी
७८५	१	मनही मन बिधि सोच पऱ्यौई
७८५	२	डऱ्यौई
७८७	३-१२	गएउ, भएउ, ठाऊँ, नाऊँ, पाहीं, जाहीं, आना, गाना, धैनू, दैनू
७९१	३-४	लेहू, देहू
७९२	१-२	भई जु, गई जु
८०४	१	सबही और ग्वाल गृह आए, कान्हहिं बेर भई री
८०४	२-६	गई री, जमाई, लगाई; सुनाई, माई
८१०	५-६	काजू, आजू
८२३	१	सुंदर बेष धरे गोपाल
८३८	१	(माधो) निकाल दो
८५४	१-२	कन्हाइ, भाइ
८५६	१-२	अकुलानी, सारँगपानी
८५८	१	बिचारा, अवतारा
८५९	५से८	बातैं, घातैं, मोही; जोही
८६४	१-२	गए जू, भए जू
८६६	३से६	जाई, कन्हाई, पाई, बनाई
८७५	४	डरायौ
८७७	९-१०	भाँती, साँती
८७८	५-६	नारी, निहारी
९०१	१-२	बढ़ाय, आय

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पद	पंक्ति	शुद्ध रूप
९०१	५-६	बढ़ाय, लाय
९०२	५-६	लोका, ओका
९०३	१	कान्हा निरतत फन-प्रति ऐसे
९०३	३-४	गंडा, कोदंडा
९०७	३-६	सीसा, जगदीसा, सेषा, वेषा
९०८	५	चतुरानन
९०८	७-८	धराए, कराए
९१४	१	'तुम' छोड़ दो
९१४	३	"तुम" छोड़ दो
९१४	७,९ १०	"तब, जब, तब" निकाल दो
९२७	३	लखि छबि मदन छरत
९२८	१	"कहौं कहा" निकाल दो
९२८	३-४	कहि न परी, बिसरी,
९३५	१	"माई" निकाल दो
९३५	३से१०	तरंगा, अंगा, भुजंगा, संगा, देतै, समेतै, बिचारी, हारी
९३६	१	जैसि जैसि बात करै । साँवर सुँदर कान्ह
९३६	३	जंगम थावर सु करै,थवर चलावै री
९३६	४	कामिनि धरै धीर, सु को कहावै री
९३६	५	नंदलाल ललनाकौ लचि, ललचावै री । सूरज, हरी-प्रेम हिय न समावै री।
९३७	१	अति बिसाल हरि लोचन लोल
९४८	१	(स्याम) निकाल दो
९७१	६	सूरदास-प्रभु मनमोहन छबि
१०२४	१	कर जोरैं
१०३९	१	नंदकुमारा, जंजारा
१०५४	३-४	बालक, मालक
१०५६	५ ६	देती, केती
१०६०	१	दिपति दिव्य दीपालिका
१०६१	१	सुरभी कान जगाय खरिक ही, बल-मोहन बैठे हैं हटरी¹

पद	पंक्ति	शुद्ध रूप
१०६१	१(अर्थ)	गायोंका कान जगाकर अर्थात् उन्हें अगले दिन गोवर्धन पूजाके लिये आनेका निमंत्रण देकर गोशालामें हटरी लगाकर बलराम और कृष्ण जा बैठे।
१०६१	टिप्पणी	१ हटरी = दीवालीके दिन सींक या मट्टीसे छोटा-सा दुखण्डा घरौंदा बनाकर उसपर दीपक सजाते हैं और मिठाई मेवों-की हटरी "छोटीसी दूकान" सजाकर सबको बाँटते हैं।
१०९२	शीर्षक	**गोवर्धन-पूजाका दूसरा वर्णन**
११२८	३से१०	आघातैं, उतपातैं इंदा, गुबिंदा, सिराई, बढ़ाई, आनंदा, नँदनंदा
११३०	६	सूर
११३५	४	ब्रजतैं आए रोई
११४६	शीर्षक	**गोवर्धन-लीलाका तीसरा वर्णन**
१२४०	१	तवहीं जसुदा माखन लाई
१२७७	६	सुनहु सूर
१२७९	८	सूर, स्याम
१३०७	टिप्पणी	कृष्णकी अष्ट नायिकाएँ थीं— रुक्मिणी, सत्यभामा, जाम्बवती, मित्रविन्दा, सत्या (नाग्नजिती), कालिन्दी, लक्ष्मणा, भद्रा
१३०८	१	जुवती-अँग-छबि निरखत स्याम
१३०८	५-६	भ्राज, लाज
१३०९	१	हरि तनु राजति पीत पिछौरी
१३१२	३	पग पग पटकि भुजन लटकावति
१३१२	४	अदभुत है वह रूप
१३१५	६	सँगतैं होत न कबहूँ न्यारे
१३२४	७-८	नैना, वैना

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पद	पंक्ति	शुद्ध रूप
१३३०	१	साँवर ढोटा
१३४२	१	नृत्य करत अति स्रम भयौ
१३५२	१-२	बिसऱ्यौइ, पऱ्यौइ
१३५२	३	अपनौ पिय ढूँढति फिरौं
१३५६	१	कहूँ नहिं पाये उनि प्यारे नँदनंदना
१३५६	३	तुमसौं हौं कहति बात मैं ही किय दंदना
१३५६	४	हौं तौ भइ बिकल आलि
१३७७	३-४	करेइ, खरेइ
१३७७	७-८	आनंदमई जु, गई जु
१३७७	१७	स्रुतिकुंडल
१४०६	१	निरमल देह छूटि तन चंदन
१४०६	२	पावत नहिं गावत स्रुति छंदन
१४०७	४	सूर
१६६६	५से७	(छूट) इत लिय कनक लकुटिया नागरि, उत जेरी धरि ग्वार। इत है रंग-रँगीली राधा, उत श्रीनंदकुमार। खेलतमैं रिस ना करि नागरि, स्यामहिं लागै चोट।

[पाँचवाँ मुद्रित चरण छोड़ दिया जाय]

३२०७ (पाठांतर) मधुबन तुम क्यों रहत हरी।
बिरह-बियोग स्यामसुंदरके ठाढ़ी क्यों न जरी।
तुम हो निलज न लज्या तुमकौं फिरि सिर पुहुप धरी।
सस सियार अरु बन्य पखेरू धृग-धृग सबन करी।
कौन काज ठाढ़ी रहि बनमें काहे न उकठि परी।
कपट हेतु जो किय हरि हमसे खोटे होहिं खरी॥
गोबिंद गुन उरतैं नहिं बिसरत रचि-रचि कुसुम भरी।
बिनु देखे वा नँदनंदनको फिरि फिरि फिरि न फिरी॥
जब वै मोहन बेनु बजावत साखा टेकि खरी।
मोहे सब थावर जड़ जंगम मुनिगन ध्यान टरी॥
बिछुरत बल मोहनको हिरदै केउ न कल्यान करी।
सुख संपति बिछुरी मोहनकी फल-फूलनसौं करी॥
नैननतैं बिछुरे नंदनँदन चिततैं नाहि टरी।
सूरदास-प्रभु बिरह दवानल नख-सिख-लौं पसरी।
(वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई, सूरसागर पृष्ठ ४८५, पद संख्या ४१)

(आचार्य शुक्लजीकी प्रतिमें भी यही पाठ है)

३८६४ ४ टिप्पणी २ बक दाल्भ्य : ये दल्भ ऋषिके पुत्र थे जो खुले मैदानमें केवलवड़का एक पत्ता सिरपर रखकर तपस्या किया करते थे। पांडवोंके अश्वमेध यज्ञके समय जब अर्जुन घूमते हुए उनके पास पहुँचे और अर्जुनने पूछा कि आप कुटिया क्यों नहीं बनवा लेते तो वे विरक्तिके साथ बोले कि थोड़ी अवस्था बीत गई है थोड़ी शेष है और अवकाश भी नहीं है। अवस्था पूछनेपर बताया कि ब्रह्माकी बीस अहोरात्रि (बीस हज़ार वर्ष) बीत चुके हैं और बीस हज़ार वर्ष ही और जीना है। इतनेके लिये क्या कुटिया बनाई जाय।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी

के

ग्रन्थ - रत्न

अलका (नाटक)	२.५०
अपराधी (,,)	०.५०
अभिनव नाट्यशास्त्र	२०.००
आचार्य विष्णुगुप्त (नाटक)	२.५०
कालिदास ग्रन्थावली (सटीक)	५०.००
कृष्ण-सुदामा (नाटक)	२.००
गुण्डा (,,)	२.००
चिन्तन और चंक्रमण	१५.००
जै कन्हैयालालकी	१०.००
जय सोमनाथ (नाटक)	२.५०
तुलसी-ग्रन्थावली	
प्रथम खण्ड (द्वितीय संस्करण)	४०.००
द्वितीय खण्ड (,, ,,)	६०.००
तृतीय खण्ड	३०.००
चतुर्थ खण्ड (रत्नावली)	३६ ००
दर्शन, साहित्य और इतिहास	१०.००
दादूदयाल, जीवनदर्शन और काव्य	१८.००
नारायण स्वामी : जीवनी और शिवोऽहम् महाकाव्य	६०.००
पादुकाभिषेक (नाटक)	२.५०
पापकी छाया (,,)	२.५०
बेचारा केशव (,,)	२.००
भारतके उदासीन सन्त	१६.००
मंगलके दूत (उपन्यास)	२.५०
यह दुनिया एक कहानी है	५.००
वसन्त (नाटक)	२.५०
विश्वास (,,)	२.००
संस्कृत सूक्ति-सागर	४२.००
सूर-ग्रन्थावली (सटीक ५ खण्डोंमें)	२००.००
सेनापति पुष्यमित्र (नाटक)	२.५०

व्यवस्थापक—
६३/४३, उत्तर बेनिया बाग, वाराणसी—१

सुदर्शन मुद्रक, ४२, उत्तर बेनिया बाग, वाराणसी।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी

के

ग्रन्थ - रत्न

अलका (नाटक)	२.५०
अपराधी (,,)	१.५०
अभिनव नाट्यशास्त्र	३०.००
आचार्य विष्णुगुप्त (नाटक)	२.५०
कालिदास ग्रन्थावली (सटीक)	५०.००
कृष्ण-सुदामा (नाटक)	२.००
गुण्डा (,,)	२.००
चिन्तन और चंक्रमण	१५.००
जै कन्हैयालालकी	१०.००
जय सोमनाथ (नाटक)	२.५०
तुलसी-ग्रन्थावली	
प्रथम खण्ड (द्वितीय संस्करण)	४०.००
द्वितीय खण्ड (,, ,,)	६०.००
तृतीय खण्ड	३०.००
चतुर्थ खण्ड (रत्नावली)	३६.००
दर्शन, साहित्य और इतिहास	१०.००
दादूदयाल : जीवनदर्शन और काव्य	१८.००
नारायण स्वामी : जीवनी और शिवोऽहम् महाकाव्य	६०.००
पादुकाभिषेक (नाटक)	२.५०
पापकी छाया (,,)	२.५०
बेचारा केशव (,,)	२.००
भारतके उदासीन सन्त	१६.००
मंगलके दूत (उपन्यास)	३.५०
यह दुनिया एक कहानी है	५.००
वसन्त (नाटक)	२.५०
विश्वास (,,)	२.००
संस्कृत सूक्ति-सागर	४२.००
सूर-ग्रन्थावली (सटीक ५ खण्डोंमें)	२००.००
सेनापति पुष्यमित्र (नाटक)	२.५०

व्यवस्थापक—

६३/४३, उत्तर बेनिया बाग, वाराणसी—१

सुदर्शन मुद्रक, ४२, उत्तर बेनिया बाग, वाराणसी।

CC-O. In Public Domain. A Sarayu Foundation Trust and eGangotri Initiative